क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
828.	अर्चना कैसे करूँ मैं।	469
829.	मैं तुम्हें पुकारुँ न आओ।	469
830.	मेरे अन्तस में बस जाओ।	469
831.	हरि भज हरि भज हरि भज मन तू	469
832.	भटकूँ चहुँ दिश ठौर न पावे।	469
833.	तुम मुझसे आँखे मत मूंदो।	469
834.	हो सका ना तृप्त जग में।	469
835.	आँसू की कीमत जानो क्या।	470
836.	नयना मेरे रिमझिम बरसे।	470
837.	बनना मिटना खेल यहाँ हैं।	470
838.	भक्त कहे हम किसे जगत में।	470
839.	किसकी ऑखें करे प्रतीक्षा।	470
840.	हो जगत के ईश तुम तो।	470
841.	तुम आओ या ना आओ अब।	470
842.	कुछ गम लिये कुछ गम दिये।	470
843.	आशाओं की गठरी लेकर।	471
844.	लिख-लिख शब्द करूँ मैं रचना।	471
845.	साथ तुम्हारा रहा नहीं अब।	471
846.	बन्शी धुन उस पार बजाता।	471
847.	दुख के इस गहरे साये में।	471
848.	द्वार द्वार पर घूमा मैं प्रभु।	471
849.	हूँ भिखारी जन्म से।	471
850.	चल उड़ चल उस पार गगन के।	471
851.	कैसे गाऊँ गीत तुम्हारे।	472
852.	मन गा ले आज खुशी से तू।	472
853.	किस जगह तुम को पुकारूँ।	472
854.	लिख लिख भेजूँ तुमको पाती।	472
855.	सर्वत्र तू है व्यापक।	472
856.	खोजूँ तुमको खोज न पाऊँ।	472
857.	मैं रोया आँसू ना देखे।	472
858.	उठे विरह के गीत नयन पर।	472
859.	कल्पना में जी रहे है।	473
860.	तुमको नमस्कार करते है।	473
861.	सागर है मुझको बुला रहा।	473
862.	ढूँढ रहा हूँ बना बावला।	473
863.	अपनाने को क्या यह जीवन।	473
864.	ढलती जाती शाम यहॉ है।	473
865.	जीवन की तज अभिलाषायें।	473
866.	अँखियाँ मेरी झर झर बरसे।	473
867.	निज दीप तू उर में जला ले।	474
868.	कर रहे हैं हम प्रतीक्षा।	474
869.	साथ रही है सदा उदासी।	474
870.	अँधियारे में कुछ न दीखें।	474
871.	गठरिया पाप की शीश धरी।	474
872.	सूना तुम बिन सब लागे है।	474
873.	ईश्वर तुम हमें करो क्षमा।	474
874.	रोई अखियाँ तू न आया।	474
875.	हम विलख रहे सन्तान तेरी।	475
876.	चल उड़ चल उस पार गगन के।	475
877.	तू देख मनुआ देख ले।	475
878.	हे ईश न मुझ से तुम रूठो।	475

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
879.	पा सके नहीं हे ईश तुझे।	475
880.	क्या कहें तुम्हें यह दिल टूटा।	475
881.	हे ईश हमें तुम पथ दे दो।	475
882.	हे ईश क्षमा करना हम को।	475
883.	मन नहीं लगता यहाँ पर।	476
884.	जन्म भी तू मृत्यु भी तू।	476
885.	तेरे बिना जियरा न लागे।	476
886.	हम जख्म यह किसको दिखायें।	476
887.	कल क्या होगा न जान सकें।	476
888.	सजे यहाँ चाहत के मेले।	476
889.	सुख खोज रहा है यह मनुआ।	476
890.	अपनी अपनी चाहत सबकी।	476
891.	हम हैं अबल सबल तुम स्वामी।	477
892.	चल उड़ चल उस पार गगन के	477
893.	तड़फ रहे देखे ना बोले।	477
894.	बहते आँसू देख हमारे।	477
895.	सब सोवें मो नींद न आवे।	477
896.	कैसे गाऊँ गीत तुम्हारे।	477
897.	कितना चले मगर न पहुँचे।	477
898.	सब को मिलता है नहीं श्रोत।	477
899.	मन्द बुद्धि अज्ञानी हम हैं।	478
900.	किसके आगे व्यथा सुनायें।	478
901.	रूक मत समझ यहां बहता जा।	478
902.	तुम विमुख हुए हम टूट गये।	478
903.	कितना ही नाम जपेंगे।	478
904.	किसको पकड़ें किसको छोड़े।	478
905.	टप टप गिरें नयन से आँसू।	478
906.	अपनी अपनी लिये कहानी।	478
907.	लगता नहीं यह दिल।	479
908.	खोज रहे क्या बने बाबले।	479
909.	हाथ जोड़ कर करूँ अर्चना।	479
910.	हरि तुम छोड़ कहाँ पर जाऊँ।	479
911.	हे ईश क्षमा करना हमको	479
912.	प्रभु मैं भटकता फिर रहा हूँ।	479
913.	जन्म दिया तूने हमको जो।	479
914.	शक्तिमान हो इस दुनिया में।	479
915.	मन्दिर मस्जिद गिरजा ढूंढा।	480
916	हरि अब चरण पड़ूं मैं तेरे।	480
917.	विनती सुन लो हरि तुम प्यारे।	480
918.	चरण पड़ूं मैं दास तुम्हारा।	480
919.	मेरे राम तुम को ही जपे।	480
920.	जय हो ईश सदा तुम्हारी।	480
921.	यहाँ भज ले मनुआ राम।	480
922.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	480
923.	हरि मेरे हिय में बस जाओ।	481
924.	अर्चना तेरी करें हम।	481
925.	हरि बल नहीं तुझे मैं पाँऊ।	481
926.	अपनी-अपनी नियति यहाँ पर।	481
927.	तुम्हारे हम प्रभु बालक।	481
928.	प्रभु दुख दूर करो सब हमारे।	481
929.	हरि बिन तरसत नयन हमारे।	481

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
930.	कृपा करो तुम सुख के दाता।	482
931.	कितने बनते कितने मिटते।	482
932.	ताने बाने बुनते बुनते।	482
933.	चाह तुम्हारे गीत गाऊँ।	482
934.	तू सुने ना सुने है मर्जी।	482
935.	मन अतीत क्यों नहीं भुलावे।	482
936.	जग में कोई साथ न देवे।	482
937.	कैसे आऊँ मग में काँटे।	482
938.	मेरे खेवट तुम आ जाओ।	483
939.	मन के सारे दुख दूर करो।	483
940.	भज हरि भज हरि जहाँ रखे हरि।	483
941.	मुझ पर कृपा करो हे ईश्वर।	483
942.	अपना न कोई ठिकाना है।	483
943.	आते है जाते इस जग में।	483
944.	मोती से आँसू ढलके।	483
945.	मन याद कर रहा जिनको तू।	484
946.	हरि बिन चैन नहीं हम पावें।	484
947.	हरि तुम को यह प्राण पुकारे।	484
948.	हरि बिन कहाँ जगत में जाई।	484
949.	ठोकर खाते उठते गिरते।	484
950.	जग को तारन यहाँ बह रही।	484
951.	हमें देख लो हे करूणाकर।	484
952.	इस ठगनी माया में पड़ते।	485
953.	करूँ अर्चना नयन नीर से।	485
954.	नयना रोवे तू नहिं आवे।	485
955.	हरि तुम आन मिलो अब मुझसे।	485
956.	करता मैं तुम को प्रणाम हूँ।	485
957.	बीत जाये सारी उमरिया।	485
958.	अन्धकार में दीप जला दो।	486
959.	मन रे हरि को नाहि पुकारे।	486
960.	ईश तुम्हारे गुण को गायें।	486
961	भक्त के क्या पास है जो।	486
962.	ईश कृपा करना तुम मुझ पर।	486
963.	आँसू को हमने चुना यहाँ।	487
964.	ईश उड़े है मन यह मेरा।	487
965.	चाह यही अब झड़ जायें हम।	487
966.	हे ईश दया करना हम पर।	487
967.	तुमने मुझ को अलग किया जो।	487
968.	आँखों में नीर तड़फता है।	487
969.	हम लुटते रहे लूटते तुम रहे।	487
970.	सुख का सागर छिपा तुझी में।	487
971.	हम जानते नहीं है।	488
972.	प्रभु अर्चना स्वीकार कर लो।	488
973.	इस जिन्दगी को समझते न हम हैं।	488
974.	जो मैं समझा वह तू समझे।	488
975.	आने जाने की दुनिया में।	488
976.	कितना जग में छलक रहा रस।	488
977.	पूजना यहाँ शून्य को तुम।	488
978.	मेरी सिसकी को तू सुन ले।	489
979.	कौन साथ में यहाँ चला है।	489
980.	बीतता सब जा रहा।	489

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
981.	बालक हैं अज्ञान भरे हम।	489
982.	यहाँ वहाँ डोले मन जग में।	489
983.	प्रभु मिल जाओ तुम हमको।	489
984.	कितने गाये गीत ईश पर।	490
985.	यादें तेरी हैं आती।	490
986.	अपनी अपनी उलझन मन की।	490
987.	मन की पीड़ा दूर न होवे।	490
988.	मेरे जीवन तुझे खोजते।	490
989.	तू इस पल को जी ले मनुआ।	490
990.	तुम बिन मेरा मन्दिर सूना।	491
991.	तेरी चौखठ पड़ा रहूँ मैं।	491
992.	ईश कृपा करना तुम हम पर।	491
993.	हर सांस जीवन की दे दूँ।	491
994.	नीर बह रहे कैसे पोछूं।	491
995.	ले चल मुझे भुलावा देकर।	491
996.	हम जायेंगे कित नहीं पता।	492
997.	गीत उठता है हृदय से।	492
998.	अखियां नीर भरे पल पल में।	492
999.	प्रियतम से प्रीति करूँ कैसे।	492
1000.	दिल कांप रहा थर थर मेरा।	492
1001.	दुख आये सह तप मन समझो।	493
1002.	पल दो पल की खुशी चाहते।	493
1003.	अन्धकार से जी घबराये।	493
1004.	निर्बल का न कोई यहाँ पर।	494
1005.	पिव-पिव रटे पिया ना दीखें।	494
1006.	सब रंगों के पार छिपा तू।	494
1007.	नाम तुम्हारा लिये बिना मै।	494
1008.	हरि बिन सुगरे जीवन बीता।	494
1009.	हरि भज हरि भज हरि भज पगले।	494
1000.	खोज रहे राह को।	494
1011.	पूजा करते तुम्हारी।	494
1012.	कोई ठगा जाता यहाँ।	495
1013.	दर्द तुमने जो दिये हैं।	495
1014.	पूजा तेरी करें प्रभु।	495
1015.	बीता जाता जीवन बसन्त।	495
1016.	अपनी अपनी इच्छायें ले।	495
1017.	खेल यह चलता रहेगा।	495
1018.	बह रहे आंसू हमारे।	495
1019.	चलता प्रभु जी चला न जाता।	496
1020.	मन भूल जा मन भूल जा।	496
1021.	ईश तेरी हो कृपा जब।	496
1022.	छोर पता न अन्तहीन हैं।	496
1023.	कुछ पल के मेहमा बने हैं।	496
1024.	मन तुझमें मैं ईश लगाऊँ।	496
1025.	हरि मैं छोड़ तुझे कित जाऊँ।	496
1026.	हरि बिना कृपा ना कुछ होई।	497
1027.	भटक रहा चहुँ ओर जगत के।	497
1028.	भज मन हरि छवि मन को भाई	497
1029.	प्रभु तुम बिन मो कुछ सुहावे।	497
1030.	रोना चाहा रो ना पाया।	497
1031.	टूटे तार अधूरे स्वर है।	497

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
1236.	हरि बोलो हरि हरि ही बोलो।	525
1237.	दिल उदास यह गाना चाहे।	525
1238.	हरि मैं गीत तुम्हारे गाऊँ।	525
1239.	दिल नहीं लगता हमारा।	525
1240.	जी नहीं लगता हमारा।	525
1241.	काटे कटती ना यह रैना।	525
1242.	छिप कहाँ गये तुम सांवरियां।	525
1243.	तेरे नाथ खिलौने है हम।	526
1244.	ना शान्ति मिली जीता हारा।	526
1245.	पागल मन बहला ले अपना।	526
1246.	यह बहाते नयन पानी।	526
1247.	हरि से प्रीति बढ़ा ना पाया।	526
1248.	मन खोज रहा, मन भटक रहा।	526
1249.	व्याकुल मन मेरा किसे कहूँ।	526
1250.	जीवन में दर्द छिपा इतना।	527
1251.	थके यहाँ चलते चलते।	527
1252.	मन नाचे तेरे संग बालम।	527
1253.	तेरा जीवन तू मालिक।	527
1254.	नियति के हम तो खिलौने।	527
1255.	हरि कृपा सदा चाहूँ तुमसे।	527
1256.	राम निज की शरण में लो।	527
1257.	तुमने रूलाया रोये यहाँ पर।	527
1258.	बीत गये दिन तुम ना आये।	528
1259.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	528
1260.	मन काहे तू नयन बहाये।	528
1261.	सदा जपें ना तोड़े बन्धन।	528
1262.	देख ले नजरें उठा कर।	528
1263.	बरस बरस कर आँखे सूखी।	528
1264.	हरि हरि मेरे प्राण पुकारें।	528
1265.	कितने नीर बहा ले रो ले।	528
1266.	बने हुए तुम अन्तर्यामी।	529
1267.	डोल रही है मेरी नैया।	529
1268.	दुनिया में ना कोई जाने।	529
1269.	थक चुके हम हार कर अब।	529
1270.	चले न पहुँचे, रहे भटकते।	529
1271.	जीने को जी रहे यहाँ हम।	529
1272.	बोलो क्या गुनाह मेरा।	529
1273.	जायें कहाँ कुछ न दीखे।	529
1274.	मत मान यहाँ मन में मन दुख।	530
1275.	अखियां देखें पथ को।	530
1276.	पिया न आये मेरी गली।	530
1277.	जीवन है जीना ही होगा।	530
1278.	हरि नयन बसा इन अखियों में।	530
1279.	तुम करो कृपा गुलशन महके।	530
1280.	एक गम हो तो कहें हम।	530
1281.	जग में रस मोहिं कुछ न आवे।	530
1282.	ईश कृपा करना तुम हम पर।	531
1283.	जान सके ना हरि की माया।	531
1284.	साथ मतलब का यहाँ सब।	531
1285.	चैन न आवे रहा न जावे	531
1286.	हरि हरि कहते बीते जीवन।	531
1287.	चले चल कर थक गये हम।	531
1288.	मन रोये तुमको खो मोहन।	531
1289.	देख लो नजरें उठाकर।	531
1290.	याद करूँ तुमको नहीं आवे।	532
1291.	ईश कृपा करना तुम हम पर।	532
1292.	ना हँस पाये ना रो पाये।	532
1293.	खेल तू कितने खिलाये।	532
1294.	दिल नहीं लगता हमारा।	532
1295.	हरि की अन्तस में ज्योति जला।	532
1296.	तेरी मर्जी चलते हम।	532
1297.	हरि जप हरि जप यह कटे सफर।	532
1298.	हरि तुम्हारे दास हैं हम।	533
1299.	हरि प्रीति करो हो शरणाई।	533
1300.	तुम दीनबन्धु जग के पालक।	533
1301.	सूना लागे तुम बिन मोहन।	533
1302.	दीपमाला से सजाऊँ।	533
1303.	हरि ओम् कहो मन ओम् कहो।	533
1304.	हरि तुझे हम ढूंढते हैं।	533
1305.	शुभ हो सदा जिन्दगी में प्रभु।	534
1306.	नौका तुम बिन पार न होवे।	534
1307.	चलने की सामर्थ न मुझमें।	534
1308.	हरि बोलो हरि हरि ही बोलो।	534
1309.	हरि भज लो शाश्वत वह ही है।	534
1310.	जीवन एक पहेली माना।	534
1311.	आ गये हम शरण तेरी।	534
1312.	मन मेरे क्यों है उदास।	534
1313.	हरि भज हरि भज मन तू हरि भज।	535
1314.	हरि भजन करो मन सुख पाओ।	535
1315.	निहारती सूनी आंखें।	535
1316.	बने बन जा तू उपासक।	535
1317.	गान दिये जा इस जीवन को।	535
1318.	बीत रहे दिन रोवे अखियाँ।	535
1319.	इस दुनिया का तू रखवाला।	535
1320.	हरि तेरे हम द्वारे आये।	536
1321.	जायें कहाँ तुम ही कहो।	536
1322.	जग के पालक तुम हो सर्जक।	536
1323.	राम के संग है बहारें।	536
1324.	शरण तेरी मैं मुरारी।	536
1325.	मन हरि जपो वही सुखनन्दन।	536
1326.	तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ।	536
1327.	दर दर डोलूँ खोज रहा हूँ।	536
1328.	थोड़ा सा जीवन यह।	537
1329.	मन हरि जपो प्रीति हरि कर लो।	537
1330.	प्रभु बालक हम तुम्हारे	537
1331.	मन हरि भजो भजन सुखदाई।	537
1332.	हरि मैं हार गया ना आये।	537
1333.	हरि ओम मन जपो तुम।	537
1334.	हरि मै तेरी बाट निहारूँ।	537
1335.	कौन सी मैं गली खोजूँ।	538
1336.	मीत जहाँ मेरे उड़ चल मन।	538
1337.	हरि मैं चरण तुम्हारे पड़ता।	538

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
1338.	तुम बिन नौका पार न होवे।	538
1339.	मन हरि जप इसमें लय हो जा।	538
1340.	हरि हरि जपूँ सभी कुछ तेरा।	538
1341.	चल कर आऊँ तेरे द्वारे।	538
1342.	हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई।	538
1343.	हरि अपने चरणों में रख लो।	539
1344.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	539
1345.	हरि हरि कहते बीते जीवन।	539
1346.	तुझ मन्दिर में दीप जलाऊँ।	539
1347.	पिया मिलन की आस जगी है।	539
1348.	हरि शरणा मैं तेरी आऊँ।	539
1349.	ओम कहो मन ओम कहो मन।	539
1350.	चाहता हूँ भूल जाऊँ।	540
1351.	ईश तुम मेरी खबर लो।	540
1352.	तुम्हारी करते पूजा।	540
1353.	बिगड़े हमारे तुम बिन काम।	540
1354.	अपनी अपनी किस्मत जग में।	540
1355.	मेरी विनती को तुम सुन लो।	540
1356.	हे हरि याद करें दुख विसरें।	540
1357.	इन आँखों में आँसू आये।	541
1358.	इस जीवन में ना सुख पाया।	541
1359.	निशदिन हम तो नीर बहावें।	541
1360.	हरिनाम बसे घट माही।	541
1361.	तुझे हम याद करते हैं।	541
1362.	मन चल गीत राम के गा ले।	541
1363.	अपने अपने सुपने लेकर।	541
1364.	जीवन तुम पर प्रभु है बारी।	542
1365.	छिपे कहाँ हो कृष्ण मुरारी।	542
1366.	किसे यहाँ कहना हैं कुछ।	542
1367.	तुम बिन मेरा जिय न लगत हैं।	542
1368.	मन गा चरणों में हरि के जा।	542
1369.	याद तुझी को करते हैं हम।	542
1370.	जीवन तो मेरा उदास है।	542
1371.	आंखो में बसा लू तुझे।	543
1372.	खोजते सुख को फिरें हम।	543
1373.	मन मोहन मुझ को तुम।	543
1374.	मन मन्दिर में बसो ईश तुम।	543
1375.	नयनों से निकली बह धारा।	543
1376.	हरि बिन कोई नहीं सहाई।	543
1377.	तुम छिपे कहाँ भगवन।	543
1378.	हरि द्वारे तेरे मैं आऊँ।	544
1379.	मन उड़ चल नहिं कोई बन्धन।	544
1380.	आंखों में आंसू हैं।	544
1381.	शून्य सत्य सब शून्य बीच।	544
1382.	भजन बिना न पार हो नदिया।	544
1383.	हरि तू अपना दास बना ले।	544
1384.	कौन कहेगा हमें यहाँ पर।	544
1385.	हरि जप तू आकाश भ्रमण कर।	545
1386.	बसो नयना मेरे सांवरे।	545
1387	ढूंढते प्रभु हम तुझे है।	545
1388.	थक गये हम चलते चलते।	545
1389.	अकेला हुआ भरी भीड़ में।	545
1390.	तेरी दुनिया का तू मालिक	545
1391.	सुखदायक तुम जग के पालक।	545
1392.	ध्यान लगाऊँ प्रभु जी तेरा।	546
1393.	अखियां नीर भरे पथ देखें।	546
1394.	सब कुछ होता है गलत यहाँ।	546
1395.	जीवन कर्ज चुकाऊँ कैसे।	546
1396.	सुपनों की दुनिया में जीते।	546
1397.	तेरे द्वार हम आये।	546
1398.	नहीं मिलो ना मिलना चाहो।	546
1399.	जग के सुख में मिले निराशा।	547
1400.	हरि बिन कोई नहीं सहारा।	547
1401.	दूर करो दुख मेरे सारे।	547
1402.	याद तुम्हारी आ रही।	547
1403.	मुझ को दे दो ईश्वर तुम पथ।	547
1404.	बीत रहे पल मन तुम देखो।	547
1405.	हारे को हरिनाम यहाँ है।	547
1406.	प्रभु जी इतनी तो तू सुन ले।	547
1407.	ईश पथ हमको दिखाना।	548
1408.	तेरी चौखठ पर आये।	548
1409.	चरणों में तू बसा मुझे।	548
1410.	डूबी जाये यह गगरी।	548
1411.	कितने रूप धरो गोविन्दा।	548
1412.	अपना भाग्य यहाँ हैं।	548
1413.	चल मन तू उस पार गगन के।	548
1414.	जपें हम बस नाम तेरा।	549
1415.	मेरे भगवन आओ तुम।	549
1416.	प्रभु कहाँ जायें बता हम।	549
1417.	हरि तुम बिन मैं चैन न पाँऊ।	549
1418.	हरि मुझ को तुम पार लगाओ।	549
1419.	श्री हरि मुझको संभालो।	549
1420.	द्वारे तेरे आये प्रभु जी।	549
1421.	तुमसे मिलन होगा कभी।	549
1422.	हरि दुखड़े सब दूर करो अब।	550
1423.	बहते आँखों से आंसू।	550
1424.	जीवन में कितने सुमन खिले।	550
1425.	जीव रोये विरह है जागा।	550
1426.	द्वारे तेरे नाथ खड़े है।	550
1427.	ज्ञान का सूरज दिखा दो।	550
1428.	जानते हम ना प्रयोजन।	550
1429.	तुम बनो निर्मोही न प्रभु।	550
1430.	जीवन को अन्तिम मंजिल तू।	551
1431.	जीवन को प्रभु देने वाले।	551
1432.	पड़ते राम शरण तेरी हम।	551
1433.	हरि बिन मेरा नहीं सहारा	551
1434.	सकल जग का तू मही है।	551
1435.	जलता रहा सदा जीवन भर।	551
1436.	दास तेरे राम हम हैं।	551
1437.	हरि हरि भजें शरण हम तेरी।	552
1438.	कण कण उतारे आरती।	552
1439.	लाज रखो मेरी गिरधारी।	552

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
1644.	हरि ओम जपो संताप मिटे।	579
1645.	नभ में बैठे देख रहे तुम।	579
1646.	तुम बिना जाये कहाँ हम।	579
1647.	हरि जप मन को शान्ति मिलेगी।	579
1648.	ढूढते तुमको फिरें हम।	579
1649.	मन भज ले तू हरि का नाम।	579
1650.	हरि बिन जीवन जिया न जाये।	580
1651.	प्यार के दो जाम पीता।	580
1652.	हरि बोलो हरि बोलो मनुआ।	580
1653.	हरि से जिसने प्रीति बढ़ाई।	580
1654.	जीवन की यह शाम पुकारे।	580
1655.	हरि चरणों में प्रीति लगा मन।	580
1656.	घट घट बसता देख रहा सब।	581
1657.	थके यहाँ हम सुर ना बजते।	581
1658.	प्यार मिले महके यह बगिया।	581
1659.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	581
1660.	हरि हरि कहते बीते जीवन।	581
1661.	चाहा अच्छा बनना न बने।	581
1662.	छिपा कहाँ हरि खोज जतन से।	581
1663.	ओम कहो हरि ओम कहो मन।	581
1664.	मोहि अपनी शरण में ले लो।	582
1665.	तुम कहाँ छिपे मेरे छलिया।	582
1666.	क्यों भागे मन पीछे पीछे।	582
1667.	चल चल गिरा मैं थक चुका।	582
1668.	उड़ता जावे मन ना ठहरे।	582
1669.	जीवन तेरा ना यह मेरा।	582
1670.	हरि तुम मोहि नाहिं बिसारो।	582
1671.	मन नहीं कर तू शिकायत।	583
1672.	जिन्दगी के गीत में प्रभु।	583
1673.	चरणों में तेरे।	583
1674.	तुझे राम कहें या श्याम।	583
1675.	अश्रु से पूरित नयन हैं।	583
1676.	आँसू का हार चढ़ाऊँ।	583
1677.	दे दो हमें प्रभु छांव तुम।	583
1678.	अर्चना प्रभु की करो मन।	583
1679.	रूकना कभी होता नहीं।	584
1680.	तुम मेरे हम भी तेरे हैं।	584
1681.	प्यार करें तुमसे न किसी से।	584
1682.	तुमसे कुछ भी ना शिकायत।	584
1683.	सम्बन्ध यहाँ बनते मिटते।	584
1684.	ईश मन्दिर में जगह दो।	584
1685.	जग से प्रीति करे दुख होई।	584
1686.	मन हुआ बैचेन पागल।	584
1687.	प्रभु जग में अब ना उलझाओ।	585
1688.	करो कृपा ईश्वर तुम मुझ पर।	585
1689.	तुम ही रहो प्रभु मैं ना रहूँ।	585
1690.	प्रभु तुम्हारे बालक हैं हम।	585
1691.	डर लगता यहाँ अकेले में।	585
1692.	जायेंगे कट दिन यह सारे।	585
1693.	यह खेल सबको खेलकर।	585
1694.	शक्ति दो जग के रचैया।	585

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
1695.	तेरे चरण पड़े हम।	586
1696.	मन जब भी हो जाये उदास।	586
1697.	बालक हम हैं तेरे ईश्वर।	586
1698.	कितने आंसू बहे धारा पर।	586
1699.	चरणों में हरि पड़ते तेरे।	586
1700.	शरण अपनी राम रख लो।	586
1701.	नीर अखियों से निकलते।	586
1702.	तू हमें दे या कुछ न दे।	586
1703.	गीत उसी के गा ले मनुआ।	587
1704.	हरे राम रामा हरे राम रामा।	587
1705.	मेरे नाविक भूल मुझे ना।	587
1706.	दिल में क्या चुभन छिपी।	587
1707.	मन उड़ चल जहाँ पिय छिपे है।	587
1708.	हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई।	587
1709.	तेरी रहमत का प्यासा मैं।	587
1710.	कैसे इस दिल को समझाये।	588
1711.	मन नहीं लगता यहाँ पर।	588
1712.	चल निभा दे बन न पागल।	588
1713.	बन कर लहर बहते रहो।	588
1714.	कब तक इस मन को बहलाऊँ।	588
1715.	जीवन रूठा कैसे माने।	588
1716.	बिन उसके न कटते बन्धन	588
1717.	प्रभु जी राखना मेरी लाज	588
1718.	नहीं दीखता कोई हमको किनारा।	589
1719.	नयना यह नीर गिराये।	589
1720.	कितना रोता मैं चिल्लाता।	589
1721.	हरि मन नही लागता मेरा।	589
1722.	ज्ञान ध्यान मैं कुछ ना जानूँ।	589
1723.	अपने अपने ढग यहाँ है।	589
1724.	सुख दुख का यह सारा खेला।	589
1725.	मन ढूंढ रहा किसको पगले।	589
1726.	ज्ञान ध्यान सब बहता जाये।	590
1727.	मर्जी तेरी बालक तेरे।	590
1728.	पूछ रहे प्रभु तुमसे बोलो।	590
1729.	नयना बरसें मेरे मोहन।	590
1730.	जीवन थोड़ा बीतेगा यह।	590
1731.	मनुआ चैन न पाये राम।	590
1732.	अनहद हरदम बजता रहता।	590
1733.	एक गम हो तो कहे	590
1734.	जीवन है चलना ही होगा।	591
1735.	जिन्दगी यह भागती।	591
1736.	अच्छा किया जो भी किया।	591
1737.	देखो दुनिया का मेला।	591
1738.	मन करे किससे शिकायत।	591
1739.	ज्ञानी करे ज्ञान की बाते।	591
1740.	मन मन्दिर में दीप जलाले।	591
1741.	बसो मेरे नयन में।	591
1742.	हरि तुम बिन मन चैन न पावे।	592
1743.	हरि तुम सब मैं कुछ भी नाहीं।	592
1744.	श्वासों का यह खेल चल रहा।	592
1745.	मन हरि में तुम प्रीति बढ़ाओ।	592

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
1746.	मुझको ना भूलो गिरधारी।	592
1747.	कितना खोया कितना पाया।	592
1748.	दीखे ना कुछ नयना छलकें।	592
1749.	बहे अश्रु इनको लख लो।	592
1750.	जानता मैं कुछ नहीं हूँ।	593
1751.	तेरी रजा में रहें खुश ।	593
1752.	मर्जी अपनी चलती ना प्रभु।	593
1753.	सुख दे दुख दे मर्जी तेरी।	593
1754.	कण कण बसा जब राम है।	593
1755.	मर्जी तुम्हारी मालिक।	593
1756.	निकले आँसू को ना देखा।	593
1757.	हरि तुम बिन जग काहे सुमरूँ।	594
1758.	सब गीत ईश्वर के यहाँ।	594
1759.	खोजता पागल किसे तू।	594
1760.	कैसे इस दिल को समझाऊँ।	594
1761.	बैचेन दिल खोजे कहाँ।	594
1762.	इतना रूखा क्यों दिल मेरा।	594
1763.	तुझ चरणों में अश्रु चढ़ाऊँ।	594
1764.	बालक तेरे प्रभु जी हम है।	594
1765.	तेरे बिना जी रहे हम।	595
1766.	इस मन की मैं किसे सुनाऊँ।	595
1767.	पागल भटक भटक जाये मन।	595
1768.	हरि मेरे अन्तस बस जाओ।	595
1769.	मन भज ले तू हरि का नाम।	595
1770.	कितने रूप धरो गोबिन्दा।	595
1771.	पीड़ा कितनी दर्द यहाँ पर।	595
1772.	चाह मुक्ति की रखे मुक्ति ना।	595
1773.	नयनों से नीर गिरें झर झर।	596
1774.	कितने भटके ईश जगत में।	596
1775.	अपनी शरण में राख हरि तू।	596
1776.	नयना मेरे नीर गिरायें।	596
1777.	रोते जीवन में रंग भर दो।	596
1778.	वह नहीं कहते हम जपें हैं।	596
1779.	बह रहे हैं नीर श्यामा।	596
1780.	हे राम राम हे राम राम।	596
1781.	गिरते आंसू बूझे न बात।	597
1782.	पुष्प सूखे नीर नयना।	597
1783.	किसका सहारा ले यहाँ।	597
1784.	बिन हरि कृपा नहीं कुछ होई।	597
1785.	जी नहीं लगता यहाँ पर।	597
1786.	जानते कुछ भी नहीं।	597
1787.	पंख भीगे उड़ न पाये।	597
1788.	राम जपे बिन चैन न आवे।	597
1789.	ईश चरणों में बिठा लो।	598
1790.	राम रामा राम रामा।	598
1791.	सुख को खोजें उसे न पावे।	598
1792.	ईश कृपा करना तुम हम पर।	598
1793.	नीर मेरे गिर रहे है।	598
1794.	जो जला विरह में उसके।	598
1795.	न मिलो मर्जी तेरी है।	598
1796.	मुझको हरि तुम नाहिं विसारो।	598

क्र०	कविता का नाम	पृ० सं०
1797.	मैं हरि आयो शरण तिहारी।	599
1798.	पल पल यह परिवर्तित जीवन।	599
1799.	मन भूल जा मन भूल जा।	599
1800.	तेरी दया बिन चल न पाऊँ।	599
1801.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	599
1802.	तुम हरि राखो लाज हमारी।	599
1803.	बता कहाँ मैं तुमको पाऊँ।	599
1804.	पी बिन प्यासा भटक रहा मन।	600
1805.	सकल जगत का तू मालिक।	600
1806.	कितने छूटे कूल यहाँ पर।	600
1807.	चाहतें सब हो विसर्जित।	600
1808.	जाने बाला कुछ ना पूछे।	600
1809.	जायेगी कट जिन्दगी यह।	600
1810.	कुछ ना पूछा उसने मुझसे।	600
1811.	अपने आंसू किसे दिखायें।	600
1812.	नहीं सुनोगे तेरी मर्जी।	601
1813.	बहे नीर जब उसे पुकारो।	601
1814.	छोड़ सब जाते यहाँ पर।	601
1815.	मिलें छांव पावन हो यह मन।	601
1816.	नहीं मिले हमें किनारा।	601
1817.	समझ सके नहीं तेरे इंगित।	601
1818.	चरण पड़ा मैं चरण न दीखे।	601
1819.	तेरे द्वारे नाथ पड़ा हूँ।	602
1820.	तू मन शिकायत नही करें।	602
1821.	प्रभु तुम ही नाथ हमारे हो।	602
1822.	बनता तू है क्यो खामोश।	602
1823.	प्रभु मेरे दिल में आओ।	602
1824.	कैसे समझाऊँ यह मनुआ।	602
1825.	नयनन हरि छवि बसा बाबरे।	602
1826.	कितने छूटे कूल यहाँ पर।	602
1827.	बिन हरि भजन समझ नहिं आवे।	603
1828.	लहराये सागर लहराता।	603
1829.	जिसने प्रीति लगाई हरि से।	603
1830.	बोल न पाये पागल यह मन।	603
1831.	यह नीर गिरे तुझ चरणो में।	603
1832.	अपने बल नहीं चल सके हम।	603
1833.	प्रभु जी सुनो विनती हमारी।	603
1834.	बीते जनम नहीं मैं समझा।	603
1835.	तुम्हारे द्वार पर बैठे।	604
1836.	प्रभु दुख भंजक जग के पालक।	604
1837.	सबकी अपनी दौड़ यहाँ है।	604
1838.	चाहा जब उसने प्यार किया।	604
1839.	तुझ ओर निहारें आंखे अब।	604
1840.	हरि जप हरि जप हरि जप हरि जप।	604
1841.	मेरी नौका पार लगा दे।	604
1842.	कुछ समय की रात बाकी।	605
1843.	पगले निज मन ना समझाये।	605
1844.	तुमसे विनती नाथ करूँ मैं।	605
1845.	जगपालक प्रभु दुख के नाशक।	605
1846.	पिय बिन बता हसे कैसे हम।	605
1847.	सुपने बसन्त के नयनों में।	605

828

अर्चना कैसे करुँ मैं, पास में कुछ भी नहीं।
बन सकता बाती तेरी, भाग्य क्या मेरा नहीं।
चाह थी बाती बनूं मैं, बन दीपक मैं जलता।
मैं कहां जाऊं जगत में, मुझको मग न दिखता।
पाप क्या है पुण्य क्या है, जानता मैं कुछ नहीं।
अर्चना के फूल सूखे, क्या मिलोगे तुम नहीं।
चीखता चिल्ला रहा मैं, अंधेरे में भटकता।
अभागा मैं भाग्य से हूँ, कैसे पूजा करता ?
नयन से दो नीर गिरते, वह कथा सृजन करते।
इस कलेजे में चुभन दे, कौन सा छन्द रचते ?
तुम करुणा का भिखारी, बैठ दर पर रो रहा।
डूब भी तुझमें सका ना, बेबसी को कह रहा।
कौन जाने कब गिरे हम, हाय कैसी घुटन है ?
चल रहे बस चल रहे है, पूछता व्योम चुप है।
प्यार के दो गीत गा कर, ना सके तुमको रिझा।
आँख के यह अश्रु सूखे, विनय है पथ को सुझा।
आँसूओं को देख कर भी, ना धरा विचलित हुई।
जीवन जिया ना जी सका, कैसी नियति यह हुई।
तुझ चरण मिलते मुझे तो, अश्रुओं से सीचंता।
क्या गुनाह मेरा बोलो, छिप गया क्यों पूछता ?
कौन सा जीवन प्रयोजन, तुम बिना इस जगत में।
तेरे पग की रज चाहूँ, प्यार में मिटूँ तुझ में।
ढुलकते आंसू हमारे, वंचित चरण से सदा।
अबल हम है तुम सबल हो, अज्ञान पूरित सदा।
अर्चना मेरी अधूरी, थाल में दीपक नहीं।
गिर रहा हूँ गर्त में मैं, थाम लो विनती यही।

829

मैं तुम्हे पुकारुँ न आओ, काहे को यह खेल रचाओ?
शून्य–शून्य बन कर रहते, काहे फिर यह सांग रचाओ?
जन्म–मृत्यु का खेल रचाया, इसमें कौन मजा सा आया?
सुख–दुख की इस लीला को रच, कैसा यह संसार बनाया?
जल–थल–नभ सब जगह तुम्ही हो, सभी जगह राज्य तुम्हारा।
हर सांसों में गूंज रहे हो, फिर भी पीड़ित है जग सारा।
हे दीनबन्धु तुम कृपा करो, हम सब तो हैं तेरे बालक।
जीवन के तुम्हीं खिवैया हो, और तुम्हीं हमारे हो रक्षक।
मैं कहाँ–कहाँ जी बहलाता, मन मेरा है उड़–उड़ जाता।
तुम्हीं बता दो जाऊँ कहाँ, जी में कुछ भी समझ न आता।
जीवन की अन्तिम सांसों तक, बस रहूँ समर्पित तुझमें ही।
बस इतना मुझको सम्बल दो, मिट सकूँ डगर पर तेरी ही।

830

मेरे अन्तस में बस जाओ, मुझको खूब रुलाओ।
मेरी सुधि को हरि ले लो तुम, मोहि नहीं विसराओ।
निशदिन देखूं बाट तुम्हारी, ऐसी ज्योति जगाओ।
छिपे कहाँ वंशीधर तुम हो, अपनी वंशी बजाओ।
जीने का संग्राम छिड़ा यहाँ, इससे मुझे बचाओ।
मेरे सब अरमान मिटे हैं, अपनी शरण लगाओ।
तुम बिन काहे मैं जीता हूँ, बिछड़ो ना आ जाओ।
तुम बिन नैना नित–नित रोवे, पागल प्रीति बढ़ाओ।
तुम बिन जग में कुछ नहीं भावे, तुम अब तो आ जाओ।
भटक–भटक मन यह हरि जावे, और नहीं भटकाओ।
जीवन क्यों है समझ न आवे, मतलब कुछ समझाओ।
यह विनती मेरी तुम सुन लो, हरि मोहि न विसराओ।

831

हरि भज हरि भज हरि भज मन तू, वह छिपा हुआ मन जप ले तू।
जग में भटका चैन मिला ना, मन बसा हरी इस दिल में तू।
सारा जग पागल है धोखा, हरि बिन पार न होवे नौका।
बैचेन न हो जीवन थोड़ा, मान ले मन दे उसे मौका।
वह आदि अन्त सबका स्वामी, वह ही सब जग का है दानी।
जाये कहाँ पागल तज उसे, हरि चरण चढ़ा नयना पानी।
जीवन थोड़ा हरि संग गुजार, उसके ही संग बहती बहार।
सिर द्वार उसी के रख दे तू, दे न दे मर्जी उसकी प्यार।
हरि भज ले शान्ति छिपी इसमें, जग के टूटे सारे सुपने। हारे
को हरि का नाम यहाँ, बल कितना मन क्यों ना माने। बन
दास हरी का कटे सफर, बहता जा बन कर यहाँ लहर।
कुछ हाथ नहीं सब कुछ उसका, फिर भी पागल बन करे सफर।

832

भटकूँ चहुँ दिश ठौर न पावे, धीरज मोहि कौन बंधावे?
फीके लगते जग आकर्षण, तू अब मोहि काहे सतावे?
बहते नयना पीठ करी क्यों, पल–पल में हम तुझको रटते।
निर्मोही बन मुझको छलते, कैसे कहूँ शब्द न बनते।
सुधि ले लो असहाय हुए है, सम्बल सारे टूट गये हैं।
गिर–गिर कर मैं चलता पथ पर, पग यह मेरे शून्य हुए है।
पी–पी रटे पी नहीं आवे, कैसे हम मन को समझावे?
बही जा रही यह तो गंगा, अब अपने में तुही समावे।
अँखियों से बरसात बरसती, पी के आने को वह तकती।
फिर भी वैरी वह ना आवे, करुँ समर्पण आशा तकती।
खूब रुलाओ मैं भी रोऊँ, रोने में आनन्द मनाऊँ।
इससे वंचित मत कर देना, सब निधियां मैं इसमें पाऊँ।

833

तुम मुझसे आँखें मत मूंदों, जग पालक हे जगदीश्वर।
करुणा का मैं हुआ भिखारी, अनजाने मग का ईश्वर।
यह झर–झर आंसू गिरते हैं, बोलो इनका मोल नहीं।
तुझ बिन सूनी लगती दुनिया, जीवन में अब जोश नहीं।
सूखा पत्ता हुआ डाल का, इधर–उधर गिर पड़ता हूँ।
किससे जग में करें शिकायत, गिर उठ कर रो लेता हूँ।
मन्दबुद्धि अज्ञानी मैं हूँ, तुमसे ही वर ले आया।
क्यों मेरा उपहास उड़ाओ, बंधे नियम से चल आया।
संजो–संजो कर मीठे सपने, जीवन सारा काट दिया।
रहा तरसता एक बूंद को, अमी न मुझको सुलभ हुआ।
रहे गीत हम गाते तेरे, इसी खेल को खेले चल।
इसी आस में जी लेंगे हम, दिल तेरा कब जाये पिघल।

834

हो सका ना तृप्त जग में, उस पार को ना जानता।
क्यों मन नहीं लगता यहाँ, उस पार उड़ना चाहता।
यह कदम तो है बहकते, खामोश दिल यह रो रहा।
थाम लो हम सफर मेरे, ना मोह जीवन से रहा।
सूनी–सूनी आँखे है, सब ओर रेगिस्तान है।
ऐसे में जाऊँ कहाँ मैं, दिन भी काली रात है।
मैं ज्ञान से वंचित रहा, पथ में भटकता ही रहा।
कौन सी थी प्यास मैं जो, लेकर सदा चलता रहा।
तुम न होते मीत मेरे, कौन दुआयें मांगता?
जिन्दगी लुटती रही पर, कुछ नहीं मैं बोलता।
प्यार के दो गीत सुनने, को तरसता यह मन रहा।
मैं कहाँ जाऊँ भटकता, ये मन रुदन करता रहा।

835

आंसू की कीमत जानो क्या, बेमौल ढुलकते ढर–ढर है।
अपनी दुनिया में तुम खोए, ना तुमको हमसे मतलब है।
हम अपने मन को बहलाते, तुम कहते हम सुपने बुनते।
पीड़ाओं से दिल जख्मी है, तुम कहते फिर क्यों ना रोते?
टकटकी लगा कर देख रहे, नम आँखें नहीं हुई तेरी।
जग के आंगन में डोल रहा, क्या तेरी मेरी मजबूरी।
चल गा ले संग मेरे भगवन, हम भुला सके अपने कुछ गम।
तेरे नयनों में झांक रहा, सब बीत रहा मेरे भगवन।
गिर–गिर के चलते रहे यहाँ, पहुँचे ही ना हम मंजिल पर।
आँखे निहारती रही सदा, रोया मैं तुझको विसराकर।
किस चितवन से तुझको देखूँ, हम ठगे–ठगे से जाते हैं।
तुझ मुरली की धुन सुनने को, हम दौड़े–दौड़े भागे है।

836

नयना मेरे रिमझिम बरसे, तुम बिन मेरी छतिया धड़के।
दर्शन की मैं प्यास लिये हूँ, जन्म–जन्म से जियरा भटके।
बीती बातें कुछ न जानूं, समझ नहीं कुछ रोना जानूं।
अब तो थाम मुझे ले निष्ठुर, प्यार के गीत सुनाए जानू।
रोया बहुत–बहुत भटका हूँ, कही मुझे ना मिला सहारा।
जीवन सारा बीत गया है, चल–चल कर मैं अब हूँ हारा।
क्या गुनाह मेरे थे प्रभु जी, ठोकर खाता तुझसे बिछुड़ा।
जीवन की खोई सुगन्ध सब, दुख को झेल रहा यह जिवड़ा।
तुझ बिन जीना कैसा जीना, तुझ बिन मुझको कुछ न चीन्हा।
अन्धी चाहत को लेकर, जन्म बिताया कुछ न कीन्हा।
जीवन की अब शाम हुई है, मेरे निष्ठुर कुछ तो बोलो।
तेरी ओर बढ़ा मैं आता, थोड़ी सी आँखें तो खोलो।

837

बनना मिटना खेल यहाँ हैं, जान नहीं मन धीरज धरता।
पेट नचाता प्रतिपल इसको, आशाओं में खोया रहता।
तेजी से पल गुजर रहा हैं, नाता किससे जोड़ रहा है ?
ईश्वर में तू रम जा प्यारे, यह शरीर भी छूट रहा है।
जीवन में दुख तो आयेगे, तुझको बहुत सतायेंगे।
यही जिन्दगी का तो तप है, धैर्य धर प्रभु को पूजेंगे।
सब कुछ जाता छूट यहाँ हैं, किससे नेहा यहाँ लगायें।
पल दो पल का खेल–खेलकर, चलो यहाँ से कूद लगायें।
नयनों में है प्रेम जगाकर, घूमों इस जग के पर्दे पर।
इसी भूख से पीड़ित यह जग, देख रहे वह आंसू भर कर।
चलते जाओ गाते जाओ, पगडण्डी फिर नहीं मिलेगी।
देख–देख तू खूब देख ले, प्यास यहाँ ना कभी मिटेगी।

838

भक्त कहें हम किसे जगत में, इच्छाओं की होड़ लगी है।
उनको पूरित करने को वह, देते रहते यहाँ बली है।
नयना रोए क्या समझाऊँ, कैसी विचित्र यह दुनिया है।
औरों का शोषण करके भी, क्यों हाय यहाँ हम जीते है ?
योग्य नहीं मैं भक्त बनूँ, शरणागत अपनी ले लो राम।
दिक्भ्रमित हुआ मैं डोल रहा, तुम्हीं सम्भालों मेरे राम।
यहाँ विवशता की चक्की में, हरपल मैं पिसता रहता हूँ।
कर्मो के बन्धन में मैं हूँ, प्रतिपल ही फंसता रहता हूँ।
ग्यान ध्यान अब तुम्हीं सिखा दो, पाप पुण्य का भान करा दो।
मुझ अबोध बालक को प्रभु तुम, अपने मग की राह दिखा दो।
जय श्री राम जय श्री राम, तेरे ही गुण गाये राम।
तुझमें सोये तुझमें जागे, तुझमें डूबे जय श्री राम।

839

किसकी आँखें करे प्रतीक्षा, निष्ठुर होकर वह बैठा है।
पथरा जायेगी यह आँखें, सोच में मनुआ तू बैठा है।
इन्तजार की घड़ियाँ मुझको, दिन और रात जलाती मुझको।
जाये जीवन प्रेम नहीं हैं, जीवन की अब चाह न मुझको।
रो–रो हार चुके यह नयना, इनको दोष न तुम अब देना।
मिलने का अवकाश न तुमको, चाहत अपनी पूरी करना।
मैं पागल मतिमन्द हुआ हूँ, तुम हो सूर्य गगन के प्यारे।
हमको जीवन में रस ना है, अब तो तेरा विरह पुकारे।
चोटों पर चोंटे तुम देते, फिर भी मन ना कुछ भी पूछे।
सता रहे मुझको तुम क्यों हो, बुद्धिहीन प्रभु तुमसे पूछे ?
बुद्धिमान तुम मूरख मैं हूँ, करो जुगत तुम प्रभु जी ऐसी।
थिर हो जाये आँखे तुझमें, चाह नहीं अब कोई ऐसी।

840

हो जगत के ईश तुम तो, तुम बता दो क्या करुँ मैं ?
क्या प्रयोजन है यहाँ पर, होता हूँ बैचेन क्यों मैं ?
तन हुआ बेकार मेरा, दिल यही टूटा हुआ हैं।
किस झरोके से मैं झांकू, दिल मेरा लगता नहीं हैं।
नाथ हो सारे जगत के, क्यों हुए अनाथ हम फिर ?
नीर सूखे है नयन के, रो नहिं पाते है हम फिर ?
तुम दया का दान दे दो, मार्ग भूले तुम चला दो।
सब तरफ दीखे अन्धेरा, प्रकाश की तुम झलक दे दो।
अर्चना आती नहीं है, मूर्ख हूँ मतिमन्द हूँ मैं।
जन्म तूने क्यों दिया जब, न जगत के योग्य हूँ मैं।
तुम जगत अपना सम्भालो, है मुझे इसमें नहीं रस।
नीर आँखों के तो देखो, मैं जरा में हूँ गया फंस।

841

तुम आओ या ना आओ अब, तेरी हम बाट निहारेंगे।
जो धधक रही पीड़ा अन्दर, उसमें मिटना स्वीकारेंगे।
सुपने संजोये तुझ संग थे, तूने निष्ठुर आँख न खोली।
मीठा–मीठा जहर आस का, देता रहा व किस्मत रोली।
सभी कहानी कहते–कहते, लुप्त हो गये जग के अन्दर।
गीत मही क्यों गाना चाहे, सब समाया मौन के अन्दर।
अच्छा और बुरा क्या जग में, तर्कों से सिद्ध रहे करते।
सुख की एक बूंद पाने को, जग से सदा रहे हम लड़ते।
मेरे सुपनों में तुम आये, सुपना फिर सुपना रह जाये।
आँख मिचौनी खेल रहा तू, निष्ठुर मेरी प्रीति रुलाये।
सब आस हमारी टूट गई, यह दुनिया मेरी रुठ गई।
जीता हूँ इन सांसों को ले, तुम भी रुठे क्या खता हुई?

842

कुछ गम लिये कुछ गम दिये, फिर दुनिया से ही चल दिये।
हम बना जग को तमाशा, खुद ही तमाशा बन गये।
खोजती आँखे फिरे क्यों, हो रही बैचेन यह क्यों ?
वह छिपे पर्दे के पीछे, मिलने को बेताब मन क्यों ?
बस हमारा है नहीं कुछ, धार के संग–संग ही बहते।
कौन सी मंजिल पता ना, टूटी आशायें लखते।
सुपने सुंजोते रात–दिन, पूर्ण करने को मचलते।
रुठी मेरी क्यों नियति है, हाय पल में वह विखरते।
आँख के आंसू न देखे, टीस दिल की तू न जाने।
कौन सी तू धुन में डूबा, ना जगत की पीर जाने।
देख ले निर्मोही छलिया, बेसहारा हम बने है।
तेरी रहमत के भूखे, देख ले हम तो जले है।

859-

कल्पना में जी रहे हैं, स्वप्न में चलते यहाँ।
दुख जगत के देख कर ही, आँख रोती है यहाँ।
पाये क्या नश्वर सब है, जल रहा सब लुट रहा।
हाय यह कैसी लचारी, जी विवश हो रो रहा।
ले भुलावा ले भुलावा, पथ यहाँ हम काटते।
छल रहे निज जिन्दगी को, कुछ नहीं हम जानते।
हम भटकते है जहाँ में, अज्ञान पूरित यहाँ।
ज्ञान की इक बूंद दे दो, पा सकें तुझको यहाँ।
तुमको पुकारे हम प्रभु, गीत में बस गा रहे।
आँखे उठाकर देख लो, जगत ठोकर खा रहे।
हम भिखारी है सदा से, पथ में प्रकाश कर दो।
अश्रु को स्वीकार कर लो, कुछ नहीं क्षमा कर दो।

860-

तुमको नमस्कार करते हैं, सृष्टि रचियता हम अज्ञानी।
चलता है आदेश तुम्हारा, कहते हैं हम खुद को ज्ञानी।
ठोकर खाता ज्ञान हमारा, बने हुए हैं हम अभिमानी।
फंसे–भंवर में घूम रहे हैं, तुमने भी क्या है यह ठानी।
दंश अनेकों लगते जग में, भाग रहे हम सुख के पीछे।
कब धुन हमें सुनाई देगी, प्राण लगेंगे तेरे पीछे।
कैसा हूँ अपना लो मुझको, मार्ग न कोई पाता हूँ।
भटक रहा अन्धी गलियों में, क्यों हाय तुम्हें मैं खोता हूँ।
जग के वैभव नीरस लगते, क्यों इतना शुष्क किया मुझको।
तुम चरणों में मैं बैठ सकूँ, दे दो वर निष्ठुर यह मझको।
अँखियां झरती है झरने दो, रोको न इसे यह सुख मेरा।
डूब में तुम जाने दो, पूर्ण कर दो यह काम मेरा।

861-

सागर है मुझको बुला रहा, पर तेरा पता न पाता हूँ।
इस मन को कैसे समझाऊँ, क्यों तुमको मैं ना पाता हूँ।
जग में आये नाचे गाये, पर यह वैभव रास न आये।
खोजे अँखियां भई बाबरी, तुझ बिन कैसे जश्न मनायें।
टूट रहे सब स्वप्न सुहाने, बन न सके तेरे दीवाने।
छलते रहे सदा जीवन को, वंचित न कर प्रेम दीवाने।
सरिता सागर से मिलने को, प्रतिपल ही वह वहीं जा रही।
क्या होगा दीदार न तेरा, मिटने की बस घड़ी आ रही।
नीरस रेगिस्तान हुआ मैं, प्रेम डगर की कहाँ खो गई।
दीप चला दो ढूंढ सकूं मैं, तुझ बिन मैं हूँ सुप्त हो गई।
आओ–आओ कुछ सुख दे दो, इन आँखों में मोती दे दो।
बिखरे मोती तो सुख उपजे, मुझको निष्ठुर यह वर दे दो।

862-

ढूंढ रहा हूँ बना बाबला, इस जग की पगडण्डी पर।
चलते–चलते खो जाते हैं, बीत रही है क्या दिल पर।
आशा के हम महल बनाते, स्वप्न सुनहले लेते हैं।
क्षण में टुकड़े–टुकड़े होते, संभल नहीं हम पाते हैं।
केवट बन तू पार लगा दे, डूब रही नौका मेरी।
भटक रहे इस भवसागर में, सुन प्रार्थना लो मेरी।
नहीं वन्दना के स्वर जानूं, फिर भी याद तुझे करता।
रख लेना प्रभु लाज यहाँ तुम, जीया पल–पल में भरता।
ले चल मुझे भुलावा देकर, इस भव के तू पार प्रभु।
लिपटी हैं पीड़ा की चादर, पल–पल रोएँ नयन प्रभु।
तेरी सृष्टि रचियता तू है, हम अज्ञानी बालक हैं।
दे सकें परीक्षा न तेरी, अँखियां रोती रहती हैं।

863-

अपनाने को क्या यह जीवन, दुख क्लेश से पूरित मन है।
बादल खुशियों के छिपे कहाँ, मग में पग–पग में कंटक है।
बुद्धिहीन हूँ चाह बड़ी पर, वैभव को मैं पीना चाहूँ।
कौन झरोखे भेजा मुझको, विवश हुआ कुछ कर न पाऊँ।
बना सका ना ऐसी दुनिया, यहाँ खुशी के बादल झरते।
प्रेम भरी हम डगर चले चल, खुशियों में ही तुझसे मिलते।
एक दर्द हो कहे तुम्हीं से, दर्दो का भण्डार भरा हैं।
पागल मनुआ खोज रहा हैं, कित जीवन आनन्द छिपा है।
अज्ञानी हैं रो लेते हैं, करवाते जो कर लेते हैं।
बहुत दूर तेरी सीड़ी से, दोष हमें ही सब मिलते हैं।
चलते–चलते रहें खोजते, तेरी यादों में मिट जायें।
झरते आंसू इन आंखों से, तेरा ही सन्देश सुनाएँ।

864-

ढलती जाती शाम यहाँ हैं, अंधियारे लीन हो रही।
खोज–खोज कर हूँ मैं हारा, अँखियां यह यहाँ रो रही।
बीच भंवर में नौका डूबे, नाथ तुम्हें क्या यह प्रिय है ?
सुधि मेरी तुम अब तो ले लो, बहते जीवन के पल हैं।
दुख की चक्की में पिस–पिसकर, जीर्ण शरीर है मेरा।
नीर नहीं आँखों के सूखे, करो अब उद्धार मेरा।
भूला भटका जग राहों में, अज्ञानी हूँ ज्ञान नहीं।
कैसी तेरी पूजा करता, जानू मैं वह विधि नहीं।
आँखों ने मोती बरसाये, धरती ने पीना जाना।
रहा देखता तुम ना आये, है मेरा यह अफसाना।
क्षमा मुझे दो करुँ वन्दना, आँखों के आंसू देखो।
मेरा क्या है दोष पता ना, आँख उठाकर तो देखो।

865-

जीवन की तज अभिलाषाएँ, आता तुम्हारी ओर प्रभु।
कुछ गीत गा सकूं बस तेरे, करुणा सागर मेरे प्रभु।
यहाँ विविधता रंग अनेकों, तेरे बिन सूना सब प्रभु।
आशाएँ बन–बन कर गिरती, नजर उठा कर देखो प्रभु।
लक्ष्यहीन बन घूम रहे हैं, इस जग के अन्दर हम प्रभु।
पथ को आलोकित तुम कर दो, बढ़े तुम्हारी ओर प्रभु।
भटक रहे हम भटक रहे हैं, जीवन बीत गया यह प्रभु।
तुझको हम पहचान न पाये, ऐसा जीवन भी क्या प्रभु।
कर सके अर्चना ना तेरी, उलझा जग में मेरे प्रभु।
उलझ–उलझ कर हम रोएँ है, पाया ना तुझको हे प्रभु।
क्षमा हमें तुम कर देना बस, अज्ञानी हैं घूमे प्रभु।
चलते जाये चलते जाये, चरणों तक पहुँचे हे प्रभु।

866-

अँखिया मेरी झर–झर बरसे, मिले न साजन मोय।
प्रीति भी उसकी प्यारी लागे, छोड़ न जाना मोय।
सोऊँ जागूँ बाट निहारुँ, तुझ बिन जियरा रोय।
अपना मुझको दास बना लो, वर यह दे दे मोय।
तेरा मन्दिर प्यारा लागे, नहीं छिटकना मोय।
अंसुअन की नहिं जग में कीमत, तू ना वैरी होय।
दीप जलाऊँ तुझ को पूजूं, कुछ न मुझसे होय।
फवक–फवक कर रोना जानू, कैसे मिलना होय।
मन्दिर द्वारे आन पड़ा हूँ, देखो निष्ठुर मोय।
हटा न मन्दिर से बस मुझको, बाकी हो सो होय।
अपना जख्म दिखाऊँ किसको, मुझे न देखे कोय।
तेरी याद सताये प्रतिपल, जियरा बैरी होय।

867-

निज दीप तू उर में जला ले, इस अंधेरे को मिटा दे।
उदास अँखियां देखती जो, गम उसी का कुछ मिटा दे।
सब की अलग है वासनाएँ, मग अलग तो दुखित क्यों है ?
देखों यहाँ संजोग पल का, ना पता फिर हम किधर है।
तू डूब उसमें ध्यान करले, सृष्टि जिसकी यह मही है।
यह नीर हम किसको चढ़ावे, पी रही यह सब मही है।
हम आ रहे ना बस हमारा, जा रहे ना जोर चलता।
बोलो अकड़ किसको दिखावें, पलक झपके दीप बुझता।
बहती नदी है अश्रुओं की, कित छिपी इसमें खुशी है।
यह जन्म बीता खोजते हम, चलन की आई घड़ी है।
मेरा नमन है इस जगत को, है यह दो दिन का डेरा।
तू ईश दे दे उसे खुशियाँ, दुख ने है जिनको घेरा।

868-

कर रहे है हम प्रतीक्षा, रुठ तुम हमसे गये।
नीर में डूबे हुए हम, गीत सारे खो गये।
अश्रु की बरसात होती, चाह की चिता जलती।
मांगती क्या जिन्दगी है, पीड़ दिल में सुलगती।
कौन से सुरों से गाऊँ, कैसे रिझाऊँ बता।
कंठ यह अवरुद्ध मेरा, जा रहा कित ना पता।
क्या नहीं अधिकार मेरा, गुनगुनाऊँ मैं हंसू।
जगत गलियों में भटकता, कर्म बन्धन में फंसू।
तुम हो आराध्य मेरे, फेर क्यों मुख को लिया।
प्रभु नीर बहते देख लो, दुख तुम्हें हमने दिया।
क्या करें हम विवश प्रभु हैं, ज्ञान से वंचित रहे।
नीर की गंगा में बहकर, खोजते बस फिर रहे।

869-

साथ रही है सदा उदासी, मर्म न जीवन जान सकी।
सरिता सागर में गिरने को, कूलों को ना भुला सकी।
अँखियों से बरसात हुई है, जिय की जलन न बुझा सकी।
आशा के ताने बाने में, फंस रोई सब गवां चुकी।
निष्ठुर तुझसे प्रीति हुई ना, जीवन सारा खो डाला।
कैसे मैं पाऊँगा तुझको, बिसर तुझे मैंने डाला।
लहरों पर मैं नाच रहा हूँ, विवश हुआ सा डोल रहा।
किन आशाओं को ले पथ में, इस जीवन से जूझ रहा।
किसको कहें यहाँ पर अपना, तन भी छूटा जाता है।
इस मृगमरीचिका में फंसकर, छूटा तुमसे नाता है।
ईश शरण पड़ते है तेरी, अज्ञानी है क्षमा करो।
तेरी यादों में डूबे हम, दो प्रकाश स्वीकार करो।

870-

अंधियारे में कुछ न दीखे, चलूँ यहाँ है कोई खींचे।
भई दीवानी पागल मीरा, अंसुअन से धरती को सींचे।
पागल बन हम घूम रहे हैं, इच्छाओं के दास बने हैं।
अंधियारे में किरण दिखा दो, हे ईश्वर हम सदा जले हैं।
अँखियां ढूंढ–ढूंढ कर हारी, छिपे हुए तुम कहाँ मुरारी।
अर्ध चढ़ा ना पाई अँखियां, सूखी झील यह अँखियां हारी।
अंधियारा ना मुझे डरावे, तेरे पथ पर नाचे गावे।
सब तज पर कर जीवन आशाएँ, गुण तेरे सदैव ही गावे।
तुझ तक चल कैसे मैं गाऊँ, पथ दे दो मैं तुम्हें मनाऊँ।
रोती अँखियां बाट निहारे, तुम बिन जीवन से घबराऊँ।
झील न सूखे इन अँखियों की, नहीं हमें कुछ और सुहावे।
विलग हुए हम भटक रहे हैं, कैसे तेरी ध्वनि को पावे।

871-

गठरिया पाप की शीश धरी, हरि तुझ तक मैं कैसे आऊँ?
आँखों से बरसात बरसती, आग बुझा यह क्यों ना पाऊँ?
इस धरती पर किया बसेरा, चले यहाँ ना हुआ सबेरा।
तुम प्रकाश की किरण दिखा दो, तम ने है बस मुझको घेरा।
कैसे कहूँ कुछ कह न पाऊँ, रो–रो अपना जी समझाऊँ।
क्या है गा अपराध हमारा, तेरे नहि दर्शन को पाऊँ।
धरती पर आवाज लगाई, दुग्ध बूंद तूने बरसाई।
रहे इसी चक्कर में प्रतिपल, भूल गया तू क्यों हरजाई।
रिमझिम–रिमझिम नयना बरसे, थके नयन हैं तुझको तरसे।
पगडण्डी पर छोड़ गया क्यों, कैसे मिले जो जियरा हरसे।
नमन करो स्वीकार हमारा, विवश यहाँ दिल मेरा हारा।
तुझ चरणों में डूब सका ना, बहती यह अंसुओं की धारा।

872-

सूना तुम बिन सब लागे है, जियरा तुम बिन ना लागे हैं।
अँखियों में मूरत है तेरी, याद तुम्हारी न जाये हैं।
हरपल अँखियां नीर बहाये, तेरे बिन मो कुछ न सुहाये।
थके नयन पर तुम ना आये, ज्योति हमारी बुझती जाये।
बनो न निष्ठुर हमें संभालो, ज्योति हमें भी तुम दर्शा दो।
भटका जन्म–जन्म में जियरा, इसकी अब तो फांस मिटा दो।
यहाँ विवश हम मग ना दीखे, नाम तुम्हारा कुछ ना सूझे।
कर्मबन्ध में बंधे यहाँ हम, कैसे इससे पीछा छूटे ?
नैन लगावे झड़ी अश्रु की, तुझ चरणों में अर्ध चढ़ावे।
पूछें दोष हमारा क्या है, जो तू हमको पीठ दिखावे।
रुठे ना हम हार गये हैं, शरण तुम्हारी आन पड़े हैं।
हटा न देना इस पथ से तू, चाह यही हम लिये हुए हैं।

873-

ईश्वर तुम हमें करो क्षमा, बालक तेरे नांदा है हम।
तुम ज्ञान पुंज अज्ञानी हम, तुम विसरे चलते लेकर गम।
पथ देखे नयना ना आये, सुधि हमरी काहे विसराये।
हम भटक रहे इस जग में हैं, तेरे पथ को ना क्यों पाये?
सब भाग रही है यह दुनिया, क्या हौड़ लगी है पाने की।
जीवन बीता ना तू दीखा, है तैयारी अब चलने की।
पाप पुण्य से पटी धरा हैं, मैं बन अविवेकी घूम रहा।
पाऊँ दर्शन दो किरण मुझे, चहुँ ओर तुझी को खोज रहा।
आया बसन्त पतझड लगता, आँखों का ना आंसू सुखता।
तेरे बिन जीवन क्या जीवन, सारा जग यह फीका लगता।
स्वीकार करो आंसू मेरे, गिर चरणों में रो लेने दो।
बहुत कृपा तेरी ईश्वर, अपने मन्दिर पर चढ़ने दो।

874-

रोई अँखियां तू ना आया, खोया पथ मैं क्यों ना भाया।
जग के स्वामी वश नहीं यहाँ, दे दो मुझको अपना साया।
हम अबल यहां रोना जाने, कैसे तुमको हम पहचाने?
अंधी अंखिया ना खोज सकें, दे किरन मुझे वह पहचाने।
जग दंश लगे ना आँख खुले, मन इसमें ही है भरमाया।
नगरी तेरी मालूम नहीं, यह सोंच–सोंच जी घबराया।
तुम देख हमें लो करुणाकर, हारी अँखियां तुमको तक कर।
ढल जाये यह ना शाम कहीं, करो कृपा मेरे ईश्वर।
अज्ञानी है दो ज्ञान हमें, जीवन में कुछ उल्लास जगे।
गा–गा कर तेरे गीतों को, खो जायें हम यह प्यास जगे।
स्वीकार करो आंसू मेरे, जो मिट्टी में हैं मिल जाते।
तुम दर्द हमें कितना ही दो, रुठो ना यह विनती करते।

891

हम है अबल–सबल तुम स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।
जीवन के दो पल जो पाये, करे अर्चना तेरी स्वामी।
बहती नदिया नहीं किनारा, चल–चल कर हे प्रभु जी हारा।
ज्ञान दीप दे पथ दर्शा दो, वंचित ना कर तू है प्यारा।
फूल खिले तेरी बगिया में, वह खिल–खिल कर क्या कथा कहें ?
ना जान सके हम अज्ञानी, आंखों का मोती सदा बहे।
अपनी शरण में ले लो राम, बिन तुझ सब कुछ है बेकार।
प्यासा कण्ठ अमी बरसा दो, चला रहा तू ही संसार।
अंखियां थकी नहीं तू आया, कर प्रपंच जग में भरमाया।
तुझ बिन जियरा यहाँ न लागे, कृपा करो मैं हूँ शर्माया।
दो दीपक नयनों के जलते, करे प्रतीक्षा फिर यह रोते।
टेढ़ी जीवन की राहो पर, यह ही है बस कुछ सुख देते।

892

चल उड़ चल उस पार गगन के, अंसुअन गिरते इन नयनों के।
खे दे मेरे नाविक नैया, हारा मैं कोशिश कर कर के।
रही अर्चना यहाँ अधूरी, कर न सकूं जीवन में पूरी।
अबल जान अपना लो प्रभु, देता क्यों ना यह मंजूरी।
ऊसर जमी फसल न उपजे, नीरस हृदय न रस वर्षाये।
कैसे डूबू तुझमें स्वामी, फसल उगे तुझमें खो जाये।
पंथ निहारुँ तू नहीं आवे, आँख मिचौनी खेल खिलावे।
प्यास जगा दे मेरे प्रभु जी, इसी प्यास में हम मिट जावे।
तेरी बतियां मन को भावे, और नाहिं कछु मोहि सुहावे।
दूर करो ना मोहि ईश्वर, हरपल तेरा ध्यान लगावे।
बना बावरा नचा सांवरा, अपनी सुधि–बुधि मैं विसराऊँ।
दो पल के जीवन में प्रियतम, तुझसे विलग नहीं हो पाऊँ।

893

तड़फ रहे देखे ना बोले, कैसी प्रीति निभाई प्यारे ?
जीवन का हर गीत बेसुरा, बता तुझको कैसे पुकारें ?
कितना रोया नहीं पसीजा, पत्थर ऐसा क्यों बन बैठा ?
लुटते रहे आंख के मोती, करम हमारा ऐसा रुठा।
प्यास लिये क्या यहाँ जी रहे, तू ही विमुख हुआ जब मुझसे।
तरस गये पर तुम न आये, बन कर मेघ नहीं क्यों बरसे ?
करो कृपा मेरे ईश्वर, अपने चरणों की रज दे दो।
महके यह जीवन की बगिया, इस वन्शी को तुम स्वर दे दो।
अगम अगोचर सृष्टि रचैया, साहस दो खे लें यह नैया।
हम हारे हैं, तुम्हीं उबारो, डूब रही यह मेरी नैया।
सुमरन के बिन है ठौर कहाँ, चहुँ ओर दीखता पानी है।
जपते–जपते निज को छोड़ा, तू ही जाने क्या ठानी है ?

894

बहते आंसू देख हमारे, रुठो ना तुम प्रभु जी प्यारे।
तुम्हें छोड़ कर कहाँ जायें, नहीं ठौर प्रभु जी हम हारे।
दर्शन दो मैं योग्य नहीं हूँ, बरसे नैना प्यास जगा दे।
डूब जाऊँ इस ही गंगा में, प्रभु मुझको बस यह ही वर दे।
करो कृपा प्रभु है अबोध, डगमग–डगमग पग होते है।
नहीं रुके बस चलते जाये, तुझ बिन सांसों को खोते है।
आये यहाँ न कुछ भी जानू, कैसे मैं निज को पहचानूं ?
ज्योति पुंज तू ज्योति जला दे, जीवन का मैं मर्म न जानूं।
नमन को स्वीकार करो प्रभु, रो–रो कर हम यही कह रहे।
दो पल का जीवन है यह तो, यह दर्द संग नहीं कहीं रहे।
तुम रुठो मैं किस पर रुंठू, यह तन ना मेरा अपना है।
आँख उठा कर लख तो लेना, जीवन जाता यह सपना है।

895

सब सोवें मो नींद न आवे, ईश्वर मो काहे सतावे ?
पाव पडू मैं कुछ न जानू, झर–झर नयना आंसू आवे।
बीत गये पल कुछ पल बाकी, काहे को अब देर लगावे ?
चरणों को छू मिट जाने दो, जीवन में कछु रास न आवे।
बहे यहाँ न कोई किनारा, चल–चल कर हे प्रभु जी हारा।
विनती मेरी तुम सुन ली जो, ना हमें है कोई सहारा।
भटका बहुत न तुझको पाया, चीखा बहुत यहाँ चिल्लाया।
स्वर मेरे मुझ तक न पहुंचे, घुटा यहाँ खुल रो ना पाया।
आंसू की बरसात बरसती, धक–धक मेरी छतियां करती।
कबहुँ मिलोगे हे मनमोहन, देख लो मुझको कुछ न कहती।
मान दिया जो था ना काबिल, करी शिकायत तुझे न पाया।
बंधा कर्म के बंधन में मैं, इन सबसे मैं छूट न पाया।

896

कैसे गाऊँ गीत तुम्हारे, हुई अभागिन तुम बिन प्यारे।
कंठ मेरा अवरुद्ध हुआ है, बता मुझे अब कौन उबारे ?
टूटी आशा घिरी निराशा, अंधियारे में मन डोले है।
कैसे पाऊँ तुझको प्रियतम, नीर गिरे कुछ न दीखे है।
अंखियों से बरसात बरसती, पल–पल तुझको याद करें हम।
सूनी आँखें खोजे तुमको, कैसे हैं फरियाद करें हम।
बीत गई यह सारी उमरिया, पाऊँगा क्या तुम्हें संवरिया ?
इस दो पल के जीवन में भी, खोया तुमको फूटी गगरिया।
तरसी आँखे तुम्हें न पाया, जीवन हैं निज से शर्माया।
जबसे बिछुड़े तुम हो प्रियतम, रुठा है अपना ही साया।
कैसे भव को पार करेंगे, चलन न जानू मैं इस पथ की।
लख लो हमें चाह यह मन की, सुधि है हमें नहीं अब तन की।

897

कितना चले मगर ना पहुँचे, जाती ले धारा हमको।
सुन न सके धारा की सरगम, यह क्या कहती है हमको।
चलो यहाँ चलना मजबूरी, बहो बह कर ले सबूरी।
मुक्ति ना है यहाँ कोई भी, जानो तो करो सबूरी।
सपनों के हम जाल बुन रहे, उलझते रहे निशदिन ही।
पल दो पल को मुक्त हुए ना, बने विवश रोए हम ही।
क्यों बन्धन में बंधे हुए हैं, छिपी मुक्ति की अभिलाषा।
कितना टूटे हाय जगत में, मिटी न मन की यह आशा।
पकड़ यहाँ क्या कूल छूटते, अपना क्या है गा जग में।
नहीं यहाँ पर जोर हमारा, जान मुक्त बह ले मग में।
ध्यान कर उस ईश्वर का ही, जो अनजान हुआ हमसे।
हम भटक रहे रोए नयना, ईश मिलोगे कब हमसे ?

898

सबको मिलता है नहीं श्रोत, इस ऊबड़ खाबड़ धरती में।
कितने ही बीज नष्ट होते, चाहत पर रुकें नहीं मग में।
यह अश्रु मांगती है धरती, तू पिला इसे अंखियां रोती।
अपनी चलती है नहीं यहाँ, अनजान डगर नैया बहती।
कितने बुनते ताने–बाने, फंस सदा बिलखते आये हम।
दो शब्द प्रेम के पा न सके, अब शाम हुई सोयेंगे हम।
हैं कदम डगमगाते चलते, फिर भी हम चलते जाते है।
हम कहाँ गिरेंगे पता नहीं, अंखियों से आंसू गिरते है।
ऐसा क्या मेरा ऋण बाकी, जो चुका नहीं मैं पाता हूँ।
कर्मो के बन्धन में बंधकर, ना ईश तुम्हें लख पाता हूँ।
यह दीप बुझा जाता मेरा, चाहे सम्भालो ठुकरा दो।
न भूल सकें तुमको ईश्वर, इतना ही वर मुझको दे दो।

899

मन्द बुद्धि अज्ञानी हम हैं, कैसे बेड़ा पार करोगे ?
जीवन का सौन्दर्य खो गया, कैसे तुम श्रृंगार करोगे ?
सबल एक बस तुम्हीं लगते, फिर भी हमें नहीं तुम दिखते।
इस होनी को गले लगाये, जीवन भर हम रोते रहते।
तूने भी मुझसे मुख मोड़ा, जीवन भी है यह बस थोड़ा।
अश्रु को स्वीकार करो तुम, कर अनाथ क्यों मुझको छोड़ा।
एक शूल हो कहे यहाँ पर, तन शूलों से विंधा हुआ है।
प्रभु जी तुम मेरी सुधि ले लो, क्यों शिकवा यह हाय हुआ है।
आँखें देखे तू ना आवे, ना बसन्त जीवन में आवे।
जग की अंधियारी गलियों में, सब प्रकाश तू ही फैलावे।
नहीं कृपा तेरी सब सूना, हरपल बस पड़ता है रोना।
राम रखो अपनी शरणागत, यह जीवन हो जाये सोना।

900

किसके आगे व्यथा सुनायें, इन नयनों में आंसू आये।
पत्थर सा दिल लेकर बैठे, बता पिघल यह कैसे जाये।
पल–पल आशा में जीते हैं, लखे नहीं वह तो सोते हैं।
ऐसा निष्ठुर हुआ हाय वह, हम हरपल रोते रहते हैं।
दीप बुझा सदिया बीती हैं, मैं एक किरन को तरस गया।
कब तक मैं भटकूंगा प्रभु जी, जीवन सारा यह बीत गया।
ढूंढ रहा मैं नजर न आते, कैसा हमको खेल खिलाते ?
विरह अग्नि में जलूँ रात दिन, आँखों में आंसू वर्षाते।
इन मोती से आंसू लेकर, जीना चाहूँ सुधि विसरा कर।
इनको भी तुम छीन न लेना, डर लगता है हे करुणाकर।
जग वैभव से टूट गया रस, तेरे वैभव को ना पाया।
हाय अभागा हुआ जगत में, पीड़ा तुझे सुना ना पाया।

901

रुक मत समझ यहाँ बहता जा, तू है विवश यहाँ चलता जा।
कूल अनेकों आ छूटेंगे, मुक्त भाव से तू बहता जा।
पकड़ों कोई हाथ न आवे, काहे अपना जिया जलावे।
सबके अपने अपने सपने, पड़ उसमें क्यों चित्त दुखावे।
बह बस तुझको बहना होगा, रुका यहाँ तो रोना होगा।
पीछे से भी लहर आ रही, उसको भी मग देना होगा।
कितनी लहरें बही जा रही, पता नहीं मन्जिल भी क्या है?
गति में सागर लख ना पाती, जान न पाती किस्मत क्या है।
चाह मुक्ति की कहाँ मुक्ति है, छोड़ स्वयं बह यही मुक्ति है।
लहर बनी है पूछा किसने, मिटने से क्यों हाय डरी है ?
अन्तस देख सगर है सारा, फिर भी कांपे मनुआ हारा।
हमें सिखा दे अज्ञानी हम, बहे रजा में तुही हमारा।

902

तुम विमुख हुए हम टूट गये, अपनी दुनिया में भूल गये।
हम भुला नहीं तुमको पाये, इन नयनों में आंसू आये।
तू बता पुकारें हम कैसे, इन ऊबड़–खाबड़ रस्तों में।
डर हमको हर पल लगता है, क्या नहीं मिलोगे जीवन में।
मन्दिर मस्जिद में भी खोजा, गुरुद्वारे शीश नवाया है।
गिरजाघर में भी जा झांका, क्यों फिर भी तू न आया है।
जलते हर पल जल जायेंगे, क्या तुमको हम ना पायेंगे।
निष्ठुर ऐसे नहीं बनो तुम, अब तुम बिन न रह पायेंगे।
तुम रुठ गये किससे रुंठू, ना मुझे मनाता कोई है।
ऐसा दीपक भी क्या दीपक, न शलभ कोई भी आता है।
स्वीकार करो आंसू मेरे, अब चरणों को छू लेने दे।
इस जीवन की मिट जाये तपस, गिर चरणों में रो लेने दे।

903

कितना ही नाम जपेंगे, क्या छूटेंगे हम कर्मो से ?
हुए विवश बहते जग में हैं, आंसू बहते इन नयनों से।
समझाऊँ इस मन को कैसे, तुम छिपे मोहि न दीखे।
उलझ–उलझ कर गिरुँ जगत में तुम बिन मग मोहि नाहि दीखे।
स्वीकार करो मुझको हे प्रभु, अज्ञानी दिशाहीन बहते।
आखिर क्या दोष हमारा है, निशदिन हम चोटों को सहते।
बस जाओ तुम खो जाये हम, चाहत के तार सभी टूटे।
खोया बसन्त आया पतझड़, ईश्वर क्यों तुम मुझसे रुठे ?
पापों की लिये गठरिया हैं, निज उसमें हम दबते जाते।
सूनी आँखें खोजे मग को, पर निकल नहीं उससे पाते।
हे ईश हमें तुम पथ दे दो, क्या दोष हमारा पता नहीं।
तेरी चौखठ पर गिर जायें, है चाह यही फिर उठे नहीं।

904

किसको पकड़े किसको छोड़े, हाथ नहीं कोई आता है।
नभ में कितने रंग बिखरते, कौन–कौन सा मन भाता है।
देख–देख बह जाने दे सब, हर पल यहाँ बदलती दुनिया।
बन वैरागी जी ले जग में, बनती मिटती हैं सब कड़िया।
इन नयनों में स्वप्न संजोये, हरपल हम बढ़ते जाते हैं।
प्यासे मन की प्यास बुझाने, विष की घूट पिया करते हैं।
प्रेम गीत गा सुने यहाँ हम, सृष्टि घूमती दो शब्दों में।
भय से क्यों सिकुडे जाते है, आंसू गिरते इन नयनों में।
हम है अबल–सबल तुम स्वामी, घट–घट के हो अन्तर्यामी।
अपना दास बना लो प्रभु जी, ना हो जीवन की बदनामी।
हाय विवशता की ज्वाला में, निज को कैसे पार करेंगे ?
नीर बह रहा इन नयनों से, प्रभु जी तुम स्वीकार करोगे।

905

टप–टप गिरे नयन से आंसू, जीवन कैसे हाय तरासूं ?
तेरी यादों में खो जायें, इस जग में ना निज को फांसू।
डगमग नौका बही जा रही, किसी भंवर में खो जायेगी।
तुझसे नहीं मिले यह नयना, दन्श हाय यह ले जायेगी।
क्षमा मांगता हरपल तुझसे, तुझ पथ पर मुझको बढ़ने दो।
बसे रहो मेरे नयनों में, हे ईश्वर तुम मुझको वर दो।
तुझे खोजते खो जाये हम, अपनी सुधि को विसराये हम।
शलभ पतंगा प्रीति पुरानी, इसी प्रीति को दुहराये हम।
प्रीति मेरी न बुझने देना, चाहे जीवन को ले लेना।
थककर आन पड़ा चौखठ पर, हे ईश्वर न ठुकरा देना।
कहने को कुछ शब्द नहीं है, रिझा सकूं वह कंठ नहीं है।
करुँ अर्चना विधि से वंचित, कृपा करो बस अर्ज यही है।

906

अपनी–अपनी लिये कहानी, सब ही जीते हैं इस जग में।
जान पाया कोई यहाँ पर, फटते बादल क्यों खुशियों में ?
हुआ समर्पित बहा जा रहा, दिशाहीन नौका बहती है।
मुझे संभालो मेरे ईश्वर, निशदिन यह अंखिया रोती है।
समझ सके न समझ हमारी, अज्ञानी बन घूमे जग में।
कर्मजाल में फंसा हुआ मैं, झांकू बस तेरी आँखों में।
इस मन को कैसे समझाऊँ, रुठ गये क्यों ईश्वर मेरे ?
नीर नहीं आँखों का सूखे, कैसे है दुनियाँ के घेरे ?
जीवन का सन्ताप मिटा दो, निज चरणों में मुझे बसा लो।
भूल भुलैया में थक हारा, रुठो ना मेरी सुधि प्रभु लो।
ऋषी–मुनी सब ध्यान करे हैं, सब तेरा गुणगान करे हैं।
खड़ा एकाकी रोकर देखूँ, क्यों तुझसे हम दूर हुए है ?

923

हरि मेरे हिय में बस जाओ, पांव पडूं ना अब तुम जाओ।
अन्धकार को दूर भगा कर, ज्ञान दीप प्रभु तुम दर्शाओ।
सदा अर्चना करुँ तुम्हारी, पल भर को भी ना विसराऊँ।
पलको से मैं ढांप तुझे लूं, छोड़ मुझे ना मैं घबराऊँ।
पाप पुण्य मैं कुछ ना जानू, बस केवल मैं रोना जानूं।
अज्ञानी मैं कृपा करो तुम, और न कोई तुमको मानूं।
पार मुझे ले चल इस जग से, अंखियां रोए तुम बिन तरसे।
रुठो तुम न मेरे ईश्वर, बंजर धरती देखूं बरसे।
तेरी यादें हिया जलावे, और नहिं कुछ मोहि सुहावे।
बेदर्दी तुम बनो न ऐसे, ज्ञान नहीं कैसे हर्षावे।
सदियां बीत गई ना आये, तुम बिन दीपक कौन जलाये।
बीत रही यह जीवन घड़ियां, जिया बिन तेरे कुम्हलाये।

924

अर्चना तेरी करें हम, भटक इस जग में रहे।
अश्रु से पग धो सके ना, नीर नहिं मेरे रहे।
इस जगत में तुही आशा, ले निराशा डूबता।
तर सकूँ चाहूँ दिलासा, द्वार तेरा ढूंढता।
विनति को स्वीकार कर लो, अज्ञान को प्रभु हर लो।
आये पतझड़ में बहार, पीड़ हिय ईश सुन लो।
घूमते हैं इस जहाँ में, स्वप्न की दुनिया बना।
जुड़ न पाता भटक जाता, नहीं यह किस्मत बना।
न नजर कोई भी आये, जी चुराये न हमसे।
जी रहे इक आस पर ही, तुझ कृपा भी बरसे।
कन्टकों से मग भरा है, फूल भी यहाँ बिखरे।
हर सांस तुझको समर्पित, हम सदा तुझे सुमरे।

925

हरि बल नहीं तुझे मैं पाऊँ, चादर मैली मैं शर्माऊँ।
कैसे कह दूँ अपने हिय की, रोऊँ हरपल नीर बहाऊँ।
दे प्रकाश तो ही चल पाऊँ, वरना भटक–भटक मैं जाऊँ।
अंखियां हैं चहुँ ओर निहारें, बिना कृपा भव तर ना पाऊँ।
कुछ पल जीवन के हैं बाकी, काहे तुमने देर लगाई।
विरह अग्नि में भस्म हुआ ना, यह भी मुझको है दुखदाई।
हारा थका शरण तेरी हूँ, दूर न कर कृष्ण कन्हाई।
बुझे दीप में ज्योति जला दो, तेरी पूजा ही मन भाई।
रोये नयना तू नहिं आवे, कैसे दिल की प्यास बुझावे ?
बनो न छलिया प्रियतम मेरे, काहे मुझको तू तरसावे ?
पाव पडूं मोहि न ठुकरावे, सुफल यहाँ जीवन हो जावें।
जनम–जनम की प्यासी अंखियां, तुझ चरणों में नीर चढ़ावें।
ज्ञान नहीं अज्ञानी हूँ मैं, भूली इक कहानी हूँ मैं।
क्षमा करो ईश्वर तुम मेरे, तड़फ रहे हैं हम इस जग में।
पाप पुण्य सुख–दुख दुनिया के, अपने–अपने खेल रचाई।
व्याकुल मनुआ इसमें उलझा, हुआ विवश प्रभु मुझे बचाई।
तुम बिन मेरा जीवन सूना, रह–रह आता मुझको रोना।
मुझे छोड़ छिप गये कहाँ तुम, ढूंढ न पाया तेरा कोना।
कर अनाथ ना दास बना लो, जीवन की बगिया महका दो।
तेरे निशदिन गुण गाते है, कटे सफर करुणा दिखला दो।

926

अपनी–अपनी नियति यहाँ पर, अपने–अपने पैमाने।
मन तू क्यों बेचैन रो रहा, कोई तेरी ना माने।
हरि चरणों में ध्यान लगा ले, दुनिया दो दिन का मेला।
समझ यहाँ थिर ना है कुछ भी, मत कर तू मन को मैला।
यही सत्य बस वही सत्य है, लहर बना तू बहता जा।
जहाँ तुझे ले जाये नदिया, वश ना हरि गुण गाता जा।
इस नदिया में खेल खेल ले, भजन बिना नहीं चैन मिले।
सफर है कितना हम ना जाने, प्रीति बिना न फूल खिलें।
ध्यान ईश का सदा करो तुम, कभी न उसको विसराओ।
इन सांसों का वह ही मालिक, लगा सुरति तुम लग जाओ।
नौका पार करेगा वह ही, हम तो खेल खिलौने हैं।
दुख जब आता रो लेते हैं, जख्म दिखाते फिरते हैं।
जप उसको तू प्रीति बढ़ा ले, पथ वह ही दिखलायेगा।
जन्म–मरण का चक्र चल रहा, भय से पार उतारेगा।
अंखियन बसा उसी मूरत को, जपे जिसे सब ताप मिटे।
जोगन हो गई मीरा बाई, महल छोड़ हरिनाम रटे।
हरि–हरि रट लो हरि में डूबो, और कहाँ पर जाना है ?
छूटा जाता सभी यहाँ पर, दुनिया रैन बसेरा है।

927

तुम्हारे हम प्रभु बालक, दया अपनी सदा रखना।
यहाँ हम भटकते भगवन, हमें पथ तुम दिखा देना।
यह प्यासा कंठ है मेरा, नयन से नीर गिरते हैं।
हरी मुझसे नहीं रुठो, विनय प्रभु तुमसे करते है।
तुही माता पिता सर्जक, जगत का तू नियन्ता है।
अंधेरे से बचा लो तुम, मेरा तू ही दीपक है।
नहीं आंखे खुले मेरी, तेरा दीदार न होवे।
जला दे विरह की ज्वाला, उसी में भस्म तन होवे।
मचलते नीर आंखो में, सहारा ईश तेरा है।
बहता जाता नदिया में, नहीं जांनू किनारा है।

928

प्रभु दुख दूर करो सब हमरे, आलोकित हमरा पथ कर दो।
बालक हैं नादान तुम्हारे, अन्धकार का भन्जन कर दो।
दुखी हृदय को गले लगावे, भटक रहे जो इस जग अन्दर।
जीवन में हम फूल खिलावे, साथ रहे हम सदा निरन्तर।
मात–पिता तुम बन्धु सखा हो, कभी न भूले ऐसा कर दो।
सदा अर्चना तेरी करके, जग के कष्ट हरें तुम बल दो।
जब–जब हम पर संकट आवें, साहस हमरा कभी न जावे।
तुम राजा सारे जग के हो, सुख सब तेरे जग में पावे।
यहाँ प्यार का पाठ पढ़े हम, घृणा भाव को दूर भगावे।
जीवन की अन्तिम सांसों तक, जग को सुन्दर खूब बनावे।
नाम धर्म का लेकर ईश्वर, ना आपस में हम टकरावें।
तुम्हीं हमारे पालक सर्जक, इस जग को तू खेल खिलावे।
ऐसी गंग बहा दो ईश्वर, प्यार यहाँ नित बढ़ता जावे।
दो पल के इस जीवन में हम, शुभ कर्मो को गले लगावे।
तुम ही पीड़ हरो प्रभु हमरी, हम भी सबकी पीड़ मिटावे।
बढ़े सदा तेरे गुण गाते, तुझ सम्मुख हम शीश नवावें।

929

हरि बिन तरसत नयन हमारे, ज्ञान दीप को ईश जला दे।
मिट जाये अंधियारा सारा, करुँ अर्चना मुझे प्यार दे।
अगम अगोचर पार न तेरा, बिन तेरे हैं नहीं सबेरा।
कटें नहीं यह काली रतियां, अपना ले मुझे दास तेरा।
दो पल का जीवन ले आये, मेरे जीवन के तुम स्वामी।
नहीं भुलाना मेरे माली, कृपा करो तुम अन्तर्यामी।
मेरी अंखियां बाट निहारें, जियरा मेरा भर–भर जावे।
छोड़ हमें तुम कहाँ छिप गये, इस जग में ना हमें भुलावे।
जग की प्रीति सभी है झूठी, टूटी जाती सारी खूंटी।
तेरी यादों में खो जाये, पिला हमें तू ऐसी बूटी।
द्वारे तेरे खड़े हुए हैं, नजर उठा कर हमें देख लो।
प्रीति हमारी बढ़े निरंतर, दिल की बात हमारी सुन लो।
हरि–हरि जपे सदा इस जग में, दिल की बात हमारी सुन लो।
जीवन की मेरी पूजा हो, कभी न भटके कभी न विसरे।
मेरे सर्जक भूल न जाना, कभी नहीं मुझको विसराना।
अज्ञानी हम बालक तेरे, ज्ञानदीप तू हिया जलाना।
अन्धकार से ढकी चदरिया, थर–थर कांपे मेरी छतियां।

दो प्रकाश तुझ तक चल आयें, रो–रो हारी मेरी अंखियां।
इस विशाल जग के आंगन में, प्रभु तू ही मेरा सहारा है।
छोड़ न देना मुझे भंवर में, रो–रो कर तुझे पुकारा है।

930

कृपा करो तुम सुख के दाता, जीवन तुम बिन है दुख पाता।
रो रो हार गई यह अंखियां, छिपे कहाँ हो भाग्य विधाता।
मेरे जीवन के ओ माली, दुख से बचा आंख में लाली।
नहीं और रक्षक है कोई, पिला हमें तू मधु की प्याली।
चलते चलते जपते जपते, खो जायें तेरी यादों में।
तुम संभाल लेना हरि मुझको, ज्ञान नहीं है मेरे हिय में।
बालक हूँ बस क्षमा मांगता, अन्धकार में यहाँ भटकता।
कैसे पाऊँ पथ मैं तेरा, कुछ भी मैं हूँ नही जानता।
रोता हूँ बस रो लेता हूँ, तुझे पुकारूँ प्रियतम मेरे।
मेरा जिया हुआ है व्याकुल, काटो सारे दुख के घेरे।
भटक रहा अनजानी दुनिया, नीर बहाती हरपल अंखियां।
पार लगा दो मेरी नैया, बीत रही कुछ पल की घड़ियां।
शरण मुझे तुम अपनी रख लो, जिय मेरा यह भर–भर आता।
दास तुम्हारा पांव पड़ता, पिता तुही है तुम ही माता।

931

कितने बनते कितने मिटते, लिये हुए कितनी गाथा जग ?
मेरा मन बैरागी है अब, नहीं लुभाता है रब यह जग।
हम तो तेरी करें प्रतीक्षा, नयनों में आंसू आते है।
जल ही जल चहुँ ओर दीखता, नहीं किनारा हम पाते है।
शरण तुम्हारी पड़े प्रभु हम, ज्योति जला तुम में देना।
अज्ञानी हम बालक तेरे, जान क्षमा प्रभु हमको करना।
तुमसे आशा भटक रहे हैं, मेरी प्रीति निभा तुम देना।
रो–रो अंखियां हार गई हैं, हमें सहारा प्रभु जी देना।
पाऊँ मैं हमको पथ देना, जगत विषय में ना उलझाना।
तेरे ही हरपल गुन गाऊँ, चाहूँ यादों में मिट जाना।
करो कृपा तुम शक्तिमान हो, तुम्हें झुकावें प्रभु हम माथ।
दुष्कर्मो से दूर रहे हम, सद्कर्मो में हमें दो साथ।
तुझ झलक मिले फिर मिट जाये, हर फूल यहाँ पर खिल गिरता।
सुर बजे हिया में तेरे ही, ना मिटने की फिर है चिंता।

932

ताने बाने बुनते बुनते, बीत गया यह जीवन सारा।
प्रीति बढ़ा ना पाये तुमसे, ईश जिन्दगी यह मैं हारा।
जीवन के तुम सुप्रभात हो, दया होवे तब प्रकाश हो।
हाथ जोड़ कर करुं वन्दना, हृदय न तोड़ो तुम आशा हो।
कटी पंतग उड़ता इस जग में, कहां जा रहे जानत नाहीं।
सकल सृष्टि का तुही रचियता, भावे तुम बिन कुछ भी नाहीं।
अँखियां नीर गिराये हरपल, बीत न जाये घड़ियां तुम बिन।
कृपा सिन्धु जग के रखवाले, लाज रखो मेरी भी तू सुन।
खोज रहे इस शून्य गगन में, कहां छिपे कर मन ना मैला।
तेरी बन्शी के स्वर सुनने, प्राण पुकारें आओ छैला।

933

चाह तुम्हारे गीत गाऊँ, पल भर को भी ना विसराऊँ।
जग में घिरे प्रलोभन कितने, हरि मन को ना मैं भटकाऊँ।
मेरे देवता तुम ना रुठो, अपने चरणों में रहने दो।
बहते नीर पुकारें तुमको, गिरता हूँ मैं तुम सम्बल दो।
तू ही मेरा सृजनहारा, पार लगा दो मैं हूँ हारा।
कंठमेरा अवरुद्ध हुआ है, तुम बिन मेरा जीवन खारा।
दास बना लो ठुकराओ ना, कोई मेरा ठौर नहीं है।
कट जाये जीवन पतंग यह, तुम बिन मेरा मोह नहीं है।
सूखे फूल न आती पूजा, अंखियां रोवे तू क्यों रुठा ?
अपना तू पथ हमें दिखा दे, सारा जग यह लगता झूठा।
करो हमको स्वीकार प्रभु तुम, अंधियारा है कुछ ना सूझे।
तुम बिन ज्ञान नहीं पाऊँ मैं, कर कृपा मोहि सब कुछ सूझे।

934

तू सूने ना सुने है मर्जी, गीतों तुझे सुनाऊँ मैं।
जीवन का कतरा–कतरा दे, तेरे उपकार चुकाऊँ मैं।
मैं याद तुझी को कर रोता, मन भटक–भटक मेरा जाता।
कैसे यह बांध बिठाऊँ मैं, जग दौड़ धूप में यह फिरता।
क्या देख रहे है जग में सब, है इन्तजार किसका करते।
आने–जाने की दुनिया में, हम पेट न अपना भर पाते।
तेरी दुनिया में मैं आया, दिल लगा नहीं इसमें पाया।
खोया–खोया सा घूम रहा, इस जग में मैं तो भरमाया।
आशाओं का लिये पुलिन्दा, भ्रमण सदा करते रहते हैं।
अन्त डूब जाती यह गगरी, ठौर कहीं ना पा पाते हैं।
माना गीत मधुर है तेरे, क्यों मुझको यह रास न आये ?
बना दीवाना फिरता हूँ मैं, हरदम तेरी याद सताये।
इस पार न रस का जाम पिया, उस पार न जाने क्या होगा ?
निशदिन झरती इन अँखियों का, अन्जाम न जाने क्या होगा?

935

मन अतीत क्यों नहीं भुलावें, प्रभु के गुन तू क्यों ना गावे।
इससे प्रिय कुछ नहीं जगत में, हिया विचार कर अमृत पावे।
दुख सब विसरे अनहद जागे, बीते रैना भोर होय तब।
मगन होय यह मनुआ नाचे, सुने दूर से वन्शी धुन जब।
पल दूभर बिन बन्शी की धुन, ऐसी प्यास हिया में जागे।
हरि–हरि तुझे पुकारे हरपल, प्राण होय मेरे बड़ भागे।
मेरी प्रीति बढ़ा दो मोहन, जानूं ना कर्मो के बन्धन।
अज्ञानी कुछ ज्ञान नहीं है, प्यारा लागे तुमरा सुमरन।
भरी धूप तपती धरती है, चैन नाम से ही मिलती है।
मनुआ भटक–भटक प्रभु जाता, ना हो निष्ठुर यह गलती है।
भीगे हरपल प्राण तुझी में, सभी चाह हो ईश विसर्जित।
सोवे जागे बस तुझमें ही, तेरी धुन सुन होऊँ प्रफुल्लित।
बीत जाये हमारा जीवन, प्राण तुम्ही जीवन के सर्जक।
अपने द्वार विठा लो मुझको, नीर गिरे मैं तेरा सेवक।
थक–थक कर मैं टूट चुका हूँ, बल ना मुझमें हार गया हूँ।
गीत तुम्हारे घट में उतरे, चंद चकोर प्रीति भूला हूँ।
ऐसी प्यास बढ़ा दे प्रियतम, प्यास तुम्हारी में खो जाये।
प्यास रहे मैं रहूँ न बाकी, तू सागर सा बस लहराये।

936

जग में कोई साथ न देवे, जाये मुझे तू भी भूल।
कहाँ टिकेगा यह दिल मेरा, दे रहा क्यों इतने शूल ?
देखो बालक हम तुम्हारे, ना अतीत का ज्ञान हमें।
रोती रहती मेरी आँखे, दे दे अपना प्यार हमें।
तुमको सुमरूँ दुख से छूटूं, हिय में जलती आग गमे।
बरसो बादल बनकर प्रभु तुम, मुँह न मोड़ो लखो हमें।
एक आस तुझ पर ही मोहन, भटक रहे इस जंगल में।
बहती जो आसूं की गंगा, पहुँचे तेरे चरणों में।
हम है अबल कांपता यह दिल, लाज यह मेरी राख लो।
मेरे जीवन के तुम पालक, डूब रहा हूँ संभाल लो।

937

कैसे आऊँ मग में कांटे, हरि तुम बिन जियरा नहिं लागे।
ज्योतिपुंज इस जग के स्वामी, करो कृपा तब दुख सब भागे।
सूर्य चन्द्र नभ में तारागण, सकल सृष्टि करती परिकर्मा।
कैसे पाऊँ प्यार तुम्हारा, सफल होय जीवन के कर्मा।
बहते आंसू दर्द तुम्हारा, तेरे बिन यह जीवन हारा।
मात–पिता गुरु बन्धु सखा तुम, बढ़े कदम तेरे दरबारा।
अगर अगोचर पार न तेरा, कर प्रकाश मेरे घट भीतर।
करो कृपा पाये चरणा रज, जन्म–मरण का छूटे चक्कर।
जीवन के आनन्द तुम्ही हो, थके प्राण के मीत तुम्ही हो।
छूटे जाते सभी सहारे, करो पार खेवट तुम ही हो।
डोल रही है मेरी नौका, बीच भंवर में डूब न जाये।

हम निर्बल रो रो कर पूछे, जग में आये तुझ मर्जी से।
कर्मपाश में बंधे हुए हम, निकल न पाते इन घेरों से।
विनय सुनो मेरी जगदीश्वर, जीया मेरा आता भर भर।
दया सदा दिखलाते रहना, फुफकारें हरपल हैं बिषधर।
चल न पायें तुम संभालना, मत झोली को गले डालना।
दबे हुए निज की पीड़ा से, दुख मेरे ना भास कराना।
तेरे ही गुन गाते गाते, पार करें यह जीवन नदिया।
हरो नयन के आंसू प्रभु जी, रो रो तुझे बुलायें अंखिया।

952

इस ठगनी माया में पड़ते, तुमको विसरा जग में भूला।
मृगमरीचिका मोह न टूटा, निशदिन हमको लगते शूला।
पार लगा दो मेरी नौका, खेवट बन जाओ प्रभु मेरे।
हम अज्ञानी राह न जाने, तुमको मेरे प्राण पुकारें।
मेरे जीवन के सर्जक तुम, हमको तड़फाते क्यों हो तुम।
करो शान्ति हिया में वर्षा, भीगें प्राण तुझी में हरदम।
दुख–सुख के तुम खेल खिलाते, छिपे कहाँ तुम नहीं बुलाते।
हार गया तेरी लीला से, सूखे आंसू नीर न आते।
ठुकराओ मत हम बालक हैं, तू सारे जग का पालक है।
अन्धियारा पथ सूझे कुछ न, दीप जला दो हम रोते है।
लहरें डोल रही सागर में, अपनी–अपनी लिये कहानी।
तेरी कहानी हिय समाये, मिट जाये फिर सब नादानी।
नमन करो स्वीकार हमारा, बहे खूब आंसू की धारा।
तुम बिन जीवन बगिया में, फूल खिले ना दुख ने मारा।
अगम अगोचर पार न तेरा, भटक रहा मैं मनुआ बौरा।
भान संग हो जाये तेरा, मिट जाये जीवन का घेरा।

953

करुँ अर्चना नयन नीर से, भवसागर से पार लगावे।
तेरे गुन गाऊँ मैं हरदम, जगत कींच में नहीं फंसावे।
मेरे दाता मेरे स्वामी, कैसे अपना हिया दिखावे ?
जाता जीवन खिला न उपवन, कैसे मन को धीर बंधावे ?
तुझ नगरी का पथ ना जानूं, भटका बहुत ईश दुख पाऊँ।
कर्मो की जंजीर से जकड़ा, मुक्त नहीं इससे हो पाऊँ।
दास तुम्हारा मुझे बचा लो, अन्धियारा मोहि सूझे ना।
जनम–जनम से भटक रहा हूँ, अब तक तुमको मैं पाया ना।
रिमझिम–रिमझिम आंसू बरसे, बाट निहारुँ तू कब रीझे ?
मेरे तो आनन्द तुम्ही हो, होऊँ प्रफुल्लित जब तू रीझे।
हम है अबल परीक्षा मत लो, तुझ मन्दिर में बस रहने दो।
तुमको सुमरन कर सब भूलूं, झर–झर आंखों को झरने दो।
जग में आया कहाँ छिप गया, मेरा सारा चैन खो गया।
करो न वंचित निज ममता से, दे दो मुझको अपना साया।
भटकाओं ना द्वार पड़े हैं, झोली खाली नीर गिरें है।
अपना लो करुणा के सागर, तुमसे मेरी यही विनय है।

954

नयना रोवे तू नहिं आवे, कैसे मन की प्यास बुझावे ?
कर–कर जतन यहाँ मैं हारा, तेरे बिन कछु नहीं सुहावे।
बहें यहाँ न कोई किनारा, चल–चल कर मैं प्रभु जी हारा।
कृपा तेरी मिले तो स्वामी, फिर बीतेगा यह पथ सारा।
इस मन को कैसे समझाऊँ, बस तेरा ही ध्यान लगाऊँ।
पाप पुण्य सुख–दुख दुनिया में, हो असहाय नहीं छुट पाऊँ।
ज्ञानदीप हे ईश जला दो, मकसद जीवन का समझा दो।
छोटे से जीवन में प्रभु जी, गाये हम गुण प्रभु जी वर दो।
करुणा के सागर हो प्रभु जी, दुख का दरिया क्यों बहता है ?
हारे ऋषि मुनि ध्यानी सारे, मनुआ तो रोता रहता है।
सुख की बूंद छिपी तुझमें ही, बस इसको तुम ही वर्षा दो।
अंसुअन की गंगा में बहते, पार करो या चाहे डुबा दो।
जाने नहीं अर्चना विधि को, हम अबोध बालक है प्रभु जी।
शरणागत हम आन पड़े हैं, हमें संभालो हे ठाकुर जी।
सृष्टि तुम्हारी गीत गा रही, हे ईश्वर हम सुन न पाते।
यहाँ कुचक्रों में पड़–पड़ कर, हाय तुझे हम विस्मृत करते।
पथ दो पथ दो भीख मांगते, खाली झोली राह ताकते।
फंसे विवशता की चक्की में, नहीं हमें क्यों प्रभु तारते।
अश्रु करो स्वीकार हमारे, हमरे कुछ भी पास नहीं है।
कैसे तुम्हें मनाये प्रभु जी, यह अपनी सामर्थ नहीं है।

955

हरि तुम आन मिलो अब मुझसे, मिलने को यह जियरा तरसे।
तुम बिन हरि यह जीवन सूना, हरपल मेरी अंखिया बरसे।
खोजा तुमको खोज न पाऊँ, पल–पल तेरी आस लगाऊँ।
नाचूं गाऊँ तेरे आगे, जीवन का आनन्द मनाऊँ।
पल–पल जाये नहीं तुम आये, अंखियां झर–झर नीर बहाये।
बने हुए कैसे निर्मोही, पथ मिलने का कौन दिखाये।
रुठे तुम हम किससे रुठे, बार–बार तुझको ही देंखे।
करुणा के सागर कहलाते, तुम बिन मो कछु और न दीखे।
नैना रिमझिम–रिमझिम बरसे, तुमको मिलने को यह तरसे।
ना हो बेदर्दी सांवरिया, पतझड़ बीते सावन बरसे।
कसक कलेजे की ना जाने, तुम बिन बता कौन पहचाने ?
चरणों में गिर रो लेने दे, मिट जायें सारे अफसाने।
तुम बिन सम्बल और न मेरा, कर अनाथ न दुख ने घेरा।
किरपा तेरी होवे स्वामी, मिट जाये जीवन का फेरा।
हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ हूँ, मुझको छोड न देना भव में।
हरि तू अब तो मुझको लख ले, डूबेंगे हम तुम बिन मग में।

956

करता मैं तुमको प्रणाम हूँ, सांस–सांस में तुम्ही राम हो।
लाज रखो हे तुम मन भावन, जीवन का संगीत तुम्ही हो।
तुमको कहाँ–कहाँ ना ढूंढा, तुम बिन मेरा जीवन सूना।
ज्योति जला दो मेरे हिय में, जगमग हो जीवन का कोना।
मैं सेवक तुम स्वामी मेरे, हरपल प्राण तुझे ही टेरे।
ना प्रभु मुझको तुम विसराओ, जग के दुख हमको है घेरे।
तुम दाता पर झोली खाली, पुण्य बटेरुँ कैसे माली।
पीड़ा के बहते सागर में, जाये ना आंखों की लाली।
मेरे जीवन धन प्रभु तुम हो, बिछुड़े तुम कैसे गम कम हो।
अन्तर्यामी घट की जानो, चाहूँ दया कभी ना कम हो।
अंधियारा डर मोहि लागे, भावे तेरे बिन कुछ नाहीं।
थर–थर मेरा जियरा कांपे, थाम मुझे ले ओ निर्मोही।
धूप दीप नैवैद्य चढ़ाऊँ, हरपल हूँ मैं तुझे मनाऊँ।
फिर क्यों मुझसे रुठे प्रियतम, तुम्ही बता दो मैं कित जाऊँ।
झर–झर बहते आंसू मेरे, चाहे पग धोवें यह तेरे।
कैसे तुझको हाय पुकारुँ, बस जाओ तुम हिय में मेरे।

957

बीत जाये सारी उमरिया, बजा–बजा कर यह इकतारा।
सुनूँ गाऊँ तेरे गीत को, नयनों से बहे अश्रु धारा।
जीवन की सारी आशायें, तुझ चरण में आये सिमट कर।
रोये अंखियां याद तुझे कर, यही चाह मेरी वन्शीधर।
रंग बिरंगी इस दुनिया में, न भटकाओ मुरली मनोहर।
तेरी छवि नैना बस जाये, मैं मांगू तुझसे यह ही वर।
प्राण पुकारें तुमको हरदम, तुम बिन जीवन भी क्या जीवन।
सांस–सांस में रम जाओ प्रभु, विनती मेरी सुन लो भगवन।
जीवन के है रंग अनेंको, अपनी–अपनी समझ बनी है।
आंसू बरसे रिमझिम मेरे, जीवन की सब सिद्धी तू है।
भरे न जीया रो लेने दो, गीतों को प्रभु गा लेने दो।

डूबूं मैं तुझ वन्शी सुर में, कुछ पल इनको न खोने दो।
तुम बिन कृपा न पूजा तेरी, आस कर रहे बहुत घनेरी।
दूर न तुम अपने से करना, रोती अंखियां है बेचारी।
अज्ञानी मतिमन्द मूर्ख हूँ, फिर भी तेरे बालक हम है।
ज्ञान दीप हिय में दर्शा दो, ना प्रभु हममें कुछ भी बल है।
कट जायें यह सारी रतियां, तुझे पुकारुँ बस सांवरिया।
चल–चल कर मैं हार चुका हूँ, अपनी छांव बिठा ले रसिया।
स्वीकार करुँ तेरी चाहत को, न विरोध कभी मन में आये।
डूबा रहूँ सदा तुझमें ही, जीया मेरा डर–डर जाये।

958

अन्धकार में दीप जला दो, पथ मिलने का तुम दर्शा दो।
रो भी सका न तुझ चरणों में, मेरा तुम यह दन्श मिटा दो।
पीड़ा के सागर में बहते, किन कर्मो के फल को लेते ?
अब भी मुक्त हुए न इनसे, सुधि मेरी तुम क्यों ना लेते ?
मुझे अनाथ करो न स्वामी, प्रभु हरपल मैं भजता जाऊँ।
कदम–कदम पर जियरा डरपे, कैसे मैं इसको समझाऊँ ?
भटक रहा चहुँ ओर जगत में, बता तुझे मैं कैसे पाऊँ ?
इन रोती अंखियों में प्रभु जी, मैं चाहूँ बसा तुझे जाऊँ।
घटते जाते यह जीवन पल, कहाँ छिपे मेरे जीवन धन।
हार गया हे मेरे स्वामी, करो कृपा अब मेरी भी सुन।
आंसू की झड़ियाँ तो देखो, अन्तस के क्रन्दन को निरखो।
बता पुकारें कैसे तुमको, मेरे जीवन धन तुम बरसो।
सुख–दुख आये नहीं भुलायें, जीवन नौका बहती जाये।
भूल भुलैया में प्रभु जी पड़, हम तुझको ना कभी भुलायें।
दो दीपक नयनों के जलते, पथ निशदिन वह किसका तकते।
अनजानी पगडण्डी देकर, प्रभु जी तुम क्यों मुझसे छिपते ?
विरह गीत मैं गाता फिरता, मन को मैं समझाता फिरता।
जग भंवर में डूब जाऊँ कब, नहीं किनारा कोई दिखता।
कर्मो की जंजीर बंधी है, आदि अन्त की कौन कड़ी है ?
पाप पुण्य में उलझा मुझको, कैसी रचना ईश करी है ?
तेरे ही गुण को मैं गाऊँ, तो ही इस भव से तर पाऊँ।
टूट गये है सभी सहारे, करो कृपा मैं तुझको पाऊँ।
तेरी चौखट पर बैठा हूँ, मुझको सदियाँ बीत गई हैं।
आये ना तुम मेरे साजन, आंखों से बरसात हुई है।
निष्ठुर न बनो तुम क्षमा करो, तुमने ही मुझको उलझाया।
अनजान डगर पर छोड़ मुझे, तुम छिपे कहाँ मैं घबराया।
हर पल आंखे ढूंढे तुझको, है चुभन नहीं तुझको पाया।
है तपस लिये दिल सुलग रहा, क्यों मेघ न तूने बरसाया।
मैं नहीं तपस्वी रोता हूँ, अज्ञान लिये मैं जीता हूँ।
कर्मो का जाल यहाँ फैला, ना निकल हाय मैं पाता हूँ।
हे ईश कृपा कर पथ दे दो, अज्ञान हमारा तुम हर लो।
यह भटक रहा जग में मनुआ, भटकन को हे प्रभु जी हर लो।
पल दो पल का है यह मेला, समझाता मन कर न मैला।
याद उसी को कर चलता चल, बिगड़ा जाता है सब खेला।
जपते ही रहे नाम तेरा, कट जाये यह पथ वर देना।
आंखों के मोती चुगो नहीं, पर नजर उठा कर लख लेना।

959

मन रे हरि को नाहि पुकारें, जग में हर क्षण ठोकर खावे।
प्रियतम बिछुड़ा नीर बहावे, चैन हिया को कबहुं न आवे।
जीवन नदिया बहती जाये, किन सुपनों में खोती जाये।
हरि से विमुख हुआ पागल मन, कौन पीड़ तेरी लख पाये।
उठती लहरें खूब हिलायें, अब तक नहीं समझ कुछ पाये।
हरि वियोग ने किया वाबला, जाते यह पल रुदन मचाये।
अपने–अपने खेल–खेल कर, सब ही खो जायेंगे जग में।
हरि तुम मुझसे कभी न रुठो, विधि दर्शा दो पाये मग में।
तुम कुछ कह दो जिसे सुनूँ मैं, पीड़ा को तज तुझे वरुँ मैं।
हार गया अब चल ना पाता, दया करो तो तर जाऊँ मैं।
सुख को खोंजे सभी घूमते, लगते दंश सभी है रोते।
करुँ जतन तुझको ना पाऊँ, रोये नयन समझ नहिं पाऊँ।
चरण पडूं तू प्रीति जगा दे, यहाँ वहाँ मोहि न भटकावे।
जीवन में इक तू ही आशा, अन्धकार में दीप जलावे।
अज्ञानी हूँ बल कुछ नाहीं, रात अंधेरी दीखे नाहीं।
कृपा करो तुम मेरे ईश्वर, दूँ पुकार दे दे अब राही।
जग में उलझा मन ना सुलझा, तपी न धरती मेघ न बरसा।
विरह अग्नि से दूर हाय हरि, जला उसे नयनों को बरसा।

960

ईश तुम्हारे गुण को गायें, इस जग में मन को बहलायें।
कहीं न लागे मेरा जीया, तुमको कैसे ईश मनायें ?
चल–चल हारे तुझे न पाया, मेरा जीवन यह शर्माया।
नहीं परीक्षा मेरी प्रभु लो, मैं भटका प्रभु तेरी माया।
हरि मोहि मिलो धुन यह लागी, बना हुआ हूँ मैं बैरागी।
चहुँ दिश में मैं तुमको खोजूं, पीड़ हिया में हे हरि लागी।
देखत–देखत थके नयन यह, आये अब तक नाहीं सजना।
हे हरि मेरी सुधि को ले लो, नीर गिरे पर ताप मिटे ना।
हम है अबल सहारा दे दो, जीवन का कुछ मतलब दे दो।
अज्ञान तिमिर में भटक रहे, अपनी करुणा को वर्षा दो।
थर–थर पग यह मेरे कांपे, दीखे न तू डर मोहि लागे।
कैसे प्रीति बढ़ाऊँ तुमसे, करो नहीं तुम हमें अभागे।
फूल खिले फिर मुर्झाते हैं, भाग्यवान तुझे भजते है।
दो पल जीवन ज्योति जला दो, हरपल भजें याद करते हैं।
मेरे खेवट भूल न जाना, भव से मुझको पार लगाना।
मेरे सर्जक पांव पड़ा हूँ, प्रभु तुम मुझको ना ठुकराना।

961

भक्त के क्या पास है जो, दे सके भगवान को।
जो खुद भटकता राह में, मांगता है दान को।
अबल हम तुम सबल हो प्रभु, पालक तुम्ही जगत के।
भटकते अज्ञान में हम, भण्डार तुम ज्ञान के।
तुम्ही सर्जक प्रभु हमारे, दूर ना हमको करो।
तुम्हारी बगिया में खिले, महकें ऐसा करो।
आंखों से पानी बहता, न कोई भी पिघलता।
इस जग में ऐसे टूटे, कर रहम दिल डूबता।
नीर यह गिरते नयन से, फिर हुए ओझल यहाँ।
दुख हमको जायेगा ले, ना हुए तेरे यहाँ।
दीप तुझ सम्मुख जलावे, नीर हैं यह गिर रहे।
मिले हमको झलक तेरी, फिर न चाहे हम रहे।
डाल दे तू पुष्प माली, झोली खाली न रहे।
नित बने तेरे दिवाली, ना कमी कोई रहे।
नमन हम करे तुम्हें हैं, हमें स्वीकार कर लो।
देखो नयनों के आंसू, चाह है प्यार कर लो।

962

ईश कृपा करना तुम मुझ पर, अपने साथ सदा रखना।
छोड़ मुझे तू कभी न देना, मुश्किल तुम बिन है जीना।
हम तो बालक प्रभु तेरे है, तुझे निहारे हम हरदम।
मेरे हिय में तुम बस जाओ, गये कहाँ मेरे हमदम।
वन्शी की धुन हम सुनने को, तरस रहे हैं हे भगवन।
सुनकर मिट जाये दुख सारे, महके जीवन का उपवन।
तुझे खोजते खो जाये हम, यह चाहत हिय में मेरे।
आंसू गिरते रहे नयन से, हटे न हम पथ से तेरे।
चलते ही हम जाये मग में, गीत तुम्हारा ही गाये।
स्वामी तुम सारे जग के हो, हम तुमको शीश नवायें।
नयनों में छवि बसी तुम्हारी, हमको लगती है प्यारी।

978

मेरी सिसकी को तू सुन ले, जीवन में तू अब कुछ कर दे।
रोता हूँ मैं विलख–विलख कर, तू अब प्यारा गीत पढ़ा दे।
धर्म–अधर्म ज्ञान से वंचित, करुँ समझ कुछ भी न आता।
ज्ञान का अब तू पाठ पढ़ा दे, पाप पुण्य मैं नहीं जानता।
कैसी मेरी नियति हुई है, खोजूँ तुझको खोज न पाऊँ।
हाय हमारी राह बता दे, जीवन में रस घोल न पाऊँ।
अब तू निष्ठुर मुझे बता दे, चलना चाहूँ चल नहीं पाता।
कैसा बन्धन ले कर आया, उड़ना चाहूँ उड़ नहीं पाता।
ऐसे निष्ठुर जीवन को दे, जग से तुम उपहास उड़ाते।
गीतों की तुम चीख न सुनते, जग में काहे मुझे नचाते ?
स्वार्थप्रिय मेरी आशा को, कुछ टुकड़ा दे मुझसे बोलो।
जीवन का कुछ मतलब खोलो, आंसू देखो कुछ तो बोलो।
कभी मिलेंगे तुम से हम भी, तुझको रोते सदा रहेंगे।
देखों न देखो तेरी मर्जी, बहते हम बहते ही रहेंगे।
खोया खोया सा होकर मैं, बुद्धिहीन हो जग में घूमा।
नीरस हूँ मैं दुख में डूबा, जीवन का ना मतलब सूझा।
होकर मैं विक्षिप्त घूमता, आँखों के आंसू ना जाने।
क्यों न अब तो गले लगा ले, तेरी दुनिया को तू जाने।

979

कौन साथ में यहाँ चला है, आते है सब जाते है।
कितनी अँखियां नीर बहाये, नहीं हाय रुक पाते है।
आशाओं के महल टूटते, उनको बचा नहीं पाते।
नीर भरे नयनों को लेकर, किस किसकों है हम लखते।
साधक बन पथ पर चलता जा, लड़ना है तूफानों से।
खेल–खेल ले इस जीवन में, अर्ध चढ़ा दे अंसुवन से।
होता जा जगदीश समर्पित, अपने पथ पर चलता जा।
जग की इन टेढ़ी राहों पर, उसके ही गुण गाता जा।
नियति खेल में हुए बाबले, घूमे हम मतबाले बन।
हमको कोई हाय थाम ले, ना थामे कोई तुम बिन।
अर्ध चढ़ाऊँ तेरे दर पर, इसको तुम स्वीकार करों।
घायल होकर तड़फ रहा हूँ, अब मेरा उद्धार करो।
सभी जगह है राज तुम्हारा, फिरता मैं दर–दर मारा।
तुम क्यों मुझसे रुठे ईश्वर, चल–चल कर मैं हूँ हारा।
रिमझिम–रिमझिम अँखियां बरसे, तेरे आने को तरसे।
अंधियारी रातों में खोजू, जीया एक किरण तरसे।
सूनी–सूनी आँख हुई यह, आये तुम हे ईश नहीं।
पल दो पल की घड़ियाँ बाकी, बीत न जाये शाम कहीं।

980

बीतता सब जा रहा, कुछ पल यहाँ।
तू सुमर हरि को सदा, जाना वहाँ।
खेल कुछ क्षण का यहाँ, ना देर है।
बह रही गंगा यहाँ, ना जोर है।
दर्द है बिखारा पड़ा, भन्जक वही।
उस बिना इस जगत में, कुछ भी नहीं।
जप उसे जब तक चले, यह सांस है।
टूट जाये कभी भी, नहिं हाथ हैं।
देखाकर रंगी सुपन, जग में रमें।
टूटते फिर यहाँ पर, देखे गमें।
किसको समझाये नहिं, समझे यहाँ।
निज को समझाले हम, कम न यहाँ।
मिलो प्रियतम से यहाँ, तू गीत गा।
वह हो निर्मोही दिल, उससे लगा।
कर शिकायत ना यहाँ, आंखो वहाँ।
खेल सब उसका यहाँ, जाना वहाँ।

981

बालक हैं अज्ञान भरे हम, टूटी नौका नहीं किनारा।
तुम हो जग के सृजन करता, संकट पार करो मैं हारा।
जन्म–मरण का चक्र चल रहा, जीने का संघर्ष चल रहा।
कैसे पाऊँ ईश तुझे मैं, इच्छाओ का दास बन रहा।
अपने अपने जख्म यहाँ हैं, बहती क्यों है इतनी पीड़ा ?
निज पंख लिये उड़ता हरपल, बाजे कैसे जीवन वीणा ?
बहते आंसू बहते जाते, क्यों रोक उन्हें न हम पाते ?
आदर्शों की होली में जल, हम ठगे स्वयं है रह जाते।
चहुँ ओर मचा है शोर यहाँ, सब भाग रहे कित मंजिल है।
कैसे जीवन में सुमन खिले, मनुआ तो गम में पागल है।
तेरी अराधना कर न सके, कोलू के बैल बने जग में।
ना जान सके क्या लक्ष्य लिये, आये तेरे सुन्दर जग में।
चलना चाहा पर चल न सके, तेरे चरणों मे रो न सके।
हम विवश हुए कितने जग में, भटके तुझ तक हम आ न सके।
तू जो चाहे वह ही होता, मूरख जान क्षमा कर देना।
तेरी रहमत का प्यासा हूँ, नजर उठा कर तुम लख लेना।
भटक रहे हम सृष्टि बीच में, नहीं किनारा कोई लगता।
नजर चुरा ना लेना मुझसे, दूभर है जीवन का रस्ता।

982

यहाँ वहाँ डोले मन जग में, जीया चैन कहीं ना पाये।
सुनूँ तुम्हारी वंशी धुन को, मन यह मेरा आस लगाये।
मैं अनजान नहीं कुछ जानूं, रोवे अंखियां तुझे पुकारुँ।
तुम हो करुणा के सागर प्रभु, नीर गिरे मैं चरण पखारुँ।
बालक हम तुम तो हो पालक, तेरी ओर निहार रहे हैं।
जग की संकरी पगडण्डी पर, सम्बल तेरा मांग रहे है।
अज्ञानी हम सूझे कुछ ना, दर्द कलेजे किससे बूझे ?
काली रैना हमें डरावे, दे प्रकाश हमको भी सूझे।
द्वारे तेरे आन पड़े हैं, पार लगा देना तुम भव से।
नैया मेरी डूब रही है, रुठो ना हे प्रभु तुम हमसे।
सृष्टि रचैया शक्तिमान हो, इस सांस के प्राण तुम्ही हो।
करो विनय स्वीकार हमारी, जीवन के धनधाम तुम्हीं हो।
रोवें अंखियां तुझे पुकारें, कैसे इस दिल को बहलावे ?
इसे मेले में मिला न कोई, जिसको अपना दर्द सुनावें।
कर्मो की जंजीर में जकड़े, सभी बोझ से अपने टूटे।
प्रीति डगर को भूल गये वह, ठगनी माया सबको लूटे।
करो कृपा प्रभु पार लगाओ, मेरे खेवट तुम बन जाओ।
तुम बिन पार लगे ना नैया, सुधि मेरी तुम ना विसराओ।

983

प्रभु मिल जाओ तुम हमको, तुमको खोजे हम भगवन।
चरण की धूल मिल जाये, सफल होवे यही जीवन।
हमें वरदान तुम दे दो, न विछुडोगे कभी मोहन।
खिवैया बन के नैया के, बचा लो डूबते मोहन।
जगत में मैं भटकता हूँ, अन्धेरा दूर करो तुम।
सागर तुम हो करूणा के, दया तुम्हारी चाहे हम।
मुश्किल कितनी भी आयें, डगर तेरी न छोड़े हम।
यहाँ जिव्हा जपे तुमको, नहिं फिर कोई भी हो गम।
आनन्द घन तुम हो श्याम, यह दुनिया पूजे तुमको।
तुम्ही निर्बल सहारे हो, यह अंखिया खोजें तुमको।
न खाली हाथ हम जायें, मेरी झोली खाली है।
अनेकों रंग डूबा जग, तेरे दर पर लाली है।
अज्ञानी तेरे बालक, क्षमा ईश्वर हमें करना।
न खो जाये अंधेरे में, प्रभु दीपक जला देना।
मरूस्थल सा हिया मेरा, न हरियाली कहीं दीखे।
तड़फते प्राण मेरे है, मेरी खो जाती चीखें।
यह गिरे नीर धरती पर, तुझे है खोजते खोते।
जगे यह भाग्य प्रभु मेरा, हमें तुम क्यों नहीं लखते।

984

कितने गाये गीत ईश पर, फिर भी तुमको मैं क्यों भूला ?
भूल रहा पर चैन न पाऊँ, लगे जगत के हमको शूला।
इतनी बंजर धरती दी क्यों, बूँद नहीं पानी की ठहरे।
फूल उगे नहीं मरुस्थल में, बिन तेरे ना जीवन संवरे।
सदा चरणों में बैठे, निशिदिन तेरी ही प्रीति बढ़े।
सांसों की सरगम में गूँजे, बस तेरा ही प्रभु रंग चढ़े।
थका यहाँ कुछ भी न पाया, खोकर तुमको सभी गंवाया।
झलक हमें तेरी मिल जाये, जीवन में मिल जाये छाया।
प्यारी दुनिया बरस रहा रस, तड़फ रहा मनुआ क्यों बिन रस।
प्यारे रसिया रास रचाओ, जिसमें बरसे तेरा ही रस।
सोवें जागे जीवें तुझमें, कट जायें पल प्यारे–प्यारे।
तुझ चरणों में रहे समर्पित, तुमको मेरे प्राण पुकारे।

985

यादें तेरी है आती, रात दिन दिल को जलाती।
हार दी यह जिन्दगी सब, तुझ बिना कुछ ना सुहाती।
प्यार से झांका तुम्हें जो, मुझसे खफा तुम हो गये।
नाम लेते है तुम्हारा, क्यों बेवफा तुम हो गये ?
चल रहा इक लाश बन कर, पत्थर हैं तेरी आँखें।
किसको पुकारें जहाँ में, तेरे बिन सूनी आँखें।
हम सदा रोते रहेंगे, गम जुदाई का सहेंगे।
तू मुझे पहचानना ना, तेरे दर पर ही मरेंगे।
याद तुझको कर रहा हूँ, सुपनों में भी खो रहा हूँ।
तुम गये मुझसे बिछुड़ क्यों, जिन्दगी में रो रहा हूँ।
देखते ही देखते सब, मिट गया जीवन हमारा।
देखते ही रह गई यह, आँख पर तू नांहि हारा।
जिन्दगी को पार करते, किस मुंका पर आ गये हैं ?
रो रही कविता हमारी, अब हमी घबरा रहे हैं।
तुम बने रहना ही निष्ठुर, अपनी जिद नहीं छोड़ना।
रोती फिरती हैं आँखें, आँखों उठा ना देखना।
रोई आँखें इन्तजार कर, नहीं पसीजा दिल तेरा।
कैसे दिल ढाढस दिलायें, सासों में सुमरन तेरा।

986

अपनी–अपनी उलझन मन की, अपने–अपने सपने है।
पागल मनुआ खोज रहा क्या, जीवन यह एक दर्शन है।
इस पथ पर चल रहे निरन्तर, अन्तहीन यह लहरे हैं।
हँसते गाते इस झिलमिल में, डूब सके वह सुन्दर हैं।
हाय जगत की रचना कैसी, भुला नहीं पाता निज को।
अविरल आंसू की गंगा में, देखूँ किस किसके मुख को।
तोला बहुत जगत को तोला, फिर भी तोल नहीं पाया।
ढलती फिरती इस छाया में, निज से ही मैं भरमाया।
उठती गिरती लहरों से मैं, सदा–सदा ही टकराया।
जख्मी होता रहा सदा मैं, नहीं किनारा पा पाया।
हँसी यहाँ पर छिपते देखी, दुख घाटी के अन्दर।
हुए भीड़ में यहाँ अकेले, सबकी चाहत में अन्तर।
श्रद्धा मेरी गई कहाँ पर, बता मुझे हे श्रद्धेश्वर ?
सम्बल सारे टूट गये हैं, आंसू गिरते है झर–झर।
नियति यहाँ पर खेल खिलाती, आँखों का पानी खारा।
सुर से सुर जब मिले साथ में, वह जाती सुख की धारा।
मौन हुआ तू बैठा क्यों हैं, तड़फ रही जगती सारी।
आंसूओं से भीगी यह धरती, जीवन ना हिम्मत हारी।

987

मन की पीड़ा दूर न होवे, यहाँ निहारुँ वहाँ निहारुँ।
हरि मैं तुमको कैसे पाऊँ, हरदम तेरी बाट निहारुँ।
बीत गया रो–रो कर जीवन, चलना भी अब लगता दूभर।
आन मिलो तुम प्रियतम मेरे, नयन गिराये आंसू झर–झर।
सृष्टि तेरी दास तेरे हम, थके यहाँ उद्धार करो तुम।
बहते नीर चरण को धोये, बेड़ा पार करो प्रभु जी तुम।
राह दिखा दो हम अज्ञानी, जग में भटके अंखियां रोवे।
अन्धकार में अंखियां डूबी, बिन तुम दीया कौन जलावे ?
मेरे केवट बन कर ईश्वर, पार लगा दो डूबे नैया।
नैनन आंसू लिये खड़े हैं, पास नहीं कुछ जगत रचैया।
जग के दन्श लगे हम रोंवे, बीता जीवन तुमको खोंवे।
प्यास लिये यह प्राण पुकारे, दया करो शरणा हम पावे।
भटकन मेरी दूर करो प्रभु, तुम चरणों में शीश नवावें।
उठे न नयना फिर ऊपर को, सदा इसी में लय हो जावे।

988

मेरे जीवन तुझे खोजते, आशा के हम रंग सजाते।
तेरी यादों में हम खोकर, हरपल अपने नीर बहाते।
हमें मिलो आ जाये सावन, फट जायें सब दुख के बादल।
जीया मेरा करता धक–धक, जग में डोलूं बन कर पागल।
करुणा के सागर मैं प्यासा, दिल भी मेरा रहे उदासा।
तुम मेरे हिय में बस जाओ, पलटे इस जीवन का पासा।
दाता तू सारे जग का है, फिर भी मेरी झोली खाली।
बिन तेरे कुछ भी न भावे, बीत रही सब राते काली।
तू रुठे ना जगह कहीं है, अंखियां रोवें पूछ रही हैं।
मेरे सर्जक हमें बता दो, हमको तो कुछ ज्ञान नहीं हैं।
करे अर्चना आता पानी, हम तो है पूरे अज्ञानी।
लाज हमारी तुम रख लेना, तुमसे बड़ा न कोई दानी।
सुधि–बुधि खो दूँ तुझ यादों में, जनम–जनम की प्यास हमारी।
मिट जाऊँ होऊँ बड़ भागी, बढ़ा इसे मैं तुझ पर बारी।
हरपल तेरी बाट निहारें, रुके न अंखियां नीर बहावे।
बने हाय तुम क्यों निर्मोही, जीया तरस–तरस यह जावे।
हमें मिलो प्रियतम बिछुड़ो ना, हार गये चाहें कुछ भी ना।
मिल जाये तुझ चरण धूल बस, बहते आंसू तुम देखो ना।
नमन करो स्वीकार हमारा, बहती यह आंसू की धारा।
नहीं और कुछ पास हमारे, तू ही सबका खेवन हारा।

989

तू इस पल को जी ले मनुआ, कल क्या होगा ना हम जाने।
यहाँ बदलती रंग यह दुनिया, बह गाता जा तू दीवाने।
सुख–दुख की होली यहाँ जले, इन अँखियों से है नीर ढले।
गा चुभन मिटे कुछ इस दिल की, जाते जीवन की शाम ढले।
रंग लेकर हम आशाओं के, हरपल हैं हम बढ़ते जाते।
हम उलझ–उलझ कर झुंझलाते, पर ना उससे रस्ता पाते।
सहज बहो निज में डूबो, जगती का कर अवलोकन लो।
फैली पीड़ा की चादर जो, कुछ खुशियाँ उसमें तुम भर दो।
जो मीत हुए दुश्मन बनते, दुश्मन भी मीत यहाँ बनते।
क्या खोज रहा पागल मनुआ, निज चाहत में हैं सब मरते।
बढ़ता जा गाता जा प्रभु गुन, जाता जीवन का है हर पल।
सब ओर वही है डोल रहा, यह सब है सागर की हलचल।
यह लहर उठे फिर लहर गिरे, यह सब उसकी ही लीला है।
कर्ता हम बने हुए इसके, यह ही जीवन की पीड़ा है।
हमसे ना कोई पूछ रहा, अँखियों में सागर डोल रहा।
यह चुभन मिटे दिल की कैसे, सागर निज से ही खेल रहा।
कर्मो के बन्धन में बंधकर, बोझिल हम होते जाते हैं।
पर पीड़ा से अनजान हुए, निज पीड़ा कहते जाते हैं।
है सृष्टि रचियता पथ दे दो, सद् मारग पर बढ़ता जाऊँ।
छोटे से इस जीवन को जी, तुझ चरणों में मैं आ जाऊँ।

मन भाग रहा तेरे पीछे, इस खेल में इसको मिटने दो।
इस जीवन से खिलवाड़ किया, तुझको ना मैं पहचान सका।
लड़ा सदा ही इस जीवन से, कठपुतली बन ना नाच सका।
जीवन में खा कर चोटों को, मैं कैसे हसूं यह तुम बोलो।
जीवन की नदिया सूख गई, मेरे जीवन में रस घोलो।
देखा न तुझे इस जीवन में, जी भर रोया ना जान सका।
क्या खेल रहे हो तुम मुझसे, तेरे दिल में ना समा सका।
जो कुछ सीखा समझा हमने, छल अपने से हम करते हैं।
अपनी छोटी बुद्धि से ही, हम तोलते सारे जग को हैं।
सुर कैसे बजे यह तुम बोलो, जिनको सुनकर अंखिया खोलो।
जो प्रेम के गीत सुनाऊं मैं, ऐसा जीवन में रस घोलो।
हो सकूं समर्पित मैं तुमको, तुम दोगे मिटा तो धन्यवाद।
कर सकें तुम्हारा अभिनन्दन, बस धन्यवाद, बस धन्यवाद।
जीवन दीपक यह जलता क्यों, इस तम में मैं रोता हूं क्यों?
तुझे रिझा ना पाऊं मैं क्यों, खो ना पाऊं मैं तुझमें क्यों?
खो जाऊं मैं तुझ में बोलो, कुछ तो सुन लो अंखिया खोलो।
आस अधूरी है क्या बोलूं, कहूं क्या सुन अंखिया खोलो।
तेरे मन की सरगम छेड़ूं, तू ही बता दे क्या गाऊं मैं ?
तू भी मेरी बात न बूझे, तू ही बता दे कित जाऊं मैं ?
हम रोते है तुम सोते हो, ऐसा न जुल्म करो हम पर।
तेरी ही इस खामोशी पर, हंसता है सारा जग मुझ पर।
मुझसे रुठे तुम क्यों बोलो, प्रेम सिखा दे कुछ तो बोलो।
जीवन का आनन्द तुम्ही हो, निष्ठुर प्रियतम कुछ तो बोलो।
भूखा रोया मैं चिल्लाया, जब जन्मा मैं इस धरती पर।
ना भूख मिटी मेरी जग में, कृपा करो प्रभु तुम मुझ पर।
नहीं मार्ग मिला इस जग में, मैं शरण तिहारी आया हूँ।
रख चरणों में मस्तक तेरे, मैं इसे मिटाने आया हूँ।
वह भाग्य कहां से लाऊं मैं, जिनको सुनकर अंखिया खोलों।
मन तो तेरी करे प्रतीक्षा, मैं भी बोलूं तुम भी बोलो।
आये यहां क्यों, लक्ष्य नहीं जब, यहां भटकते रहते हैं क्यों?
इस अंधियारे में ओ निष्ठुर, प्रेम की तान सुनाता ना क्यों?
ढूंढ-ढूंढ कर तुमको हारा, अपनी किस्मत से भी हारा।
तुम आओ या ना आओ, टूट चुका यह जीवन सारा।
ढूंढे कहां पकड़ ना बोलो, मिटे तुम्हीं पर अंखिया खोलो।
जीवन अंतिम आस यह बोलो, छेडेंगे धुन अंखियां खोलो।
जीवन में जो फूल बिखेरे, मैं प्रतिदान न कुछ दे पाया।
रहा उलझता कांटो में मैं, जीवन का सौन्दर्य न पाया।
मैं पिंजड़े का पंछी प्रियतम, तुम अनन्त के स्वामी हो प्रभु।
दो नीर अश्रु स्वीकार करो, नीरस घट ले फिरता मैं प्रभु।
साथ निभा जीवन का बोलो, प्यारे प्रियतम अंखियां खोलो।
टूटी वीणा के स्वर बोलों, फिर गीत उठे अंखियां खोलो।
लौटा देना ना तुम मुझको, अन्तिम जीवन आस यही है।
खो जाऊँ तेरे चरणों में, जीवन की बस चाह यही है।
उपदेशक जग में बहुतेरे, बाट रहे जो अपना अनुभव।
मैं मन्दबुद्धि अज्ञान लिये, रोता हूँ बस मैं फवक-फवक।
चरण धूलि में बस जाने दो, प्रीति न तोड़ो अंखियां खोलो।
ज्ञान तराजू से ना तोलो, मैं रोता हूँ कुछ तो बोलो।
कभी आँख से बहता पानी, रुदन कभी प्यारा लगता है।
मुझसे क्या तुम मेल करोगे, पास नहीं कुछ देने को है।
कृपा करो हे कृपा सिन्धु, नौका मेरी तुम पार करो।
जो भटक रही भटकन में है, उस पर तुम अपनी दया करो।
मैं तुझे रिझा ना पाऊँ, क्यों मिटना चाहूँ तुझमे बोलो।
मुझको उबार रस्ता दे दो, कर दया दृष्टि अंखियां खोलो।

1001

दुख आये सह तप मन समझो, गति मत खोना चलना हमको।
इस जीवन के रंग अनेकों, खुली आंख से देखो सबको।
रंग बदलती इस दुनिया में, सुबह-शाम कभी फिर रात है।
क्यों इतना बैचेन हो रहा, जीवन ढलता नहीं हाथ है।
हर पल जाते खोते यह पल, बैचेन न हो हरि गुण गा ले।
नश्वर जग से प्रीति न करनी, समझ सके तो दिल समझा ले।
छाया है घनघोर अन्धेरा, हरि बिन गति नहीं कुछ भी करले।
जोड़ उसी से पथ वह ही दें, जग से टूटे आंसू हर ले।
हर पल गीत उसी के गा ले, इस मन को पगले समझा ले।
बीतेंगे जीवन के यह पल, छोड़ शिकायत उसमें रम ले।
इतने जीव हैं यहाँ दीखते, सबके कर्म अलग हैं दिखते।
किस किसका हम लेंगे लेखा, धन्य वही जो हरि को भजते।
डूब उसी में डूब रहा सब, विचलित मन को तू समझा ले।
जो भी उसमें डूब गया है, उसकी बात पूछ रस पी ले।

1002

पल दो पल की खुशी चाहते, हम भटके पर ना खुशी मिली।
अँखियाँ भी नीर बहा हारी, मैं मुरझाई ना हाय खिली।
छोटा सा दिल सिसकी इतनी, निष्ठुर आँखे तूने मीची।
सब ही मिट जाना दुनिया में, हंस हमें देख ना हो नीची।
कह-कह अपनी सभी कहानी, विदा हो रहे हैं इस जग में।
क्यों बेचैन हो रहा मन तू, बहा जा रहा सब नदिया में।
खोज यहाँ क्या लेकर फिरते, जान नहीं पाये जग अन्दर।
लिये प्यार की भूख घूमते, बनो न निष्ठुर मेरे प्रियवर।
सूरज देता हर दिन प्रकाश, बुझती जाती मेरी आशा।
दो शब्द प्यार के जो बोलो, ढूंढू दिल का टूटा शीशा।
कुछ ना कहते यह दर्द बहे, चाहा प्यार से कोई कहे।
बेबस मनुआ हरदम रोये, आखिर यह कितना दर्द सहे।

1003

अन्धकार से जी घबराये, याद हरी को कर लेना।
अपनों से जब मिले बफा ना, उसका दीप जला देना।
हरी ही खेल रहा जगत में, किसको कहता भला बुरा।
ना भूल जगत में चलता जा, जप उसको ना जिया चुरा।
रंग अनेकों इस दुनिया में, कौन रंग से सकुन मिले।
झांक-झांक अपने अन्तस में, राम तुझे हैं वही मिले।
पाप पुण्य कर्मो की रेखा, कैसे इसको पार करें।
हरी भजन बिन चैन मिले ना, झर-झर अंखियां नीर गिरे।
कहो बुरा ना यहाँ किसी को, यहाँ हरी ही खेल रहा।
मगन हो हरी जाप करे जो, छोड़ किनारे वही बहा।
करो विनय प्रभु बालक हैं हम, अपनी ममता हमें दिखा।
अज्ञानी गिरते हैं आंसू, मात-पिता हरि तुही सखा।

1004

निर्बल का न कोई यहाँ पर, निर्बल का बल वह ही रामा।
चाहें मारे और जिलावे, जाना हमको उसके धामा।
किससे करे शिकायत मनुआ, हारी रो-रो कर यह अंखियां।

उसको अपने हृदय बसा ले, तपती धूप मिले तब छैंया।
जीवन का आनन्द खोज ले, शाश्वत है तू उसको भज ले।
कुछ क्षण रहना है बस बाकी, जायेंगे पल धीरज धर ले।
भाग कहीं पर नहीं ठिकाना, प्रीति लगा ले हरि घर जाना।
हरि-हरि करते कर्म किये जा, जान हरी में सभी समाना।
प्रीति किये बिन चैन मिले ना, नहीं कटे यह काली रैना।
मृगमरीचिका के आंगन में, नहीं सुने हम उसके बैना।
चलता जा पर भूल न उसको, उसी धुरी पर पहियां घूमें।
धन्य हुए वह इस दुनिया में, देखें सदा उसे ही चूमें।

1005

पिव-पिव रटे पिया ना दीखे, क्यों हम इस जग में फिर आये।
गा-गा मन यह होता पागल, नयना हर दम झड़ी लगाये।
माना कठिन डगर है लम्बी, बना हुआ तू क्यों निर्मोही।
रो-रो कर हम तुझे पुकारें, भूल न मुझको मेरे माही।
बीत रहे पल सब बीतेंगे, बिछुड़े तुमसे कभी मिलेंगे।
नीर नहीं नयनों के सूखे, आस लिये हैं दीप जलेंगे।
गा-गा कर बह ले दरिया में, नहीं किनारा इस सागर में।
बिन गाये ना चैन मिलेगा, सोंच समझ ले तू इस दिल में।
बह जाता पांडित्व सभी तब, जब होवे कांटों से जख्मी।
हरि कृपा को आँखें तरसे, राह तकें आंखे यह सहमी।
ले जायेगी लहरे तुझको, गीत उसी के तू गाता जा।
बीत रहा यह जग सुपना सा, हुआ समर्पित तू बहता जा।

1006

सब रंगों के पार छिपा तू, नयना बाट निहारे हैं।
रो-रो अंखियां हार गई है, दिल मिलने को तरसे हैं।
बोझिल हो जाता जब जीवन, याद तुही बस आता है।
तू बोले चाहे ना बोले, तुम बिन जी घबराता है।
कैसे पाये हार गये हम, अज्ञानी हम बालक हैं।
चाह तेरी पायें झलक को, ऋषी-मुनी सब ज्ञानी हैं।
इधर-उधर भागा प्रभु जी मैं, न ठिकाना तेरा पाया।
करो कृपा मैं चरण पड़ा हूँ, ढूंढू मैं तेरा साया।
कहीं नहीं मोहि कुछ भी दीखे, दिल बता मनायें कैसे ?
नजर नहीं तू मुझको आता, बीते ना रतिया ऐसें।
अनजानी डगर न किनारा, भीगी पलकें प्यार चहे।
तू रुठ न मुझसे निर्मोही, सुरति तुझी में सदा बहे।

1007

नाम तुम्हारा लिये बिना मैं, चल पाऊँ ना इस दुनिया में।
कैसा खेल रचाया तूने, नीर नहीं सूखे आंखों में।
गिर-गिर कर हम चले यहाँ पर, ढूंढ रहे प्रभु जी पथ तेरा।
बीतेगीं कब काली रातें, आस लगी कब होय सबेरा।
सुख पाने की खातिर भटका, कहीं नहीं पर सुख को पाया।
हरपल तेरा नाम जपूँ बस, मिल जाये हरि तेरा साया।
हरि-हरि जपूँ बनो तुम खेवट, सागर लहराये डर लागे।
कृपा तुम्हारी मिल जाये प्रभु, सोया भाग्य यही फिर जागे।
सुधि तुम ले लो तुझे पुकारें, चला न जाता हम हैं हारे।
झर-झर नीर गिराती अंखियां, नहीं भूलो तुम प्राण प्यारे।
कितने बसन्त गये न आये, प्यास लगी वह कौन बुझाये।
मेरे जीवन के ओ रसिया, चाहूँ अब तू ना भरमाये।

1008

हरि बिन सुमरे जीवन बीता, ना जीवन में उल्लास मिला।
गिर पड़े हरी के चरणों में, मिट जाती है फिर सभी गिला।
जग है अथाह सागर देखो, किस किसका तुम लोगे लेखा।
स्वर यहाँ उसी के गूँज रहे, तू देख नहीं क्या सब धोखा।
हरि गुण गाता जा चैन मिले, झर-झर अंखियों से नीर झरे।
कर्ता बनकर दुख पावे क्यों, डर लगे नहीं उसको सुमरे।
स्वर उठा उसी के सुःख मिले, हरि सुमरे उसके दुःख टले।
तू खुली आँख से देख यहाँ, बहता जाता है सब पगले।
किसको मतलब है समझ यहाँ, जो हमको कोई याद करे।
गिर जा तू हरि के चरणों में, तेरा वेड़ा वह पार करे।
पल दो पल का है खेल यहाँ, उसके घर जाना प्रीति लगा।
सब वैभव फीके पड़ जाते, तू सुरति उसी की हिया जगा।

1009

हरि भज-हरि भज-हरि भज पगले, मेला दो दिन का तू जप ले।
इन सांसों को हरि धुन दे दे, बह जायें किधर न पता चले।
सब शून्य बीच अंखियां देखे, कितने ही चाहत के लेखे।
कैसे पागल मन समझाऊँ, नयना रोये पथ को देखें।
जग के तुम नाथ रचैया हो, हम अबल नहीं लीला जाने।
हिचकोले खाती है नौका, तू पार लगा तुमको माने।
बहती नदी ले जाये किधर, मेरा बस अपना है कितना।
तू आँख खोलकर देख जरा, बहता जाता जीवन सुपना।
हरि हमें संभालो भटक रहे, आँखों में आंसू खोज रहे।
हर सांस जपे तुमको प्रियतम, चाहे नयनों में बसा रहे।
स्वीकार करो मेरी पूजा, तुम बिन लगता जीवन सूखा।
किरपा तुम्हारी बरसे जल, ना रह जाये जीवन रुखा।

1010

खोज रहे राह को, डूब जायें सारे गम।
कुछ ना कहेंगे हम, तुम करो कितने सितम।
गुजर जाये जिन्दगी, कुछ ना हमको चाहिये।
संग चाहत यह बनी, खता न हमसे होइये।
याद हमें जो करे, किसको मतलब है यहाँ ?
नीर आँखों से झरे, मिटा गया मेरा जहाँ।
चलते हम जा रहे, नाम तुम्हारा ले रहे।
ना पता छिपा कहाँ, वहीं नहीं क्यों हम रहे।
अनजान राहें हैं यहाँ, देखूँ मैं कब तू आये ?
टूट जाता दिल यहाँ जब, ना चले बस नीर आयें।
यहाँ है किसकी प्रतीक्षा, जप ले मन नाम उसका।
नाम सुमरे बिन हरी का, बोझ हो पाये न हलका।

1011

पूजा करते तुम्हारी, खिल सकूँ तुम बिन न माली।
ज्ञान का दीपक जला दो, नीर की बह रही नाली।
तुम्ही हो सर्जक मेरे, नाव को कर पार हारा।
रंग-बिरंगे इस जगत में, हर तरफ तेरा नजारा।
वन्दना करें तुम्हारी, सकल जग का तू मही है।
अबल हम तुम सबल स्वामी, नीर अंखियों से झरे हैं।
छिप गये तुम छोड़ हमको, क्या रचाया खेल तुमने।

1026

हरि बिना कृपा ना कुछ होई, भूल उसे तू जग में रोई।
याद कर बस वह ही सुनेगा, तू किन सुपनों में है खोई।
जपो उसे तुम जप लो उसको, जब तक जाता नहीं निकल दम।
नौका डूबे पार लगाये, कहें उसे ही हम अपने गम।
दर्शन की भूखी यह अंखियां, तुमसे मिलने को यह तरसी।
मेरी है सामर्थ नहीं कुछ, रिमझिम–२ यह तो बरसी।
नीर भरी अंखियां मग देखे, हरि तुम मुझसे काहे रुठे ?
पांव पडू हरि हमें न छोड़ो, जीवन के सब सुपने झूठे।
अवश यहाँ ना बस है मेरा, आंसू ही बस एक सहारा।
ईश हमें तुम अब तो लख लो, जीवन से अब मैं हूँ हारा।
नयन झरें हम नमन करे प्रभु, हमने तुमको टेर लगाई।
रुठो ना मेरे मन मोहन, तुमसे ही बस आस लगाई।
कहूँ किसे मैं हिय की न बूझे, मुझको तुम बिन और न सूझे।
लाज रखो तुम चरण दास हूँ, दो मग मोहि रस्ता सूझे।

1027

भटक रहा चहुँ ओर जगत के, ठौर कहीं यह मन ना पाये।
तुम संभालो हे हरि मुझको, चैन कहीं मन यह ना पाये।
हूँ अनाथ तुम नाथ जगत के, कौन खेल को खेल रहे हो ?
तड़फ रहा दिल तड़फ सुनो ना, कौन मजा इसमें लेते हो ?
अज्ञानी–अज्ञान में जीऊँ, ज्ञान दृष्टि से क्यों हूँ वंचित ?
प्रतिपल चाहूँ तुझे पूजना, हाय हुई पूजा क्यों खंडित ?
तुम मेरे जीवन के जी हो, क्यों ना मेरा हाथ पकड़ते ?
रुष्ट हुए से क्यों तुम लगते, ना मैं होता नाहिं बिछुड़ते।
बेबस यह बेचारा दिल है, जग में उलझ–उलझ जाता है।
जाती बीत जिन्दगी सारी, कुछ भी हाथ नहीं आता है।
प्रभु तेरी महिमा अपार है, ऋषि–मुनि गुण तेरा ही गाते।
नाद गूंजता इस धरती पर, उसमें वह है तुझे खोजते।
कैसे धीर धरुँ प्रभु बोलो, तुझको खोजा खोज न पाया।
मिट सका पतंगा ना बनकर, तुझको खो कर मैं खुद रोया।
नयनों में चाहूँ बस जाओ, तुझको ही बस गीत सुनाऊँ।
झर–झर नीर बहे अंखियों से, उसमें ही बस मैं खो जाऊँ।

1028

भज मन हरि छवि मन को भाई, बिन हम कहाँ तुम्हारे जाई।
अपना सेवक मुझे बना लो, ईश्वर बीत जनम यह जाई।
जग में भटका तुझे न पाया, जलता रहा नहीं सुख पाया।
ऐसी ज्योति जगा दे हिय में, अंधकार का मिटे यह साया।
ईश तुम्हीं हो मेरे सर्जक, लगा रहे इस जग के फेरे।
तेरी करुणा के भूखे हैं, जग के बन्धन मुझको घेरे।
तुम्हीं उबारो पार लगा दो, खेबट बनो न आंखे फेरो।
आंखे मेरी तरस गई है, हरपल प्राण तुम्हें ही टेरो।
द्वार तुम्हारे आन पड़ा हूँ, मिलने को प्रभु तरस रहा मैं।
तेरी वन्शी की धुन सुन मैं, खो सुधि निज को विसराऊँ मैं।
अंखियां देखे बाट निहारे, सुनने आहट को यह तरसे।
तप्त हुई यह बंजर धरती, मेघ निहारे कब यह बरसे।
ऋषी मुनी सब ध्यान लगाते, अपना दुखड़ा सभी सुनाते।
कैसे तुझे सुनाऊँ दिल की, ना जाने बस नीर बहाते।
बीती जाती जीवन घड़ियां, मत रुठो तुम मेरे सजना।
हार गया मैं चल–चल जग में, लगता ना कोई भी अपना।
रोये हिया नहीं यह माने, कैसे मिलूं तुझे दीवाने।
हमें भूल कर कहाँ छिप गये, तुम बिन पीड़ न कोई जाने।
नाचूं गाऊँ तुमको पाऊँ, जन्मों की मैं पीड़ भुलाऊँ।
तेरे गीतों को गा–गा कर, बरसे नयना मैं हर्षाऊँ।

1029

प्रभु तुम बिन मो कछु न सुहावे, चरण पडू मो तू न भुलावे।
जन्म–जन्म से दास तुम्हारा, विनती सुनो न दूर हटावे।
तुझ तक आऊँ कछु नहिं सूझे, प्यास बुझाऊँ नीर न दीखे।
ऐसे भी क्या हमसे रुठे, तरस गये न तुम मोहि दीखे।
तेरी डगर प्यारी लगत है, थाम लो मुझे जगत रचैया।
चले पर हम चल के गिरत है, भूलो न तुम बन्शी बजैया।
टूटे कभी न तुझसे नाता, तुझ करुणा का सदा भिखारी।
तुम हो मेरे भाग्य विधाता, हरपल तुझको जपे मुरारी।
यह चलती दुनिया निज धुन में, सब अपनी सरगम को गावे।
हे ईश्वर कुछ मुझे न भावे, आंसू सूखे न मुझे डुबावे।
कहूँ मैं कुछ अधिकार नहीं हैं, रोता मैं कुछ भान नहीं है।
निष्ठुर ऐसे बनो न छलिया, कैसे रीझो शुष्क हृदय है।
तुम बिन जीवन भी क्या जीवन, जाते पल न आये मोहन।
तेरी यादों में खो जायें, ऐसी पीड़ जगा मधु सूदन।

1030

रोना चाहा रो ना पाया, जीवन का आनन्द न पाया।
थक कर अब मैं हार चुका हूँ, जीवन में कुछ जान न पाया।
रुठ गई यह सारी दुनिया, पीछे भागू हाथ न आये।
नीरस हो बैचेन हुआ मैं, दिल को धीरज कौन बंधाये ?
मिलन विछोह क्षण भंगुर है, इस रंग बदलती दुनिया में।
आश्वासन जाते बिखर सभी, प्रवाह पूर्ण इस जीवन में।
दोषी ठहराते है सबको, तीर कलेजे में बिंधता है।
निज रंग नहीं समझे कोई, क्या खेल हुआ दुनिया में हैं ?
यह जन्म–जन्म का प्यासा मन, भटकेगा युंही जग के अंदर।
विष के प्यालों को पी कर ही, बीतेगा यह सारा जीवन।
किस किसको दिखायें दिल अपना, सब ही जख्मी से लगते है।
झूठी मुस्कानों को ले कर, धीरज अपने को देते है।
उस प्रियतम को पा ना पाऊँ, रोना चाहूँ रो ना पाऊँ।
जहर दिया जो तुमने हमको, उन घूंटों को पी ना पाऊँ।
वरष मेघ ओ आकर वरषो, सूखी झील हुई यह आँखें।
प्यासी झील लबालब कर दो, झर–झर झरना चाहें आँखे।

1031

टूटे तार अधूरे स्वर है, गा ले मन तू क्या गायेगा ?
गाने को फिर भी उत्सुक है, तू इसमें किसे डुबोयेगा ?
जीवन की पगडण्डी पर, कहाँ जा रहा क्या है मंजिल ?
हुआ बाबला सा फिरता तू, कौन क्षितिज में होगी हलचल ?
ढर–ढर बहते जायें आंसू, मन में टीस लिये तू फिरता।
जलन न आंसू की यह जाये, बस पीड़ा में आंसू ढरता।
कह लेता मैं रो लेता हूँ, हँस निरख तुझे मैं लेता हूँ।
पीड़ित हो सुबक–सुबक, हरपल उदास हो जाता हूँ।
मैने तो थे बस गीत चुने, गीतों को गा मन बहलाता।
क्या कहूँ तुझे भगवन मेरे, कहने को कुछ भी न पाता।
रुठो तुम जाओ रुठ मगर, मुझसे शिकवा तुम मत करना।
इन प्रबल बेग धाराओं में, बस विवश हुआ मैने जाना।
आँखों के मोती झरने दो, उनको भी कुछ कह लेने दो।
इस वियावान जंगल में तो, निज कथा हमें भी कहने दो।
हम ढगते जग को फिरते हैं, हम स्वयं ठगे ही जाते हैं।
जीवन की लेने को सुगन्ध, नित विष को पीते जाते हैं।
क्या अच्छा और बुरा जग में, नापा इस छोटी बुद्धि से।
हम हाय विवश होकर फिर भी, अज्ञात चरण में ढलते हैं।
मैंनें झांका तुझ अँखियों में, करुणा का सागर लहराता।
क्यों हाय विवश हो मुनि बनकर, इस मौन–मौन में खो जाता ?

1032

हरि बिन मोहि कुछ ना सुहावे, बाट निहाँरू अंखियाँ रोवे।
अरज करूँ प्रभु तू ना सोवे, चाह शरण में तू रख लेवे।
मात पिता गुरू बन्धु सखा तुम, मेरे खेवट जीवन धन तुम।
पार लगा दो मेरी नौका, रोये नयना आये ना तुम।
जग के बन्धन में बंध घूमे, तेरा पता नहीं कुछ सूझे।
टप टप मेरे आंसू गिरते, है अंधियारा राह न सूझे।
चलूं जग में जाम तेरा पी, नयना बरसे हिय में बसता।
पल भर भी मैं तुझे न छोडू, कठिन डगर डर मुझको लगता।
मेरे प्राण पुकारें तुमको, दूर न कर चरणों से मुझको।
मेरे जीवन सर्जक हो तुम, पथ दे दे हम पायें तुमको।
विरह अग्नि में भस्म हुआ ना, तुमको भी मैंने पाया ना।
कैसा भाग्य लिये मैं घूंमू, हाय पतंगा बन पाया ना।
बंशी धुन सुन खो गई राधा, भई दिवानी तेरी मीरा।
कौन मुझे रोके है मग में, कब होगा हे श्याम सवेरा।

1033

हरि तुम बिन जियरा नहिं लागे, कैसे मिलूँ कोई बता दे ?
भया बाबरा जग में डोलूँ, मिले हमें जो पता बता दे।
असुओं से मैं चरण पखारूँ, हारा हुआ मुसाफिर प्रभु जी।
रहूँ देखता कुछ ना बोलूँ, हिय में तुझे बसा लू प्रभु जी।
जग में रोता आया रोया, तुझे न पाया सब कुछ खोया।
कैसे मनुआ धीर धरे प्रभु, नहीं चरण रज मैं पा पाया।
जन्मों से मैं घूम रहा हूँ, मेरी सुध को क्यों विसराया।
तुझ दर्शन को तड़फ रहा हूँ, अन्धकार से मैं घबराया।
ज्योति जगा दो पथ दर्शा दो, हम हैं अबल कृपा अपनी दो।
बहती यह आंसू की गंगा, चाहूँ प्यार हमें अपना दो।
हम मूरख मतिमन्द जहाँ में, बालक तेरे माफ कर हमें।
शरण हमें तुम अपनी रख लो, मत अनाथ कर इस जीवन में।
सदा तुम्हारे गुन को गाये, तुझसे ही हम प्रीति बढ़ाये।
इस दो पल के जीवन को जी, हरि–हरि कहते हम खो जायें।
अपनी कृपा बनाये रखना, बहते आंसू को लख लेना।
तुम्ही उबारो भवसागर से, मेरे खेवट हरि बन जाना।

1034

मेरे मोहन मुझसे बोलो, रुठो मत तुम नयना खोलो।
द्वार तुम्हारे खड़ा हुआ हूँ, झोली भर दो रस को घोलो।
बन्शी की धुन हमें सुनाओ, मुरझाये हम हमें खिलाओ।
प्यासे नयना तुझे निहारें, बनकर मेघ बरस तुम जाओ।
जीवन के धन तुम्ही हमारे, जी पायें न बिना सहारे।
अपरम्पार तुम्हारी लीला ऋषि, मुनि जग के सब ही हारे।
तेरी कृपा मिले तर जायें, नहीं जीवन में संकट आये।
हिय में ईश्वर तुझे बसायें, पुलकित हो तेरे गुन गाये।
नयन चढ़ायें चरणों में जल, तू ही सर्जक तू ही पालक।
अन्धकार से मुझे बचाओ, जीया मेरा करता धक–धक।
तुझे पुकारें देर करो ना, जाते पल थोड़े से बाकी।
ज्योति नयन की बुझती जाती, विरह अग्नि में भस्म हो चुकी।
पांव पडूं मैं तुझे मनाऊँ, रुठ न आंसू हार पहनाऊँ।
कुछ भी मेरे पास नहीं है, शर्माऊँ क्या तुझे चढ़ाऊँ।
दुख दरिया में मैं बहता हूँ, लख तुझको भी दुख देता हूँ।
कर्मपाश में बंधा हुआ मैं, देख विवशता को रोता हूँ।
जीवन का हरि तू बसन्त है, भटके जीया तो पतझड़ है।
ना समझे जिय भया बाबरा, कैसा तेरा खेल चक्र है ?
संकट मोचन हमें उबारो, सद्कर्मो पर हमें चलाओ।
घृणा दूर कर प्यार जगा कर, रोते दिल को प्रभु हर्षाओ।

1035

राख अपनी शरण में मोहन, तुम बिन मोहि कुछ ना सुहावे।
बना जोगी याद में तेरी, निशदिन अंखियां नीर बहावे।
जीवन के सुख को ना जाना, फिरता रहा बना दीवाना।
तेरे नाम के प्याले को पी, पाऊँ जीवन में सुख पाना।
आंसू गिरे न कोई देखे, किसे कहूँ पीड़ा जो मेटे।
जीवन तुम बिन है अंधियारा, कृपा होय दुख सभी समेटे।
हार गये हम चल ना पाये, देख रहे कब दीप जलाये।
हम हैं अबल नहीं कुछ जाने, बस आंखों में आंसू आये।
चलूँ मगर हिय में डर लागे, मत रुठो तुम मोहन मुझसे।
तुमको याद करुँ मैं तड़फूं, तुझ दर्शन को अंखियां तरसे।
तुझे चढ़ाऊँ पास नहीं कुछ, रखता हूँ बस मैं दुख ही दुख।
कैसे पार करुँगा भव को, पथ दर्शा दो हिय पाये सुख।
इस जीवन के प्राण तुम्ही हो, सुख सागर हिय बसे तुम्ही हो।
डूब न जाये मेरी नौका, मेरे खेवट ईश तुम्ही हो।

1036

तुम्हारे दास हम स्वामी, कृपा हम पर सदा करना।
कसम है नीर की तुमको, न मुझसे रूठ तुम जाना।
भटकते फिर रहे हैं हम, पायें तुझकों हम कैसे?
करो तुम ज्ञान की वर्षा, मिटे तम दीप लख जैसे।
करे हम अर्चना तेरी, बसा दिल में सदा तुमको।
खिवैया ईश तू ही है, चरण में दे जगह मुझको।
गीतों को तेरे गाकर, कटे मेरा सफर सारा।
हमारा तू सहारा है, न मुझको छोड़ मैं हारा।
डगर लम्बी न दीखे कुछ, छिपे हैं तुझमें सभी सुख।
जगत का तू रचैया है, नहीं फेरो कभी तुम मुख।
तुझे पाये तरसते हम, न जाने तुम मिलोगे कब?
बहे जो याद में आंसू, उसे ना छीन लेना रब।
जगत के बीच तेरा जप, हमें ढांढस बंधाता है।
गिरे जो आंख के मोती, कहें तेरा सहारा है।
झुका यह शीश चरणों में, न उठना यह कभी चाहे।
बचा लो हे हरि मुझको, जग की अंधी जो राहें।

1037

अपने पीछे मुझे ले चलो, मुड़ ना देखूँ जग यह छूटे।
लहराता प्रभु सदा रहे तू, वर्षा यहाँ प्रेम के छींटे।
अपने सुख को खोज रहे सब, छूटे कोई साथ नहीं सब।
दुख ना मान भजन हरि कर ले, खेला दो दिन का है यह सब।
वही उठावे वही गिरावे, नये नये नित खेल खिलावे।
पागल मनुआ भ्रम में भटके, नित ही नया संसार सजावे।
नाप सकें ना हम गहराई, रोवे अंखियां सुन ले सांई।
मुझको पार करा दे नदिया, बल न मुझमें कृष्ण कन्हाई।
सारे जग के कर्ता तुम ही, भटके जिया ज्ञान भी तुम ही।
दीप जला पथ आलोकित कर, तम हर लो प्रकाश हो तुम ही।
नाम तुम्हारा लेता जाऊँ, पत्ता सा मैं बहता जाऊँ।
आंसू से भीगी यह अंखियां, बसो नयन में प्रीति बढ़ाऊँ।
मात पिता तुम बन्धु सखा हो, रूठ नहीं जाना मुझसे तुम।
बिना कृपा तेरे भगवन हम, डरते सदा रहेंगे हरदम।
तेरे प्यार बिना सुख है ना, दन्श मिटे प्रभु जपे बिना ना।
कठपुतली हम तो हैं तेरी, सुरति कभी तेरी छूटे ना।
वश अपना कुछ नहीं जान ले, समझ इशारे और नाच ले।
ना विछुड़ा है ना विछुड़ेगा, ध्यान उसी का हरदम कर ले।
ना कर्ता बन सभी उसी का, द्वन्द छोड़ कर भजन हरी का।
जान सके ना तू गहराई, बहे जा जलध बीच लहर सा।

1050

साधना क्या चाहती है, यह समझ मेरे न आया।
अश्रु आँखों से जो निकला, मार्ग यह ना ढूंढ पाया।
जब प्यार की होली जली, तो रह गये हम देखते।
झांका उनकी आँखों में, वह ना हमें पहचानते।
चल रहे हम अकेले, साथ कोई भी न मेरे।
जख्म तुमने दे दिया जो, फिर भी मन तुमको टेरे।
तेरा किया श्रृंगार है, कुछ जीत है कुछ हार है।
समझा नहीं मन पा रहा, क्या जिन्दगी की प्यास है ?
आँख रो–रो कर थकी है, जग हुआ सूना हमारा।
मानता यह मन नहीं है, तुम्हें इसने फिर पुकारा।
हूँ विवश बस मैं विवश हूँ, जान बस इतना ही लेना।
बन सका बाती न तेरी, दोष मुझको तुम न देना।
कर रहा पूजा तुम्हारी, दीप में ना तेल बाती।
सोंचते यह तुम्हीं होगे, क्यों न मुझको शर्म आती।

1051

कितने रोए ना दिशा मिली, मन्जिल ने हरपल ठुकराया।
चलना जीवन का जान खेल, चलने में बस जीवन पाया।
तन जर्जर प्रतिपल चलता हूँ, क्या भूख लिये मैं जीता हूँ।
चलते–चलते गिर जाना है, इस सच को ले बस जीता हूँ।
पल–पल रंग बदलती दुनिया, किसे कहे यह जग है सपना।
इच्छाओं की गठरी ढोते, बीता जीवन कुछ न अपना।
तेरी छवि में समा रहा सब, फिर भी ढूंढ रहे तुझको सब।
विविध रुप में खेल रहा तू, प्यास यहाँ पर जाने ना सब।
झूठ कपट की दुनिया में, अपना जाल लगाये बैठे।
मुझे मन दे दे तू, करुणा को हम खो न बैठे।
नीर गिरें जब इस धरती पर, मैं भी इससे रहूँ न पीछे।
जीवन के सब विरस हुए रस, एक यही रस मुझको दे दे।
हाय भुलावा दे ना पाऊँ, इस मन को समझा न पाऊँ।
टेढ़ी–मेढ़ी पगडण्डी पर, सबके संग जी मर मैं पाऊँ।
भूल भुलैया की गलियों में, साथ रहा पर साथ न पाया।
सारा जीवन रोकर काटा, क्यों निष्ठुर तूने विसराया ?

1052

अपनी इच्छा के घेरे में, हमको सब सच लगता है।
विलख रहा है कौन यहाँ, यह दिल किसका जलता है ?
जग में आंसू छलछला रहे, कितना रोए पूछ रहे ?
मन को धीरज दें हम कैसे, अन्धी गलियाँ भटक रहे।
चल–चल हारे न दिशा मिली, किसको रोए तू बतला ?
अनगिनत रचाये खेल यहाँ, ना दिल तेरा यह पिघला।
हमने जग में दुख लिये बहुत, अब तुझसे बात करेंगे।
बन सके न जैसी आशा की, नयना रिमझिम बरसेंगे।
जीवन की सांझ हुई अब तो, मिल लेंगे अब जी भर कर।
तेरे आँचल में छिप जाऊँ, ढूंढा तुझको जीवन भर।

1053

छूट रहें है सारे रिश्ते, रोक नहीं हम पावें।
बहती लहरे हाथ न आवे, कितना नीर बहावे ?
जप मन जप मन गूंजे हरि धुन, सफल जीव हो जावें।
शेष रहे जो क्षण है बाकी, जग में ना भरमावे।
दाता वही जगत का मालिक, जपो लगेगी लाली।
फूल उसी की बगिया के हम, वह ही अपना माली।
बालक हम प्रभु शरण राख लो, तेरे खेल निराले।
भटक रहे इस जंगल में हम, जीवन देने वाले।
चाह प्यार की लिये तड़फते, मोहन तुम ना रूठो।
बस जाओ तुम मेरे दिल में, मोह यहां सब झूठो।
अंधियारी रातों में प्रभु जी, तू ही दीप जला दे।
कहां जाऊं कुछ भी न दीखे, निष्ठुर नहीं सजा दे।
हम हैं अबल हमें ना भूलो, तू ही एक सहारा।
रो–रो तुमको प्राण पुकारें, बहती आंसू धारा।
ले चल मुझको मेरे नाविक, डर लहरों पर लागे।
नैया मेरी पार लगा दे, तुमसे यह हम मांगे।

1054

घूमना चाहूँ मैं नभ में, पर नहीं मैं घूम पाता।
कौन सी मैं प्यास लेकर, यह जगत ना छोड़ पाता।
गम के प्याले हैं धरा पर, प्यार इनमें भर न पाता।
हूँ विवश कितना यहाँ पर, गम मिटा न उनका पाता।
देखता दिल की जलन को, आँख में आंसू को पाता।
दर्द में घुट जी रहा जो, हाय मैं कुछ कर न पाता।
आँख में आंसू लुढ़कते, पैर भी बोझिल हुए है।
हम गिरे बस उस जगह पर, गम में जो डूबे हुए है।
देख लो मेरी विवशता, कुछ नहीं कर पाये जग में।
आ मिले नजदीक आकर, हो गये हम लीन तुझमें।

1055

घूमा फिरा पढ़ा सुना हूँ, अज्ञान न मिटा मेरा।
यही डूबती सी जिन्दगी, अन्धकार न मिटा मेरा।
चलने को चल रहा हूँ मैं, मंजिल है अनजानी यह।
धरती पर दे कर जन्म को, क्या ईश ने ठानी है यह।
बढ़ता ही जाता है विषाद, दुखों को देख–देख कर।
किसको दिखायें हम आज, रोते दिल को चीर कर।
मिटने का राज है यह क्या, इसको नहीं हम जानते।
तुम देख लेना हमको बस, जगत की खाक छानते।
मुझको अपनी धुन को यदि, सुना सको सुनाओ तुम।
बैचेन दिल तड़फता रहा, इसको नहीं रुलायों तुम।

1056

नमन तुझे करते हैं ईश्वर, करें अर्चना मिलकर हम सब।
जग के पालक अन्तर्यामी, तेरे गुन गाते हैं सब रब।
ध्यान लगावे वह सुख पावे, हिय में तू जोत जलावे।
जग के पथ में करें उजाला, मन मन्दिर में शान्ति बहावे।
तुम स्वामी हम दास तुम्हारे, सारे जग के हो रखवाले।
मेरे सर्जक हम बालक हैं, हरपल तू ही हमें संभाले।
आँखों का जल तुझे पुकारे, मेरे जीवन रक्षक तुम हो।
बल दो सह पायें हम कांटे, इन आँखों में तुम्ही बसे हो।
काँटे बनते फूल यहाँ पर, दया तुम्हारी होती भगवन।
मग में बाधा खो जाती है, खिल जाता है हिय का उपवन।
तुमको हम है शीश नवाते, मन वांछित फल तुमसे पाते।
इस जीवन के भाग्य विधाता, सुमरण कर तुमको सुख पाते।
बसे रहो मेरे अन्तस में, सुख के ईश्वर धाम तुम्हीं हो।
डगमग मेरी होती नौका, करते मुझको पार तुम्हीं हो।
कितने ऋण तेरे है मुझ पर, उनको चुका नहीं मैं सकता।
जब भी लागे बिछुड़ गये तुम, इन नयनों में पानी आता।
अपनी कृपा बनाये रखना, बिलग कभी ना मुझको करना।
तेरे ही गुण गाते–गाते, लय हो जाये बस यह झरना।

1057

जोगन हुई प्यार में तेरे, भटक रही मैं राह दिखा दे।
जनम–जनम की प्यासी सजना, पांव पड़ूं मैं प्यास बुझा दे।
अंखियां नीर गिराये झर–झर, पग कांपे यह मेरे थर–थर।
डर लागे तुम रुठ न जाओ, कैसे आऊँ मैं तेरे घर।
ले चल मुझको दूर सजन तू, तुझको निरखूं कुछ ना भावे।
पीड़ मिटे इस दिल की सारी, चरणा तेरे शीश नवावें।
ना विवेक अज्ञानी मैं हूँ, बिन तेरे आंखे यह नम है।
ले चल मुझको साथ सजन घर, बाकी बस थोड़े से पल है।
पाप पुण्य कर्मो की रेखा, ले पाऊँ ना इनका लेखा।
तुही उबारे मुझको सैंया, बस प्रकाश की तू ही रेखा।

1058

कितनी गलियाँ जीवन जाता, चैन इसे ना मिला यहाँ।
कितना रोया कितना तड़फा, ध्यान तुम्हारा प्रभु कहाँ ?
रो–रो गाये गीत यहाँ पर, सुनने बाला नहीं यहाँ।
इतने निष्ठुर हो ना बैठो, आंसू की बरसात यहाँ।
खिले यहाँ पर खो जायेंगे, जपेंगे हम नाम तेरा।
हमें उबारो हे दुख भन्जक, करुणासिन्धु नाम तेरा।
टूटे भी तो ऐसे टूटे, चला नहीं हमसे जाता।
इतना निष्ठुर हाय हुआ क्यों, तोड़ दिया मुझसे नाता।
जीत सका ना हार गया मैं, नहीं इशारे समझ सका।
डोले यह बेचैन हुआ मन, न प्यास कंठ की बुझा सका।
अवश जान लेना अज्ञानी, भटका राह दिखा देना।
तुम बिन किसके आगे रोऊँ, ममता को वर्षा देना।
होनी है नित खेल खिलाये, जियरा हरदम भरमाये।
देव मेरे तुम्हीं संभालो, आंखों में आंसू आये।
जीवन की तुम ही सुगन्ध हो, मन खोजे कहाँ बन्द हो।
कृपा बिना प्रभु गीत उठे ना, सर्जक तुम छिपे कहाँ हो ?
अंधियारी रातों का दीपक, नीर गिर रहे हैं झर–झर।
ईश किरन मिल जाये तेरी, मिटता तम देर नहीं फिर।

1059

रोए हम इतना ही था, देख नहिं यह नसीब था।
क्या हमें भी तुम कहोगे, अनजान पथ बैचेने था।
चल रहे हैं जानते ना, हम तो गिरेंगे किस जगह ?
है यहाँ किसकी प्रतीक्षा, अनजान पथ है भयावह।
आँख खोली जगत देखा, शोर तब रो–रो मचाया।
दुग्ध की दो बूंद देकर, प्राण को चंचल बनाया।
आस को दिल में सजाये, ना पता हम कित रुकेंगे ?
थककर चल–चल के हारे, ना पता हम कित गिरेंगे ?
क्या प्रयोजन इस जगत का, जान कर क्या जान पाया ?
अश्रु से सिंचित हुआ जग, पुष्प है न कोई पाया।
जग यहाँ हर पल बदलता, तुम बदलते दुःख क्यों हैं ?
साथ यह तन छोड़ देगा, किससे पूछें दुःख क्यों हैं ?
चल यहाँ मस्ती अपनी, गिरना उठना है कहानी।
पीड़ अपनी तू छिपा ले, आँख में लाना न पानी।
आंसू को तुम न देखना, बुत बन बैठे रहना तुम।
पूजते तुमको रहेंगे, गुम हो बैठे रहना तुम।

1060

नीर आंखों से बरसते, प्राण यह तुमको तरसते।
छिप गये तुम किस जहां में, रो रहे हम तो भटकते।
तुझ कृपा के हम भिखारी, रूठ मत ओ मेरे माली।
अश्रु की गंगा यह बहती, आंख की जाती न लाली।
ले चल मुझको ओ स्वामी, बह रही जो जगत धारा।
पर बसो मेरे हिया में, बल ना मुझमें मैं हारा।
अपनी वंशी धुन सुना दो, खोजते तुझ चरण पाये।
विरह अग्नि बढ़ती जाये, मिट इसी में नाथ जायें।
दीखता न है अंधेरा, जाने न कब हो सबेरा।
तुम बसो हरि इन नयन में, टूट जाये दुःख का घेरा।

1061

पथ यहाँ तुमको मिलेगा, जपो उसे बढ़ता ही जा।
वश ना कुछ भी तुम्हारे, कर्मो को करता ही जा।
रात है अंधियारी पर, साहस कभी न त्यागना।
निज पथ पर चलते जाना, यह जिन्दगी का खेलना।
करो न शिकायत किसी से, बीन कांटे तू डगर में।
दौड़ सबकी ही यहाँ है, क्या बसा तेरे हिया में।
हो समर्पित ईश चल ले, जिन्दगी का खेल जी ले।
छूटते सारे किनारे, जान कितना शोक कर ले।
उठती लहर और गिरती, खेल थोड़ा सा यहाँ है।
हो रहा बैचेन इतना, जाना न लगता यहाँ है।
सुरति ईश्वर में लगाकर, यज्ञ को तुम पूर्ण करना।
खेल उसका चल रहा है, जानकर यह धैर्य रखना।
नीर आंखो का न सूखे, बाग में तेरे खिले हम।
फिर रहे हम तो भटकते, कृपा करो मिटे सभी गम।
वन्दगी तेरी करें प्रभु, नीर आंखों में भरे हम।
तुम जगत के ईश स्वामी, लाज मेरी राखना तुम।

1062

मन किसकी करे प्रतीक्षा है, सब उसकी ही तो महिमा है।
मन सांस सांस में राम जपो, उसका ही एक सहारा है।
बिन उसके पार न हो नौका, कांटो की चुभन सताये जब।
तू जान समझ ले यह है सच, भूलो ना याद करो तुम रब।
हरि भज ले गीत उसी के गा, कुछ पल बाकी ना जिया चुरा।
जो कल तक था वह आज नहीं, आती जाती है देख जरा।
हरि बस जाये हिय चाह यही, चरणों को धोवें नीर झरें।
हम भटक रहे जग के अन्दर, प्रभु सदा तुझे ही हम सुमरे।
सब लाज हरी के हाथों में, मन हाथ जोड़ कर कर विनती।
अज्ञान तिमिर मिट जाये सब, हरि कृपा मिले पाये ज्योति।

1063

मन लगता है कहीं नहीं, चहुं ओर डोल कर मन हारा।
तेरी करुणा का मैं प्यासा, जग हाय हुआ मुझको खारा।
तुझ चरणों में गिर कर रोऊँ, ऐसा पता बता दे मुझको।
थका हुआ चहुँ ओर निहारुँ, विमुख न कर वर दे दे मुझको।
थी क्या भूख जगत में मेरी, नहीं पता मेरे प्रिय भगवान।
नीरस होकर घूम रहा मैं, प्रेम सुधा वर्षा दे भगवन।
बुझे हुए इस दीपक में तू, ज्योति जगा दे मेरे दाता।
टेढ़ी–मेढ़ी पगडण्डी पर, ढूंढ रहा हूँ तुझे विधाता।
मैं देख रहा न कोई सार, इस दिल को कैसे समझाऊँ ?
फिर भी हे ईश बता मुझको, तुझ रज को क्यों ना पा पाऊँ?
विछुड़ेंगे सब इस नौका से, किसके बन्धन में है यह जी ?
श्याम घटाये दुख ही संग हैं, चल हरि भज ले तू जग में जी।
कैसे समझाऊँ इस मन को, हरि भज तप से तू नहीं डरे।
मजबूरी भी जीवन संग हैं, रोए अंखिया यह नीर भरे।
मैं रोया ना आंसू देखे, कहूँ किसे किस्मत के लेखे।
निज को झाकूँ तुझ नयनों में, ना पाऊँ सब सूना दीखे।

प्यार की दे भीख हमको, रुठ न तू मेरे माली।
नयन बस तुमको निहारें, भूलूँ दुख जग के सारे।
दीप सा जल कर निरन्तर, तुझ चरण में निज को बारे।
ऋषि मुनी ज्ञानी यहाँ पर, ध्यान तेरा ही धरे हैं।
पड़े हम अज्ञान में हैं, हाथ जोड़े बस खड़े है।
प्रभु तुमको कैसे पाये, लग रहे है दन्श हमको।
आंख के मोती ढुलकते, कर रहे हैं याद तुमको।
नाथ पथ हमको दिखाना, जी नहीं हमसे चुराना।
तुम पिता–माता हमारे, ना कभी यह भूल जाना।

1080

मन हरि भजन करो सुख पाओ, जीवन के सब ताप मिटाओ।
वही सहारा देवे हरपल, उससे ही मन प्रीति बढ़ाओ।
जपो उसे बिन उसके सुख ना, देखें पल दो पल का सुपना।
सुरति लगाले उससे मनुआ, तुझे मिलेंगे तेरे सजना।
कितने समर्थ तुम यह जानो, कण–कण में तुम उसे निहारो।
मर्जी उसकी जान चला चल, घट से उसको नहीं बिसारो।
स्वप्न संजोते सुन्दर–सुन्दर, गिरते जाते हैं वह हरपल।
दिल यह अपना रमा उसी में, फट जाते फिर दुख के बादल।
पिव–पिव रटे पपीहा बोले, नीर गिरावे सावन आवे।
धरती भीगे अम्बर बरसे, धन्य हुआ वह हरि घर आवे।

1081

ज्ञान ईश्वर तुम हमें दो, हम सब बालक तुम्हारे।
प्रेम की गंगा बहा दो, दुख हो सकें दूर सारे।
ज्ञान के हम तो पुजारी, ज्ञान का है रुप तेरा।
कृपा तेरी चाहते हैं, जिन्दगी में हो सबेरा।
अज्ञान की चादर ढकी, आस तुम पर ही टिकी है।
बन यहाँ कर्मठ जगत में, दे सके सुख बस विनय है।
शक्ति के भंडार हो तुम, दंश धरती पर अनेकों।
दूर उनको कर सकें हम, शक्ति दो ना दूर फेंको।
अश्रु को स्वीकार कर लो, प्रेम का तुम दान दे दो।
अबल हम तुम सबल हो, जान हमको माफ कर दो।
शुभ कर्म की डोर थामें, जगत अन्दर प्रभु चलें हम।
दूर घृणा भाव को कर, प्रेम में भीगे चले हम।
नमन हम करते तुझे हैं, सृष्टि के कर्तार हो तुम।
द्वार तेरे हम खड़े हैं, सुन प्रभु हमें प्यार दे दो।

1082

मैं सेवक तुम मेरे स्वामी, जियरा रोये गिरता पानी।
डूब रही है नौका मेरी, पार लगा दो जीवन दानी।
तुम बिन जियरा भर–भर आवे, अंखियां हरदम नीर बहावें।
बिछुड़ गये तुम मुझसे मोहन, हमको ढांढस कौन बंधावे ?
पांव पडू मैं ठुकराना ना, बीती जाती जीवन डोरी।
तुम बिन भटक रहा मैं जग में, माफ मुझे कर कृष्ण मुरारी।
धूप दीप नैवेद्य नहीं कुछ, तुम बिन हिय माने ना कुछ सुख।
झरते आंसू तुझे बुलावें, मुझे प्यार दे तू ना दे दुख।
नीर बहें डूबे जिय सारा, टूटे मन का भ्रम प्रभु सारा।
हरि–हरि करते लय हो जाये, यह चाहूँ बस सृजन हारा।
कितने बीते जनम न जाने, अंखियां रोई जियरा तरसा।
मेरे मोहन अब तो सुन जा, बनकर मेघ करो तुम बरसा।

1083

भज ले मन राधे गोविन्दा, बिन उसके जिया न लगता।
अंखियां खोजें हरपल उसको, अश्रु नयन का है बहता।
निशदिन गाऊँ गीत हरि के, तुम ही हो मन के चन्दा।
नयन में छवि रहे तुम्हारी, दुख के काटो सब फन्दा।
सृष्टि रचैया जग के पालक, मेरा रोवे यह जिवड़ा।
जीवन के रखवाले प्रभु जी, याद करे तुझको पिवड़ा।
ध्यान लगाये ऋषि मुनि ज्ञानी, दे प्रकाश तू हरि अपना।
इस जीवन की प्यास तुही है, प्रभु जी सुध मेरी रखना।
आंसू से हम करें अर्चना, मुझको भुला नहीं रहना।
जपे नाम को हम सुख पावे, बस मेरे हिय में रहना।
कितने तूने रंग बिखेरे, तुम बिन जी नहीं लगता।
तुमसे मिलूं नैन छलकाऊँ, हरि बस अच्छा यह लगता।
कहाँ छिपे बैठे हो हरि तुम, रोयें तुम बिन यह अंखियां।
मात–पिता गुरु स्वामी सखा, दूर करो दुख सांवरिया।
निर्बल के बल प्रभु तुम्ही हो, पीड़ हमारी प्रभु हरना।
नमन मेरा स्वीकार करो तुम, चाहूँ चरणों में गिरना।

1084

चलने में होना तृप्त यहाँ, क्या पाना हमको खोना है।
बहना जिसने भी सीख लिया, वह मुक्त हुआ यह जाना है।
ओर न छोर किनारा जाने, भटके यह मनुआ न माने।
कित से आये कित जाना है, सोंचे हम बन कर दीवाने।
जला प्यार की धूनी पागल, कुछ तो चैन जिया को आये।
बहने दे जीवन नौका को, ना जाने यह कब खो जाये।
कर स्वीकार नियति जो चाहे, आना जाना उसकी मर्जी।
जपो उसी को राह दिखाये, जहाँ खिले सब उसकी मर्जी।
चलता जा गाता जा हरि गुण, तुझे इसमें शान्ति मिलेगी।
यहाँ जल रही हरदम होली, न प्रहलाद सी तुझे डसेगी।

1085

चल उड़ चल उस पार गगन के, जियरा तड़फे बिना मिलन के।
अंखियां रोवे तू ना आवे, कहे बावरा सब इस जग के।
बिजली चमके छतिया धड़के, चलू मगर फिर तम में भटके।
विसराना ना बस तू दिल से, खेल खिलाता क्या जीवन के।
इस जग में मोहि कुछ न भावे, मिलूं तुझी से नाचू जम के।
रीति न जानू रोना जानू, ले चल मन तू पार गगन के।
तुझ बिन जीवन कैसा जीवन, झर–झर झरते नीर नयन के।
कैसे पाऊँ ओ निर्मोही, गीत उठे बस यहाँ विरह के।
दर्शन पाऊँ मन बहलाऊँ, कट जायें संकट जीवन के।
तेरे बिन जीया नहिं लागे, कैसे रहूँ बिन साजन के।
रोती अंखिया हंसती सखियां, मारे हैं वह तीर चुभन के।
व्याकुल मनुआ ठौर न पावे, कैसे काटे पल जीवन के।
चल–चल हारा तुझे न पाया, दंश लगे मुझको जीवन के।
करो क्षमा करुणामय देखो, तुम्हीं सहारे आशाओं के।
प्रेम भिखारी घट है रीता, सुमन खिले कैसे जीवन के।
शरणागत लो मोहि ईश्वर, गाऊँ तेरे गीत मिलन के।

1086

जीवन मेरा अजब कहानी, प्रभू तू ही तो पार लगाये।
डूब रही यह मेरी नौका, चाहूँ खेवट तू बन जाये।
आंखों के आंसू को लख लो, अपने चरणों की रज दे दो।
जन्मों–जन्मों से भटक रहा, शान्ति कृपा कर मुझको दे दो।
ऋषि मुनि तेरी महिमा गाते, भक्त याद कर नीर बहाते।
अगम अगोचर पार न तेरा, ध्यान धरे जो वह सुख पाते।
कृपा बनाये प्रभु जी रखना, अपने पथ से नहीं हटाना।
पल बीते तेरी यादों में, अन्धकार को दूर भगाना।
नहीं जगत में तुमसे अच्छा, मन यह रोये खूब विरह में।
सदा गीत मैं तेरे गाऊँ, बस जाओ मेरे नयनों में।

1087

हे ईश कृपा करना हम पर, अज्ञानी हम है भटक रहे।
पीड़ा जो उबल रही मन में, तू बतला दे हम किसे कहें ?
नौका खाती हिचकोले हैं, अंखियां आंसू से पूरित हैं।

इतना क्यों निष्ठुर बन बैठा, छिप गया कहाँ उर घायल हैं।
वह पुष्प कहाँ से लाऊँ मैं, चरणों में जिसे चढ़ाऊँ मैं।
ना समझे यह रोती अंखियां, बतला पिव कैसे पाऊँ मैं।
दिन रात सुरतिया तुझे रटे, क्यों तुझ बिन जीवन नहीं मिटे?
इस भूल भुलैया में भटका, मेरे जीवन किसलिये हटे ?
तेरी यादों में खो जायें, अपनी सुधि बुधि को विसरायें।
टूटे से इस जीवन में बस, खोंजे अंखियां तुमको पायें।
तुम नमन हमारा ले ही लो, कित–कित भटकेगी यह नौका।
ना जान सके जीवन मतलब, कैसा किस्मत का है धोका।
सुपने संजोये हमने थे, क्यों हमें अकेला छोड़ गये।
सब टूट गई हमरी आशा, क्यों हमसे तुम हो विलग हुये ?
आंसू का मोल नहीं जग में, पर याद तुझे कर सुख देते।
तू डुबा मुझे इसमें ही दे, बस इतना ही तुम सुन लेते।

1088

मन मन्दिर की ज्योति जलाऊँ, पूजन कर प्रभु मैं सुख पाऊँ।
जग के दन्श सहे ना जाते, करो कृपा तुझ चरणा पाऊँ।
हार गये हम तुझे पुकारें, सुन ले दुनिया के रखबाले।
जिय मेरा यह भर–भर आता, लाज रखो तू ही संभाले।
मेरी पार लगा दो नौका, जिबड़ा याद तुझे कर रोता।
अगम अगोचर पार न तेरा, तुम बिन कृपा न जिय हर्षाता।
प्रभु बालक मैं अज्ञानी हूँ, तम में जीता गम पीता हूँ।
तू प्रकाश कर दे मेरे हिय, तुमको पाऊँ मैं रोता हूँ।
जनम–जनम की पीड़ मिटे प्रभु, फिर महके बगिया सुमन खिले।
जीवन की अन्तिम सांसों तक, तेरे प्यार की ज्योति खिले।

1089

हम हारे चलकर थके यहाँ, हे ईश कृपा हम पर करना।
नैया मेरी है डूब रही, तुम इसको पार लगा देना।
मैं जाऊँ कहाँ न पथ दीखे, अंखियों से नैना जल सींचे।
तुम कृपा करो हे कृपा सिन्धु, इस ठूठ वृक्ष को कौ सींचे।
हर लहर तेरे इंगित पर है, रुठा मुझसे क्यों ईश्वर है।
तेरे बिन मैं हूँ भटक रहा, क्यों प्रभु तू मुझ पर निष्ठुर है ?
कित जाये हम है जल अगाध, नौका को पार करें कैसे ?
रोए पर तू है छिपा हुआ, इस दिल को दिखलायें कैसे ?
सब हार गये ऋषि मुनि जग में, हम भी हारे हे प्रभु जी हैं।
दो दीप जल रहे मेरे क्यों, बिन तेरे रोते रहते है।
क्यों ईश यहाँ आये जग में, तेरी लीला ना जान सके।
यह मनुआ जग में भटक रहा, निर्मोही ना पहचान सकें।
हम बुला रहे बस रोते हैं, हरपल जीवन को खोते हैं।
बिन तेरे इसका मूल्य नहीं, किस चाहत में हम जीते हैं ?
नयनों से ईश हमें लख लो, तुझ ओर बढ़े हमको पथ दो।
जाता जीवन कुछ पल बाकी, इस सुख से आपूरित कर दो।

1090

मैं हूँ शरण तुम्हारी ईश, ठुकरा ना मुझको वंशीधर।
दन्श सहे ना जाते मुझसे, अंखियां नीर गिरायें झर–झर।
सब ताप मिटे तुझ कृपा मिले, जीवन में लहराये सावन।
मेरी अंधियारी रातों में, दीप जला दे तू दुख भंजन।
तुझे पुकारें रो–रो कर है, बालक डगर नहीं हम जाने।
खड़े ईश हम हाथ जोड़ कर, मिले चरण रज बस यह जाने।
कर्मो का लेखा है भारी, हम तो प्रभु निपट अनाड़ी है।
तू ज्ञान ज्योति को ह्रदय जला, चाहें यह सब नर नारी है।
जीवन महके तेरी बगिया, ना घृणा बढ़े इस जीवन में।
तुम बसे रहो मेरे दिल में, सद्पथ पर चले सदा जग में।

1091

भूत प्रेत चहुँ ओर डोलते, सर्पो का वह हार पहनते।
वन वैरागी जग में फिरते, ध्यान नहीं वह कभी छोड़ते।
उसको छोड़ यहाँ ऐसा क्या, विलग हुए दुख यहाँ भोगते।
याद उसे कर नीर निकलते, जग के वैभव सभी विसरते।
दुख के यह पल कट जायेंगे, साजन तुझसे मिल जायेंगे।
आशा दीपक नहीं बुझाना, बिन इसके न चल पायेंगे।
है अनन्त पथ नहीं किनारा, चलना ही बस धर्म हमारा।
गीत उसी के गाये जा चल, कट जायेगा जीवन सारा।
अपनी मजबूरी सब कहते, छोड़ स्वयं को हाय न बहते।
लड़–लड़ कर सब जीवन बीता, थके यहाँ अब कुछ न कहते।
जलूं शलभ सा अन्त न दीखे, कैसे व्याकुल जीवन बीते।
रो–रो पागल हुआ बाबरा, सारा जीवन यूं ही बीते।
सुख–दुख का खेल रचा प्रभु जी, तूने यह खेल बनाया क्या?
पा सका तुझे न हे ईश्वर, ऐसा भी जीवन पाया क्या ?
हाथ जोड़ कर करुँ अर्चना, प्रभु बसे रहो नयनों में तुम।
निज को तुझमें ही विस्मृत कर, प्रभु मुक्त हो सकेंगे बस हम।

1092

यह पागलों की दुनिया, हम भी एक पागल।
यहाँ देखाता विलखाना, जल रहा मेरा दिल।
हम ढूंढते हैं तुमको, लगता नहीं यह दिल।
इतना हुआ क्यों निष्ठुर, बन तू तो न पागल।
अंखियां हमारी रोती, खो तुमको भटकती।
तुम हो जगत के मालिक, सुनो मेरी विनती।
नहीं दीखाता किनारा, डरें जल है खारा।
न जाने अब क्या होगा, प्राण का आधारा।
चरणों में आ गिरे हैं, पागल को संभालो।
ना जानते हैं कुछ भी, लाज मेरी रखा लो।

1093

अपनी इच्छाओं में फंसकर, बिता दिया यह जीवन सारा।
हार थके नमन है ईश्वर, यहाँ विवश न जोर हमारा।
कैसे पाये तुमको प्रभु जी, पाप पुण्य के कितने बन्धन ?
यह जंजीर न हमसे टूटे, मुक्त करो यह सगरे बन्धन।
चलता हूँ बस नाम तुम्हारा, साथ लिये कागज सा बहता।
कुछ भी हमको ज्ञान नहीं है, आंसू आये बस रो लेता।
गुनाह मिटे न क्षमा मांगते, कैसी मेरी मजबूरी है।
पेट सदा खाली ही रहता, कैसी कर्मो की केरी है ?
हिंसा हो रही कदम–कदम पर, हम व्रत अहिंसा का लेते हैं।
हाय इसे न पूरा करते, निज को ही धोखा देते है।
पागल मन समझाये कैसे, हाय सत्य को पाये कैसे ?
मिटे लहर सागर बन जाये, विसराये हम निज को कैसे ?
तुम्हारे इंगित से हम आये, तुम्हारे इंगित पर जाना है।
ढोते लगता बोझ स्वयं हम, होता वह ही जो करता है।
तू तो करुणा का सागर है, निष्ठुर तू मत होना मुझसे।
हाथ जोड़ कर करुँ अर्चना, प्रभु तू विलग न होना मुझसे।

1094

चरणों में तेरे पड़ रोता, चला नहीं जाता अब माली।
फूल चमन के तेरे है हम, ठुकराओ मत रातें काली।
बीच जलध के मैं हूँ खोया, टूटा दिल मन्जिल ना कोई।
आंखों से है नीर निकलते, बता खता क्या मुझसे होई।
तू ना मुख से कुछ भी बोले, यहाँ प्यार की होली जलती।
देता इतना दर्द हमें क्यों, जल–जल राख यहाँ मैं होती।
यदि प्यार से हमें देखता, हर्षाता यह जिया धड़कता।
अजनबी अनजान नहीं बन, मन चाहे पथ हमको देता।
डरती आंखे सहमी–सहमी, खोज रही जंगल में डेरा।
अंधियारा यह कभी मिटेगा, आस लगी कब होय सबेरा।

1111

इस मन को कैसे समझाऊँ, जग में दिल कैसे बहलाऊँ ?
दिल में मेरे आग लग रही, बुझा नहीं अंसुअन से पाऊँ।
तेरी आँखों में ही झांकूँ, तुझसे ही मैं जीवन जानूं।
तुम क्यों बिछुड़ गये हो मुझसे, तुम बिन जीवन जी ना पाऊँ।
स्वयं लाश बन जीवन ढोते, मजबूरी नित रोते रहते।
सुन्दर भी लगते है मुझको, तुम उपदेश बहुत हो देते।
भूखी–प्यासी आँखे लेकर, पचा न पाता पचा न पाऊँ।
पीड़ा के बहते सागर में, मन को धैर्य नहीं दे पाऊँ।
तेरी डाली पर यह बैठे, भटक–भटक फिर क्यों उड़ जाये ?
ऐसा ज्ञान कहाँ से लाऊँ, सदा तुझी में यह रम जाये।
समझ न पाये समझ न पाऊँ, किसे खोजती है यह पीड़ा ?
हँस रोकर सब समय गुजारे, आँख–आँख में छिपी है पीड़ा।
हाथ बढ़ाऊँ फिर झुक जाये, हा तुम तक मैं कैसे आऊँ ?
पैरों में सामर्थ नहीं हैं, उठ–उठ कर मैं गिर–गिर जाऊँ।
जीवन तुझको अर्पण कर दूँ, तुम्हीं गुरु हो तुम्हीं ब्रह्म हो।
धरती की शोभा सब तुम हो, देवों के तुम देव तुम्हीं हो।
तुम्हीं बता दो दुख क्रन्दन को, इस धरती पर कित विसराऊँ?
मचल रहे अरमान बहुत है, हाय न कर कुछ भी मैं पाऊँ।
नीर गिरे पर कोई न पूछे, धरती पर गिर वह खो जाते।
लपट निकलती पीड़ाओं की, किस सागर में इसे बुझाते ?
मृगमरीचिका में पड़ भागूँ, फिसले सब कुछ मैं क्या माँगू ?
पता तुम्हारा मुझको दे दे, किसकी आँखों में मैं झांकू ?
देख–देख कर अब मैं हारा, बस मैं निशदिन घुलता जाऊँ।
भूखा आता भूखा जाता, बता मुझे क्या भेट चढ़ाऊँ ?
मेरी तो तुम एक न सुनते, मनमानी तुम सदा ही करते।
रो–रो कंठ हुआ है सूखा, तेरी सदा प्रतीक्षा करते।
रोती अपनी आँखे लेकर, इस दिल को कैसे बहलाऊँ ?
पथराती जाती आँखे यह, कहो तुझे कैसे फुसलाऊँ ?

1112

सुख की खातिर हम भटक रहे, निज के पापों से तड़फ रहे।
भयभीत हृदय शंकालू मन, सुपने पल पल में बिखर रहे।
ना क्षुधा कभी है मिट पाती, सुरसा सी यह बढ़ती जाती।
जलती होली में सुमन खिलें, जग देख–देख कर भरमाती।
हरि हमें सम्भालो अज्ञानी, तुम सा ना कोई भी दानी।
शुभ पथ पर हमें चलाता जा, बहता अंखियों से है पानी।
अनजान डगर जाने ना कुछ, तुम कृपा करो मेरी लो सुध।
अंखियों से झरझर नीर गिरें, हम बहे जा रहे बीच जलध।
कैसे पागल मन समझाऊं, नहिं जगत कींच से बच पाऊं।
दिल के देखो हम बुरे नहीं, रो–रो कर कथा यहीं गाऊं।

1113

रोता हूँ बस देख लो तुम, इतना मुझको बहुत है।
पग आंसू से सिंचित करुँ, उपहार मेरा बहुत है।
सूख जायें न अश्रु मेरे, मैं बन्दगी करता रहूँ।
चरणों में तेरे मैं गिरा, बस पूजता तुझको रहूँ।
मजबूर हूँ यह जान कर, उपहास नहीं करना प्रभु।
बीतेगा ना जीवन सफर, तेरी दया के बिन प्रभु।
चरणों में तेरे आ गया, अब और कुछ न देखता।
अन्तिम मेरी चाह यही, मिटना ही तुझमें मांगता।
जानता जग में नहीं कुछ, क्रन्दन मैं हूँ देखता।
आये कहाँ से जा रहे, जीवन की लीला देखता।
तू है छिपा किस ओट में, पागल मनू यह ढूंढता।
नहीं भूलना मुझको प्रभु, तेरी कृपा को माँगता।

1114

डूबा दिल गम में जाता, क्या किसी से हम कहें।
लिखने वाले लिखते है, नयन रोते ही रहे।
हार मत लम्बा सफर है, पार करनी डगर है।
बहते आंखों में आंसू, जिन्दगी चल सफर है।
तुझे चलना है अकेले, कुछ समय का मेल है।
झमेले कितने हो रहे, पर अकेली राह है।
अश्रु प्रभु आगे चढ़ा दे, याद कर हरि को सदा।
उसकी मर्जी से आये, प्यार से जग कर विदा।
क्या शिकायत है किसी से, सभी अपनी कह रहे।
सुर मिलें जो तुम मिला लो, फिर यहाँ हम ना रहे।
प्यार की हम भूख लेकर, इस जगत में घूमते।
कितनी मजबूरी लेकर, नयन नीर निकालते।
कर सको स्वीकार करना, बने न तेरा गहना।
वासना के तिमिर में फंस, लुट रहे माफ करना।
प्रभु मेरे दिल में आओ, जीय नाहीं लगत है।
प्यास तुम मेरी बढ़ाओ, सुख इसी में लगत है।
नीर पथ को खोजते है, किस तरह पायें तुझे।
तुही सर्जक दया करना, चाह पायें बस तुझे।
लाज मेरी राख लेना, हम नमन करे तुम्हें।
खिलते तुम्हारी बगिया, तुम संभालो प्रभु हमें।

1115

दुख हरन हरि भजन कर, सब गुनों की खान है।
वही सर्जक वही पालक, ज्ञान का भण्डार है।
अपना नहीं कुछ भी यहाँ, सभी कुछ हरि का यहाँ।
मान ले यह जान ले सब, छोड़ कर जाना यहाँ।
हरि भजन बिन पार ना हो, डूबेगी यह गगरी।
घूमते इस जगत में हैं, जानते न यह नगरी।
शीश को तू झुकाये चल, वसा हरि हिया अपने।
जाती ले कर यह नदिया, छोड़ो लेने सुपने।
जपो हरि वह ज्ञान देगा, दूर करेगा तम को।
उस कृपा बिन कुछ नहीं है, छोड़ो सारे हठ को।
हर सांस में हरि को भजो, तुझे दे मग जगत में।
वह सर्जक है तुम्हारा, जानो अपने हिय में।
मेल दो दिन का यहाँ, छूटता सब जा रहा।
रंग गया जो श्याम रंग में, भय नहीं कुछ भी रहा।
अश्रु अर्पण करो प्रभु को, उस बिना कोई नहीं।
डगर कितनी ही कठिन हो, पथ हमें देगा वहीं।
खोज उसकी ही यहाँ है, खोजना कुछ और ना।
तुझे डराये आये यम, जगत का कर मोह ना।
दुख गरीबी झेल कर भी, याद कर सुख खान है।
डूब जाये हरि भजन में, दुख नहीं फिर पास है।

1116

गुन तेरे गाते रहे सदा, बीत सफर जाये जीवन का।
आंसू से भीगे जो नैना, तू ही चैना मेरे दिल का।
प्राण पुकारें आ जाओ तुम, रोते हैं यह मेरे नयना।
तेरे बिन सब सूना लगता, कैसे बीतेगी यह रैना।
तेरे बिन तड़फे ना आये, अंखियां मेरे आंसू आये।
जग के वैभव नहीं सुहाये, दया करो जिय भर–भर आये।
अनजान डगर पथ ना जाने, मिट जायें कब यह ना जाने।
प्रीति डोर में हम बंध कर प्रभु, यह पार करें भव तू माने।
तेरी कृपा मिले तो स्वामी, फूल बने कांटे पथ देवे।
जीवन की बस चाह यही है, चरणों को प्रभु तेरे पावे।

1117

हरि इस जगत में बहुत भटका, नीर आँखों का न सूखा।
बन कर भिखारी द्वार पर हूँ, बन चुका मैं हार रुखा।
हरि प्यार से तुम हाथ रख दो, तुम क्षमा का दान दे दो।
हम तो रहे अज्ञान में है, निज करुणा को हमें दो।
तुम ही सृजनकर्ता प्रभु हो, भूल जाओगे हमें क्या ?
नहीं बना तू अनाथ स्वामी, तुम बिना जीवन भी है क्या ?
मैं बढ़ रहा तुझ ओर हूँ प्रभु, अब न मुझको रोक लेना।
तेरे चरण में गिर पड़ा प्रभु, आंसू यह बहने देना।
प्रभु तुम कहाँ पर छिप गये हो, नयन मेरे रो रहे है।
प्रभु ना करो ऐसा जुल्म तुम, ना यहाँ कोई रहे है।
खोया अतीत मेरा सारा, वर्तमान में मैं हारा।
भविष्य की जानता नहीं मैं, तुम बनो मेरा सहारा।
यह नयन पथ मेरा निहारें, तू हमें काहे विसारे।
हम तेरी कठपुतली ईश्वर, चल न पाये विन सहारे।
यह सृष्टि सारी सिर झुकाये, ईश तुझ सम्मुख खड़ी है।
अश्रु पूरित नयन देंखे, नाचती सारी मही है।
हरि दर्द तेरा है अनूठा, जाम तू हर पल पिला दे।
ना विसर जाये कभी तू, और सुधि सारी मिटा दे।
दास हूँ ईश्वर तुम्हारा, ना मुझे दुत्कार देना।
जन्मों से प्यासी यह अंखिया, ना झड़ी को रोक देना।

1118

निशदिन तेरी छवि को निरखूं, इनको अब ना तुम तरसाओ।
जन्म–जन्म की प्यासी अंखियां, हरि मेरे नैनन बस जाओ।
हरपल नाम जपूं सुख पाऊँ, जीवन की सब चुभन मिटाऊँ।
तेरे इंगित पर सब होता, तुझसे विलग नहीं हो पाऊँ।
ऋषी–मुनी सब हारे तुझसे, याद तुझे कर आंसू ढरते।
भूल ना जाना अबल प्रभु हम, चाह यही हम तुझको पाते।
जो कुछ कहूँ यहाँ सब कुछ लघु, तुम अनन्त के स्वामी हो प्रभु।
दिल के जख्म दिखायें किसको, तुम्हीं सुनोगे आस यही प्रभु।
अन्धा देखे लंगड़ा भागे, तुझ कृपा को जीवन तरसे।
सूखी खेती भी लहराये, पतझड़ में भी सावन बरसे।
हे ईश्वर सामर्थ नहीं कुछ, जो तेरी चौखठ पर आये।
बने विवश हम तुझे निहारें, बस अपने आंसू ढरकायें।
जल में मछली जी भर नाचे, बिन जल वह प्राणों को त्यागे।
तू ही प्राण हमारा जल है, जीते तुझ बिन बने अभागे।
जित देखूँ बस तुझे निहारुँ, जीवन की बस डगर सवारुँ।
दो पल के इस जीवन में प्रभु, नहीं तुझे मैं कभी विसारुँ।
तुझ चरणों में पड़ा रहूँ मैं, दास तुम्हारा ना ठुकराना।
हारा थका मुसाफिर हूँ मैं, न मेरा अब कोई ठिकाना।
करें अर्चना नीर गिरें यह, धूप दीप नैवैद्य नहीं है।
अंखियां झरती बस झरने दे, जीवन का सौंदर्य यही है।

1119

तुम बिन नहीं कोई सहारा, नैया पार करो मैं हारा।
कट जायें यह काली रातें, अपना दे दो हमें सहारा।
मंगलकर्ता दुःख के हर्ता, सारे जग के तुम हो भर्ता।
तुही बचाये भटके को प्रभु, रो–रो शरणा तेरी पड़ता।
कुछ ना जाने रोना जाने, पीड़ा को बस माता जाने।
दूध पिला सुख नींद सुलावे, दुख शिशु का वह ही पहचाने।
जानो अबल नाथ तुम पथ दो, सबके भाग्य विधाता तुम हो।
गिरते नीर राह को देखें, इस जीवन की तुम सुगन्ध हो।
मिट जायें सब दुख के बादल, विलख रहे हम तेरे बालक।
कृपा करो तुम हे दुखभंजक, नाथ बना लो अपना सेवक।

1120

मुझ पर दया करो हे हरि तुम, शक्तिमान हो यहाँ अबल हम।
आंखों के आंसू हैं बहते, कर न सकें कुछ विवश हुए हम।
प्यार तुम्हारा प्रभु चाहे हम, पीड़ित मन के कम होवे गम।
अन्धकार में भटक रहे हैं, आंसू गिरते मेरे रिमझिम।
सांसों में हम तुमको जप ले, जाते पल हम तुझमें रम लें।
दया करो तुम करुणा सागर, हिय में तुमको नाथ बसा ले।
मैं मतिमन्द महाअज्ञानी, बिन तुझ कृपा न बोले बानी।
नयना जल मैं चरण चढ़ाऊँ, कुछ भी पास नहीं हैं दानी।
पाप पुण्य अच्छा है बुरा क्या, कैसे इस बुद्धि से तोलूं ?
पीड़ा के बहते सागर में, रोये जिय दिल तुझको दे लूँ।
सूख गये आंसू ना आये, कौन जिया की प्यास बुझाये ?
द्वारे तेरे खड़े हुए हैं, देखें अंखियां कब तू आये ?
तेरे बालक तुझे पुकारें, जिय ना लागे नयना प्यासे।
तेरे इंगित पर सब चलता, काहे प्रभु जी हुए उदासे ?
अंखियां हरपल बाट निहारें, सुधि ले लो ना हमें विसारें।
पांव पडू जिय भर–भर आये, हमें देख लो तुझे पुकारें।
चले सहारा ले कर तेरा, कहाँ खो गये नहीं सबेरा।
कांटों से पीड़ित यह तन है, हमें बचा लो दुख ने घेरा।
करें अर्चना प्रभु तेरी ही, तुझमें हरदम ध्यान लगाये।
वर हमको बस यह तुम दे दो, तू ही दुख को दूर भगाये।

1121

रोते–रोते ही हमारी, बीतेगी यह जिन्दगी।
ना तेरा दीदार होगा, खुशियां भी न महकेगी।
जन्म ही यहाँ क्यों हुआ है, मुझी से बेवफा हुआ।
इस विराने में भटक रहे, कोई न अपना हुआ।
किसको हम रोकर दिखाये, देखता यहाँ कौन है ?
देखता मैं नभ को थककर, परन्तु वह भी मौन है।
पीड़ा इस दिल में सुलगती, मेरे तन को झुलसती।
देखते ही देखते यहाँ, लुटे सब अंखियां रोती।
चोट खाई हमने तेरी, गीत मेरे रोते हैं।
किस जगह छिप कर हो बैठे, पीड़ जग की सहते है।
डूब जाने दो यह गगरी, तुम बिना क्यों है ठहरी।
नीर गिरते अंखियों से है, प्यास न बुझती हमारी।
देख पल जाते हैं कैसे, ना कभी सोंचा हमने।
क्या प्रयोजन हम लिये यहाँ, देखे निज नये सुपने।
निष्प्रयोजन जब हुए यहाँ, क्यों प्रयोजन खोंजे है ?
इस सृष्टि से स्वरों को मिला, क्यों न खुशियां ढूंढे है ?
पर जिसे खुशियां है कहते, कभी हो पाई अपनी।
ठोकरें खाते रहे यहाँ, आंख में बहता पानी।
प्रीति हरि से यदि बढ़े तो, दूर दुख सारे होवे।
सुख यहाँ के क्षण भंगुर है, न कभी संतोष होवे।

1122

जय भोले बाबा तेरी, सुन पुकार बाबा मेरी।
मन्दिर में तेरे आया, रोती यह अंखियां मेरी।
तेरे बिन जिय यह भटके, पाने को चैना तरसे।
कट जाये सारे संकट, कृपा होय मेघा बरसे।
तू दाता मेरा स्वामी, झोली पर मेरी खाली।
आंसू गिरते टप–टप यह, रूठो ना मेरे माली।
दर से नहीं लौट जायें, तेरे गीतों को गायें।
प्यासी यह अंखियां मेरी, अपने हिय तुझे बसाये।
कांटो भरी डगर है मेरी, अनजाना यहां सफर है।
थाम हमें प्रभु तुम लेना, बस मेरी यही विनय है।

तू लगे बस साथ मेरे, जान ले मंजिल यही है।
तू उठावे तू गिरावे, कुछ नहीं अपना हमारा।
नीर मेरे देख लेना, जानो अब मैं हूँ हारा।

1140

हरि तुम बिन मैं हुआ बावरा, कहाँ छिपा मेरा सांवरा।
तेरी यादों में खो जाऊँ, बहती इन नयनों से धारा।
ले चल मेरी नौका नाविक, जियरा कांपे पथ है धूमिल।
कृपा तुम्हारी पार लगे यह, जियरा रोता नाथ हम अबल।
लाज राखना इस जंगल में, जीवनदाता अन्तर्यामी।
बहता इन आँखों से पानी, सेवक हम तुम मेरे स्वामी।
प्रीति निभा दे प्रियतम मेरा, अन्धकार ने मुझको घेरा।
जाऊँ कहाँ कुछ भी न दीखे, देखूँ कब हो जाये सबेरा।
चल चल गिरूँ पुकारूँ तुमको, नयना रोये बोलूँ किसको?
मात पिता गुरु सखा सभी तुम, ज्योति जला पथ दीखे हमको।
तेरी धुन सुन मीरा नाची, खोई राधा हरि यादों में।
बना बावरा मुझको ऐसा, तुम्ही रहो मेरे नयनों में।

1141

हरि तुम बिन सुख कहीं न पाऊँ, याद तुम्हारी नीर बहाऊँ।
टूटे भ्रम जियरा लागे ना, चाह नयन में तुझे बसाऊँ।
चलूँ गिरूँ प्रभु मुझे थामना, जियरा बस में न सम्भालना।
इस जीवन के सर्जक पालक, पाऊँ कैसे पथ दिखलाना।
कितनी चाहें बनी गिरी सब, बस में कुछ भी ना यह जाना।
अंधियारी रातों का साथी, धन्य हुए जिसने पहचाना।
जपते जपते प्राण पुकारें, नाथ तुम्ही हो मेरे सहारे।
आँसू सूखे ना नयनों के, कृपा करो प्रभु हम तो हारे।
प्रीति बढ़े तो जियरा हरषे, बहें नीर मोती से बरसे।
सूखी बगिया फिर लहराती, नहीं भूलना जियरा तरसे।
बुझता जाता जीवन तारा, अन्तिम क्षण तक तुही सहारा।
नाम तेरी गंगा में बहता, पार लगा देना आधारा।

1142

क्यों ना समझे मन तू पागल, जीवन है यह बहता बादल।
जाये हवा ले पता कहाँ न, दो दिन की सारी है झिलमिल।
नट बन कर तू नाट्यमंच पर, दिखला ले करतब कितने ही।
जान यहाँ पर ना घर अपना, छूटेंगे अपने सारे ही।
चैन मिले हरि को जप दिल में, दीप जले काली रातों में।
जग के दन्श न तुझे सतावे, खिले फूल मुरझाये दिल मे।
विश्वास करो मिलती न दगा, वह आदि अन्त है यहाँ सदा।
निज तृष्णा में उलझ उलझ कर, मन मत रो पागल नहीं जुदा।
बहता जा नहीं भूल उसको, उसका जीवन दे दे उसको।
आना जाना उसकी मर्जी, क्यो न दीखता पागल तुझको।
खो जा मन हरि की यादों में, नहीं यहाँ तू हरि सांसों में।
बजती रहती उसकी सरगम, वीणा उसके ही हाथों में।

1143

किसको सुनाये पीड़ मन, कोई नहीं तेरी सुने।
निज वासना का है जगत, वह धन्य जो हरि को चुने।
मन जान ले हरि चैन है, दुनिया उसी का खेल है।
तन संग अपना छोड़ता, पकड़े किसे नादान है।
कट जायेंगे दुख के पल, बसा नयन में हरि को मन।
जो नीर देते है चुभन, हरि याद में बनते सुमन।
सब कूल जाते छूटते, ना नीर तेरे सूखाते।
कुछ भी नहीं अपना यहाँ, जानो हरि यहाँ खेलते।
मन हरि भजन कर झूठ सब, अर्पित करो निज नीर सब।
कट जायेगी संध्या यह भी, न जानते क्या होगा कब?
जग की पकड़ दुखदाई है, हरि भजन कर सुखदाई है।
जपता रह मन उसको तू, वह तो सदा सहाई है।

1144

हरि हरि कहूँ हरि को चहूँ, अबल मैं हूँ कैसे गहूँ?
विनती हमारी हरि यही, ध्यान में तेरे ही रहूँ।
कृपा तेरी जग माँगता, तुमको रो मैं पुकारता।
जानूँ न कैसे रिझाऊँ,, थक कर राहें निहारता।
तुम बिन बाजे बीन नहीं, प्यार से हरि हमें लख ले।
डरता जिय रात अंधेरी, करूँ विनय प्रभु तू सुन ले।
कुछ भी नहीं है दीखता, सुनसान मेरी डगर है।
नीर यह अंखियाँ बहाये, छिप गया तू किधर है।
दीपक जला दो ज्ञान का, ना तिमिर से हो सामना।
अज्ञान में हूँ भटकता, हरि लाज मेरी राखना।
हरि प्रीति बस तुझमें बढे, इन नयन में तू ही रहे।
आदि तू ही अन्त तू ही, तेरी रजा में खुश रहे।

1145

गाओ हरि के गीतों को, छोड़ो अपनी पीड़ा को।
उस बिन सारा जग खारा, न भूलो अपने मीत को।
हरि हरि सुमरो कटे सफर, जग के लगते न शूल शर।
प्रीति दिल में जब उमड़ती, बरसते नयन दिल हो तर।
प्रीति बढ़ा हरि में पागल, कुछ देर हैं न होंगे कल।
क्यों धूल जग की चाटता, हरि धुन बजे हर्षाये पल।
मन छोड़ ना उसकी सुरति, हरि हरि जपो चलते चलो।
ले चले नौका तुम्हारी, विश्वास रख मन में चलो।
लहर बन कर बह नदी में, साथ तेरे हर सफर में।
जान तू ना बस वही है, छोड़ डर न पड़ तू गम में।
वह उठाये वह गिराये, नयन यह आँसू बहाये।
याद उसकी ले मिटा जो, बह रहा हरि ही चलाये।

1146

प्यारे प्यारे गीत सुनाऊँ, यादों में मैं नीर बहाऊँ।
कैसे इस मन को समझाऊँ, हरि तेरे बिन न रह पाऊँ।
चैन न आवे धड़के जियरा, मेरे मोहन तू क्यों विछुड़ा?
काली रातें मुझे डरावें, मुझको भूला रोवे जिवड़ा।
हरि मैं नाचूँ तेरे आगे, छाये मदहोशी ना जागें।
तेरी गंगा में डुबकी लूँ, टूटें सब कर्मों के धागे।
इस जीवन को देने वाले, हरि हरि मेरे प्राण पुकारें।
त्रास मिटाओ पीड़ित मन की, कृपा होय तो दुख से तारे।
जियरा उबल उबल यह जाये, जग में भटके शान्ति न पाये।
हरि बस तेरा एक सहारा, चाहूँ नयनों में बस जाये।
लाज राखना हरि तुम मेरी, जग में भटका हुई है केरी।
शीश झुकाऊँ तुझ चरणों में, पार लगा दो नैया मेरी।

1147

वन में खोजन काहे जाई, हरि तो दिल में रहा समाई।
झर झर नीर गिरावें अंखियाँ, पूछें पता कहाँ हरि पाई?
हरि हरि जपो देख तू हरि को, कौन देखता समझो हरि को।
उसकी अपनी प्रीति निराली, निशदिन जपो सदा तुम हरि को।
पगले किससे प्रीति बढ़ाये, क्षण भंगुर आना जाना सब।
टूटेंगे बन्धन होगा दुख, कौन यहाँ तू नाच रहा रब।
हरि हरि जपो जिया सुख पावे, छूटे जग चिन्तन हरि आवे।
नीर नयन के बनते मोती, तृष्णा छूटे तब हरि पावे।
दूर रहे हरि से दुख पावे, आना जाना खेला पल का।
जितना सुमरे खिले कमल सा, हरि को छोड़ ध्यान है किसका?
लहर यहाँ क्या सब समुद्र है, समझ अकेली दुख ही दुख है।
जपता हरि को सागर देखे, जाने ना मैं सब सागर है।
आया यहाँ न किसने पूछा, जाता उसको किसने रोका?
क्या सामर्थ जान ले अपनी, हरि ही खेवे तेरी नौका।
हरि को जप हरि हरि ही रट लो, सोते उठते कभी न भूलो।
सदा साथ वह तेरे पागल, जान यहाँ ना दुख में झूलो।

1148

हरि मैं हरदम नीर बहाऊँ, कृपा होय तो तुमको पाऊँ।
चला न जाता अबल नाथ मैं, विधि ना जानूँ कैसे पाँऊ?
खड़ा द्वार मैं राह निहारूँ, छटे अंधेरा दर्शन पाऊँ।
प्यासी मेरी अंखियाँ मोहन, सदा नयन में तुझे बसाऊँ।
खोजूँ तुमको चल चल हारा, ज्ञान दीप को नाथ जलाना।
ईश तुम्हारे बालक है हम, चाह नहीं तुम मुझे भुलाना।
इस जीवन की तुम आशा हो, सदा नमन करते हम तुमको।
मिले प्यार यह जिय हर्षाये, गिरते नीर देख ले हमको।
चाहूँ सदा सहारा तेरा, रोते दिल ने तुझे पुकारा।
इस दुनिया के तुम हो मालिक, देख हमें लो मैं तो हारा।
अन्तर्यामी जग के पालक, सबकी नौका तू ही खेता।
फिर भी हम कुछ भी ना जाने, दया करो मिल जाये रस्ता।

1149

नहीं राम बिन कोई दूजा, प्रभु तुम्हारी करता पूजा।
दीनबन्धु करूणा के सागर, प्राण पुकारें तू अब आ जा।
अंखियाँ रोये खोजें तुमको, दर्द विरह का प्यारा लागे।
मतवाला बन जाम तुम्हारा, पी कर झूमूँ यह हम मांगे।
नयनो से गंगा जो बहती, बहता रहूँ यही सुख लागे।
क्षण भंगुर सब प्रीति करूँ क्या, टूट रहे पल पल पर धागे।
इस जीवन को देने बाले, सदा साथ पर ना पहचाना।
लाज राखना दास तुम्हारा, सब कुछ तेरा ना यह जाना।
लिये वासना भागा हरपल, टूटें, नयन बहाये फिर जल।
जपूँ नाम तेरा हे यादव, शीतल हो जाता फिर यह दिल।
शीश झुकाये नाथ खडे हम, हरि सुमरूँ ना तुमको भूलूँ।
यही चाह चरणों को चूमूँ, इसी लपट में सब कुछ भूलूँ।

1150

नहीं करनी शिकायत है, बहते कितने आँसू हैं।
लहर यह भागती जाती, जहाँ हम वह ठिकाना है।
छुपा है दर्द सीने में, कह दो किसको दिखलाये।
सभी निज सोच में डूबे, अंखियाँ आंसू ढलकायें।
जरा देखो बहें आँसू, चुभन दिल की मिट जाये।
मुबारक हो तुझे खुशियाँ, सांसे गीतो को गायें।
कहाँ तुम हो कहाँ मैं हूँ, खिलाता खेल सागर है।
लहर का जोर है कितना, ना जाना दिल रोता है।
लहर बस प्यार को पाने, यहाँ पर भागती जाती।
मिले संग कह सके अपनी, नयन में स्वप्न संजोती।
बहाता है जिसे सागर, लहर सब भागती जाती।
विवश सब न कोई साथी, न हरि को याद क्यो करती?

1151

क्या प्रयोजन क्यों यहाँ हम, कोई भी नहीं जानता।
नीर अंखियाँ यह बहाये, कोई न मन्जिल जानता।
वासना से क्या मिला सुख, चाह सुख की भागते सब।
न स्वयं से कोई पूछे, दूर बैठा देखता रब।
खेल खेला जान मेला, यह जगत पूरा झमेला।
प्रीति मन किसकी लगाये, जान ले तू है अकेला।
नित्य नूतन हो रहे हैं, दृश्य ओझल हो रहे है।
सत्य जो मिटता कभी ना, दृश्य तज गम ना रहे हैं।
देख उसको देखता जो, खेलता संसार में जो।
वासनाओं को बढ़ाकर, चीखता गम को बढ़ा जो।
मन सदा जपते रहो हरि, सुखद यह तय सफर कर लो।
क्या प्रयोजन यह न पूछो, जिन्दगी में रंग भर लो।
नाम ले बहते रहो मन, पकड़ोगे रोना होगा।
जानो कठपुतली उसकी, छोड़ मैं सुख तभी होगा।

1152

नयनों से नीर बहाऊँ, मैं किसको पीड़ दिखाऊँ?
मात पिता गुरू सखा सभी, शरण तेरी हरि मै आऊँ।
यह मन डोले इधर उधर, कैसे इसको समझाऊँ?
प्रीति बढे हरपल तुमसे, सब कुछ भूल तुझे पाऊँ।
चलूँ संभल जियरा कांपे, गिर गिर मैं फिर भी जाऊँ।
पाप पुण्य कर्म रेख को, मिटा सकूँ ना घबराऊँ।
जीवनदाता मैं बालक, मिटे अन्धेरा होय सबेरा।
मुझको भूल नहीं मोहन, बसो नयन में, मैं तेरा।
जग पालक कैसी लीला, घट घट भरी हुई पीड़ा।
पोंछे फिर भी तू आंसू, ना जानूँ तेरी क्रीड़ा।
नीर बहे तुझे पुकारें, चल न सके बिना सहारे।
पार लगा मेरी नैया, लाज राखना हम हारे।

1153

हरि मैं शरण तेरी आऊँ, श्वास श्वास में तुझे बुलाऊँ।
इस जीवन का तू रखवाला, तेरे बिन अब ना रह पाऊँ।
हरि हम तेरा करते वन्दन, धूल चाटते बीता जीवन।
अंखियाँ नीर बहाती हरदम, कृपा मिले खिल जाता उपवन।
लाज राखना सृष्टि रचियता,स्वामी तुम हो मैं हूँ सेवक।
फिकर करूँ मैं होता गाफिल, तुम ही इस जीवन के मालिक।
जीवन दूभर भूल न जाना, हरपल होती रहती हलचल।
नाम तुम्हारा एक सहारा, अनजानी गलियाँ मन बोझिल।
एक झरोखा दे दे मुझको, खोजूँ कहाँ यह मन हैं चंचल।
उठती गिरती इन लहरो में, थाम मुझे ले गिरता है जल।
फूल तुम्हारी बगिया के हैं, मिटती नहीं नयन की लाली।
द्वार खड़ा ले झोली खाली, तुझे पुकारूँ आ जा माली।

1154

हरि तुम बिन जियरा ना लागे, खोजूँ कहाँ न मारग सूझे।
दीनबन्धु करूणा के सागर, अंखियाँ रोवे तुमसे बूझें।
सुनूँ बांसुरी जियरा नाचे, सुन कर मस्त हो गई मीरा।
प्रीति तुम्हारी विरह बढ़ाये, चाह भस्म हो उसमें जियरा।
अगम अगोचर पार न तेरा, कृपा बिना न होय सवेरा।
अबल नाथ हम दास तुम्हारे, पार लगा दो किस्ती मेरा।
निर्मोही ना बनो ओ छलिया, झर झर अंखियाँ नीर बहाये।
तेरा प्यार सदा हम चाहें, तुम बिन कहो कहाँ हम जायें।
मिले प्यार खिल जाये उपवन, इस जीवन की तू ही धड़कन।
ठोकर खाते तुझे भूलकर, माफ करो तुम मेरे मोहन।
जियरा तड़पे रोवे अंखियाँ, कहाँ छिपे तुम प्यारे छलिया।
छिप छिप कर तू हमें नचावे, गये हार हम पड़ते पैंया।

1155

हरि भजन बिन सत्य क्या मन, देखो जग जलता हरपल।
प्रीति तू किससे लगाये, टूटते हर कदम पर दिल।
कौन अपना है पराया, खेले हरि उसकी माया।
नीर यह अंखियाँ बहाती, धुल ना पाती यह काया।
डोले यह नैया डगमग, हरि पुकारो खो गया मग।
देखें सूनी सी अंखियाँ, कौन हमको है रहा ठग।
पाप क्या है पुण्य क्या है, घूमें सुख दुख का पहिंया।
जलता दिल जाने क्या है, भजन कर ले मिले छैया।
वासनाओं से भरा जग, यह मिटे, ना फिर यहाँ कुछ।
बहे जा बस लहर बन कर, जान ले ना जोर है कुछ।
प्रीति हरि से मन लगा तू, जान दो दिन की कहानी।
किसे करनी है शिकायत, यह बहायें नयन पानी।
लहर हम सागर मचलता, बस ना, सुख हरि जो जपता।
छूट जाये जगत तृष्णा, नयन में तब हरि मचलता।
डोरी हाथो में हरि के, जान ले खुद को मिटा दे।
शीश अपना तू झुका दे, नयन के आंसू चढ़ा दे।

जग में भटकूँ नहीं किनारा, तुम ही मेरा एक सहारा।
पार लगा दो मेरी नौका, कृपा करो प्रभु मैं तो हारा।
अंखियाँ खोली जग को देखा, पाल रहा जग यह भी देखा।
लगी भूख मैं चिल्लाया फिर, दूध पिलाते माँ को देखा।
बहें नीर तो लोरी देते, चुप हो चुप हो पाठ पढ़ाते।
आँखों में निंदिया छा जाती, कौन लोक की सैर कराते।
मीठे मीठे सुपने लेते, टूटे जब यह फिर हम रोते।
मत खो सुपनों में मन पागल, हरि भज नौका वह ही खेते।
हरि भज हरि भज सत्य वही है, ओम राम सब रूप वही है।
ध्यान लगे जब हरि में मनुआ, सब संकट का काल वही है।

1173

हरि का जाप करो मन पागल, जीवन डोरी टूट रही है।
सुपनों में मत खो दुख का घर, दिल में पीड़ा तड़फ रही है।
हरि जप चैन मिलेगा मन को, मुरझाया जो कमल खिलेगा।
जग की इन टेढ़ी राहों में, जप ले मन का कष्ट मिटेगा।
हरि हरि जप ले जग में बह ले, सब कुछ उसका उसमें जी ले।
दो दिन का है खेल यहाँ पर, मदिरा उसकी हरपल पी ले।
मर्जी सदा उसी की चलती, लिये इशारा सांसे चलती।
सुख सागर दुखहर्ता वह ही, जप ले हरि को संध्या ढलती।
माया कितने नाच नचाये, हरि को भूले चैन न आये।
उठी गिरी कितनी आशायें, सोंचे इनसे तू तर जाये।
सुपना सा सब बीता जाता, पागल इसमें क्यों भरमाता।
सदा यहाँ ना रैन बसेरा, काहे अपना जिया जलाता।
हरि को याद करो दुख मिटते, सुबह शाम को वह ना लखते।
हरि गंगा में हुए विसर्जित, बहते जाते कुछ ना कहते।
दो दिन जीना हरि में जी ले, नीर बहें वह उसको दे दे।
उसकी मर्जी यहाँ खेलती, कौन यहाँ तू हरि मे बह ले।

1174

बीत रहे दिन तुम ना आये, नयना रिमझिम नीर बहाये।
अंधियारे में डरता जियरा, तुम बिन दीपक कौन जलाये?
तुझे पुकारूँ रोवे अंखियाँ, मुझको छलो नहीं अब छलिया।
द्वार तुम्हारे खड़ा हुआ मैं, कृपा करो अब दे दो छँया।
हरि हरि सुमरूँ तुझे न भूलूँ, नाथ यही वर मुझको देना।
खो जाऊँ तेरी यादों में, क्षण भंगुर जग से क्या लेना।
मेरे जीवन की आशा हो, चाहूँ कभी खफा ना होना।
अज्ञानी हूँ तेरा बालक, अपना प्यार सदा ही देना।
सुपनों की दुनिया में घूमा, दन्श लगे पग पग पर टूटा।
फिर भी आंखे खुली न मेरी, तार हाय क्यों तुझसे टूटा।
विसर गई क्यों तेरी यादें, जियरा मेरा करता धक धक।
अबल नाथ पथ को ना जानूँ, कृपा करो जो पहुँचू तुम तक।
विनय सुनो मैं हार गया थक, करूँ अर्चना पास नहीं कुछ।
बहते आंसू पहुँचे तुम तक, जग में जिनका मोल नहीं कुछ।
तेरा जीवन तुझे न भूलूँ, नाथ नहीं मुझमें कोई गुन।
हरि हरि कहते बीते जीवन, दशों दिशायें गायें संग धुन।

1175

सत्य वह ही है सदा, प्रीति हरि में मन लगा।
नाचें कठपुतली बन, दिल नहीं जग से लगा।
शिकवा करता किससे, लुट रहा सारा जहाँ।
खेल दो दिन खेलकर, ना पता होंगे कहाँ?
डोर उसके हाथ में, सुरति डोरी समझ ले।
क्या अकड़ अपनी लिये, बन खिलौना नाच ले।
छूट जाये ना सुरति, देख ले शाम जाये।
प्रीति में तू मगन हो, नाच जब तक नचाये।
लहर सागर बहाता, बन लहर जोड़ नाता।
तू नहीं बस वही है, समझ अंखियाँ बहाता।
प्रेम से देख सबको, सब में देखो रब को।
सुरति को ना भुलाना, वसा दिल में उसको।

1176

देखते तुझ ओर हम हैं, कह सके कुछ भी नहीं बल।
चाह इतनी माफ करना, नयन से मेरे बहे जल।
सृष्टि के तुम हो रचयिता, जानो घट घट की तुम हो?
यादों में मिटता तेरी, किस जगह मोहन छिपे हो?
मैं थका हारा मुसाफिर, गिर रहे हैं नीर झर झर।
रूठ ना मुझसे नहीं तुम, जिन्दगी का मार्ग दुस्तर।
सूख जायें ना नयन जल, भस्म हो जाऊँ विरह में।
तुम बिना अच्छा नहीं कुछ, बनूँ परवाना मिटूँ मै।
तुझ दया को चाहते हैं, दास को तुम ना सजा दो।
बीत जायेगी कहानी, तुम मधुर बन्शी सुना दो।
बैठ तेरे द्वार पर प्रभु, हर समय जपता रहूँगा।
बल नहीं तुम तोड़ना प्रभु, चरण को धोता रहूँगा।

1177

हरि ओम जपो मन सुखदाई, दुख तेरे सारे कट जाई।
इस जग की है रीति निराली, पकड़ न कर बहता सब जाई।
बीच भंवर में डूब रही हो, नयन करें जब जल से पूजा।
उसकी पार लगावे नौका, हरि बिन कोइ और न दूजा।
जनम जनम के पाप मिटेगे, मन क्यों उलझे इस जंगल में।
खा ना अब तू जग से धोखा, बसा हरी को अपने घट में।
हरि जप हरि जप चैन मिलेगा, दिल का सोया कमल खिलेगा।
बिन उसके ना गाये कोयल, कैसे मन का बोझ हटेगा।
हरि भज निर्बल का वह ही बल, शक्तिवान भी जाते है झुक।
सकल सृष्टि करती परिकर्मा, हरि चरणों में तू भी जा झुक।
लहर बना सागर में बह ले, प्रीति न छूटे इस अन्तस में।
लहर नहीं यह सागर नाचे, मैं को छोड़ो डूबो इसमें।
हरि जप वह सुख का सागर है, तपती धरती का बादल है।
कितना भटको चैन मिले ना, इन प्राणो का वह प्रियतम है।
हरि जपता जा तू बहता जा, जान किनारा हरि ही जाने।
किसने पूछा जब तू आया, जायेगा कब हरि ही जाने।

1178

हरि से प्रीति करो मन पागल, जग यह लक्ष्य नहीं जीवन का।
मन भटके मन जग में डोले, जाने ना खेला दो दिन का।
चक्र चल रहा इसको भूला, चैन न पायो हरपल रोया। मिटा
सका ना मैं की रेखा, कांटे लगे समझ को खोया।
जग के सुख सब ही क्षण भंगुर, प्रीति बढ़े हरि से दुख भागे।
हरि हरि कहते बीते जीवन, बरसे मेघ सभी तन भीगे।
तेरी मर्जी देख यहाँ क्या, खड़ी वासना कर दुख पाया। नाच
नचाये हरपल तुझको, जप ले हरि को मिलती छाया।
हरि दयालु वह सुख का दाता, तेरा ही वह भाग्य विधाता।
उसको भूल जगत में घूमें, नीर बहाये हरपल रोता।
हरि को मान जिया फिर हरषे, संकट मग के सब कट जाते।
जैसे रिमझिम सावन बरसे, हरि गंगा में जो भी बहते।

1179

हरि बिन मुझसे रहा न जाई, काहे मुझसे नयन चुराई।
जग के पालक हम बालक हैं, प्रभु तेरी मैं शरणा आई।
दीन दयालू सुख के दाता, तुमसे सारा जीवन आता।
तेरी जो करे अर्चना, दुख का दरिया पार कराता।
नयन बहाऊँ राह निहारूँ, छल ना कर अब मुझसे छलिया।
पार लगा दो मेरी नौका, डगमग करती होती संध्या।
स्वप्नजाल सी सारी दुनिया, रंग बदलती हरपल छैला।
यादों में तेरी पल बीते, कभी नहीं हो यह मन मैला।
सब जग की मैं गाथा भूलूँ, बस जाओ मेरे नयनों में।
मृगमरीचिका दूर हटे सब, तुझे निहारूँ हरपल दिल में।
आ जा माली तुझे पुकारूँ, तुम सा नहीं जगत में दूजा।
शीश झुका तेरे चरणों में, अश्रु नयन के करते पूजा।

1180

हरि मैं गीत तुम्हारे गाऊँ, रिमझिम अपने नीर बहाऊँ।
बह जाऊँ मैं इस गंगा में, पास न कुछ जो मैं दे पाऊँ।
नाम तुम्हारा प्यारा लागे, नयना मेरे रिमझिम बरसे।
इससे बढकर क्या सुख कोई, प्राण मिलन को तुमसे तरसे।
जीवन की तुम ही हो आशा, जग में भटका मिली निराशा।
जाम तुम्हारा जिसने पीया, मगन हुआ जग बना तमाशा।
नाथ यही तुमसे है कहना, हरि हरि कहते बीते जीवन।
दास तुम्हारा कभी न भूलूँ, निशदिन बजती रहे यही धुन।
अपनी कृपा बनाये रखना, और नहीं कोई भी सुपना।
ध्यान तुम्हारा कभी न टूटे, विनती करूँ यही है कहना।
इस जीवन को देने बाले, सरगम तेरी लागे प्यारी।
चल चल हारा नाथ जगत में, लाज राखना शरण तुम्हारी।

1181

हरि ओम जपो मन ओम जपो, सुमरण कर सब दुख दूर करो।
उस बिन तृप्त न होवे मनुआ, चाहे कितना तुम जतन करो।
ओम प्रीति में जो भी चलता, नयना बरसे पर पथ मिलता।
आती जाती इन सांसों को, देखे हरि का रस्ता तकता।
ओम जपो मन सुखदाई वह, क्षण भंगुर जग के सुख सारे।
जिसके दिल में वह लहराये, टूटे बन्धन वह ही उबारे।
सुख का दाता वह पालक है, सबका वह ही भाग्य विधाता।
बिना कृपा न छटे अन्धेरा, जप उसको फिर गम ना आता।
कितनी पीड़ा दर्द यहाँ है, देख रहा वह प्यार कहाँ है?
जिसको लेकर मीरा नाची, खोया वह अन्दाज कहाँ है?
देना वर प्रभु यही तुझे तुम, तुझमें सोऊँ तुझमे जागूँ।
चाहत रहे न कोई बाकी, सुरति हटे ना वस यह मागूँ।

1182

जो भी मिला उसी में झूमों, दुनिया सपनों की ना भटको।
जो भी खेल खिलाये नाचो, तन भी जाता कितना रोको।
आँख खोल जग को देखो, कितनी योनी घूम रही है।
अपने अपने ढंग से जी कर, लीन शुन्य में सदा हुई है।
सुपना सा सब बीता जाता, जो भी जहाँ वहीं इतराता।
पर कितना है जोर किसी का, मन तू समझ नहीं क्यों पाता।
देख फूल भी गन्ध लुटाता, खड़ा जहाँ वह कहीं न जाता।
कुदरत खेल खिलाये नाचे, पानी धूप हवा सब पाता।
हरि की मर्जी नाचे जब तक, तोड़े खुद को बचा न पाता।
बना दिवाना जो भी हरि का, हरि ही जाने उसका खाता।
लहर बना सागर में बह ले, बाकी जान यहाँ सब धोखा। जप
ले हरि सब यहाँ वही है, जान न पाया कोई लेखा।

1183

अर्चना मेरी अधूरी, प्रभु कर दो पूरी इसको।
नीर बहते देख इनको, तुम बिना हम कहें किसको? ना
किसी से हो शिकायत, जिये जैसे तू जिलाये।
सुरति तुम में हर समय हो, नयन यह आंसू बहाये।
सृष्टि के मालिक तुम्ही हो, घूमते अनजान गलियाँ।
तुम खफा मुझ से न होना, हे हरि हम पड़ते पैया।
तपती धरती तू ही बरसे, और ना कोई सहारा।
ताप जग के तू मिटाये, नाथ तू ही सृजनहारा।
प्रीति मेरी हरि तुम्ही हो, ना बिछुड़ जाना कभी भी।
बल मुझे दे बन पतंगा, गोद पा जाऊँ कभी भी।
ध्यान हरपल हरि रहे यह, चाह मेरी तू खिवैया।
तुम बिना जग में उलझ कर, दुख बहुत मिलती न छँया।

1184

बीत गये दिन तुम ना आये, अंखियाँ हरपल नीर बहाये।
काली रैना मुझे डरावे, आन मिलो अब कुछ ना भाये।
तेरी यादें लागे प्यारी, सुना बांसुरी मैं थक हारी।
तेरी धुन सुनने को फिरती, लाल हुई आंखे कजरारी।
किसे कहूँ दिल मेरा डरता, नयना मेरे रिमझिम बरसें।
कब से बैठा प्रभु जलूँ इसी में, कुछ भी मुझको नहीं सुहावे।
विरह बढे प्रभु जलूँ इसी में, कुछ भी मुझको नहीं सुहावे।
अंखियाँ तरस रही मिलने को, तन अँसुवन से सदा नहावे।
हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको, क्यों भूला निर्मोही हमको?
बाट निहारूँ रस्ता देखूँ, कृपा मिले कब तेरी हमको।
हरि हरि गाये सांसों की धुन, मुझमें प्रभु जी ना कोई गुन।
द्वार तुम्हारे आन पड़ा हूँ, हरि संभालो विनय यही सुन।

1185

हरि बिना ना चैन आये, पल में खुशियाँ फिर मातम।
जप हरि को मिटते दुख हैं, जिन्दगी का जान आलम।
जप कमल दिल का खिलेगा, नयन में जब हरि बसेगा।
कौन अपना है पराया, छोड़ दिल हरि में लगेगा।
इन्तजा किसकी यहाँ है, मिट रही सारी कहानी।
प्यार मन हरि से बढ़ा ले, तू बहा ले नयन पानी।
ढल रही है शाम देखो, जाने न कब हो सबेरा।
डूब जा हरि प्रेम में मन, दुख मिटे जिसने पुकारा।
नाच ले उसके इशारे, जानो उसकी ही झिलमिल।
बन लहर बह ले जलध में, हरी समर्पित हो पागल।
वह हँसाता वह रूलाता, खेल कितने ही खिलाता।
प्राण उसको खोजते है, उस बिना ना चैन आता।

1186

पार लगा दो मेरी नौका, खड़ा हूँ मैं तेरे द्वार पर।
दुख भंजक तुम सुख के दाता,नीर बह रहे मेरे झरझर।
अज्ञानी हूँ दास तुम्हारा, जानो सबकी अन्तर्यामी।
सूखा कण्ठ पिला दे पानी, मैं सेवक तुम मेरे स्वामी।
जग में भटका तुझे न पाया, जीवन अपना व्यर्थ बताया।
सदा नचाती रही वासना, थक कर तुझ चरणों में आया।
झोली खाली नीर बह रहे, मुझे न तू ठुकराना माली।
फूल तुम्हारी बगिया के हम, ना जाती नयनों की लाली।
चाह प्यार की जीवन तरसा, देखूँ मेघ करें कब वर्षा।
कृपा तुम्हारी का भूखा मैं, नयन नीर करते है वर्षा।
बल दो होवे पूरी पूजा, तुम सा और नहीं है दूजा।
नमन करो स्वीकार हमारा, करूँ नीर से तेरी पूजा।

1187

ओम को जपते रहो मन, चैन दिल को आयेगा।
आँखे आँसू से भीगी, कमल फिर खिल जायेगा।
सोंचता जग की रहेगा, चैन फिर ना आयेगा।
बीत जायेगा समय यह, फिर बहुत पछतायेगा।
वह नियन्ता सृष्टि का है, चलते उसके इशारे।
कौन तू बाधक बने जो, समर्पित हो कह हारे।
पालो कितनी ही आशा, ना दिल को चैन आता।
टूटते जब दिल यहाँ पर, नयनों से नीर बहता।
समझा ले मन ओम जपो, दुख नहीं तू पायेगा।
ना रहेगी चुभन बाकी, सब तरफ वह छायेगा।
ओम जप मन ओम जप मन, जिन्दगी का है यह धन।
आदि वह ही अन्त वह ही, सोंचे क्या बह लहर बन।

नीर फूल खिलायेगा, जीवन में सुगन्ध लुटायेगा।
तू ही तू प्रभु मैं नाही, स्वर प्राणों में यह जगायेगा।
जीव तड़फा बहुत है भटका, शान्ति का पाठ सुनायेगा।
जग में दुख का दरिया बहता, समझे नहीं तुझे तो रोता।
मन हो मगन लगन लगे तो, सागर में लहरों सा बहता।
हरि ओम जपो हरि ओम जपो, यहाँ नहीं है कुछ भी रहता।
द्वन्द मिटें सारे जगत के, मन को छोड़ यहाँ जो बहता।
बन्शी बाजे नाचे तन यह, जाये भूल जगत के गम को।
तम भागे तेरा हो आना, तू संभाले फिर इस तन को।
हरि ओम जपें धुन यही उठे, हरि ओम कृपा यही करना।
इन प्राणों की प्यास तुम्ही हो, देखो बहते मेरे नयना।

1205

ले चल मुझे वहाँ तू, तेरा जहाँ भजन है।
जीवन प्रभु तुम्हारा, मेरा तुझे नमन है।
हरि पार करो नैया, मेरा तुही खिवैया।
अबल नाथ मैं बालक, नीर बहावें अंखियाँ।
पड़ा वासना में मैं, गया भूल कन्हैया।
स्वीकार मुझे कर लो, पड़ता तेरे पैंया।
हरि हरि तुझे पुकारूँ, जीवन में तू आये।
फिर रहा भटकता मैं, चाह प्यार को पाये।
थाली में पुष्प नहीं, फिरता झोली खाली।
देखो न नीर कोई, सुन तुझे कहूँ माली।
कैसे रिझाऊँ तुझे, ना जान सका हारा।
नयनों में बस जाओ, सुन लो विनय हमारा।

1206

लहर उठी सुपनों को लेती, इनको ले कर वह है जीती।
सागर उसे चलावे सच यह, समझे ना सुपनों में बहती।
हरि का रूप सागर को भूली, चंचल मन को समझे नहीं दौड़ी।
पागल बन कर भटके सोंचे, कैसे पाऊँगी हरि सीड़ी।
निज अन्तस को वह न देखे, जिसमें सागर छिपा हुआ है।
वही नाचता कौन यहाँ तू, शोर उसी का मचा हुआ है।
हरि जप हरि जप देख स्वयं को, सारे ही भय मिट जायेंगे।
जन्म मरण का बन्धन टूटे, सुख के बादल फिर छायेंगे।
कुछ भी बस में नहीं लहर के, उठी यहाँ खोवेगी इसमें।
खुद को कर्ता मान तड़फती, कर्ता छोड़े रहे न गम में।
हरि सागर हरि सर्जक तेरा, जप इसको मिट जावे फेरा।
तुझे नचावे सत्य जान ले, नाच जान पर कुछ ना मेरा।

1207

नाथ खड़ा हूँ मन्दिर तेरे, प्यार मिले खिल जाये जीवन।
नयना बरसे मेरे रिमझिम, तुम बिन मेरा नहीं प्रयोजन।
मन बैचेन तुझे यह ढूढे, तेरा पता कहाँ से बूझे?
देखें राह थकी यह अंखियाँ, कर प्रकाश जो रस्ता सूझे।
जियरा आवे मेरा भर भर, तुझे पुकारूँ मैं रो रोकर।
विरह तुम्हारा प्यारा लागे, मिट जाऊँ मैं तुझे याद कर।
नहीं फेर तू नयना मुझसे, तन मेरा बिरहा से झुलसे।
जग की प्रीति लुभा न पाई, याद तुझे कर नयना बरसे।
हरि हरि जपूँ कटे यह जीवन, इस जीवन का तू ही है धन।
तुमको भूला मैं दुख पाया, कृपा करो महके यह उपवन।
अन्तर्यामी कहूँ तुझे क्या, घट घट की तुम सबकी जानो।
शीश झुकाये राह निहारे, गये हार हम अब तो मानो।

1208

ईश कृपा करना तुम हम पर, बालक है हम अज्ञानी हैं।
दीनबन्धु तू सुख का दाता, ध्यान लगाते सब ऋषि मुनि है।
पाप मिटे सब भजे तुझे जो, अज्ञान मिटे जिय हर्षाये।
पग पग जो लगें दंश है, उनसे भी ना घबराये।
प्यार सदा तुम अपना देना, मैं मन्दबुद्धि तुम ज्ञानवान।
नजर चुरा ना तेरे बालक, सूना तुम बिन सारा जहान।
चल चल कर जब गिरें यहाँ पर, नाथ थाम तुम हमको लेना।
शुभ पथ आलोकित प्रभु करना, मेरी मन्जिल तुम ना खोना।
खेल वासना का क्षण भंगुर, नाच नचाती जो हरपल है।
जिसके दिल में तू बस जाये, पार बसाती ना उस पर है।
तुमको सुमरे विनय यही हरि, सोना जगना सब तुझमें हो।
जीवन नदिया बहती जाये, कभी नहीं तुमसे विछुड़न हो।

1209

बनी यहाँ जैसी भी किस्मत, सन्तोष हमें करना होगा।
विधि के यहाँ खिलौने हम है, स्वीकार हमें करना होगा।
पथ खोजें अनजानी गलियां, चलते पर ना दीखे सैंया।
याद उसे कर मन चलता जा, थामे वह ही तेरी बैंया।
कितनी जग में योनी घूमें, भाग्य निराला सबका ही है।
अलग नहीं तू भी उनमें से, बहता जा हरि रखबाला है।
हरि जप ले मन ताप मिटेंगे, कुछ पल बाकी सांझ ढले है।
जानी किसने हरि की माया, झुक जा इसमें राम मिलें है।
क्या घमण्ड करता जीवन में, सबका ही तो वह मालिक है।
शीश झुका मन कर ले पूजा, कठपुतली बन कर नाचें है।
हरि हरि जप ले दूर भगे दुख, वह ही तो तेरा सर्जक है।
अपना क्या तेरा है इसमें, जानों सब उसकी मर्जी है।

1210

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव तू ही, मेरी अंखियाँ फिर क्यों रोई?
तेरे बालक अज्ञानी हम, जियरा मेरा लगता नाई।
चल चल गिरे नहीं पथ सूझे, इस जीवन को सफल बना दो।
कृपा बिना ना कोई बूझे, दास तुम्हारे ज्ञान हमें दो।
जग में भटका ना सुख पाया, यहाँ वासना की है दलदल।
नयन बसो तुम मेरे मोहन, तेरा नाम जपें हम हरपल।
अबल नाथ हम संभल न पाये, नाथ थाम लो बहियां मेरी।
अंखियाँ नीर गिराये झर झर, विनय करूँ अब सुन ले मेरी।
द्वार पड़ा मैं नाथ तुम्हारे, हरि हरि जपूँ हरी गुन गाऊँ।
क्षण भंगुर दुख सुख यह सारे, चाह तुझी से प्रीति बढ़ाऊँ।
बहते नयना तुझे पुकारें, डूबे किस्ती पार लगा दे।
किससे कहूँ न कोई बूझे, मेरे मनको तू समझा दे।

1211

बन मिटने का खेल चल रहा, पागल मनुआ सोंच क्या रहा?
आनी जानी इस दुनिया में, पकड़ करे क्या कुछ नहीं रहा।
किसे सुनावे अपनी गाथा, सुपना सा सब बीता जाता।
हरि भज हरि भज सफर कटेगा, दुख से रहे न कोई नाता।
हरि बस जाये जब नयनों में, जग की चिन्ता नहीं सताये।
सबका रखबाला वह ही है, धन्य नीर जो उसे चढ़ाये।
हरि में ध्यान रहे जब हरपल, मिट जाती सब जग की हलचल।
सबका दाता पालक वह है, जान यहाँ सब हरि की हलचल।
मर्जी उसकी आना जाना, बहता जा तू यहाँ लहर बन।
हरि को जप ले दन्श मिटेंगे, सुरति लगे खिल जाता है मन।
प्यास यही इन प्राणों की है, वरना नहीं मिटे दिल के गम।
खोज रही आंखे रोयेगी, जब तक नहीं मिलेगा प्रियतम।

1212

किसके पीछे भाग रहे हम, कोई हाथ यहाँ ना आये।
अपने अपने सुपने ले कर, इस सागर में बहते जाये।
मन प्रीति लगा हरि से पगले, अन्तस में तेरे वही छिपा।
झांके सागर में स्वयं लहर, देखे तो उसमें वही छिपा।
हरि जप ले और नहीं है कुछ, सागर ही नाचे सभी जगह।

मैं को तज बह ले इसके संग, ले जायेगा वह सभी जगह।
हरि बिन सूना सूना लागे, अन्तस में झांक भरम भागे।
चलती मर्जी उसकी है, मन करो समर्पण हरि आगे।
पीड़ा सारी मिट जायेगी, मृगतृष्णा नहीं सतायेगी।
कहना सुनना फिर किससे क्या, छवि नयनों में लहरायेगी।
करूणा सागर वह दुखहर्ता, तुम नयन उठा देखो भर्ता।
सबका ही तो वह पालक है, क्यों बना हुआ है तू कर्ता।

1213

नारायण भज नारायण भज, कर ले मन उसका नित सुमरण।
करूणा का सागर है वह मन, भज ले सब मिट जाते क्रन्दन।
निर्बल का वह ही है बल मन, सब ताप हरे भज ले तू मन।
बनते आंसू भी फूल यहाँ, खिल जाता मुरझाया उपवन।
सबका दाता पालक है वह, तू चिन्तित मन क्यों होता है।
जब चोंच दई चुग्गा देगा, सर्जक को भूला रोता है।
बिन याद करे ना ताप मिटे, पीड़ा का दरिया चैन कहाँ?
अनहद की मनुआ सुनले धुन, क्षण भंगुर ना विश्राम यहाँ?
बैचेन न हो वह संग तेरे, मत भूल उसे रट ले हरपल।
तू भूल उसे दुख पाता है, पी ले अमृत वह गंगा जल।
मन हरपल उसको याद करो, तेरा होगा सुन्दर जीवन।
जग के वह ताप मिटायेगा, नैया खेवेगा खेवट बन।

1214

ले चल मुझे भुलावा देकर, अंखियाँ मेरी आंवे भर भर।
निशदिन तेरी करूँ प्रतीक्षा, जियरा लागे ना भग दूभर।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, जियरा मेरा करता धक धक।
अंधियारे में दीखे ना कुछ, दीप जला दो पहुँचूँ तुम तक।
याद तुझे कर रोये अंखियाँ, चैन पड़े ना दे दे छैयां।
करूणा के सागर कहलाते, शीश झुकाऊँ पड़ता पैयां।
सूना सूना सब जग लागे, तेरे बिन हम हुए अभागे।
मेरे अन्तस में बस जाओ, सुरति रहे सोये या जागे।
दास तुम्हारा अन्तर्यामी, खड़ा द्वार पर तेरे दानी।
अंखियाँ रोती मुझे देख लो, कहाँ छिप गये बहता पानी।
क्षण भंगुर बस तेरी माया, पाप पुण्य का खेल रचाया।
सुख दुख के डोले में चढ़कर, नाच रही यह मेरी काया।
फूल तुम्हारी बगिया के हम, जाती नहीं नयन की लाली।
प्यार हमें तुम अपना दे दो, डरा रही रैना यह काली।
कैसे दिल समझाऊँ अपना, क्यों तड़फू जब सब है सुपना।
विनय बसो मेरे नयन में, चाह यही अब तुझ में बहना।

1215

हरि खोजती अंखियाँ फिरें, आओ पड़ता मैं पैंया।
मन नहीं लगता हमारा, चाहें तेरी ही छैयां।
पंख होते दूर उड़ता, तुम बिना हरि नीर झरता।
न बनो निर्मोही इतने, मेरे सर्जक तुम कर्ता।
जिन्दगी यह भागती है, जायेंगे कहाँ ना पता।
प्राण यह तुमको पुकारे, प्रभु माफ कर मेरी खता।
तड़फते हम सब जगह तू, खेल यह कैसा रचाया।
नमन ले लो प्रभु हमारा, जानते न तेरी माया।
बह सकें हम लहर बन कर, बोध तू इतना जगा दे।
अज्ञान में हम भटकते हैं, वासना सारी मिटा दे।
वन्दगी करूँ तुम्हारी, लाज रखना ईश मेरी।
चाहते तेरी दया हैं, देख लो तुम नीर जारी।

1216

हरि बिन सब कुछ लागे खारा, मन ले चल जहाँ हरि हमारा।
प्यास उसी की बढ़ती जाये, रूके नहीं नयनों की धारा।
कण कण में तू छिपा हुआ है, फिर भी रोती मेरी काया।
सुरति न विसरे कभी तुम्हारी, नहीं जानता तेरी माया।
बहता जाऊँ लहर बना मैं, निशा रहे ना मैं का बाकी।
मृगमरीचिका नहीं लुभावे, देखूँ हरपल तेरी झांकी।
मेरे सर्जक तुम पालक हो, चाह यही तुमसे है कहना।
बस जाओ मेरे नयनों में, मेरे दिल में तुम हरि रहना।
तुम बिन सूना सब लागे है, नीर बह रहे मेरे झर झर।
अपनी कृपा बनाये रखना, अज्ञानी मैं रस्ता दूभर।
शरण तुम्हारी नाथ पड़े हैं, मेरे सर्जक ज्ञान हमें दो।
डगमग करती इस नौका को, विनती करता पार लगा दो।

1217

चाँद तारों के पार चल, बसते जहाँ हरि वहीं चल।
उस बिना लागे नहीं मन, बरसे नयनों से है जल।
प्राण बिन उसके तड़फते, हरि मिलन की राह तकते।
जी रहा किस आस को ले, नयन मेरे हैं बरसते।
लिख चुके लिख के हारे, तड़फे हरि बिन तुम्हारे।
तुम दया का हाथ रखना, गिर रहे यह नीर मेरे।
तुम्हारी दुनिया अनोखी, द्वार तेरे सभी आते।
नाचें कठपुतली तेरी, मैं नहीं क्यों छोड़ पाते।
वासना के पंक में गिर, हाय यह जिवड़ा तड़फता।
भूलकर तुमको मुरारी, जीव सुपनों में विचरता।
साथ हो फिर भी तरसते, खेल यह कैसा रचाया।
बह सके हम लहर बन कर, बोध दो सब ओर छाया।

1218

नैया को पार लगावेगा, हरि ओम कहो हरि ओम कहो।
मन के सब भरम मिटावेगा, मिट जायेंगे दुख ओम कहो।
उसकी मर्जी से आना है, जायेंगे कोई न पूछेगा।
सब चले इशारे उसके हैं, मैं छोड़ नहीं तो भटकेगा।
जप ले उसको अमृत है वह, पी ले उसको गंगा जल वह।
जप उसको आये चैन तभी, कठपुतली हम मालिक है वह।
जाता जीवन मन नहीं उलझ, हरि रस को जिसने चाख लिया।
क्षण भंगुर सारे खेल यहाँ, फिर प्राण पुकारें मिलो पिया।
मैं तुझे पुकारूँ हरि हरपल, नयनों से गिरता मेरे जल।
बिन कृपा यहाँ बह जायेंगे, भक्ति वर दो हम नाथ अबल।
तुम ही सर्जक तुम ही पालक, बुद्धि के भी तुम मालिक हो।
प्रभु ज्ञान हमें हरपल देना, शुभ कर्म सदा ही हमसे हो।

1219

राम की लीला राम जाने, सोच रहा क्या तू दीवाने।
सुख दुख का वह खेल खिलाये, सारे रस्ते है अनजाने।
गीत उसी के मन गाता चल, मिट जायेंगे सारे क्रन्दन।
ध्यान उसी का कर ले पगले, दन्श मिटें फिर बहे लहर बन।
अपना क्या यह तन भी जाता, जोड़ रहा है किससे नाता।
दिल में जिसके हरी समाये, मिट जाता तब भय से नाता।
अज्ञानी मन चाह यही रख, प्रेम डोर से हमको खींचे।
करो समर्पण मन हरि आगे, सब ही उसके आगे नाचे।
राम राम जप यहाँ नहीं कुछ, मर्जी जहाँ वहीं ले जाये।
कौन पूछता तुझसे पागल, जनम मरण का खेल खिलाये।
राम जपेगा, चैन मिलेगा, ढलता दिन है डर न लगेगा।
जिसके यहाँ इशारे चलते, पागल मन तू कब समझेगा।

1220

चल रहे मंजिल न कोई, रैन काली आँख रोई।
सृष्टि पालक जीव स्वामी, मिलती कृपा चैन होई।
एक तेरा ही सहारा, नमन ले लो, प्रभु हमारा।
जानते हम कुछ नहीं हैं, इंतजा कर मैं हूँ हारा।
गिरे चल चल जगत में हैं, दन्श कितने ही सहे हैं।

1235

हरि ओम जपो मन चैन यहाँ, बिगड़े सब बनते काम यहाँ।
कितना दौड़े पागल तू मन, न तृप्त हुआ है कोई यहाँ।
मन वही सहारा जप उसको, अन्तस की ज्योति जलाये वह।
कितना ही भटको स्वप्निल जग, हरि ज्ञान मिले सुख पाये वह।
बहता जा पागल दरिया में, ना भूल इशारे सब उसके।
अपना क्या सब मर्जी उसकी, चरणों में नीर चढ़ा उसके।
मन मन्दिर सजा हरी मूरति, जग में ना होवे फिर दुर्गति।
दो दिन का मेला सारा यह, हरि ओम् जपो कर ले सद्गति।
हरि ओम् जपो मन सुखदाई, सन्तोष बढ़े जिय हर्षाई।
सांसों में उसका सुमरन हो, फीके जग वैभव पड़ जाई।
सोवे हरि में जागे हरि में, सब ओर नजारा उसका हो।
यादों में नीर बहे जो मन, प्यारे लगते गंगा जल हो।
कर विनय यही मन प्रीति बढ़े, नयना छलके बस यादो में।
पलभर भी कभी नहीं भूले, हरि ही आये बस सुपनों में।
यादें उसकी प्यारी लागे, इन नयनों से अमृत टपके।
यह फूल खिलावें पग पग पर, मन नहीं कही फिर तू भटके।

1236

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, अंखियाँ रोवे हरि ही बोलो।
हरि बिन पार लगे ना नौका, समझ सोंच मन हरि को जी लो।
चल चल हार गये क्या पाया, पल पल में मनुआ अकुलाया।
पायें खोंये क्या इस जग में, इस मन ने हमको तड़फाया।
लाज राखो दास तुम्हारा, बहती इन नयनों से धारा।
पथ ना दीखे नाथ अबल हम, समझे ना दिल तुझे पुकारा।
घूम रहा है इस जंगल में, पेट भरे ना देखे सुपने।
किसको अपने गले लगाऊँ, कहने को सब ही है अपने।
पीड़ा अपनी किसे सुनाऊँ, घुट घुट कर क्या मैं रह जाऊँ।
जीवन दाता तुम ही पालक, नयनों के यह अश्रु चढ़ाऊँ।
कुछ ना जानूँ तुझे पुकारूँ, मत रूठो तुम प्यारे छलिया।
तड़फ रही जीवन की धारा, पथ दे पाऊँ तेरा सैंया।

1237

दिल उदास यह गाना चाहे, टूटी वीणा कैसे गाये?
चाहूँ तेरा हाथ पकड़ना, पल पल में तू हमें रूलाये।
चल चल गिरूँ न तुमको पाऊँ, कैसे इस मन को समझाऊँ।
अगम अगोचर पार न तेरा, कैसे अपना प्यार जताऊँ।
लीलाधर कैसी है लीला, तूने इतनी भर दी पीड़ा।
सूखे नहीं आँख का आंसू, ऐसी भी क्या तेरी क्रीड़ा।
जग में घूंमू बना बावरा, आस जगी ना मिले सांवरा।
कैसे मैं दिल को समझाऊँ, सब कुछ तेरा मैं भी तेरा।
बहने दे नयनों की गंगा, इसे रोक ना मन हो चंगा।
बह जाऊँ बस मैं इसमें ही, यह पवित्र पावन है गंगा।
ताप हरे सब ले ले पीड़ा, तुम बिन हरि जग में क्या जीना।
बहते आंसू कभी रूके ना, करूँ विनय इतनी तो सुनना।

1238

हरि मैं गीत तुम्हारे गाऊँ, जाता जीवन नीर चढ़ाऊँ।
सुख दुख का तू खेल खिलाये, लीला तेरी समझ न पाऊँ।
बने हुए हम यहाँ अनाड़ी, तुम्ही हो दाता हम भिखारी।
चक्र घूमता जनम मरण का, दे दो ज्ञान नाथ मैं हारी।
नयना रोवें समझ न पावें, नये नये नित सुपन सजावें।
पीड़ उबलती छिपी तुझी में, समझ नहीं पर क्यों ना पावे।
इस जीवन के खेल निराले, तपे धरा पड़ते है छाले।
दिल को आवे हाय न चैना, कैसे समझूँ मैं मतवाले।
कण कण में तू छिपा हुआ है, मनुआ रोवे कहाँ गया है।
बन अज्ञानी घूम रहे हैं, नयन नीर ना सूख रहे हैं।
प्यार मिले खिल जावे बगिया, मुझसे रूठ नहीं तू छलिया।
बालक तेरा रूप तुम्हारा, पार न होता दुख का दरिया।

1239

दिल नहीं लगता हमारा, इस दुनिया से मैं हारा।
निज चरण में जगह दे दो, बहती नयनों से धारा।
पथ पता न तुमको पाऊँ, आँख रोवे अब छिपो ना।
शरण में प्रभु राख लो तुम, दिल गया भर अब सुनो ना।
पाप क्या है, पुण्य क्या है, कर्म की जानूँ न रेखा।
मैं अबल हूँ जानता यह, तम घना है कुछ न दीखा।
नीर को स्वीकार कर लो, दास को तुम राह दे दो।
तड़फते जो प्राण मेरे, ईश अपना प्यार दे दो।
तेरे बिन खिले न बगिया, क्यों हमें तड़फा रहे हो।
दुख के दरिया में हरि तुम, लाज मेरी राखते हो।
नैन ना मुझसे चुराओ, आशा इस दिल में आओ।
सुप्त वीणा को जगाओ, मेरे स्वर में तुम छाओ।

1240

जी नहीं लगता हमारा, झुलस रहा तन यह सारा।
मन ना समझे यह पागल, ज्ञान भी कैसा हमारा।
पाई न मंजिल भटकते, किसे कहें मेरी सुनते।
नयन से पानी बरसता, क्यों नहीं फिर भी पिघलते।
खेलना दो दिन यहाँ पर, कठिन है यह मार्ग दूभर।
दिल लगाते फिर रहे हैं, न लगे, तू क्यों है निष्ठुर।
प्यार के दो गीत सुनते, तुम बिना हम तो तड़फते।
तू लगा दे आग ऐसी, ना रहे क्यों हाय जीते।
मन उड़े जाये कहाँ पर, ना निशा गम का जहाँ हो।
न जले आशा की होली, प्यार का झरना वहाँ हो।
मन न माने हरि सुनो तुम, पड़ता मैं तेरे पैंया।
अबल हम कुछ जानते ना, दे दो तुम अपनी छैंया।

1241

काटे कटती ना यह रैना, कैसे कह पाऊँ मैं बयना।
पता नही घर तेरा मुझको, नीर गिरावें हरि यह नयना।
जपूँ तुझे मैं ढूंढू हरपल, न छिप बजा दो तुम बांसुरिया।
करूणा के सागर कहलाते, आवे मेरा भर भर जीया।
ऋषि मुनि तुमको जपते रहते, चल चल कर हम तो हरि गिरते।
थाम हमें लो हार गये हम, चरणों में तेरे हम पड़ते।
सब ओर इशारा तेरा है, मुँह फेर न जीवन तेरा है।
कठपुतली बन कर नाच रहे, क्या दोष बता दे मेरा है।
सुमरन तेरा प्यारा लागे, सुपनों में आवे दिल चाहे।
पलभर भी सुरति नहीं टूटे, विनती सुन लो हरि यह चाहे।
जीवन की मेरी आशा है, सांसे तेरे गुन गाती है।
तुम ही तो नाथ रखैया हो, डगमग यह किस्ती होती है।

1242

छिप कहाँ गये तुम सांवरियां, तड़फे जियरा लागे ना दिल।
कैसे तुमको नाथ मनाऊँ, नयन गिरायें हरपल यह जल।
आयेगा कब तू सांवरियां, प्रीति निभा दे तुझे पुकारूँ।
बजे बांसुरी नाचूं छम छम, तेरी निशदिन राह निहारूँ।
तुम बिन जीवन फीका लागे, मुझे डरावे यहाँ निराशा।
मेरे जीवन की तू आशा, कैसे खोजूँ बना तमाशा।
जीवन मेरा तुही चलावे, नयना फिर भी भर भर आवे।
अज्ञानी हम हार गये हैं, कृपा मिले तो ही पथ पावें।
हरि हरि कहते बीते जीवन, दिल में बाजे बस तेरी धुन।
जीवन थोड़ा कुछ पल बाकी, ना तड़फाओ अब तो ले सुन।
पार लगा दो मेरी किस्ती, बन कर खेवट ओ सांवरिया।
अकुलाते इस जीवन को तू, विनय करूँ तू दे दे छैयां।

1243

तेरे नाथ खिलौने है हम, तड़फाओ ना प्यार हमे दे।
जीवन की इस पगडण्डी पर, नाथ अबल हम साथ सदा दे।
कहाँ पुकारे छिपे कहाँ हो, मेरी यादों में तुम ही हो।
तड़फे जियरा यह तेरे बिन, दुख भंजक तुम कहलाते हो।
मेरा बालम मुझसे रूठा, बना हुआ है क्यों हरजाई।
आशायें लेती अंगड़ाई, बजी कभी न पर शहनाई।
देना सदा कृपा अपनी प्रभु, अज्ञानी हैं नाथ अबल हम।
उजियारा कर देना पथ में, बहुत यहाँ फैला है प्रभु तम।
आँख निहारें पथ तेरा यह, विछुड़े क्यों जीवन है तेरा।
पार लगा दो नैया मेरी, कर्मों के बन्धन ने घेरा।
प्यार बरसता रहे तुम्हारा, हरि हरि जपते सदा रहे हम।
जब तक मेरा है यह जीवन, नहीं कभी भूलें तुमको हम।

1244

ना शान्ति मिली जीता हारा, मन मेरा लगता कहीं नहीं।
मन घूम रहा कुंठाओं में, प्यासे को जल तू पिला मही।
जब बहें नयन से आंसू यह, दे कौन दिलासा सोंच तुही।
मर्जी से सब होता तेरी, बिन कृपा मिले ना चैन कहीं।
हरि जपे मिले मन को चैना, वर दे रोवे मेरे नयना।
तू आदि सत्य है अन्त सत्य, क्यों बना हुआ इस पल रोना।
चरणों में तेरे नाथ पड़े, कुछ ना जाने रोवें आंखियाँ।
प्रभु हाथ पकड़ लो तुम मेरा, दुख की मिट जावे फिर घड़ियाँ।
मैं को भूलें प्रभु कटे सफर, सांसो में धुन तेरी गूंजे।
तेरे मन्दिर में बैठ यहाँ, कण कण मेरा तुमको पूजे।
ना मुझे भुलावा प्रभु अब दो, खोलो आंखे ढूँढू तुमको।
जब जब भी मेरे नीर बहें, प्रभु सदा समर्पित हो तुमको।

1245

पागल मन बहला ले अपना, सारा जग है बस इक सुपना।
लहरें यह पकड़ नहीं आवे, बहता जा नियति यही बहना।
सासों की सरगम क्या गाये, इनको देखो मन बहलाये।
बैचेन हृदय को अमी मिले, सुख दुख सारे फिर मिट जाये।
पाने खोने का खेल यहाँ, मनुआ भटके ना चैन यहाँ।
हरि प्रीति बिना ना शान्ति मिले, तड़फो कितना पर चैन वहाँ।
नयनों में नीर मचलते जब, करते किस ओर इशारा है।
खेलो तुम कितना खेल यहाँ, कठपुतली उसकी नाचें है।
उठती गिरती आशा रहती, ना खेल रूके हमको ठगती।
ना बने दिवाने हम हरि के, जीवन नदिया बहती जाती।
हरि भज हरि में मन प्राण भिगो, कट जायेंगे सारे बंधन।
हरि कृपा बिना ना मुक्ति मिले, कितना ही तू कर ले क्रन्दन।

1246

यह बहाते नयन पानी, ढूंढते तुझे हैं माली।
फूल तेरे बाग के हम, नहीं मिटती नयन लाली।
आ रही यह सांस प्रभु क्यों, तुम बिना जियरा तड़फता।
चलता खाता हूँ ठोकर, प्यार पाने को भटकता।
छिप गये हो किस जगह पर, प्राण हरपल तुझे टेरे।
अज्ञानी न जानता कुछ, झुकता चरणों में तेरे।
मैं अबल हूँ जगत स्वामी, देख लो नजरें उठा कर।
चाहूँ तुझ पग को धोना, गिर रहे जो नीर झर झर।
उलझा कर्मों के बन्धन, जानूं न कैसे कटेंगे?
चाहता तेरी कृपा को, कृपा से ही हम तरेंगे।
प्रतीक्षा करता तुम्हारी, प्रभु उबारो तम घना है।
ज्ञान का दीपक जला दो, शीश चरणों में झुका है।

1247

हरि से प्रीति बढ़ा ना पाया, उलझ गिरूँ मैं फिर चिल्लाऊँ।
पागल मन मेरी माने ना, कैसे मैं इसको समझाऊँ।
मेरे नयन बहाते पानी, लाज राखना अर्न्तयामी।
दास तुम्हारा जनम जनम का, सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी।
जीवन दाता जीव तुम्हारा, दर दर भटक रहा यह हारा।
ज्ञानदीप को नाथ जला दो, मिट जाये सारा अंधियारा।
टूटी आशायें ले फिरता, बोलो इनसे क्या है रिस्ता?
थक कर आये द्वार तुम्हारे, नयनों में है नीर मचलता।
मृगमरीचिका यहाँ सताये, बना भिखारी दर दर डोलूँ।
प्रीति बढ़े तुमसे हरि हरपल, करो कृपा यह नयना खोलूँ।
हरि हरि कहते बीते जीवन, तुम ही हो इस जीवन के धन।
मेरे नयनों में बस जाओ, पांव पडू. तुम हो सुखनन्दन।

1248

मन खोज रहा, मन भटक रहा, क्या पाने को है तरस रहा?
मन लगे नहीं इस जंगल में, ना दीखे गलियाँ तड़फ रहा।
आये कहाँ से जाने नहीं, मंजिल क्या समझ नहीं पाये।
अपनी अपनी परिभाषा कर, सब ही इस दिल को समझाये।
बन यहाँ अजनबी घूम रहे, ना मिटती नयना लाली है।
आंसू बहते हरि को दे दे, अज्ञात राह यह सारी है।
मत रो मन कैसे समझाऊँ, तू जहाँ वही तेरा है घर।
ले जाता बह मर्जी उसकी, बह ले बस तू तो एक लहर।
बैचेन हुआ मन क्यों डोले, कठपुतली तू बस नाच रहा।
पर समझ नहीं इसके आये, ना मिले किनारा ढूंढ रहा।
निज को हरि के अर्पण कर तू, ना और किनारा कोई है।
बह देख हो रहा जो जग में, ना तुझसे पूछे कोई है।
सब लिये वासनायें अपनी, इस जग में घूम रहे पगले।
क्या करे शिकायत पागल तू, जो यहाँ मिले पल तू जी ले।
क्या गया यहाँ क्या आयेगा, झिलमिल सुपनों की यह दुनिया।
हरि बिन नैया ना पार लगे, तू बसा नयन में वही पिया।
मन जपो हरी सब भूल जगत, ब्रह्माण्ड उसी का वह जाने।
निज शीश चरण में रख उसके, तप यही सदा उसकी माने।
ना सुरति हरी तुमसे खोये, हरि विनय यही यह अमी पिला।
सुख दुख मन जो भी तुझे मिले, किस्मत अपनी ना करो गिला।

1249

व्याकुल मन मेरा किसे कहूँ, बरसे ना सावन किसे कहूँ?
मरूस्थल सा मेरा जीवन, कोयल गाये ना किसे कहूँ?
आँखे खोलो हम नाथ अबल, चल पायेगे ना कृपा चहूँ।
तुम दीनबन्धु सुख के सागर, प्यासा हूँ जल को नाथ चहूँ।
प्रभु पार लगा दो यह नौका, मैं चरण तुम्हारे हरि चहूँ।
हरि माफ मुझे तुम कर देना, बोलो तुम बिन मैं किसे कहूँ?
दिल मेरा भर भर आता है, कुछ नजर नहीं मुझको आता।
स्वर उठा नहीं पाती वीणा, बोलो जोड़ू. कैसे नाता।
पूजा की थाली पास न कुछ, आंसू गिरते मेरे टप टप।
तुम और न तड़फाओ मोहन, गिरता जाता हूँ ना अब छिप।
जग के रखवाले पालक तुम, आँखे ना फेरो बालक हम।
पीड़ा को किसे दिखाये हम, सिसकी पर सिसकी लेते हम।
तुम रास रचाओ हम आयें, जीवन को मतलब दे पायें।
यह नाथ नहीं मेरे बस में, नयनों में चाहूँ बस जाये।
प्रभु पड़ा द्वार पर तेरे मैं, चाहें ठुकराओ प्यार करो।
बीती जाती है यह संध्या, मैं चरण पडू. तुम क्षमा करो।

1266

बने हुए तुम अन्तर्यामी, कैसे दूर करूँ बैचेनी।
सब कुछ जानो घट की तुम, बहा रही अंखियाँ यह पानी।
खोजन चला न तुमको खोजा, कौन रूकावट ने मग रोका।
अबल प्रभु हम तेरे सहारे, मिले चरण रज दे दे मौका।
नैया मेरी डगमग डोले, उठते है तूफान डरायें।
दीन बन्धु करूणा के सागर, चाह प्यार तेरा मिल जाये।
आंखों से गंगा बहती है, सांस सांस सुमरन करती है।
तेरी यादों में खो जाऊँ, विरह आग क्यों न लगती है।
जीवन दाता जीवन तेरा, तू ही मेरा भाग्य विधाता।
तुझ बिन बता कहूँ मैं किससे, इन आंखों में पानी आता।
पड़े कर्म के जाल घूमते, कैसे निकले बता पूछते?
माना एक जगत है सुपना, दर्द लिये हम यहाँ घूमते।
कर्ता नहीं बने हैं कर्ता, दुख की गठरी लेकर चलते।
तुम हर लो अज्ञान हमारा, प्रभु हम तेरे चरणा पड़ते।

1267

डोल रही है मेरी नैया, ले चल मेरे नाविक मुझको।
शरण तुम्हारी आन पड़े हैं, खे दे इसे न दीखे मुझको।
दीन बन्धु करूणा के सागर, डूबी जाती मेरी गागर।
तेरा ही बस नाथ सहारा, अंखियां मेरी बरसे झरझर।
नाच रहा ब्रह्माण्ड यह सारा, अगम अगोचर पार न तेरा।
अबल मैं हूँ जाऊँ कहाँ पर, तेरे बिना न कोई मेरा।
दर दर डोलू खोजूँ तुमको, इन नयनों में आँसू लाऊँ।
कहाँ छिप गये मेरे मोहन, बतला मन कैसे समझाऊँ।
तुझे पुकारूँ जीवन दाता, तू ही पिता और तू माता।
कूल यहाँ सब छूट रहे हैं, विनय हमारी सुनो विधाता।
ध्यान तुम्हारा बढ़ता जाये, सारे स्वर तुझमें खो जाये।
कण कण होवे तुझें समर्पित, धन्य हमारा जीवन होवे।

1268

दुनिया में ना कोई जाने, कौन यहाँ कब वह खो जाये।
कितने नीर बहा देखे क्या, हरि सुमरन बिन चैन न आये।
उसका एक नाम है सांचा, जपता चल हरि को ना भूलो।
जग के जंगल में नहीं भटको, उसको सुमरो अमृत पी लो।
किसको फुरसत ले तेरी सुध, दो पल का है रैन बसेरा।
हरि बिन पार न होवे नौका, कहाँ लगे ना जाने डेरा।
मत रो पागल समझा ले मन, चोंच दई वह चुग्गा देगा।
मर्जी उसकी आना जाना, कर्ता बना तभी तड़फेगा।
याद उसे कर मन तब नाचे, दिल की पायल छम छम नाचे।
मीरा भी जब हुई दिवानी, छोड़ा सब दीखा हरि सांचे।
हरि के चरणों में सिर रख दे, नीर बहेंगे तेरे झर झर।
इस नदिया में यहाँ बहा जो, ले जाती धारा अपने घर।

1269

थक चुके हम हार कर अब, आये तेरे दर माली।
वासनाओं से जले हम, न मिटी नयनों की लाली।
चाह मन्दिर में जगह दो, जायेगा कट सफर सारा।
जियरा रोता यह तुम बिन, इस जीवन के आधारा।
नीर बहते देख लो तुम, आस तेरी कर रहे है।
डूबे नैया सम्भालो, खेवट मेरा तू ही है।
प्रीति का प्याला पिला दो, दूर कर ना अब सजा दो।
मैं भटकता ही रहा हूँ, निज चरण में प्रभु जगह दो।
गीत तेरे ही उठें प्रभु, नित प्यास तुझमें ही बढ़े।
वासनायें मिटें जग की, प्रभु नयन तुमसे ही लड़े।
नयन में तू ही समाये, हम वांसुरी तेरी सुने।
दन्श सारे भूल कर प्रभु, नाथ तुमको ही चुने।

1270

चले न पहुँचे, रहे भटकते, जीवन की है संध्या आई।
द्वार खड़े हम हाथ जोड़कर, राख हमें अपनी शरणाई।
तेरी लीला नहीं जानता, मनुआ रोये तुझे पुकारे।
दीन बन्धु तुम सुख के दाता, ना रूठो यह प्राण पुकारें।
अज्ञानी बालक है हम तो, ज्ञान ध्यान की विधि ना जाने।
फिर भी करते तेरी पूजा, आंसू की यह कथा बखाने।
नौका पार लगा दे मेरी, डोल रही है बीच भंवर में।
कर्मों के बन्धन में बंधकर, निकल सकूँ ना बिना कृपा मैं।
प्रीति बढ़ाओ हरि तुम मुझसे, जपें तुम्हें जग छूटे हम से।
सदा सताती रही वासना, बने विवश यह जियरा तरसे।
मेरे नयनों में बस जाओ, दन्श जगत के भूलूँ सारे।
बीतेगी यह रैना सारी, सांस सांस बस तुझे उचारे।
हरि तुम मेरी लाज राखना, अन्तर्यामी जग पालक हो।
बहते इन आँसू को देखो, नाथ तुम्ही तो दुखभंजक हो।
मेरे मांझी भूल मुझे ना, चरण पडू. तेरा सेवक मैं।
ताप मिटाना मेरे स्वामी, ज्ञान मिले पाऊँ तुमको मैं।

1271

जीने को जी रहे यहाँ हम, तेरी कृपा बिन न चैन यहाँ।
अबल नाथ मैं बालक तेरा, जिय खिले सुमन दो प्यार यहाँ।
आँखो से आंसू गिरते हैं, पथ तेरा हरपल तकते हैं।
दीनबन्धु करूणा के सागर, सुमरण तेरा ही करते है।
डगमग करती मेरी नैया, पार लगा प्रभु इसको देना।
सुफल यहाँ हो जाये जीवन, आँख उठा कर तुम लख लेना।
अन्तर्यामी जीवन दाता, कण कण तेरा ही गुण गाता।
लाज राखना तुम हरि मेरी, जीवन तुमसे ही यह आता।
आंखों में मेरे आंसू हैं, कभी खफा ना होना हमसे।
पूछ रहे तेरे पथ को यह, प्यार बढ़े प्रभु जीवन हरषे।
तेरे मन्दिर के कोने में, जगह मिले कट जाये रैना।
अज्ञानी हम कुछ ना जाने, शीश झुका यह सुन ले बयना।

1272

बोलो क्या गुनाह मेरा, जलाओ प्रभु मेरा दिया।
कहो किसको हम पुकारें, हे नाथ तुम मेरे पिया।
तम घना है रैन काली, मैं भटकूँ मेरे माली।
फूल तेरे बाग के हम, देखो आंखों की लाली।
नाचता ब्रह्माण्ड सारा, ले यहाँ तेरा सहारा।
मेरा भर भर कंठ आता, खोज न पाता मैं हारा।
दर्द छलके रोय नयना, कह सकूँ कुछ मै न बयना।
बस तुम्हारा ही सहारा, बिन मिले ना आ आये रैना।
शीश चरणों में झुका है, मैं खोजता तुमको फिरूँ।
नीर यह अंखियाँ गिरावे, मैं चल नहीं पाता गिरूँ।
इंतजा नज़रों को तेरी, कठपुतली हम तो तेरी।
अब सहा ना दर्द जाता, मैं शरण में नाथ तेरी।

1273

जायें कहाँ कुछ न दीखे, हरि इस अंधेरी रात में।
छिप गये तुम भी मुरारी, छोड़ो नहीं मझधार में।
ढूंढ़ते फिरते तुझे हैं, देख लो दिल यह तड़फता।
न बनो निर्मोही इतने, क्यों नहीं प्रभु तू पिघलता।
ज्ञान का दीपक जला दो, पा सकूँ तुम वह डगर दो।
नाथ अज्ञानी अबल मैं, चरण में अपने जगह दो।
जगपालक, करूणा सागर, दिल मेरा करता धक धक।
सदियां बीती ना आये, करो कृपा पहुँचे तुम तक।
खो न जाऊँ तुम बिना मैं, जाती यह संध्या ढलती।
थक गिरा तुमको पुकारूँ, आशा की होली जलती।
देख लो ऑसू हमारे, स्वर रहे रो पर पुकारें।
लाज मेरी राख लो हरि, डूबे नैया हम हारे।

1274

मत मान यहाँ मन में मन दुख, हरि यहाँ नचावे हम ना कुछ।
खेला कुछ पल का सोंच समझ, चिन्ता इतनी अपना ना कुछ।
हरि हाथों सौप न रो पागल, दुनिया सारी है इक जंगल।
सब ही अपने सुख को रोते, क्यों बना हुआ है तू गाफिल।
जग के जब दन्श करें जख्मी, हरि ध्यान लगा मिटती पीड़ा।
कटती इससे ही है चिन्ता, पल मिलें बजा हरि की वीणा।
दुख के बादल जब छाते हैं, न कोई किनारा पाते है।
अंखियां भी नीर गिराती हैं, यादें फिर किसकी आती है।
हरि सुमरण कर बस चैन वहाँ, धोखा जग मन न लिपट यहाँ।
कुछ पल की सांसे उसको दे, जो आदि अन्त है सत्य यहाँ।
बीतेगे पल मन यह सारे, हरि को सुमरे ना हारे है।
कुछ तो सोंचो हम कौन यहाँ, उसके ही चले इशारे है।

1275

अंखियां देखें पथ को, संदेश क्या लाते है?
दिन आते हैं जाते, हरि छिपे कहाँ पर है?
बिन उनके सब सूना, जिय लगे न तुझ बिन रब।
तेरी दुनिया प्यारी, फीका तुझ बिन सब रब।
उलझा ना जंगल में, मैं उलझ उलझ तड़फा।
बस प्रीति बढ़े तेरी, ना होना नाथ खफा।
जीवन तेरा हम क्या, बस हम तो कठपुतली।
ना जान सके अब तक, देखो यह शाम ढली।
हरि कृपा सदा रखना, बालक हम अज्ञानी।
करूणा का सागर है, तू देख नयन पानी।
चरणों में शीश धरूँ, सब छोड़ तुझे ही वरूँ।
मैं भटक भटक हारा, दो ज्ञान जतन मैं करूँ।

1276

पिया न आये मेरी गली, यह तड़फे जिया मेरा सखी।
सावन गया न कूकी कोयल, गिरें है आंसू मेरे सखी।
बाट निहारूँ किसे पुकारूँ, घूंमू इस जंगल में हारी।
दूँ संदेश किसे ना जानूँ, कृपा करो अब श्याम मुरारी।
जल बिन मछली जैसे तड़फे, तुम बिन तड़फे ऐसे बालम।
आँख उठा कर अब तो देखो, चला न जाता न मुझमे दम।
जोगन भई पुकारूँ तुमको, कहाँ कहाँ सिर पटकूँ बालम।
नयनों में तू ही तू साजन, जानूँ ना तेरा मैं आलम।
धक धक मेरा जियरा धड़के, वारिस इन नयनों से बरसे।
नयनों में तैरे सुपने हैं, आ जा बालम जियरा हरषे।
लागे सूना जग यह तुम बिन, घायल दिल है बजे न पायल।
लाज राख लो हरि तुम मेरी, चरण पडू. तू ही है साहिल।

1277

जीवन है जीना ही होगा, विष को पीकर हँसना होगा।
बिखरे कांटे पग पग पर हैं, बचना इन से हमको होगा।
तार बजा तू उस वीणा के, ना संगीत कभी कम होता।
नीर गिरे हरि की यादों में, दिल का सुमन तभी है खिलता।
पी ले हरि के जाम यहाँ तू, अनहद हरदम बजता रहता।
कांटे बनते फूल यहाँ, विष भी अमृत तब हो जाता।
डर क्या सुपना चलता यह, नचा रहा हरि नाचे हैं हम।
कठपुतली बन जा मन उसकी, नहीं रहे मैं फिर क्या है गम।
पल पल परिवर्तित होता जग, जो कल थे वह आज कहाँ सब।
मेला कुछ पल का ही है यह, शान्ति मिलेगी मन जप ले रब।
वह आदि अन्त है सदा सत्य, ब्रह्माण्ड उसी का है सारा।
मन ध्यान लगा हरदम उसका, सबका वह ही है आधारा।

1278

हरि नयन बसा इन अंखियों में, जीवन का वह ही है साहिल।
दौड़े किसके पीछे पागल, सब ही होता जाता धूमिल।
अंधियारी रातों का साथी, अन्तस तेरे वह सदा बसे।
वह धन्य सदा जो उसे जपें, जग दन्श नहीं फिर उसे डसे।
जपता जा चलता जा जग में, न पता कहाँ खो जाये तू।
न दर्द रहेगा सीने में, यादों में उसकी खोये तू।
मन देख जगत सुपना है यह, पकड़े क्या हाथ नहीं आये।
सब कूल छूटते जाते हैं, मन जग में क्यों तू भरमाये।
कट जाते हैं सारे बन्धन, पागल मन क्यों करता क्रन्दन।
मर्जी उसकी से बहना जब, मैं छोड़ मिले तुझको साजन।
बिन उसके पार न हो नैया, इस गुलशन का वह ही माली।
जग तृष्णा त्याग भजन कर मन, कट जायेगी रैना काली।

1279

तुम करो कृपा गुलशन महके, कण कण में बसे नहीं दीखे।
खोजूँ मैं तुझे कहाँ मोहन, अंखियाँ हरपल यह पथ देखे।
हरि ध्यान तुम्हारा सदा रहे, मेरी अंखियों में बस जाओ।
इस दिल में तुझे बसा लू मैं, यादों से पल भर ना जाओ।
चल गिरे यहाँ ठोकर खोई, क्यों भूल गया तू हरजाई।
बल अपना ना सब कुछ तेरा, मैं नाथ तुम्हारा शरणाई।
कितने जन्मों से खोज रहा, बहते आंसू ना मोल रहा।
जग में ना इनकी कीमत है, किस पलड़े में तू तोल रहा।
आँसू ही आँसू पास मेरे, कुछ और ना हम दास तेरे।
चरणों में सिर रख रोने दो, बह जाये सब अरमान मेरे।
तेरी बगिया में खिले यहाँ, खोजे तुमको तू छिपा कहाँ।
तू आदि सत्य है अन्त सत्य, यह जान नाथ हम मिटें यहाँ।

1280

एक गम हो तो कहें हम, गम तो अनेकों है यहाँ।
ढूढते हैं मुकाम को हम, गम का निशा न हो जहाँ।
चल थके पाई न मन्जिल, नयन से गिरे मेरे जल।
खोजता तुमको फिरूँ मैं, ना मेरे पैरों में बल।
लाज तुम ही राखते हो, फिर भी भूला मैं हारा।
अश्रु को स्वीकार कर लो, प्रभु सेवक हूँ तुम्हारा।
दीन बन्धु दयालु तुम हो, जानता न तेरी लीला।
मृगमरीचिका में फंसे न, वासना का जाल काला।
प्यार से तुमको पुकारूँ, पास कुछ न मेरे माली।
तेरी बगिया खिलते हम, टूटी जाती है डाली।
अश्रु का उपहार है बस, कुछ ना कीमत है माली।
दर्द अपना रो रहा हूँ, भूलना ना रैन काली।
विश्व के तुम हो रचियता, नाचे हम ता ता थैयां।
जाने न कैसे रिझायें, आस तेरी देख पीया।
तेरे दर के हम भिखारी, मुँह न फेरो प्यार दे दो।
नीर बहते नाथ लख लो, निज चरण में प्रभु जगह दो।

1281

जग में रस मोहिं कुछ न आवे, निशदिन तेरा विरह जलावे।
आन मिलो अब मुझसे रसिया, सहा न जावे दर्द सतावे।
तुम बिन मेरी बजे न वीणा, नीर गिरावे हरपल अंखियाँ।
इस जंगल में खोजूँ कहा मैं, बीती जाती है अब संध्या।
विधि ना जानूँ मैं अज्ञानी, फिर भी दिल से करता पूजा।
अबल नाथ मैं बल ना मुझमें, स्वीकारो प्रभु मेरी पूजा।
चल चल गिरता ठोकर खाऊँ, शूल लगे रस्ता है दूभर।
नैया मेरी पार लगा दो, अंखियां नीर गिरावे झर झर।
दीनबन्धु करूणा के सागर, जिय यह रोवे गया तू किधर।
तुम बिन सूखी मेरी बगिया, सूखे पत्ते उड़ते फर फर।
दास बना लो अपना मुझको, जग तृष्णा ना मुझको घेरे।
बसे रहो मेरे नयनों में, सुबह शाम तुमको ही टेरे।

हरि हरि भज मन का कलुष मिटे, जीवन में फिर संतोष घटे।
झिलमिल करती स्वप्निल दुनिया, वह धन्य हुए जो पिया रटे।
चल पैरों में जब तक ताकत, पर भूल नहीं जाना उस घर।
पिय में यदि सुरति लगे पागल, फिर यहाँ नहीं लगता कुछ डर।
बरसात बरसती आँखों में, सुपने ले ले जीती काया।
जीवन यह एक पहेली है, न कोई इसे सुलझा पाया।
मर्जी तेरी ना चले यहाँ, उसकी मर्जी से बहो यहाँ।
झड़ते पत्ते इंगित करते, कुछ पल के हम मेहमान यहाँ।
हरि जप हरि जप सन्तोष घटे, सब तृष्णा का संसार मिटे।
कर्ता बन मन जो दुख पावे, हरि हिया सजा संताप मिटे।

1298

हरि तुम्हारे दास हैं हम, निज मन्दिर में दे डेरा।
घूमते अनजान गलियाँ, चाहते हैं प्यार तेरा।
काली रैना अन्धेरा, चाहते मिलता किनारा।
डोलती नैया हमारी, जाने न हो कब सुवेरा।
शीश को दर पर झुकाये, नाथ कब से हम खड़े हैं।
देख लो नजरें उठाकर, नीर मेरे गिर रहे हैं।
तैरे नयनों में लाली, फिरता मैं झोली खाली।
सृष्टि का तू ही रचियता, गिर रहे क्यों नीर माली।
कर्म के बन्धन बंधा मैं, नाथ चलता जा रहा हूँ।
खत्म कब हो श्रृंखला यह, किरपा मैं चाह रहा हूँ।
तू नचाये नाचते हम, तेरी कठपुतली प्रभु है।
दर्द का सागर उफनता, छिप गया तू क्यों कही है।
चरण में अपने बिठा लो, आंसुओं से पैर धोऊँ।
कुछ नहीं है पास मेरे, बस तुझे मैं दर्द देऊँ।

1299

हरि प्रीति करो हो शरणाई, वह दुख भंजक दुख ना आई।
सकल सृष्टि का स्वामी वह, अंखियाँ क्यों फिर भर भर आई।
हरि भूले मनुआ पावे दुख, उसके बिन कभी मिले न सुख।
चरणों में हरि के गिर जा मन, सब दन्श मिटे हरि बोलो मुख।
पतवार उसी के हाथों में, जप आती जाती सांसों में।
क्षण भंगुर स्वप्निल यह दुनिया, मत उलझ यहाँ की बातों में।
कोई न ठिकाना है पगले, हरि की गोदी में खेल रहा।
मर्जी उसकी जैसा राखे, आशायें ले मन मचल रहा।
हरि हरि कहते बीते जीवन, सब बीता जाता अब कुछ पल।
अंखियाँ यह नीर बहाती है, मत भूल उसे तेरा सम्बल।
अन्तस में ज्योति जगाता वह, सब तम को दूर भगाता वह।
निर्भय होकर जग में घूमें, विष पीता अमृत होता वह।
हरि हरि जप और नहीं है कुछ, सब यहाँ स्वार्थ का मेला है।
जिसने भी हरि का नाम पिया, जीना बस उसका जीना है।

1300

तुम दीनबन्धु जग के पालक, कैसे खोजूँ मैं तुमको रब?
अंखियाँ यह नीर गिराती है, तेरे बिन जिय लगता ना अब।
अंधियारी रातें डर लागे, ना समझ सका तेरी माया।
थक हार पुकारे यह काया, हरि तेरी मैं चाहूँ छाया।
तृष्णा के सागर में खोये, चल चल कर हम फिर फिर रोये।
तुम बिन ना पीड़ मिटे दिल की, तुम छिपे बता कैसे जीयें?
आंखों से बहती गंगा है, सांसे तेरा सुमरन करती।
कहो जाऊँ कहाँ अबल नाथ, प्रभु हाथ जोड़ विनती करती।
नैया मेरी डगमग डोले, अब तू ही पार लगायेगा।
थक हार चुका कुछ बल ना ही, बस बाट निहारूँ आयेगा।
चरणों में शीश धरूँ तेरे, विनती सुन ले ना मुँह फेरे।
बस सुरति सदा यह बनी रहे, नाचे हम डोर हाथ तेरे।

1301

सूना लागे तुम बिन मोहन, जीवन के रस तुम ही रसिया।
प्यारी दुनिया जिय न लगत है, तेरी राह निहारें अंखियाँ।
मन के ताप मिटाओ सारे, बन्शी धुन पर गाओ प्यारे।
जग की पीड़ा मैं सब भूलूँ, नयन बसो तुम प्राण पुकारे।
जोगन बनी याद में तेरी, छम छम नाची भई दिवानी।
विष का प्याला पीया हँसकर, मीरा नयन बहाये पानी।
इन पथरीली आंखों में तुम, प्यारे मोहन प्यार बढ़ाओ।
प्रेम झरे नयना यह बरसे, मुरझाया जो सुमन खिलाओ।
माना स्वप्निल सारी दुनिया, इतना दर्द दिया क्यों छलिया।
तेरे दर तक कैसे पहुँचू, अबल प्रभु मैं थाम ले बहियां।
आओ आओ तुम्हें पुकारें, बचे शेष पल रास रचा ले।
जीवन नदिया बहती जाये, जल तेरा पी प्यास बुझा ले।

1302

दीपमाला से सजाऊँ, तुम्हारा मन्दिर बनाऊँ।
नयन जल से करूँ पूजा, चाह पल भर ना भुलाऊँ।
शरण में मोहन मुरारी, राखते तुम लाज मेरी।
तुम कृपा रखना सदा ही, प्यार पाऊँ मैं मुरारी।
ढूंढ़ते फिरते तुझे हैं, छिपे कहाँ प्यारे छलिया।
तुम बिन यह जियरा तड़फे, नीर वर्षा करें अंखियाँ।
ऋषि मुनि सब करते पूजा, खेल सुख दुख के खिलाता।
ना कोई तुमसा दूजा, चरण में मैं नाथ पड़ता।
फूल तेरे बाग के हैं, और कुछ तो हम न जाने।
नयन से बहती हैं गंगा, विनय अपना दास माने।
धूप छाया खेल दुनिया, तुम बिना रूठी है दुनिया।
ज्ञान का दीपक जला दो, पाऊँ मैं तुमको छलिया।

1303

हरि ओम् कहो मन ओम् कहो, दुख दर्द मिटें मन ओम् कहो।
सब जग का वह ही रखबाला, मन डरता क्यों हरि ओम कहो।
मन उसे जपो है शान्ति वही, ना और किनारा दिखे कही।
साथी अंधियारी रातों का, इस धरती का है वही मही।
जीवन वह ही अमृत वह ही, इन सांसों की धड़कन वह ही।
सारे जग का वह मालिक है, मन भूल न उसको पास यही।
उस बिन रोयें तेरी अंखियाँ, वह नाच नचाये बन छलिया।
मन सुरति लगा ले उसमें तू, तपते मारग की वह छैया।
शाश्वत वह ही मन उसे जपो, फटते सब दुख के बादल हैं।
जग जाल यहाँ सब झूठा है, कुछ पल का यह सब खेला है।
मन सांस सांस में उसको जप, ना और लगा दिल यहाँ कहीं।
सांसों में यदि वह रम जाये, समझे मन तू सब जगह वही।

1304

हरि तुझे हम ढूंढ़ते हैं, पाते पता तेरा नहीं।
नयन से आंसू बरसते, क्या हरि मिलोगे तुम नहीं?
तेरी दुनिया भटकूँ मैं, छल तू क्यों करता छलिया।
अबल हम तेरे सहारे, प्यार दो मैं पडू. पैंया।
बीत जाये यह न संध्या, जिन्दगी की आस तू ही।
देखता मैं राह तेरी, आ मिलो अरमान यह ही।

तेरी माया जानते न, मिलती पर तुझसे छाया।
दास को अपना बना लो, रोती है मेरी काया।
नयन गंगा जल बहाये, चाहें बह उसमें जाये।
ना कभी देखें पलट कर, तुझ चरण को नाथ पायें।
मन पावन रूठा सावन, कर्म की जंजीर भारी।
तुझ कृपा बिन ना कटे यह, लाज राखो हे मुरारी।

1305

शुभ हो सदा जिन्दगी में प्रभु, यही मांगते तुमसे वर दो।
नीर बहायें जो यह अंखियाँ, बढ़े प्रीति तुममें यह बल दो।
जीवन छोटा यहाँ भटकते, नयन तुम्ही को यहाँ तरसते।
इतना नहीं रूलाओ मोहन, प्यारे मेरे प्राण तड़फते।
नमन हमारा प्रभु अब ले लो, ढूंढ़ ढूढ़ कर मैं हूँ हारा।
कहाँ जाये न जाने नौका, नाम तेरे का प्रभु सहारा।
अबल नाथ हम अज्ञानी हैं, पर तेरे बालक है रसिया।
बस जाओ तुम मेरे दिल में, तपे दुपहरी दे दो छैया।
आंखो से जाती ना लाली, फूल बाग के तेरे माली।
देख उठा कर नजरें हमको, डरा रही हैं रातें काली।
जीवन की तुम्ही आशा हो, अंखियाँ नीर बहावें मेरी।
शरण तुम्हारी नाथ पड़े हम, करो पार प्रभु नैया मेरी।

1306

नौका तुम बिन पार न होवे, इतना दर्द बता क्यों देवे?
जग के पालक विनती सुन लो, जियरा मेरा यह घबरावे।
दीनबन्धु तुम दुख के हर्ता, याद तुम्हारी आवे रोता।
विछुड़ गये क्यों इस मेले में, सदा राह मैं तेरी तकता।
हरि हरि भजे चैन मन आवे, अंखियाँ निशदिन नीर बहावे।
मुझसे मोहन रूठ न जाना, चाह प्रीति बढ़ती ही जावे।
सारी दुनिया के रखवाले, लाज राखना शरण तुम्हारी।
मृगतृष्णा ना मुझे सतावे, बढ़ू. तेरे पथ चाहत मेरी।
चल चल कर मैं हार गया हूँ, खे दे नैया खेवन हारा।
नयनन में बस जाओं मेरे, ध्यान निरन्तर बढ़े तुम्हारा।
आँसू से करता मैं पूजा, इनको कभी नहीं कम करना।
बह जाऊँ बस इस गंगा में, सदा निहारें तुमको नयना।

1307

चलने की सामर्थ न मुझमें, गिरूँ उठूँ आंसू ढलकाऊँ।
बिछुड़ों ना तुम मुझसे प्रियतम, बहते नयना तुझे दिखाऊँ।
चल चल कर मैं हार गया हूँ, तेरा ना दीदार हुआ पर।
कैसे इस दिल को समझाऊँ, बरसे मेरे नयना झर झर।
निर्बल को बल देने वाले, बल दो चल पथ पर मैं आऊँ।
अंधियारी रातों में प्रभु जी, सदा ज्ञान का दीप जलाऊँ।
मेरे सम्बल तुम्ही सहारे, तुझ बिन कृपा यहाँ सब हारे।
फट जाते सब दुख के बादल, आता तेरे कोई द्वारे।
बेगाना बन जग में घूंमू, मिले चरण तेरे मैं चूमूं।
छिपे कहाँ मैं बालक तेरा, बढ़े प्यार तो ही मैं झूमूं।
सुमर सुमर कर प्यास बुझावे, मेरे जिय को तू तड़फावे।
जला विरह की अग्नि भस्म हो, उड़े राख वह तुझ तक आवे।

1308

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, मन की आंखों को तुम खोलो।
उस बिन चैन न पाये मनुआ, सारे जग के सुख से तोलो।
आज यहाँ कल कहाँ ठिकाना, किसने जाना सब बेगाना।
कूल छूटते जाते सारे, पकड़े काहे बन दीवाना।
विछुड़ा जाता सारा मेला, पीछे से आता है रेला।
आंख मीच मत सोवे मनुआ, संग न कोई जान अकेला।
मृगतृष्णा ले रहा भागता, अंहकार को खूब बढ़ाया।
सुख में सब दुख में ना कोई, पगले तू यों ही भरमाया।
दिल में हरि की ज्योति जला ले, इन नयनों में हरी बसा ले।
जीवन की इस पगडण्डी पर, डर न लगेगा हरि को जप ले।
हरि हरि जपो चैन मन आवे, दिल के सारे कष्ट मिटावे।
सारे जग का पालक है वह, काहे अपना जिया जलावे।

1309

हरि भज लो शाश्वत वह ही है, जीना मरना उसमें ही है।
संग तुम्हारे सदा खड़ा वह, उलझ जगत में क्यों रोवे हैं?
सोंच रहा क्या मन तू पागल, बीती नहीं भुला क्यों पाये।
रंग बदलती इस दुनिया में, रंग यहाँ सब बदले जाये।
दर्द मिटें सब हरि जप से ही, बनते कांटे भी फूल यहाँ।
व्यर्थ सोंच में पड क्यों पागल, तू भूल रहा हरि छिपा यहाँ।
बीत गई छोड़ो बीती जो, इस थोड़े जीवन को जी लो।
मिटता जाता है यह तन भी, किसको पकड़े सबको भूलो।
नेह बढ़े हरि, फिकर घटे सब, ले जाये जहाँ जाये वहाँ।
अपनी क्या सब अर्जी उसकी, बहता जाये बन लहर यहाँ।
नयनों के आंसू उसको दे, और नहीं कुछ जो उसको दे।
कठपुतली बन नाच रहा तू, मैं को छोड़ चरण सिर रख दे।

1310

जीवन एक पहेली माना, गहराई को किसने जाना।
ऋषि मुनि हारे ध्यान लगाकर, कुछ भी हाथ न हरि घर जाना।
हरि हरि गाओ जग मेले में, ताप मिटाओ इस खेले में।
इस बिन चैन न आयेगा मन, कितने सुपने ले नयनों में।
नीर चढ़ा दे हरि चरणों में, जान यहाँ ना कुछ भी बस में।
बह जाये यह लहर कहाँ पर, अंहकार तज बसा नयन में।
हरि हरि जप तू यहाँ अकेला, मिटता जाता है सब खेला।
कठपुतली तू काहे रोवे, हरि पर छोड़ो मिटे झमेला।
हरि हरि जप ले चैन मिलेगा, दिल का सोया कमल खिलेगा।
और न कुछ आधार जगत में, हरि बिन सदा यहाँ तड़फेगा।
आता याद कौन तुम सोंचो, अंधियारी रातों में बोलो।
खारी लगती सारी दुनिया, अब तो अपने नयना खोलो।
नीर बहें पर उसे न भूलो, हरि हरि जपो न बहियां छोड़ो।
अन्तिम पल में वही साथ है, मर्जी उस पर सारी छोड़ो।
पार करेगा वह ही नौका, ज्ञान ध्यान वह ही सब देगा।
पड़ चरणों में करो विनय यह, चाहे कृपा सदा तू देगा।

1311

आ गये हम शरण तेरी, ना पता कहाँ जायेंगे?
नयन मेरे रो रहे हैं, तुमको क्या हम पायेंगे?
जन्म कितने हुए पहले, जन्म यह भी जा रहा है।
कर्म बन्धन में बंधा हूँ, तोड़ हम ना पा रहे हैं।
हरि कृपा तेरी मिले तो, नाव मेरी पार होवे।
गरजता सागर यहाँ है, देख लो ना हार होवे।
नयन यह आंसू बहायें, पास में कुछ भी नहीं है।
मैं कहाँ जाऊँ बता दो, प्यार दो डरता जिया है।
जग का मालिक तू ही है, नाचें हम कठपुतली बन।
मर्जी तेरी नाचें हम, प्रभु ज्ञान दो हर लो चुभन।
हरि नमन को स्वीकार कर लो, दास तेरे मुँह न फेरो।
प्रीति मेरी बढ़े तुझमें, पीड़ दिल की नाथ हर लो।

1312

मन मेरे क्यों है उदास, जिन्दगी की क्या है प्यास।
घूमा तू न तृप्ति होती, लिये जग में कितनी आस।
चल अकेला ना ठिकाना, लुप्त होवेगें कहीं पर।
चलना जीवन की निशानी, और कुछ बस ना यहाँ पर।
सोंप हरि हाथों स्वयं को, बन जा कठपुतली उसकी।
जायें जब न जोर चलता, आये जग मर्जी उसकी।

एक सहारा हरि तू ही है, चाहूँ प्यार मैं भटका हारा।
नौका मेरी पार लगा दे, आंसू की बहती है धारा।
उलझ उलझ यह जाता मनुआ, चल चल गिरें न पावे सैया।
कृपा मिले तेरी तब ही सुख, तपस मिटे हम पावे छैया।
जीवन दौड़े पंख लगाये, अपनी पीड़ा किसे दिखायें।
सूनी सारी दुनिया लागे, इतना मुझको क्यों तड़फायें?
नयना बरसे रिमझिम रिमझिम, आस मिलन की ले धड़के दिल।
शीश झुकाये राह देखता, तपस मिटे कब बरसे बादल।

1328

थोड़ा सा जीवन यह, शिकवे जग से करते।
सुपन सुंजोते कितने, टूटे तब हम रोते।
अस्थिर सभी यहाँ है, मन क्यों उलझ रहा है।
हरि गीतों को गा ले, देखो सब बहता है।
तेरे नयना छलके, हरि याद कर सुमर ले।
सुख दुख का वह मालिक, कितना यहाँ भटक ले।
तृष्णा यहाँ नचाती, दिल की न पीड़ जाती।
नयन बहाये धारा, ना प्यास वह बुझाती।
हरि एक नाम सांचा, दिल टूटे की आसा।
मन याद कर उसी को, उससे मिले दिलासा।
स्वप्निल सारी दुनिया, जप बीतेगी रैना।
बसते हरि जिस दिल में, सुख का बहता झरना।

1329

मन हरि जपो प्रीति हरि कर लो, जग के ताप मिटाये भज लो।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में उसे न भूले।
कहाँ जा रहे नहीं किनारा, बहा हमें ले जाती धारा।
हरि सुमरो मन चैन मिलेगा, नयन नीर वर्षावे धारा।
सागर यह नाचे तरंग बन, मैं तज सागर कभी न भूलें।
लहर यहाँ सागर को देखे, मिटते दुख जाने वह खेले।
कुछ पल को यह सांस धड़कती, मिट जाती खो जाते बैना।
कोई यहाँ बड़ा ना छोटा, प्रकृति नचाती बना खिलौना।
हरि हरि जप मन कलुष मिटे सब, अन्धकार में दीखे रस्ता।
तृष्णाओं से हुआ पराजित, रोवे, धैर्य जपो हरि देता।
हरि हरि जपो संग वह तेरे, उसे भूल क्यों आंसू गेरे।
गिरते नीर सुमन बन जाते, हरि हरि तेरे प्राण पुकारे।

1330

प्रभु बालक हम तुम्हारे, ज्ञान का दीपक जला दो।
दिल नहीं लगता हमारा, पार यह नदिया करा दो।
ढूंढ़ता पथ ना उजाला, सारी अनजानी गलियाँ।
फिर रहे हम तो भटकते, थामों तुम मेरी बैंया।
देख लो नजरें उठाकर, बह रहे यह नयन झर झर।
दिल यहाँ कैसे मनाये, आते ना खायें ठोकर।
कितने जन्मों का प्यासा, प्यास मेरी तू बढ़ा दे।
प्राण यह तुमको पुकारे, तुझे पाऊँ या मिटा दे।
तुम बिना मुरझाई बगिया, फूल भी खिलते नहीं है।
मुझसे सावन है रूठा, कूक कोयल खो गई है।
न बनो निर्मोही छलिया, थक गये दो ईश छैया।
कुछ पलों का खेल बाकी, पांव पडू. आओ सैयां।

1331

मन हरि भजो भजन सुखदाई, उसकी हो जाओ शरणाई।
हरि को जपो सहारा उसका, संकट सारे फिर कट जाई।
सकल सृष्टि का मालिक है वह, मत कर मन तू अपना छोटा।
तृष्णा हरपल नाच नचावे, उलझ गिरें मन करती खोटा।
जप ले मन हरि टपके अमृत, दिल का सुमन तेरा खिल जाई।
जग की पीड़ा नहीं सतावे, ताप हरे मन वह सुखदाई।
मन कर ले विश्वास उसी का, जनम मरण सब खेल उसी का।
कठपुतली बन नाच रहे हैं, सुरति लगा साथी हरपल का।
मन भज पकड़ उसी का दामन, बहो जहां ले जाये सागर।
अपना क्या यह तन भी ना ही, छूट रहे सब कूल यहाँ पर।
हरि जप ले कट जाये रैना, पीड़ मिटे मन पाये चैना।
पागल मन बन दास उसी का, लय हो जावेगा यह सुपना।

1332

हरि मैं हार गया ना आये, अंखियाँ मेरी नीर बहाये।
अगम अगोचर पार न तेरा, अबल नाथ मैं कैसे पायें?
बाट निहारें मेरी अंखियाँ, छल न करो तुम मुझसे छलिया।
सदा साथ तुम पर ना दीखो, याद तुझे कर रोये अंखियाँ।
जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, प्यासा मुझे पिला दे पानी।
शीश धरूँ मैं चरण तुम्हारे, भीख प्यार की दे दे दानी।
प्राण जपें यह हरपल तुमको, बसे नयन में मूरति तेरी।
इतनी कृपा बनाये रखना, खो जायें ना यादें तेरी।
यादों में तेरी खो जाऊँ, नयना मेरे रिमझिम बरसे।
मनुआ और कहीं ना भटके, सांसे हरपल तुझको तरसे।
जग की तृष्णा नहीं सतावे, तुझे पुकारूँ नैया खे दे।
जलूँ विरह में तेरे मोहन, इतना ही वर मुझको दे दे।

1333

हरि ओम मन जपो तुम, अभी हो, कल कहाँ तुम।
जग मोह क्यों बंधा तू, जानो यहाँ नहीं तुम।
बन कर लहर बहो तुम, नदिया तुझे बहाये।
कुछ पल की है झिलमिल, यह सांस फिर न आये।
में छोड़ो बह पगले, अपना नहीं यहाँ कुछ।
तन जा रहा न रूकता, हरि का सभी यहाँ कुछ।
हरि जप भागे मन डर, मन तू बसा हरी उर।
कट जायेगी रैना, हरि ही तेरा रहवर।
हरि एक नाम सांचा, दे अन्त तक दिलासा।
सब कूल छूटते हैं, हरि में सारी आसा।
हरि को जपो मगन हो, सुपने सभी खतम हों।
हरि ही चलावे नौका, मन जान क्यों न चुप हो।

1334

हरि मै तेरी बाट निहारूँ, पार लगा दे मेरी नौका।
मेरा तू ही एक सहारा, तुझे मनाऊँ तू ही मन का।
अंखियाँ नीर बहावें झर झर, कहाँ छिपे मेरे बन्शीधर।
दिल का दर्द दिखाऊँ कैसे, चल चलकर मैं गिरता पथ पर।
मृगतृष्णा है यहाँ नचाती, अन्त लगे ना हाथ यहाँ कुछ।
जल बिन मछली जैसे तड़फे, पाऊँ कैसे जतन करो कुछ।
सदा रटूँ मैं तुमको हरपल, सांस सांस यह तुझे उचारे।
प्रियतम इतना तो कर देना, नाथ गिरूँ मैं तेरे द्वारे।
जीवनदाता जीवन तेरा, मर्जी चले सदा ही तेरी।
कठपुतली हूँ नाथ तुम्हारी, तेरे हाथों में है डोरी।
नयनों के आँसू सूखे ना, सदा चरण यह धोयें तेरे।
सुपनों में भी तुम ही आओ, सुरति न टूटे वर दे प्यारे।

1335

कौन सी मैं गली खोजूँ, ढूंढ़ता नाथ हारा।
चले चल कर थक गये हम, चाहता मैं सहारा।
बैठूँ मन्दिर में तेरे, बीते रैना काली।
अश्रु मेरे चरण धोवें, नित खिलें फूल माली।
नीर बहते देख लो तुम, तुझे कैसे रिझाये।
पास कुछ ना फूल सूखे, तुझे कैसे मनायें?
नाथ हरपल तड़फता हूँ, बालक मैं तुम्हारा।
निज कृपा रखना सदा ही, प्यार चाहूँ तुम्हारा।
आँख तेरी राह तकती, संध्या ढलती जाती।
मैं कहाँ जाऊँ जगत में, दर्द दिल का सुनाती।
प्राण यह हरपल पुकारें, ना कहीं भटक जाये।
प्रीति सदा बढ़ती जाये, कर कृपा तुझे पाये।
आदि तू ही अन्त तू ही, मन्जिल सबकी तू ही।
ज्ञान दे तू संग मेरे, मिटे भ्रम यहाँ तू ही।

1336

मीत जहाँ मेरे उड़ चल मन, यादें उसकी मुझको घेरे।
उस बिन चैन न आये दिल में, अंखियाँ मेरी आंसू गेरे।
जीवन यह क्यों सांसे लेता, उसके बिन जियरा ना लगता।
इस जंगल में भटक रहा मैं, मुझे दिखा मन उसका रस्ता।
जलता दिल बरसे ना बादल, तृष्णा नाच नचावे हरपल।
प्रियतम रंग में रंगना चाहूँ, कृपा करो हरि मुझमें ना बल।
जग में कोई भी ना अपना, बीता जाता सारा सुपना।
कूल छूटते जाते सारे, बसा हरी मूरति मन नयना।
आशायें ले मनुआ नाचे, टूटें ठौर कहीं ना पावे।
बैरागी बन मन दीवाना, गिरें नीर वह फूल खिलावे।
प्रीति बढ़ा मन हरि हरि बोलो, मिटते संकट आंखे खोलो।
कितना भटका क्या कुछ पाया, हरि बिन चैन न जीवन तोलो।

1337

हरि मैं चरण तुम्हारे पड़ता, मुझे दिखा दो रस्ता।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, नीर नयन में बसता।
दीनबन्धु करूणा के कारण के सागर, पार लगा दो नौका।
बीच भंवर में डोल रही है, जाये कित ले झौका।
जग के सर्जक जग के पालक, आंसू गिरते झर झर।
तुम्ही बता दो जाऊँ कहाँ, अंधियारा पथ दूभर।
सुख दुख की छाया के नीचे, सारा जीवन नाचे।
चैन न आवे रोवे अंखियाँ, मुझसे आंखे मीचे।
चरण धोऊँ प्यार पाऊँ नित, हरपल तुझे मनाऊँ।
जग की तृष्णा नहीं सतावे, वर तुमसे यह पाऊँ।
जीवन दो दिन का भटके हम, मन यह कहीं न टिकता।
तेरी कृपा सुगम हो रस्ता, इन नयनों में बसता।

1338

तुम बिन नौका पार न होवे, डगमग डोले अंखियाँ रोवे।
मेरे देवता तुम ना रूठो, चरण पड़े हम तुझे मनावे।
जीवनदाता जीवन तेरा, कुछ भी नहीं यहाँ पर मेरा।
सुख दुख के तू खेल खिलावे, तुम बिन तड़फे जियरा मेरा।
तेरे गुन गायें हम हरपल, जल बिन मछली तड़फ रहा दिल।
अंखियां खोजे राह निहारें, प्राण पुकारें, छिपो न अब मिल।
चल चल हारा तुझे न पाया, फिर भी इस दिल को समझाया।
नाम तुम्हारा ले मैं बहता, कृपा करो रोती यह काया।
हरि हरि जपते बरसे नयना, तड़फे सुन लें मेरे बयना।
झूठी माया झूठी काया, कठिन हुआ यह सुन्दर सुपना।
तेरे हाथों में जब डोरी, कठपुतली मैं फिर क्यों रोती।
जैसा नाच नचावे नाचूँ, ज्ञान हमें दो पैंया पड़ती।

1339

मन हरि जप इसमें लय हो जा, नगमें उसके ही गाता जा।
जाती संध्या ना भूल उसे, उसकी यादों में मन खो जा।
सारे जग का वह ही पालक, चिन्तित क्यों मन जब वह रक्षक।
सब चले इशारे उसके हैं, ना भूल चले सांसें जब तक।
हरि हरि जप ले कटते बन्धन, मन जान वही है सुखनन्दन।
कर्ता बन जिया दुखावे क्यों, सब ओर नाचता कर वन्दन।
हरि एक नाम है बस सांचा, दुखभंजक वह सुख का दाता।
उसका मन जो भी ध्यान करे, दुख सागर से वह तर जाता।
नयनों में छवि नाचे उसकी, अंखियां बरसे जैसे सावन।
कांटे भी फूल बने मग में, दिल में हरि ज्योति जलाओ मन।
व्यथित हृदय का चैन वही, नश्वर सब केवल सत्य वही।
कितना भटको है चैन वही, सारे जग का मन मान मही।
प्यासे को मिल जाता है जल, हरि कृपा मिले बढ़ जाता बल।
सब चाह यहाँ छोटी पड़ती, जब नयन बहाता गंगा जल।

1340

हरि हरि जपूँ सभी कुछ तेरा, नहीं नाथ कुछ भी है मेरा। नाच नचाये वैसे नाचूं, न जानूँ कल कहाँ हो डेरा।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, ममता सदा बनाये रखना।
कृपा दृष्टि प्रभु तेरी चाहू, मेरे इन नयनों में बसना।
अनजानी गलियां पथ दुर्गम, प्यार मिले दुख हो जाता कम।
चरण तुम्हारे नाथ पड़े हम, नयना मेरे बरसे रिमझिम।
डगमग डोले नैया मेरी, बीच भंवर में जियरा रोवे।
तुझे पुकारूँ मेरे खेवट, पकडू पांव नहीं अब सोवे।
जियरा जलता ज्ञान नहीं कुछ, मेरी रोती है यह काया।
बहते आंसू पास नहीं कुछ, शरण नाथ मैं तेरी आया।
हरि हरि जपूँ कटे यह रैना, सुन लो मोहन मेरे बयना।
दास तुम्हारे नहीं भूलना, अंखियां रोवें बस यह कहना।

1341

चल कर आऊँ तेरे द्वारे, प्रभु पथ में उजियारा कर दो।
मेरे देवता तुम ना रूठो, साहस मेरे दिल में भर दो।
तृष्णा की दलदल में फंसकर, नयनों में छाया अंधियारा।
चहूँ तरफ तेरा उजियारा, तुमको भूल हुआ जग खारा।
दुख को पाये तुझे भूलकर, नयना हरपल नीर बहायें।
आँख खुले ना, तम में भटकें, मिले कृपा तब ही हम पायें।
चल चल गिरूँ मैं ठोकर खाऊँ, अबल नाथ मैं नीर बहाऊँ।
एक सहारा तेरा स्वामी, इस मन को रह रह समझाऊँ।
जिव्हा सदा तेरे गुन गाये, तुम न देखो कोई न देखे।
इस जंगल में तेरे भरोसे, विनय नयन में तू ही दीखे।
पास न कुछ भी झोली खाली, ना पांडित्य लिये मैं माली।
फिर भी रो रो तुझे पुकारूँ, मिटती नहीं नयन की लाली।
स्वीकारो मैं दास तुम्हारा, तुम बिन नयन बहाये धारा।
सर्जक पालक तुम ही हो सब, तेरा ही बस एक सहारा।

1342

हरि बिन कृपा नहीं कुछ होई, नीर बहायें अंखियां रोई।
गिर जा मन हरि के चरणों में, नैया तेरी पार लगाई।
आज यहाँ पर पता नहीं कल, अकड़ न छूटे जाता यह तन।
प्रीति बढ़ा ले हरि से पगले, इस जीवन का सांचा है धन।
हरि हरि जप मन कटते सब दुख, हरि बिन नही यहाँ कोई सुख।
मृगतृष्णा ने सदा नचाया, आंख खोलकर जग को ले लख।
कुछ ना जाने कहाँ ठिकाना, बदले पल में रंग जमाना।
देख हरी की लीलाओं को, उसमें हरपल सदा नहाना।

1357

इन आंखों में आंसू आये, रो कर मैंने तुझे पुकारा।
कहाँ छिप गये हो तुम मोहन, इस जीवन में मैं हूँ हारा।
जली शमा परवाना आया, हाय जला तू मैं ना आया।
इतना शुष्क हृदय क्यों दीन्हा, परबाना ना मैं बन पाया।
प्यार बिना नीरस जीवन ले, क्यों जीते है हम इस जग में।
दो पल को ही यहाँ महक लें, फूल बने बस इस जीवन में।
युग-युग की है यही कहानी, नहीं बिना तेरे है लाली।
लहराता तब ही बसन्त है, हो जाता है जब तू दानी।
यह शाम तुम्हारे गुन गाये, ना जाने हम कब खो जायें।
हिय में हो बस प्यार तुम्हारा, जब-जब हम इस जग में आयें।
आंसू झरते रहे सदा यह, पथ तेरा हरपल यह खोंजे।
डूबे चाहे भंवर बीच, प्रीति कभी ना तुमसे तोड़ें।

1358

इस जीवन में ना सुख पाया, जलता रहा सदा दुख पाया।
कृपा करो हे मेरे राम, शरण तुम्हारी प्रभु मैं आया।
पार लगा दो डूब रहे हैं, नहीं किनारा दीखे कोई।
व्यथा उमड़ती जो दिल अन्दर, नहीं पूछता हमको कोई।
तुम स्वामी हम सेवक तेरे, प्रीति न तोड़ो अन्तर्यामी।
झर-झर बहते आंसू मेरे, लाज तुम्हारे हाथों स्वामी।
नीर गिरें तेरे पथ पर ही, उसमें ही आनन्द मनाऊँ।
सब जग के वैभव को तज कर, तुझमें ही प्रभु मैं खो जाऊँ।
जग की प्रीति लगे ना प्यारी, हृदय हुआ है मेरा भारी।
इतने निष्ठुर बने ईश क्यों, डोल रहा मैं भ्रम से भारी।
पूजा को स्वीकार करो प्रभु, अज्ञानी को माफ करो प्रभु।
तेरे बालक तुम सर्जक हो, ज्ञानदीप हमको दे दो प्रभु।

1359

निशदिन हम तो नीर बहावें, क्यों रुठा है तू नहिं आवे।
प्रीति डगर पर यहाँ चले हम, नहीं और कुछ हमें सुहावे।
सुमरन लगे तुम्हारा प्यारा, बहती है आंसू की धारा।
पार उतारो मेरे मोहन, डूब रही नौका मझधारा।
जग की बतियां नहीं सुहावे, जीया मेरा भर-भर आवे।
कैसे कहूँ कुछ कहा न जाये, तू ही समझे पार लगाये।
जग में आ कर तुझे न पाये, क्यों आये यह जान न पाये।
दया करो करुणा के सागर, अंखियां मेरी नीर गिराये।
पथ दे दो तुझ दर तक पहुँचू, तेरी झलक नयन से देखूँ।
जीवन बीता जाता सारा, बिन तेरे मैं हरदम सूखूं।
जिय ना लागे तुम रुठो मत, क्यों जग में हमको तड़फाओ।
माफ करो हमको जग स्वामी, मेरे नयनों में बस जाओ।

1360

हरिनाम बसे घट माही, जीवन में दुख ना आई।
तेरे गुन गाते-गाते, जीवन के पल कट जाई।
अंधियारें में दीपक है, तपती गर्मी में छाया।
बैचेन हुए जब मनुआ, अंखियां देखे तुझ साया।
पीड़ा को वही मिटावे, धीरज को दिल में लावे।
इन टूटी आशाओं में, दिल का तू कमल खिलावे।
जो करे अर्चना तेरी, इस जग से वह तर जाता।
जन्म-मृत्यु चक्र चल रहा, वह छूट सभी से जाता।
पल दो पल का यह जीवन, आशा के ढेर लगे हैं।
दौड़-दौड़ पागल होता, अन्त न कुछ हाथ लगे है।
चादर बुन राम नाम की, ओढ़ उसे भव तर जाओ।
प्रेम बीज सींच अश्रु से, हरि लीला में खो जाओ।

1361

तुझे हम याद करते हैं, छिपे तुम हो कहाँ मोहन ?
यह अंखियां तुझ बिन तरसे, सुनाओ मुझे वन्शी धुन।
तुम्हारा प्यार पाने को, जिया हरदम तड़फता है।
यह मेरा दिल नहिं लगता, नयन से नीर बहता है।
बना सेवक मुझे अपना, हमें दीदार हरपल हो।
तड़फते प्राण मेरे हैं, गये मोहन कहाँ तुम हो ?
तुम्हारे खेल निराले, हंसता कोई है रोता।
पागल होवे मनुआ यह, न तुम बिन चैन है आता।
दया करना जगत स्वामी, तुझे प्रभु हम निहारे हैं।
यहाँ सब छूटते जाते, व्यथित हो कर पुकारे हैं।
तुम्हीं माता-पिता सर्जक, तुही पथ का प्रदर्शक है।
मेरे दिल में बसे रहना, हिय की तू ही धड़कन है।

1362

मन चल गीत राम के गा ले, दुख के सागर से तर जावें।
चैन न आवे बिना राम बिन, सुमर पाप सारे कट जावें।
नहिं सहारा और कोई है, नहीं राम बिन ठौर कहीं है।
वह ही पार करेगा नौका, जीवन का बस सत्य वही है।
जग में जियरा भ्रम में डोले, होय कृपा तब ही तम खोवे।
भूल उसे ना कुछ पल बाकी, राग द्वेष में उसे न खोवे।
दूर क्षितिज पर कोई कहता, भूले राम काहे सो रहा।
सांस खजाना लुटता जाता, जान यहाँ न कोई रह रहा।
अपना कौन पराया जग में, मेला खोता जाता क्षण में।
जिसके हिय में राम बसे हैं, अनहद गूंजे उसके घट में।
राम नाम की धुन में खोजा, बहती नदिया इसमें बह जा।
दो पल की उसकी ही लीला, जान समर्पित उसके हो जा।

1363

अपने-अपने सुपने लेकर, घूम रहे हैं सब ही जग में।
मेरा सुपना तो तुम ही हो, बस जाओ तुम मेरे दिल में।
इस दुनिया से हार गया, टूटी मेरी सारी आशा।
चरणों में सिर रख रोने दो, अंतिम प्यासी मेरी आशा।
मैं खोज नहीं तुमको पाता, मुझको बस रोना ही आता।
अपराध किया प्रभु क्या मैंने, यह समझ नहीं मुझको आता।
तुम हमें थाम लो रोते हैं, काटे पल यह ना कटते है।
विरहअग्नि की शीतलता, हमें नहीं अच्छी लगती है।
दिन रात जपें तुममें खोंये, तुम रुठो ना जीवन सर्जक।
हर सांस समर्पित हो तुमको, हे दीनबन्धु जग के पालक।
आंसू की गंगा बहने दो, मत रोक मुझे तू बहने दे।
आंसू खोजें तेरी राहे, यह चैन मुझे ले लेने दे।

1364

जीवन तुम पर प्रभु है बारी, रुठो मत तुम कृष्ण मुरारी।
तुझ चरणों तक मैं आ जाऊँ, दे दे सम्बल प्रभु मैं हारी।
जीवन के तुम ही बसन्त हो, तुम बिन सब लगता है खारी।
भटक रहा जग के तम में मै, दो प्रकाश मेरे बनबारी।
अंखियां नीर गिराये झर झर, मन ना लागे मेरा पलभर।
कँरू अर्चना प्रभु तुम्हारी, चाँहू प्यार तेरा बंशीधर।
लुटता रहा जगत में पल पल, आंखे मीची क्यों मनमोहन।
हाथ जोड़ कर विनती करता, सता न मुझको हे मधु सूदन।
तेरी बगिया बड़ी निराली, फूल खिलाये खशबू डाली।
मैं कोने में बैठ रो रहा, जुलम करो ना मेरे माली।
लाज तुम्हारे ही हाथ प्रभु, शरण राख लो हुआ भिखारी।
छवि तेरी को सदा तड़फता, मिल जाओ हे कृष्ण मुरारी।

1365

छिपे कहाँ हो कृष्ण मुरारी, भीगी मेरी पलके सारी।
तुम बिन मेरा जिय न लागे, सुन ले दिल की पीड़ा मेरी।
मीरा हुई प्रेम में पागल, छोड़ सभी कुछ प्रीति लगाई।
बुद्ध ने छोड़ा नृप सिंहासन, हरि मिलने की आस लगाई।
तुम बिन दया न कुछ भी होवे, चरण पड़े तेरे कन्हाई।
मनुआ रोवे नयना बरसे, पार करो केवट बन जाई।
हरि हरि कहते जीवन गुजरे, अनजान डगर दिल यह सहमें।
रो रो कर हम तुझे पुकारें, तुम बिन और न कोई थामें।
जग के सारे वैभव फीके, करूणासागर मुझको लख लो।
विरह अग्नि को खूब जला दो, निज प्रीति में मुझको रंग लो।
बीते न यह सारी उमरिया, बिन मिले तुझसे सांवरिया।
झर झर नीर गिरे नयनों से, प्यार हमें दो वंशी बजैया।

1366

किसे यहाँ कहना है कुछ, सब बह रहा सन्तोष कर।
धुन सभी की अलग अपनी, तुझ स्वर मिलें तो बात कर।
रंग बदले हर घड़ी जग, देखकर बैचेन न हो।
मेल पल दो पल यहाँ है, प्यार दे कर ही दफन हो।
निजी ले कर वासनाये, जी रहे सब ही जगत में।
संग तू किस किस का देगा, डूब जा तू हरि भजन में।
रहना नहीं कर बुरा ना, तू नियन्ता ना जगत का।
आंसू से नहलाता चल, प्यार से ले नाम हरि का।
जान अपना बस यहाँ क्या, मृत्यु है अंखियां गड़ाये।
देखती जो कर रहे है, ज्ञान हरि की शरण आये।
ना शिकायत हो किसी से, प्यार से भीगा रहे दिल।
हरि चरण रज पा सकें हम, विनती हमको यह दे बल।

1367

तुम बिन मेरा जिय न लगत है, कैसे पाऊँ मन तड़फत है।
छोड़ हमें छिप गये कहाँ हो, इन अंखियों से नींर झरत है।
दास बना लो कँरू विनय मैं, तुम बिन कुछ मैं और न देखूँ।
जगत भुलैया में मैं फंसकर, तुझे छोड़ हरि कुछ न निरखूं।
कैसा सुन्दर जग है तेरा, जीव जन्तु सब करें बसेरा।
तुम बिन कृपा यहाँ दुख भोगे, जीवन में ना होय सबेरा।
दया करों प्रभु हम निर्बल है, मेरे जीवन का तू बल है।
मेरे प्राण पुकारें तुमको, पार करो नैया डूबे है।
डगर न जाने रोना जाने, कैसे हम तुमको पहचाने।
सब रूपों में तू ही छिपा है, तुम बिन कृपा नहीं हम जाने।
शीश झुकाये ईश खड़े है, ज्ञान दीपक तुम्ही जलाओं।
टूट जायें तब सारे बन्धन, सब मेरा सन्ताप मिटाओ।

1368

मन गा चरणों में हरि के जा, हिय उसे बसा सुख पा।
मुक्त होय जग के बन्धन से, तू प्यार उसी का पा।
जले शमा जलता परवाना, जाना नहीं गणित को।
प्रीति डगर की राह अनूठी, मिटकर पाये उसको।
लखे चकोरी उस चन्दा को, हिय में पाती सुख को।
बना वियोगी जो भी हरि का, उसमें पाये सुख को।
बिन पानी मछली तड़फत है, ऐसे तड़फे हरि को।
जग वैभव पीछे रह जाते, पीवे वह दर्द हरि को।
नैनन में हरी छवि बसाये, समझाये इस दिल को।
नहीं और कुछ उसे सुहावें, विरह सुहावे उसको।
यह पौधा न कभी भी सूखे, आंसू सीचे इसको।
हरपल प्रभु जी करता विनती, जीवन रटे बस तुमको।

1369

याद तुझी को करते है हम, रूठो ना मेरे मन मोहन।
दो दीपक जो जलते मेरे, खोजे है वह तुमको निशदिन।
रमा तुही है सांस-सांस में, जिय लागे ना रोये हरदम।
कभी प्रीति ना मुझसे तोड़ो, इस जग में प्रभु बेबस है हम।
पता तुम्हारा न जाने हम, अंखियां बस यह रोना जाने।
दया दृष्टि से हमको लख लो, मिटे भ्रम तुमको पहचाने।
सब ओर यहाँ है जल ही जल, ना हमें दीखता कोई थल।
मन पाये कैसे चैन यहाँ, गिरते आंसू मेरे हरपल।
जीवन दे कर अब छिपो नहीं,चरणों में सिर रख लेने दो।
बहती जो आंसू की गंगा, उनसे पग को धो लेने दो।
नमन तुझे है चाह रमें हम, नश्वर जीवन ना दिल लगता।
शेष रही जो थोड़ी घड़ियां, ज्ञान हमें दे कहे जो पता।

1370

जीवन तो मेरा उदास है, रखूँ नाथ चरणों में सिर है।
मेरे दिल की तू प्यास है, छूट जाते जग के साथ है।
रंग-रंगीली है यह दुनिया, तुम बिन दिल लागे नहीं नाथ।
आंसू गिरते मेरे झर-झर, प्रभु जी चाहता तेरा साथ।
जाते पल यह सोच रहा मैं, कण-कण में हो तरस रहा मैं।
ठगनी माया के चक्कर में, पड़ ईश्वर को भूल रहा मैं।
सुख दुख का है खेला चलता, विसरा तुमको ना तम मिटता।
ना टूटे जंजीर कर्म की, कमल कभी ना हिय का खिलता।
जग की पगडण्डी पर भटके, तरसाते तुम मुझे नाथ हो।
अज्ञानी हैं नाथ ज्ञान दो, सारे जग के तुम पालक हो।
मुझे हटाना ना मन्दिर से, युग कितने बीत जायें नाथ।
सुमरुँ तुझको दिल लगा रहे, अश्रु स्वीकारो मेरे नाथ।

तुम ज्ञान का दीपक जला दो, हम पा सकें तुमको कहीं।
तुझे नमन है तेरे बालक, यह तेरा ही ईश चमन है।
नीर हमारे प्रभु बहते है, कुछ भी मेरे पास नहीं है।

1385

हरि जप तू आकाश भ्रमण कर, जग को अपना नहीं समझ घर।
दो दिन का मेला है यह तो, लीन उसी में होना चल घर।
पाप पुण्य से मुक्त करे वह, हिय के दुखड़े दूर करे वह।
आंखो के मोती जो बहते, उन सबको स्वीकार करे वह।
हरिभज-हरिभजउसबिननहिंकुछ,यहजगतोझिलमिलसीछाया।
बिन उस कृपा जान ले मूरख, हमें डराबे निज का साया।
सारे सुख परिवर्तित होते, दे जाते है दुख भी हमको।
हरि का नाम एक सांचा है, जप ले देता है सुख सबको।
सदा संभालेगा हरि तुमको, वसा उसे तू अपने हिय में।
कीच कमल का मेल समझ ले, वहीं मेल तू रख इस जग में।
हरि जप हरि जप तू चलता जा, नैया को अपनी खेता जा।
वह ही पार लगाये इसको, यह विश्वास लिये चलता जा।

1386

बसो नयना मेरे सांवरे, तुम ही को पुकारें प्राण रे।
इस जग में जिय नहीं लागे, अंखियां यह बहाती नीर रे।
वन्शी धुन मोहि तुम सुनाओ, इस जग से उतारो पार रे।
बचाओ प्रभु चरणों में पड़ू, लाज तुम्हारे ही हाथ रे।
फूल कुम्हलाया तेरे बिन, माली चमन का संभाल रे।
खिले जो तू दे प्यार अपना, रख अपनी दया का हाथ रे।
प्यासा है जिय रोये अंखियां, तेरे हाथो जगत नाव रे।
आया जग पथ को ना जानू, यदि कृपा हो तुझे पाँऊ रे।
बीत जायेगी सब उमरिया, देख लो तुम हरी यह रोना।
तुमसे अच्छा ना कोई है, मुझको दे मन्दिर का कोना।
तेरी यादें मुझको प्यारी, भटकूँ मैं जगत में घूमता।
नहिं जानता कहाँ जायेंगे, पा जाँऊ चरण को ढूंढता।

1387

ढूंढते प्रभु हम तुझे है, अर्चना स्वीकार कर लो।
ईश हमको माफ कर दो, तुम हमारी लाज रख लो।
दीखता न है अन्धेरा, नयन से है जल बरसता।
प्रभु इसे तुम दूर कर दो, तुम बिना जिवड़ा तड़फता।
फिर रहे है हम भटकते, कंटको को सह रहे है।
ईश हमको प्यार दे दो, विरह में हम रो रहे है।
फिरते खाली झोली ले, रूठ नहीं मेरे माली।
तेरे चमन के फूल हम, रह न जाये रात काली।
तुम कृपा बिन है नहीं कुछ, सूखती है फसल सारी।
बाट हम तेरी निहारे, इस जग में मैं हूँ हारी।
हम नमन करते तुझे हैं, जानते कुछ भी नहीं हैं।
पथ हमें अपना दिखाना, चाह बस मेरी यही है।

1388

थक गये हम चलते-चलते, रोते बीती जिन्दगी।
बगिया तेरी के फूल हैं, स्वीकार करो वन्दगी।
रोते आये हम जगत में, पाई क्यों खुशियाँ नहीं ?
ऐसे निष्ठुर ना बनो प्रभु, बता हमारा हक नहीं ?
प्यार पाने हृदय तरसता, कौन बाधा से अटका।
भ्रमित हुआ मैं घूमता हूँ, करो कृपा नहीं भटका।
कौन से कर्मो के बन्धन, भोगे हम जा रहे हैं।
जन्म लिये हम इस धरा पर, रुदन ही सुना रहे है।
पिछला कुछ नहीं ज्ञान हमें, भविष्य को नहीं जानते।
कुछ यह पल जो दीखते है, तुमको ईश पुकारते।
तेरी रजा में ही बहते, विनती स्वीकार कर लो।
नयनों में मेरे बसो तुम, पूजा स्वीकार कर लो।

1389

अकेला हुआ भरी भीड़ में, संग साथ ना मेरे कोई।
तेरा विरह सतावे हरदम, याद तुझे कर अंखियां रोई।
कृपा करो तुम जग के पालक, सम्बल तुम हम तो है बालक।
सुनकर तेरी वन्शी धुन को, खो जायें सारे दुख सर्जक।
तेरे पथ पर चल कर आवे, नयना झर-झर नीर बहावे।
डूब रही है नौका मेरी, तू ही इसको पार लगावे।
दुख के सागर में जगदीश्वर, मेरा दिल बेहाल हुआ है।
मुझे संभालो हे करुणाकर, तुम बिन जीया तड़फ रहा है।
नहीं पता कित जाये किश्ती, अगम अगोचर पार न कोई।
दे निर्मोही हमें सहारा, याद तुझे कर मैं हूँ रोई।
तेरा संग मिले सुख आवे, याद करुँ जी भर-भर आवे।
तम की चादर में लिपटा हूँ, तुझे पुकारुँ तू ही हटावे।

1390

तेरी दुनिया का तू मालिक, नहीं रस्म से हम है वाकिफ।
माफ करो हमको तुम सर्जक, पहुँचे आंसू यह तुझ पग तक।
क्या गायें गीत बुझा यह दिल, न दीखे राह खोई मंजिल।
आदि अन्त का पता नहीं है, कृपा करो तुम रोयें हरपल।
हमें सहारा दे जगकर्ता, कटे सफर जिय मेरा डरता।
तम की चादर में हूँ बैठा, तू प्रकाश कर हे दुखहर्ता।
तेरे गुलशन में प्रभु खिलते, सब दुख को तू ही जाने है।
दुख के भन्जक पीड़ हरो सब, विनय तुझी से हम करते है।
कहाँ जा रहे बहते-बहते, चहुँ ओर दीखता जल ही जल।
पार करो हे ईश्वर हमको, रखते कोई भी हम ना बल।
आंसू से पलकें भीगी हैं, यह कंठ पुकारे है तुमको।
बनो नहीं निर्मोही सर्जक, दे दे वर पायें हम तुमको।

1391

सुखदायक तुम जग के पालक, नमन तुम्हें करते हैं राम।
तुम बिन बिगड़े काम हमारे, सुन ले जगत के स्वामी राम।
घट-घट बसे तुझे नहीं पावें, मनुआ भटक-भटक यह जावे।
तेरी दया होय जब स्वामी, तू ही दुख से पार लगावे।
अंखियां नीर गिरायें तुम बिन, कुम्हलाया जीवन का सावन।
हरषे जीवन की यह बगिया, सुन कर तेरी वन्शी की धुन।
जन्मों-जन्मों से भटक रहा, नयन भरे यह तुझे निहारे।

लगते हैं चट्टान थपेड़े, चाह थाम ले हम तो हारे।
जीवन का आनन्द तुही है, कस्तूरी से बसे हिया हो।
इधर-उधर पागल मन डोले, भूल तुझे ना चैन कभी हो।
द्वारे तेरे खड़े मुरारी, ना लौटाना झोली खाली।
अज्ञानी है चाह प्यार की, सूखे फूल लिये हम थाली।

1392

ध्यान लगाऊँ प्रभु जी तेरा, बहक-बहक मैं जाऊँ।
जीवन के आधार तुम्हीं हो, तुम बिन रह दुख पाऊँ।
कोरी आँखें जग में आती, जग सुपनों में खोती।
तुझको विसरा नित यह रोती, फिर भी तुझे भुलाती।
रंग-बिरंगी तेरी दुनिया, मन है मेरा छलिया।
याद तुम्हारी आती है जब, नीर आँख ले रोया।
भूल तुझे नित सुपने लेता, तुझकों दोष लगाऊँ।
तेरे पथ पर चलता जाऊँ, दे वर ना डिग पाऊँ।
भूल न पाऊँ मैं उस पल को, जब रो नीर बहाऊँ।
तुझ बिन जीने से अच्छा है, तुझ चौखठ पर मर जाऊँ।
तुम सर्जक मेरे हो प्रभु जी, तुझको नहिं विसराऊँ।
विसरा कर दुख भोग रहा हूँ, मन कैसे समझाऊँ ?

1393

अंखियां नीर भरे पथ देखे, मनुआ अन्धकार में डूबे।
कर कृपा मोहि पार लगा दो, तुम बिन कृपा न कुछ भी होवे।
तेरे बालक अज्ञानी हम, जाये कहाँ न रस्ता सूझे।
विवश यहाँ हैं हे जगकर्ता, करो दया कोई ना बूझे।
अंखियां भर-भर नीर गिराती, तुम्हें खोजती पर न पाती।
मृगमरीचिका सी भटकन ले, हरपल जहर यहाँ पर पाती।
तुही उबारे हे सुखनन्दन, कट जायें सब भव के बन्धन।
मेरा अपना नहीं यहाँ कुछ, दूर करो भ्रम जग के बन्धन।
पूजें तुझे और सुख पावें, पार नदी जीवन की होवे।
बस जाओ मेरे नयनों में, धैर्य कभी भी हम ना खोवे।
तुझे नमन करते जगकर्ता, सन्ताप हरो दिल है रोता।
सद्पथ पर प्रभु हमें चलाओ, ज्ञान तुझी से सब जग पाता।

1394

सब कुछ होता है गलत यहाँ, जब भाग्य साथ ना देता है।
जो हृदय बसाते हैं हरि को, सद्मार्ग उसे मिल जाता है।
गिरते आंसू न कहे कोई, तू जाम पिला मुझको कोई।
होऊँ तुझ चाहत में राजी, ले अपनी चाहत को रोई।
रुठे तुम क्यों मोहन मुझसे, लीला तेरी समझ न पाया।
जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, तेरा ठिका नहीं मैं पाया।
बालक तेरे हम क्षमा करो, अपना हमको दास बना ले।
दूर हमें ना कर चरणों से, तू पुकार मेरी यह सुन ले।
दूर करो दुख हे दुख भन्जक, उपजे प्रभु मेरे हिय में सुख।
अंखियां याद करे यह रोये, फेरो मत मुझसे प्रभु तुम मुख।
पूजा सदा करे तुम्हारी, न विसराये तुमको एक पल।
नैया मेरी पार लगाना, हम में ईश नहीं कोई बल।

1395

जीवन कर्ज चुकाऊँ कैसे, अंधियारा है कुछ ना दीखे।
चल-चल कर मैं संभल न पाऊँ, मुझे संभालो तो पथ दीखे।
मन्दबुद्धि हूँ ज्ञान नहीं है, सर्जक मेरा आस तुही है।
बहते मेरे आंसू देखो, इस जग का कर्तार तुही है।
जियरा किन सुपनों को देखे, अंखियां रिमझिम-२ बरसे।
बसे न हिय में इस जीवन में, नहीं कभी यह जियरा हरषे।
रोते बीती सारी घड़ियां, कर कृपा तोहि पाऊँ सजना।
सुखदायक तुम अगम अगोचर, तू मेरे जीवन का सुपना।
रो-रो कर मैं तुझे पुकारुँ, करुँ श्रृंगार न कुछ भी जानूं।
देख रहा मैं शून्य गगन को, कितने तारे किसको मानू ?
सभी समर्पित ईश तुझे है, करुँ समर्पित साहस नाही।
क्यों मुझमें मेरा मैं गूंजे, मुझे बचा लो मेरे माही।

1396

सुपनों की दुनिया में जीते, कुछ भी हमको पता नहीं है।
तुमसे ना मिलना हो पाया, जीवन का तो दर्द यही है।
कैसे तुझे मिलूं हे भगवन, अन्धकार में भटका हूँ।
गुनाह हुआ मुझसे ऐसा क्या, बिन तेरे मैं तड़फ रहा हूँ।
मिलो मुझे जिय प्यास मिटाओ, मैं सेवक तुम ना दुकराओ।
तेरे मन्दिर की चौखठ पर, जपूं तुझे तुम प्रीति बढ़ाओ।
झरते रहे नीर यह मेरे, भूलूं कभी न सांझ सवेरे।
जीवन के यह पल कट जायें, तुझे पुकारुँ तुम हरि प्यारे।
बहते नीर हमें तुम लख लो, हम है अबल-सबल तुम स्वामी।
डर लगता है रातें काली, जानो सबकी अन्तर्यामी।
जीवन का श्रृंगार तुही है, जीवन का आनन्द तुही है।
तेरी यादों में खो जायें, तुम संभाल लो सभी तुही है।

1397

तेरे द्वार हम आये, प्रीति को बढ़ाओ।
भटके है इस जंगल में, कृपा हमें दिखाओ।
जीवन यह जा रहा है, तुम बिन रो रहा है।
प्यासे तेरे दरश के, घट में तू बसा है।
नयन में छवि तुम्हारी, मुझे मिलो मुरारी।
बन्शी की धुन सुना दो, डूब जाऊँ सारी।
खेवट बनो कन्हैया, पार कर दो नैया।
चहुँ ओर जल ही जल है, पाऊँ तुझे सैंया।
अपना तुम्ही बना लो, मुरझाया खिला दो।
तेरे ही गीत गायें, निज चरण बिठा दो।
बनना कभी ना निष्ठुर, कर कुछ भी न सकते।
नैना मेरे बरसते, राह तेरी तकते।

1398

नहीं मिलो ना मिलना चाहो, पर मेरे सुपनों में आओ।
रो-रो कर हम तुझे पुकारें, मेरे नैनन में बस जाओ।
सम्बल मेरा बस तू ही है, यादें तेरी मीठी लागे।
जग में ना हमको भटकावे, तुमको भूल हमें डर लागे।
पाप पुण्य सुख-दुख दुनिया में, पार करें कैसे ना जाने।
रो-रो कर बस तुझे पुकारें, आशा तू ही बस यह जाने।
मेरे जीवन की तुम सुगन्ध, बदरंग भूल तुमको दुनिया।
जिसके हिय में तुम बस जाओ, सब पाप कटे सुमरे जीया।
जग के कांटे ना उसे चुभें, बस गीत उठें गोविन्द हरे।
वह अर्पित कर हर सांस तुझे, इस भव सागर को पार करे।
शीश झुकाये द्वार खड़े हम, जीवन के मेरे तुम श्रृंगार।
आंखों से मोती ढलक रहे, सुन लो करते तेरी पुकार।

जिवड़ा डोले तुझे पुकारें, मुझको जीवन देने वाले।
मेरे मन की पीड़ा सुन लो, बहते आंसू के हैं नाले।
जनम-जनम का प्यासा मनुआ, भजूँ तुझे लागे ना जीया।
लाज मेरी हाथ तुम्हारे, मुझे थाम लो मेरे पीया।
माफ मुझे कर अज्ञानी हूँ, कब आयेगी मेरी बारी।
शीश झुकाये द्वार खड़ा हूँ, पथ देखते नीर तुम्हारी।

1414

जपे हम बस नाम तेरा, सांस यह जब तक चले।
डगर यह अनजान मेरी, ना पता कैसे मिले।
तुझ कृपा की डोर ही प्रभु, मिले तो हम पार हों।
नयन तेरी राह देखे, तुम हमारे प्राण हो।
बहते आंसू को देखो, पास में कुछ भी नहीं।
दे रहा हूँ पीड़ अपनी, बस हमारे कुछ नहीं।
लाज मेरी राखना प्रभु, नीर को पहचानना।
जग में इनका मोल न हैं, तू न मुख को मोड़ना।
सृष्टि का तू ईश मालिक, खेल अंपरम्पार है।
नमन को स्वीकार कर लो, जगत का आधार है।
किसी जगह गिर जायेंगे, चल रहा ना जानता।
न खफा प्रभु मुझसे होना, प्यार तेरा मांगता।

1415

मेरे भगवन आओ तुम, क्यों मुझे तड़फा रहे।
क्या मिलेगा बता तुमको, नीर अंखियों से बहे।
अनजान मग रोवे जिया, तू बता किससे कहें।
चाहते तेरी कृपा को, ना विलग तुमसे रहें।
समझ छोटी है हमारी, स्वामी सारे जग के।
तू लगा दे पार नौका, दुख मिटे सब हृदय के।
जलते रहे हम विरह में, एक पल भूलें नहीं।
नयनों से गिरता यह जल, कभी प्रभु भटकें नहीं।
स्वप्न कितने हम संजोते, टूटते हम बिलखते।
खेल छाया धूप का है, अज्ञान में हम भटकते।
तुझे हम कैसे मनाये, विधि नहीं हम जानते।
खड़े बस हम सिर झुकायें, तुम्हें हम पुकारतें।

1416

प्रभु कहाँ जायें बता हम, दिल नहीं लगता यहाँ।
दर्द तूने जो दिया है, क्या बुझेगा ना यहाँ।
चले आये स्वप्न नगरी, दिल हमारा तड़फता।
देव मेरे तुम न रुठो, क्या कहें दिल झिझकता।
चाह तेरे प्यार की है, शीश चरणों में धरा।
तप रही जो जिन्दगी है, कुछ मिले ठंडक जरा।
नयन रोते देखते है, कुछ हमारे बस नहीं।
हरि तुम मुझको संभालो, जाते क्षण रुके नहीं।
ठोकरें खाते जगत की, तू छिपा प्रभु हैं कहाँ ?
कृपा तेरी यदि मिले तो, बरसता सावन यहाँ।
काट बन्धन कर क्षमा, मेरी सुन पुकार को।
नीर अंखियों से बहे हैं, देखते हम शून्य को।

1417

हरि तुम बिन मैं चैन न पाऊँ, तू कुछ कह दे तो कह पाऊँ।
वसो हिय मोहि नाहिं विसारो, चरण पडू मैं तुझे मनाऊँ।
थके हारे चले ना मेरी, कैसी यह कर्मो की डोरी।
जगा विरह मैं पाऊँ तुमको, राखो लाज ईश तुम मेरी।
जाये कहाँ तू ही बता दे, लगता नहीं यहाँ मेरा मन।
रो-रो सूखे नयना आंसू, सता रहा तू क्यों मनमोहन।
घुटते हम पर जान न जाती, कहाँ लिखूँ मैं तुमको पाती।
किस दुनिया में प्रभु तू खोया, देखो मेरी अंखियां रोती।
थके यहाँ हम चलते-चलते, पता ना हम कहाँ जायेंगे ?
साथ चाहता ढूंढू तुमको, बिन तेरे ना तर पायेंगे।
मकड़जाल यह है सब दुनिया, फंसे यहाँ फिर हम रोते है।
मुझे संभालो तुम मेरे हरि, याद तुझे कर हम रोते है।

1418

हरि मुझको तुम पार लगाओ, मेरे मन की प्यास बुझाओ।
तरस रही यह मेरी अंखियां, मेरे खेवट तुम आ जाओ।
यादें तेरी जब-जब आवे, अंखियां झर-झर नीर गिरावें।
मेरे मन मोहन मत रुठो, तुझ चरणों की आस लगावे।
तेरी महिमा ऋषि मुनि गाते, ध्यान धरे हिय में सुख पाते।
दूर करो तम हम अज्ञानी, ध्यान धरे हिय में सुख पाते।
तेरी यादों में बीते पल, रम जाओ मेरी सांसों में।
अगम अगोचर पार न तेरा, भय लागे काली रातों में।
ज्ञान पुंज तुम दीप जला दो, अंधियारा सब दूर भगा दो।
करें अर्चना प्रभु हम तेरी, इस जीवन को प्रभु महका दो।
शुभ कर्मो में सदा रहे प्रभु, हम है अबल विनय करते है।
लाज रखो हे ईश हमारी, तुमसे ही जीवन पाते है।

1419

श्री हरी मुझको संभालो, बोझ अब उठता नहीं।
डोले मनुआ यह चहुँ दिश, चैन पर मिलता नहीं।
तेरी दुनिया में खिलते, नीर अंखियों से झड़े।
देखो लुटती यह दुनिया, तुम शरण हम आ पड़े।
तेरे इंगित पर जगत है, पीड़ सागर का बहे।
समझ सकते हैं न लीला, तेरे चरण को चहें।
ज्ञान के तुम दीप हो प्रभु, अज्ञान को तुम हरना।
नयन से आंसू बरसते, प्रभु हमें क्षमा करना।
रंग कितने ही जगत में, रास आता कुछ नहीं।
तुम वसो प्रभु यदि नयन में, रंग बरसता फिर यहीं।
चरणों की रज को दे दो, नमन स्वीकार कर लो।
ईश तेरे दास हैं हम, विनय यह लाज रख लो।

1420

द्वारे तेरे आये प्रभु जी, अपनी शरण हमें तुम रख लो।
जनम-मरण का चक्र चल रहा, सुधि को मेरी प्रभु तुम ले लो।
आंखे नीर गिरायें हरपल, कब आओगे मेरे प्रियतम।
जिवड़ा बिलखे दर्द न देखे, तुझे पुकारुँ हार गये हम।
चरण धूलि भी हमें मिली ना, बीता जाता सारा जीवन।
इतने निष्ठुर बने प्रभु क्यों, लख लो दिल करता है क्रन्दन।
सांस-सांस में तुम रम जाओ, जग में नही मुझे भटकाओ।
चाहे मुझे रुलाओ कितना, पर मेरे सुपनों में आओ।
जाते पल बस विरह सुहावे, और नहिं मोहि कुछ भी भावे।
करुँ अर्चना हे हरि तेरी, तू ना मुझको दूर भगावे।
ज्ञानी नहीं विधी ना जानूं, केवल बस मैं रोना जानूँ।
तू अज्ञात छिपी ओ माता, दूध मिले इतना ही जानूं।

1421

तुमसे मिलन होगा कभी, यह जानते हम प्रभु नहीं।
बस याद में तेरी मिटें, गम फिर हमें होगा नहीं।
तू ही सर्जक प्रभु मेरा, नीर हम किसको दिखायें।
तेरी दया को चाहते, कर जगत हम पार जाये।
आंसू बरसते हैं यहाँ, ना फूल कोई दीखता।
हे देव तुम रुठो नहीं, तम में यहाँ मैं भटकता।

ले चल खिवैया तू मुझे, यह नाव डगमग डोलती।
अर्चना तेरी करें हम, यह सुरति तुझे पुकारती।
द्वार तेरे बैठ कर हम, करते रहें बस आरती।
ईश तुम मेरी सुन अब, रज तुझ चरण मैं चाहती।
ज्ञानपुंज कृपा करो तुम, प्रज्वलित दीपक को करो।
सब शोक भय से मुक्त हों, जीवन सफल मेरा करो।

1422

हरि दुखड़े सब दूर करो अब, रोये मनुआ कृपा करो अब।
अगम अगोचर जग के स्वामी, विनय हमारी ईश सुनो अब।
एक सहारा तू ही जग में, बस जाओ हरि मेरे घट में।
रो-रो अंखियां हार गई है, रुठो ना हरि इस जंगल में।
ज्ञान दीप प्रभु हृदय जलाओ, तुम्ही मेरे जीवन सर्जक।
खड़े हम तो तुझ सम्मुख, दया करो हम तो है बालक।
तुझे मनायें जिय सुख पाये, बढ़े प्रीति तुमसे वर पाये।
ले चल मेरे नाविक नौका, तुम बिन मेरा जिय घबराये।
दास तेरे हमें ना भूलो, तुम बिन कृपा विरह ना पावे।
मुझे बहा दे इस नदियां में, हाथ जोड़ तेरे गुन गावें।
अश्रु करो स्वीकार हमारे, नहीं पास है मेरे कुछ भी।
करते नयन प्रतीक्षा तेरी, मिट जाये चाहें यह तन भी।

1423

बहते आंखो से आसूं, डूबता यह दिल गमें।
द्वार तेरे आ रहे है, हरि संभालो तुम हमें।
डगर है अनजान जग की, हम अंधेरे में गिरे।
लाज मेरी ईश रखना, चरण हम तेरे गिरे।
पार करो मेरी नैया, बिन खिवैया डूबती।
नयन पथ तेरा निहारें, राह तेरी जोहती।
बिन दया खिलता न उपवन, जगत के आधार हो।
ऋषी मुनि सब ध्यान करते, सब सुखों की खान हो।
यह उमर सब काट देंगे, प्यार तेरा चाहते।
रुठ हमसे तुम न जाना, नीर मेरे निकलते।
सूखा यह जाता उपवन, देखाता मेघ बरसे।
ना सजा ऐसी हमें दो, तुम बिना जीव तरसे।

1424

जीवन में कितने सुमन खिले, पर तरस गये हम खशबू को।
कितने ही हमने छन्द रचे, सब तोड़ चले वह बन्धन को।
अज्ञात दिशा सूना है पथ, ना जाने कित जायेगा रथ।
खोई-खोई अंखियां खोजें, कैसे पाऊँ मैं अपना पथ।
हे ईश हमें तुम बल देना, ना तुझे भूल चलते जायें।
आंसू की बहती गंगा में, हम बहे मगर तुमको पायें।
निर्बल है जान क्षमा करना, बहते आंसू को लख लेना।
तेरे दर बिन न ठौर कोई, दे-दो मुझको बस इक कोना।
हर लहर यहाँ बढ़ती जाती, पल भर को मिले बिछुड़ जाती।
हम भूल चले हैं संग तेरा, यह अंखियां रोवे दिन राती।
कितने ही जन्मों में भटके, निकले आंसू इन नयनों के।
तेरी करुणा को चाहे हम, जग के कर्ता पालक सब के।

1425

जीव रोये विरह है जागा, तुम बिन नैना झर-झर बरसे।
पांव पडू भूलो ना प्यारे, मिले कृपा तो छूटे दुख से।
हरि-हरि गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, कुछ ना दीखे नीर चढ़ाऊँ।
सारे जग के तुम रखवाले, आशा बन्शी धुन सुन पाऊँ।
ले चल मेरी नैया खेवट, तम में भटकूँ दीप जला दे।
अपनी शरणा हार गया ले, मन यह रोये तू हर्षा दे।
अगम अगोचर पार न तेरा, दया मिले तो होय सबेरा।
इन प्राणों के तुम हो स्वामी, ढूंढे अंखियां प्रियतम मेरा।
मेरे माली खाली थाली, डरपे मनुआ रुठी लाली।
नहीं किनारा मुझको दीखे, पार करो राते हैं काली।
मिट जायें तेरी यादों में, जग में सुन्दर है बस यह पल।
मेरी सांसों में रम जाओ, ना जाने प्रभु होगा क्या कल।

1426

द्वारे तेरे नाथ खड़े हैं, मुझे सम्भालो मेरे राम।
तेरे विरह में हम तड़फते, बीत ना जाये काली शाम।
जग के सब सुख तुम बिन फीके, रोवे नैना हम तो भटके।
कृपा नाथ तेरी हो जाये, तुमको पायें हम ना अटकें।
व्याकुल मनुआ तुझे पुकारें, प्यासा आशा तू कब बरसे।
मेरे देवता तुम ना रुठो, लख ले हमको जीया हरषे।
नैना मेरे झड़ी लगाये, जिय चाहता हरदम नहाये।
वर दे दे प्रभु हमको ऐसा, पल भर विलग नहीं हो पाये।
नाथ मेरे तुम दास तेरे, इस सारे जग के पालक हो।
भाग्यहीन ना करो हमें तुम, मेरे जीवन के सर्जक हो।
आलोकित प्रभु पथ को करना, बढ़े प्रेम नित मेरे अंगना।
तेरे ही प्रभु गुन को गायें, बीता जाये जीवन सुपना।

1427

ज्ञान का सूरज दिखा दो, तिमिर के बादल हटा दो।
हम प्रभु जी तेरे बालक, तुम दया का दान दे दो।
फिर रहें हैं हम भटकते, नीर आंखों से बहे हैं।
तेरा सहारा यदि मिले, फूल दिल के फिर खिले हैं।
तेरे चमन के फूल हैं, चाहते हैं प्यार तेरा।
निज चरण में प्रभु बिठाना, दुख कटें फिर हो सबेरा।
नयन रोये तुम न आये, नहीं जीवन गुनगुनाये।
कर कृपा हम पर दयालू, शूल जग के तू मिटाये।
सब जगह पर तू छिपा है, आस तू है प्यास तू है।
नयन तुमको खोजते हैं, बसता कण-कण में तू है।
चरण में तेरे पडे हम, लाज मेरी राख लेना।
क्या कहें तुमको रचैया, अबल मैं तुम थाम लेना।

1428

जानते हम ना प्रयोजन, निष्प्रयोजन बह रहे है।
दन्श लगते चीख उठती, शून्य में सुर खो रहे हैं।
ढूंढती है आंख उनको, बाट मेरा दर्द लेता।
सोचता एकान्त में फिर, हाय मैं क्यों दर्द देता।
पल दो पल का है मेला, अनगिनत तूंफा यहाँ हैं।
चहुँ दिशा में आंख उठती, भ्रम कितने पल रहे हैं।
दिल भरा शिकवे यहाँ हैं, रो रहे जाता नहीं गम।
फूल खिलते इस चमन में, पा सके खुशियां नहीं हम।
इस जगत को प्यार मेरा, बहता नयनों से झरना।
विवश हम कुछ कर न पाते, इस खता को माफ करना।
प्रभु तू सबका है स्वामी, तू दुख सभी के पोंछना।
शीश मेरा यह झुका है, वन्दगी स्वीकार करना।

1429

तुम बनो निर्मोही न प्रभु, अबल हम हैं तुम सबल हो।
अश्रु तेरे चरण धोवें, जिन्दगी के प्राण तुम हो।

तुम बिन अंखियां बरस रही हैं, कैसे मेरी बगिया महके?
तुम अनन्त के स्वामी प्रभु जी, बालक हम नादान यहां है।
व्यथित कर रही दिल को पीड़ा, मोहन मेरे छिपा कहां है?
हम है अबल कांपते यह पग, जिवड़ा मेरा करता धक-धक।
नौका मेरी डूब न जाये, हार गई यह अंखियां तक-तक।
हाय विवशता की चक्की में, कोल्हू के हम बैल हुए हैं।
जाती यह जीवन की सांसे, तुम बिन हम बेहाल हुए हैं।
चरण पड़े हम दास तुम्हारे, मुझको जीवन देने वाले।
चलता जाऊं प्रभु पथ तेरे, कृपा करो मेरे रखवाले।

1445

मैं भटकता फिर रहा था, ना मिला मुझको किनारा।
डूबती किस्ती सम्भालो, बस मुझे तेरा सहारा।
दूर करना ना मुझे तुम, निकले मुख तेरे बयना।
सह सकूं सब दंश जग के, ना छोडू तेरे चरना।
अबल हम तुम सबल हो प्रभु, थामो यह मेरी बैंया।
नीर अंखियों से बहे हैं, रूठ न तू मेरा सैयां।
हम कहां जाये बता दो, दीखती मंजिल नहीं है।
आग जो दिल में लगी है, कर सके वर्षा तुही है।
रो रहे स्वीकार कर लो, तुम क्षमा का दान दे दो।
घूमते अज्ञान में हम, ज्ञान का दीपक जला दो।
कर्म बंधन में बंधा प्रभु, राह तुम्हारी ताकता।
अर्चना तेरी करें प्रभु, तू सब दुःखो को काटता।

1446

पार ले चलो इस नदिया से, रो-रो मनुआ तुझे पुकारे।
तुम बिन मेरा मन ना लागे, आओ मोहन जीवन संवरे।
अपने द्वार बिठा लो मुझको, किसे सुनाये अपनी पीड़ा?
बीत रही यह दुःख की घड़ियां, रास न आई हमको क्रीड़ा।
सृष्टि रचियता जग के पालक, दुःख को दूर करो दुःख भंजक।
अगम अगोचर पार न तेरा, जियरा मेरा करता धक-धक।
बरसे मेघ प्यार को पा लूं, चरणा पडू कुछ भी ना जानूं।
बगिया जीवन की लहराये, ज्ञान मुझे दे तुझको मानूं।
मेरे सर्जक भाग्य विधाता, नौका भटके पार लगा दो।
रूठो मत मेरी सुधि को लो, रोती अंखियों को हर्षा दो।
छूट रहे हैं सभी सहारे, लाज रखो हम तुझे पुकारे।
बस जाओ मेरे नैनन में, गम बिसरें फिर मेरे सारे।

1447

हरि कैसे मैं तुमको पाऊं, उलझी रहे कीच में काया।
पाप पुण्य दुःख-सुख की छाया, मनुआ यह हरपल भरमाया।
जलते रहे सदा जीवन भर, नहीं पा सके हाय अमी जल।
नाथ हमें इस तरह न छोड़ो, नीर बहायें नयना हरपल।
निर्माता तुम सारे जग के, सर्जक हो तुम सारे घट के।
मेरा मन बैचेन हो रहा, तड़फ मिटे न बिन साजन के।
राम-राम हरि तुझे पुकारे, करो कृपा यह जीवन संवरे।
अज्ञानी हम बल ना कोई, अनजाना पथ जियरा सहरे।
प्यार मांगते कुछ ना चाहे, बैठ चरण में रोना चाहें।
जन्मों-जन्मों से भटक रहे, कुछ ना दीखे अन्धी राहें।
ज्ञान जगा दो प्यार दिखा दो, अबल प्रभु नहीं हमें सजा दो।
सद्कर्मो को सदा करें हम, सुमरे सदा तुझे यह वर दो।

1448

बही जाती जिन्दगी यह, हर लहर संग छोड़ जाती।
साथ कोई रह न पाये, नीर अंखियां यह गिराती।
मिलते बिछुड़ते हम यहां, खेल कब से चल रहा है।
प्यार ही बस है सनातन, जो यहां पर बह रहा है।
प्यार से देखो जहां को, ना यहां कुछ भी रूका है।
चाह है आकाश की पर, शूल छोटा चुभ रहा है।
अवश हम कितने यहां है, लहर का है जाल देखो।
प्रीति अन्तस की जगे तो, हर तरफ है जलध देखो।
मानता यह मन नहीं है, बह रही आंसू की गंगा।
खोजते हम फिर रहे है, कैसे यह मन होय चंगा।
अर्चना स्वीकार कर लो, ओ जलध तुम ज्ञान दे दो।
चाह मेरी हम बहे संग, हम नहीं यह भान दे दो।

1449

तुम नहीं रूठो हे हरि मुझसे, अपने चरणों की रज दे दो।
सुमर सुमर तुमको सुख पावें, नैया मेरी पार लगा दो।
जीवन छोटा तू कित बैठा, इन अंखियों का नीर न सूखा।
भये बाबले यहां भटकते, तुम बिन मेरा जीवन रूखा।
बने शून्य तुम सृष्टि नचावो, हरपल संग काहे भटकावो।
रो-रो जियरा हार गया है, करो कृपा तुम अब ना सोवो।
कण-कण में तू बसा हुआ है, जाने ना खोजें कैसी गति ?
अंखियों का पानी ना सूखे, करो कृपा जो होवे सद्गति।
हरि-हरि कहते खो जाये हम, संग मेरे तू लागे हरदम।
सद्कर्मो में हमें चलाना, रमूं तुझी में बल दे प्रियतम।
नमस्कार तुमको करते हैं, जग संचालक तुम हो पालक।
पाप पुण्य के पार छिपे तुम, करूणा करना मुझ पर धारक।

1450

आज जाओ राम, छिप गये क्यों मेरे राम।
बाट निहारू हरपल तेरी, सुधि हमारी ले लो राम।
सकलसृष्टि के तुम हो स्वामी, घट घट में बसे होराम।
मुझे नहीं फिर भी तुम दीखो, जग में उलझा जियाराम।
झर झर नीर बहाये अंखियाँ, चैना न बिन तेरे राम।
तुम कृपा बिन कष्ट मिटे नहीं, पीड़ हर दुख भंजक राम।
अंधियारे में कुछ न दीखे, दीप जला हमारे राम।
अज्ञानी हूँ जान क्षमा कर, प्यार तेरा चाहूँ राम।
तुम सारे जग के रखबले, सुधि हमारी ले लो राम।
इस नौका को पार लगा दो, बनो खेवट मेरे राम।
डर लागे यह रोवे जिवड़ा, मुख न फेरो मुझसे राम।
मात पिता तुम सब कुछ मेरे, पीड़ कहते तुमसे राम।
राम नाम की ज्योति जले बस, प्रीति बढ़े तुझी से राम।
कभी न भटकुँ मैं इस जग में, मिले सम्बल तेरा राम।
व्याकुल मेरे प्राण पुकारे, मुझे भूल न मेरे राम।
चरणा पडू तुमसे यह चाहूँ, भक्ति का वर दे दे राम।

1451

हरि जप हरि जप और नहीं सुख, क्या करता पागल मन में दुख।
बहती जाती हरि की नदिया, बह ले इसमें मिटते सब दुख।
नाच रहे कठपुतली बन कर, सोंच अलग सबकी यह जंगल।
नयन बसे हरि की जब मूरति, जंगल में हो जाता मंगल।
स्वप्निल दुनिया क्या तू पकड़े, कुछ भी तेरे हाथ न आये।
ध्यान लगा देखो यह सागर, बनो लहर जियरा सुख पाये।
तेरे पगले हाथ नहीं कुछ, बने लहर फिर खोती जाये।
करो समर्पित हरि हाथों में, बह सागर में जिय सुख पाये।
बड़ी लहर कोई है छोटी, कौन पूछता पर वह बहती।
देखो सागर रूप हरी का, लहर मिटे तब सागर होती।
हरि हरि जपो बहो सागर में, खेल इसके कोई न जाने।
मैं को छोड़ो मिटते है दुख, उसकी मर्जी मान दिवाने।
हरि हरि जप, ना और यहाँ कुछ लहर बनी सागर में बह ले।
ज्ञान ध्यान सब ही सागर में, बनी लहर सागर को जी ले।
आंसू से जब भीगें अंखियां, भूल नहीं सागर है सैयां।
लहर बनी मर्जी सागर की, जानो पार लगे यह नैया।
हरि जप हरि जप हरि ही बोलो, स्वप्निल दुनिया हरि को जी लो।
हरि बिन शान्ति मिले ना दिल को, जग में कितनी दौड़ लगा लो।
साथ वह सांचा जपो हरि को, मैं को काहे पकड़ नाचता।
बतला तेरे हाथ यहाँ कुछ, पवन उड़ावे वहीं पहुँचता।
हरि बोलो वह ज्ञान जगावे, मन के सब सन्ताप मिटावे।
सांचा प्रियतम जान यहाँ मन, उलझ उलझ क्यों जग में जावे।
हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, रैन बसेरा जान यहाँ का।
किसको पकड़े हाथ न आये, बहता जा सागर यह हरि का।

1452

नियति के हम तो खिलौने, मन जान ले बैचेन क्यों?
वह बहाता बह रहे है, मन तू समझ, हो शान्त यों।
नीर तू किसको दिखाये, जपों हरि को शान्ति आये।
एक बस वह ही सहारा, लीन हो हरि, सांस जाये।
जपो उसे जपता ही जा, जप कटेंगे सारे संकट।
उस बिना ना शान्ति संभव, भूल जा मैं, यही झंझट।
जप उसे कटता सहज पथ, दुख बादल जायेंगे फट।
ज्योति मन हरि की जला तू, जायेगा अंधियारा छट।
जपो हरि हरि, मन मिटो तुम, झूठ सब, ना सत्य हो तुम। आता पीछे से रेला, ना चलेगी जान लो तुम।
आदि वह ही अन्त वह ही, आंख यह क्यों हाय रोई।
समर्पित हो मन हरी के, सबका है वह ही सांई।

1453

विछुड़े जब से चैन न पड़ता, कैसे जिय समझाऊँ?
पड़ा द्वार पर नाथ तुम्हारे, कैसे तुझे रिझाऊँ?
अज्ञानी, चलना जानूँ ना, रो रो नीर बहाऊँ।
कृपा दृष्टि तुम अपनी रखना, झोली मैं फैलाऊँ।
जीवन बहता नहीं किनारा, दे दो मुझे सहारा।
मेरे नयनों में बस जाओ, छूटे दुख संसारा।
हरि हरि जपे कटे यह रैना, सुन लो मेरे बयना।
अंधियारे में कुछ ना दीखे, गिरूँ नहीं है चैना।
इस जग से कुछ नहीं शिकायत, सबके अपने शिकवे।
चरणों मे प्रभु नाथ जगह दो, मदिरा तेरी पीवे।
दास तुम्हारा देखो हम को, नहीं ठौर कोई है।
जग में भटक भटक मैं हारा, अखियां यह रोई है।

1454

दिल को कैसे बता लगायें, अंखियां मेरी नीर गिरायें।
तुम ना बूझो कौन सुनेगा, पीड़ा किसको यहाँ दिखाये?
जीवन एक पहेली माना, सब कुछ लगता है अनजाना।
जाते कहाँ, कहाँ से आये, बीत रहा सारा अफसाना।
मेरे देव ज्ञान हमको दो, अंधियारे में कर प्रकाश दो।
अन्तिम पल तक तुही सहारा, अपना प्यार सदा प्रभु तुम दो।
हरि हरि जपते कटे सफर यह, मृगतृष्णा में फंसे नहीं मैं।
मदिरा तेरी बन मतबाला, मर्जी तेरी वहाँ बहूँ मैं।
दिल से तेरी सुरति न टूटे, बहता जाऊँ सुध बुध खो कर।
जीवन तेरा मैं तो ना कुछ, क्यों लगता मुझको फिर भी डर।
नमन करो स्वीकार हमारा, नौका पार लगा मैं हारा।
बहते आंसू मैं बह आऊँ, करना मुझसे नहीं किनारा।

1455

हरि भज हरि भज और नहीं धन, छूट रहा सब क्यों पकड़े मन?
नाच यहाँ जो नचा रहा है, मन तू हरि की कठपुतली बन।
हरि बिन नहीं सहारा कोई, टूटे सभी सहारे भटके।
हरि हरि जप अन्तस में खो जा, यहाँ सभी में वह ही धड़के।
अबल है कितना क्यों न समझे, विश्वजीत के सुपने देखे।
तनिक वेदना से पीड़ित हो, आंसू बरसे क्यों ना निरखे।
सुख दुख धूप छांव के खेले, सब पल दो पल के ही मेले।
हरि की जिसने मदिरा पी ली, सारे दुख वह हँस कर झेले।
हरि हरि भजो न कोई साथी, नित आंसू से भेजो पाती।
उसकी मर्जी से ही आये, जायेंगे उसकी ही चलती।
प्रेम बढ़ा ले हरि से इतना, बीतेगा सारा यह सुपना।
जप हरि करो सदा यह विनती, सदा समझना मुझको अपना।

1456

मन हरि भज न और कोई तप, शान्ति छिपी है जप में ही सब।
जग के शिकवे भूल जपो मन, लाज रखेगा तेरी वह रब।
जप मन गीत उसी के गा ले, लहर बना सागर में बह ले।
अपना ना कुछ सब कुछ उसका, मनुआ तू यह सत्य समझ ले।
सुख दुख के वह खेल खिलाता, पल में नीर यहाँ बह जाता।
कितने बिखरे कांटे जग में, फिर भी फूल यहाँ महकाता।
हरि हरि जपो उसी को ध्याओ, अपने सारे ताप मिटाओ।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान ना उसे भुलाओ।
मन उड़ उड़ कर कहाँ जा रहा, पाये ना मन भटक रहा तू।
मीन घूमती जल में प्यासी, यही अचम्भा देख यहाँ तू।
अन्तस में मन ध्यान लगा ले, जप जप उसको नयन बसा ले।
मिट जायेगी सारी पीड़ा, मुरझाया जो सुमन खिला ले।

1457

दिल बता कैसे लगाये, पास ना तुम नीर आये।
बीत जायेगी उमरिया, दिल नहीं क्यों पिघल पाये।
चलते अनजानी गलियां, छाती मस्तिक में बतियां।
यादे न दिल से निकलती, पथ देखे रोती अंखियाँ।
नीर आंखों के न सूखें, बनते निर्मोही इतने।
स्वप्नों में तू ही दीखे, क्यों हुए हम अबल इतने।
प्यार से हमको निहारो, चाहे हमारी जान लो।
ना करे शिकवा कभी भी, मेरी परीक्षा खूब लो।
क्या गुनाह हमने किया, चैन मेरा सारा छीना।
न पलट कर तूने देखा, काटते कटती न रैना।
क्षितिज के उस पार देखो, कौन है मुझको बुलाता?
प्यार तो तुमसे सदा था, याद रखना मेरा नाता।

1472

चलने को चल रहा हूँ, ना जानता हूँ मन्जिल।
ले कर हवायें जायें, गिरता नयन से है जल।
इस शून्य से प्रकट सब, सब शून्य में ही खोता।
अरमानों को लिये दिल, पल पल में हाय रोता।
जिय तुम बिना न लगता, ना दर्द दिल का मिटता।
छिप क्यों गये हो मुझसे, ना नयन जल यह रूकता।
कहाँ जाये यह पता न, तुमको ही खोजते हैं।
आशा संजो के हारे, मिल पाते क्यों नहीं हैं।
दिल यादें ले मचलता, नयनों से नीर बहता।
तड़फाओ इतना न तुम, दिल की चुभन को कहता।
कर कर प्रतीक्षा हारे, न आये मेरे द्वारे।
एक बार देख लो तुम, दिल कहता तुम हमारे।

1473

याद तुझे कर हरि हम झूमे, चाहें नीर चरण को धोवें।
दिल यह रोवे कहा न जाये, तुमसे विछुड़े अब क्यों सोवे?
तुमको जपते बीते सुपना, अज्ञानी हूँ खफा न होना।
बहते आंसू करते पूजा, विधि से वंचित तुम लख लेना।
बहें याद में आंसू मेरे, बस मेरा तो तुही सहारा।
चैन दिल को मिले तुम्ही से, बहता जीवन नहीं किनारा।
खोया खोया फिरूँ जगत में, निभा प्यार की प्यारी रस्में।
कैसे तुमको नाथ रिझाऊँ, जानूँ न मैं गिरा हूँ पथ में।
दानी भीख प्यार की देना, अपना प्यार नहीं कम करना।
अज्ञानी पर बालक तेरे, पार नाव मेरी कर देना।
सदा कर्म शुभ को बल देना, मेरे नयनों में तुम बसना।
शीश झुकाये नाथ खड़े हम, प्रीति बढ़े नित यह वर देना।

1474

हरि हरि हरि हम तुझे बुलावें, इन नयनों में आंसू आवे।
मेरे दिल का दर्द तुही है, करो माफ क्यों हमें रूलावे?
सारे जग का तू रखबाला, मुझे पिला दे अपनी हाला।
कभी न तेरा सुमरण छूटे, पांव पड़ू मैं तेरे लाला।
जग में भटका ना सुख पाया, सदा रूलाती मुझको माया।
दया तुम्हारी जब मिल जाये, तपते तन को मिलती छाया।
दास बना लो मुझको अपना, ना मन्दिर से मुझे हटाना।
सदा निहारूँ तेरी मूरति, बीतेगा सारा अफसाना।
प्यार तुम्हारा हरपल चाहें, कैसे तुमको नाथ मनायें?
पूजा की थाली भी खाली, जिय मेरा यह भर भर आये।
नमन करो स्वीकार हमारा, मेरा तो बस तुही सहारा।
इस जीवन को देने वाले, लाज राखना मैं तो हारा।

1475

आओ मोहन अब तो आओ, मुरली की धुन मुझे सुनाओ।
जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, प्रीति बढ़े नित चाह बढ़ाओ।
तुम बिन मन्दिर मेरा सूना, दिल का रोवे कोना कोना।
आहट पाने को यह धड़के, विनय करूँ नयनों में बसना।
जगा विरह उसमें जल जाऊँ, खो जाऊँ ना कुछ चाहूँ मैं।
तेरे ध्यान में बस लय हो कर, नहीं रहूँ पर कुछ ना बस में।
प्रीति बढ़ाओ हरि तुम मेरी, फिरूँ भटकता सुन लो मेरी।
पांव पड़ू अब ना विसराओ, युग बीते ना हरि कर देरी।
मुरली बाजे जियरा नाचे, आंखें रिमझिम रिमझिम बरसे।
जग वैभव फीके पड़ जाये, ऋषि मुनि सब ही तो तरसे।
हरि हरि करता जो सुमरन हो, नयनों से झरता जब जल हो।
तीन लोक भी फीके पड़ते, नमन करूँ उस रूप तुम्ही हो।

1476

नाम जपूँ कुछ भी ना जानूँ, ज्ञान नहीं कैसे पहचानूँ?
जियरा मेरा भर भर आता, लाज राख ले तुमको मानू।
नीर बहायें अंखियां हरदम, कहाँ छिपे तुम मेरे छलिया।
विरह तुम्हारा प्यारा लागे, मिटूँ इसी में वर दे सैया।
प्रीति हमारी बढ़ती जाये, सांस सांस तेरे गुन गाये।
लय हो जाऊँ गाते गाते, तुम बिन और नहीं कुछ भाये।
बहे नयन से हरपल गंगा, बहती रहे रूके ना धारा।
तेरे चरणों तक पहुँचे यह, पथ दर्शा दो मैं तो हारा।
स्वप्निल सी दुनिया यह सारी, खेल खिलावे बना मदारी।
नाचे हम कठपुतली तेरी, सुरति तुम्हारी रहे मुरारी।
हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, अबल नाथ मैं कैसे पाऊँ?
खेवट बन तू पार लगा दे, चरणों में मैं शीश नवाऊँ।

1477

मन मन्दिर में सदा रहो तुम, नीर बहाये अंखियां हरदम।
दास तुम्हारा अपना लो तुम, शीश झुकाये खड़े यहाँ हम।
सारे जग के तुम हो पालक, नाथ तुम्हारा मैं भी बालक।
लाज रखना इस मेले में, जियरा मेरा करता धक धक।
अंखियां मेरी नीर बहाये, नाथ तुझे कैसे हम पाये?
अगम अगोचर पार न तेरा, चल चल कर हम गिर गिर जाये।
कृपा दृष्टि प्रभु अपनी रखना, अज्ञानी हूँ खफा न होना।
प्रीति तुम्हारी बढ़ती जाये, इन सांसों में तुम ही रमना।
सारे जग के तुम रखबाले, अंखियां रोती ओ मतबाले।
मुझे भूल ना चरण पड़ू. मैं, पांव पड़े मेरे हैं छाले।
हरि हरि जपते बीते जीवन, इस जीवन के तुम ही हो धन।
अंखियां नीर बहायें हरपल, पल भर भी ना विछड़ो ले सुन।
प्रीति जगत की छूटी जाये, बतला मन कैसे समझायें?
नहीं किनारा दीखे कोई, तुझसे ही हम आस लगाये।
बस जाओं मेरे नयनों में, सदा रहो तुम मेरे दिल में।
निरखूँ हरपल रूप तुम्हारा, जगत दन्श भूलूँ इस पथ में।

1478

प्यारा तुम्हारा बढ़ता जाये, हरि तुम मुझको यह वर देना।
सारी दुनिया रंग रंगीली, नीर बहाते मेरे नयना।
हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको, इन नयनों में तुम बस जाओ।
छूटे जग की सारी तृष्णा, इन सांसों में तुम ही छाओ।
कहूँ बहुत कुछ कहा न जाता, तुम बिन यह जीवन शर्माता।
पड़ा द्वार पर तेरे माली, नहीं तोड़ना मुझसे नाता।
डोल रहा ना मिले किनारा, बस मेरा तू एक सहारा। कितना
लम्बा सफर यहाँ हो, दिल में तू कट जाता सारा।
करूँ अर्चना तेरी हरदम, नीर न सूखे बहते हरपल।
बहता रहूँ सदा मैं इसमें, मिले हमें चाहें ना मंजिल।
तेरी यादों में खो जाये, मालिक तू ना तुझे भुलाये।
गाते गाते गीत तुम्हारे, नहीं रहे हम तू रह जाये।

1479

बहाये नीर ना पूछा, बता दो कौन है दूजा?
जलन मिटती नहीं दिल की, करूँ मैं अश्रु से पूजा।
नजर आता नहीं कुछ भी, अंधेरे में उजाले हो।
प्राणों के तुम्ही प्यारे, दुखी उनके सहारे हो।
पुकारेंगे तुझे रोकर, सुनो मर्जी तुम्हारी है।
विरह अग्नि में जाऊँ जल, यह अब लगती प्यारी है।
सदा बहती रहे गंगा, हरि बस इतना कर देना।
करें सुमरन सदा तेरा, ना तुम मुझको ठुकराना।
सदा जपता रहूँ तुमको, कटे फिर यह सफर सारा।
तुझे कर याद यह अंखियाँ, बहाती ही रहे धारा।
यहाँ मर्जी नहीं चलती, सब मर्जी का मालिक तू।
रजा तेरी में राजी हों, यही प्रभु शक्ति देना तू।

1480

ओम जपो मन ओम जपो मन, ताप हरे वह दुख भंजक है।
जल बिन जैसे मछली तड़फे, उस बिन तड़फे यह जीवन है। उसका जीवन कौन यहाँ मैं, जैसा राखे उसकी मर्जी।
नीर चढ़ा उसको नयनों के, नहीं चलेगी तेरी मर्जी।
गाता जा हरि के गुन पागल, फट जाते सब दुख के बादल।
सकल सृष्टि करती परिकर्मा, खेल खिलाती माया हरपल।
सुख दुख के वह खेल खिलावे, हरि के भगत हरि गुन गावें।
आनी जानी इस दुनिया में, हरि हाला पी नहीं अघावे।
हरि का सुमरण शीतल हो मन, और सहारा ना कोई है।
उसकी मर्जी आना जाना, कठपुतली तू जान वही है।
सागर पर लहरे बन नाचें, छोड़ भरम सागर ही नाचे।
सागर ही लहरों का प्यारा, सागर भूल नहीं क्या सोचे?

1481

हरि बोलो मन हरि ही बोलो, मन आंखें अपनी तुम खोलो।
स्वप्निल दुनिया बना तमाशा, हरि गीतों को गा तुम जी लो।
उस बिन चैन न दिल को आवे, तृष्णा से क्यों जिया जलावे।
पल दो पल का खेल यहाँ पर, मिलने को वह सागर आवे।
हरि हरि जपो नहीं लागे डर, नयन बहाये आंसू झर झर।
हरि से जिसने प्रेम बढ़ाया, चिंता छूटे जायें फिर किधर।
हरि की यादों में जो जीता, विष को अमी समझ वह पीता।
मर्जी उसकी जैसा राखे, बना लहर सागर को जीता।
हरि ही है बस सत्य कहानी, कौन यहाँ तू दुनिया फानी।
हरि हरि जपो मिटे भ्रम सारा, जाने वह ही बहती धारा।
मनुआ हरि से प्रेम बढ़ा लो, दिल के सारे दर्द मिटा लो।
छट जायेगा सभी अंधेरा, सत्य समझ मन हरि को जी लो।

1482

हरि जो चाहे वह ही होई, अपने किये न कुछ भी होई।
छिपा बीज में वृक्ष यहाँ पर, समझे बीज वृक्ष मैं होई।
अपनी अपनी नियति यहाँ पर, नाच रहे कठपुतली बन कर।
हरि की मर्जी मिले सहारा, नहीं मिले चाहें रो जी भर।
बढ़े बीज जब पोषण मिलता, मिले नहीं पल में वह झड़ता।
स्वप्निल सी यह दुनिया सारी, हरि हरि भज क्यों जग से डरता।
जीव धरा पर जीवन लेता, कोई उसका पोषण करता।
लाया तू क्या साथ बता दे, बस में क्या कुछ काहे डरता।
हरि हरि कहो उसी की दुनिया, कहाँ छिपा ना जाने छलिया।
इसी शून्य में व्यापक वह ही, जान यहाँ वह खेले सैंया।
नमन करो हरि के चरणों में, जानो सब अस्तित्व उसी का।
शुभ सोंचो सब कर्म करो शुभ, चाहो हरि को वह ही मन का।
खड़े रहो झोली ले दर पर, करो विनय पथ बने सुगम सा।
बसो नयन में हरि तुम मेरे, नहीं यहाँ पर कुछ भी तुम सा।

1483

राम राम मैं जपूँ सदा प्रभु, तेरा नाम कभी ना विसरे।
ठोकर खाता भटक रहा मैं, तुझे पुकारूँ जीवन संवरे।
बस जाओं तुम रोम रोम में, सुपनों में भी तुम ही आओ।
जग के वैभव फीके लागें, हरि मुझसे ना आंख चुराओ।
दास तुम्हारा सेवक तेरा, अंखियां मेरी झरती झर झर।
तेरा नाम जपूँ मैं हरपल, नहीं भुला मुझको वंशीधर।
अज्ञानी हूँ तेरा बालक, अन्धकार में घूंमू कब तक।
नाथ ज्ञान की ज्योति जला दो, पहुँचूं मैं प्रभु तुझ चरणों तक।
हरि हरि गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, जीवन के सब दन्श भुलाऊँ।
शक्ति हमें दो हे जगदीश्वर, बहता जल यह तुझे चढ़ाऊँ।
जीवन नदिया बही जा रही, नहीं किनारा कोई जाने।
प्राण नाथ तुझमें रम जाये, मंजिल वह ही दिल यह माने।

1484

जाये कहाँ पर नैया, मर्जी तेरी खिवैया।
दर पर तेरे खड़े है, ना भूल मुझकों सैया।
ना नाम तेरा भूले, दिन रात तुमको जप ले।
नयना बहाये आँसू, इस धारा में बहा ले।
नहीं प्रीति तोड़ना तुम, अज्ञान में हूँ जीता।
चाहूँ तेरा सहारा, बन कर अबल मैं रोता।
दिल में उबलती पीड़ा, नहीं दीखता किनारा।
जाऊँ कहाँ तू मिलता, हरि थाम ले मैं हारा।
आ बाट देखें मिल जा, रिमझिम बरसते नयना।
छोटी सी जिन्दगी यह, कटती नहीं यह रैना।
करते नमन तुम्हें हैं, सब कुछ यहाँ तुम्हारा।
एक बार देख लो तुम, नयनों से बहे धारा।

1485

हरि सुपना चल रहा है, यहाँ कौन तू बता दे।
आया कहाँ से पागल, शिकायत सभी मिटा दे।
हरि भज मिलेगा चैना, सागर से प्यार कर ले।
चहूँ ओर उसका घेरा, बन कर लहर तू बह ले।
किस किस से करे शिकवा, सब स्वार्थ का है मेला।
दो पल का साथ होता, सब छूटे तू अकेला।
हरि गुन मगन हो गा ले, सुपना यह बीत जाई।
हरि ही संभाले सबको, पथ कट सहज यह जाई।
दिल नहीं दुखा किसी का, बहता है दर्द दरिया।
हरि के भजन बिना नहीं, यह पार होगी नैया।
पाना यहाँ क्या खोना, सुपना सभी है मिटना।
हरि से लड़ा ले नयना, डर मिटते मान कहना।
आया उसी की मर्जी, जायेगा काहे रोना।
हरि खेला चल रहा है, उसकी रजा में बहना।
बहते नयन से आंसू, हरि को न भूल जाना।
तम भी तेरा मिटेगा, हरि याद मन से करना।

1502

तुम बिन कोई नहीं रखैया, इन आंखों से आंसू गिरते।
नैया मेरी पार लगाना, मेरे खेवट विनती करते।
लाज राखना इस मेले में, अगम अगोचर पार न तेरा।
प्यार सदा तुम अपना देना, मनुआ माने तू है मेरा।
ठगनी माया खेल खिलावे, तुझे भूल हम दुख को पावे।
प्रीतम तोड़ न प्रीति हमारी, तेरी यादों में सुख पावे।
पी पी प्राण पुकारें हरपल, नयना मेरे बरसे रिमझिम।
इस गंगा में मैं बह जाऊँ, चाह यही ले चल तू हमदम।
अपनी दया बनाये रखना, बढ़े प्रीति मुझको वर देना।
इस जीवन की तुम हो आशा, सदा निहारें पथ यह नयना।
नहीं किनारा नैया डोले, ले चल मुझको होले होले।
बस जाओं तुम इन नयनों में, तूफानों में जिया न डोले।

1503

मन सोंच भाग्य जो मिले वहीं, उपजे मन में बस सोंच वही।
हरि खेल रहा इस जग में है, मैं हटा जान तू यहाँ नहीं।
बैचेन हुआ यह मन डोले, हरि भूले यह अंखियां भीगे।
जप ले मन हरि है सत्य सदा, उसके हाथों में ही धागे।
तू नाच यहाँ कठपुतली बन, मैं छोड़ हरी का प्यारा बन।
जपता जा भूल नहीं उसको, बरसे अंखियां जैसे सावन।
मर्जी उसकी ही आये हम, जायेंगे जब ना पूछेगा।
मेहमां यहाँ दो पल के हम, बिन हरि के मनुआ भटकेगा।
सुखदाता शान्ति मिले उससे, जब जंगल में जियरा भटके।
अंधियारी काली रातों में, जप उसको जियरा फिर महके।
मन सुरति लगा हरि की बह ले, न कोई किनारा जाने है।
नदिया यह ही ले जायेगी, जो बने हरी दीवाने है।

1504

हरि दास तुम्हारे रूठो ना, दे दो मुझको अपनी छाया।
तपती धरती खाता ठोकर, झुलसाती है तेरी माया।
तेरे बालक हम अबल नाथ, कैसे तुमको हरि हम पायें।
अनजान डगर रोती आंखें, सम्बल दे चला नहीं जाये।
इन प्राणों के तुम मालिक हो, पी रटें नजर तू ना आवे।
अंखियों की बहती धारा में, कैसे बतला हम समझावे?
धारा भी तेरी प्यारी है, चाहूँ इसमें बहता जाऊँ।
बस जाओं मेरे नयनों में, दे प्यार तुझे ही अपनाऊँ।
बीते यह शाम तुझे जपते, कुछ समझ नहीं जो कुछ कहते।
अपनी तुम दया सदा रखना, देखो मेरे नयना बहते।
हरि तेरी मैं मदिरा पी कर, सारे भूलूँ दुनिया के गम।
अपना हरि दास बना लो तुम, नयना मेरे बरसे रिमिझम।

1505

चाहूँ देखूँ पार क्षितिज के, छिप गये क्यों कृष्ण कन्हैया।
अंखियां मेरी भर भर आवे, चरण पडू. तेरे मैं सैया।
प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ, यही चाह बस तुझे मनाऊँ।
जीवन दाता मेरे सर्जक, कृपा मिले तो ही पथ पाऊँ।
दीन बन्धु तुम सुख के दाता, चैन मुझे तुम बिन ना आता।
मेरे इस दिल में बस जाओ, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।
कृपा दृष्टि तुम अपनी रखना, देखों मेरे बहते नयना।
कुछ भी मेरे पास नहीं है, बस देता हूँ अपना रोना।
हरि हरि गायें तुझे मनाये, स्वप्निल सफर यहाँ कट जाये।
इन नयनों से बहता पानी, चाहे प्यार सदा हम पाये।
आदि अन्त तुम सदा सत्य हो, सुमरे तुझे न रोवे काया।
लाज राखना हरि तुम मेरी, सदा राखना अपनी छाया।

1506

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, कुछ पल बाकी आंखे खोलो।
बीती बातें भुला सभी अब, वर्तमान में हरि को जी लो।
कितने दन्श लगे मन रोया, हरि को भूल यहाँ क्यों सोया।
जप ले शान्ति सुधा वर्षाता, मनुआ किन सुपनो में खोया।
जप ले प्यारा नाम उसी का, मिटते भय पी जाम उसी का।
सोच सोंच चिन्ता में फंसता, तम हर्ता ले नाम पिया का।
करो अर्चना सदा हरी की, उसकी नदिया में ही बहते।
अपना क्या सब यहाँ नदी का, बन कर लहर धन्य जो बहते।
सूखे ना आंसू की धारा, बहे नीर वह उसे चढ़ा दे।
प्रेम बढ़े नित यही मांग ले, दया मिले तो ही वह पथ दे।
सदा हरी गुन गा मन पागल, सुपना सा सब बीत गया कल।
जप हरि को मन चैना आवे, सुख से जायेगी संध्या ढल।

1507

हरि ओम हरी मन ओम हरी, नयनों में काहे नीर भरी।
सारे जग का वह पालक है, उसको पुकार वह ताप हरी।
उसका दिल में जब बोध जगे, दिन रात निरन्तर जिया जपे।
वैभव सारे फीके लागे, मन तड़फे ढूंढे कहाँ छिपे।
मन को लागे वह ही प्यारा, सारी दुनिया से वह न्यारा।
न रूप कोई सब रूप वही, नयनों से बहती है धारा।
मन और यहाँ क्या पाना है, जपते जाओ उसको हरदम।
कठपुतली हम वह ही मालिक, बरसे अंखियां देखो रिमझिम।
मन सोंच सोंच ना हो पागल, कर प्यार उसी से वह साहिल।
मर्जी उसकी ही चले यहाँ, मन उसे समर्पित हो पागल।
जप होम हरी वह जगत मही, दिल को उदास क्यों करता है।
मर्जी उसकी जैसा राखे, वह धन्य नयन हरि बसता है।
कुछ बीत गई कुछ बीतेगी, स्वप्निल सारी है यह दुनिया।
दिल में जब दीप जले हरि का, छटता तम नाचे यही जिया।
हरि ओम कहो हरि को जी लो, अमृत की बूंदो को चख लो।
दिल में ना चुभन रहे कोई, उस प्यारे की हाला पी लो।

1508

मन ओम कहो हरि ओम कहो, तड़फन मिटती हरि ओम कहो।
तपते दिल को दे शीतलता, जपता ही जा मन ओम कहो।
स्वारथ का मेल यहाँ सारा, आंसू बहता हरपल खारा।
हरि बसे नयन हरि धुन गूंजे, सब ही फिर हो जाता प्यारा।
अंधियारी रातों का साथी, मन उसे भुला अंखियां रोती।
सब साथ यहाँ जब छोड़ चले, पर उसकी जलती है बाती।
जपता जा नहीं भुला उसको, रखबाला वह देखे सबको।
स्वप्निल यह सारी दुनिया है, अब है कल दीखे ना हमको।
जग के जब दर्द सताये मन, जप उस बिन चैन न आये
मन। प्रीतम वह ही प्यारा लागे, अंखियां बरसे भादों सावन।
सबका सर्जक पालक वह ही, कर याद उसे संताप हरो।
जग की पीड़ा सब मिट जाती, ना उसे सुरति से दूर करो।

1509

बसो नयन में हरि तुम मेरे, जीवन के सब दन्श मिटा दो।
खड़े द्वार पर हाथ जोड़ कर, अपना प्यार हमें प्रभु तुम दो।
अन्तर्यामी जग के पालक, तेरे इंगित पर जग चलता।
ऋषि मुनि ज्ञानी पूजा करते, अज्ञानी मैं तो बस रोता।
ज्ञान ध्यान सबके मालिक तुम, करो कृपा कर दो उजियारा।
प्यार तुम्हारा चाहूँ हरदम, किस्ती पार लगा दो हारा।
दीनबन्धु तुम दुख के हर्ता, सोये स्वर को तुही जगाये।
साज बजाना मुझे न आये, इन नयनों में आंसू आये।
देखें राह थकी यह अंखियां, पांव पडू. तेरे मैं सैंया।
जीवन यह क्यों सांसे लेता, तुम ही रूठ गये जब सैया।

सुख दुख जीवन नदिया बहती, कर्मों की जंजीरे बजती।
पड़ा भंवर में तुझे पुकारूँ, सुनो नाथ तुम मेरी विनती।
नयन बसो हरि जुदा न होना, दीखे नहीं किनारा कोई।
ध्यान तुम्हारा बढ़ता जाये, डर न लगे जिय निर्भय होई।
हरि हरि जप गायें तेरे गुन, गूंजे सदा कान में यह धुन।
प्रीति निरन्तर बढ़ती जाये, नाथ हमारी विनती लो सुन।

1510

हरि हरि बोलो मन सब छोड़ो, बहती जाती जीवन नदिया।
ना रूके सभी से प्रेम करे, फिर भी रोती हैं यह अंखियां।
हरि जप हरि जप मन चैन मिले, स्वप्निल सारा संसार लगे।
पाना क्या और यहाँ खोना, हरि बिन लगता हम गये ठगे।
अपनी अपनी है डगर यहाँ, स्वारथ अपना सब ही सोंचे।
सब दिखा विवशता अपनी वह, अपना रोना ले सब नाचे।
ना आंख उठा देखा उसने, मतलब क्या उसको हम तड़फे।
आंखों से नीर बहें मेरे, मिलने को हम उनसे तड़फे।
दो कदम साथ में सुख पाते, जब कभी बिछुड़ते दुख पाते।
इस द्वन्द भरी दुनिया में मन, जप ले हरि को सोते जगते।
हरि प्रीति करो रखबाला वह, नैया को पार लगायेगा।
जलते दिल की मन तपस मिटे, वह शान्ति सुधा वर्षायेगा।
हरि जप हरि जप मन प्यार बढ़ा, शाश्वत वह ही ना जिया जला।
आती सांसें कब छोड़ चले, इन प्राणों के मन अमी पिला।
तू अबल यहाँ हरि की लीला, तू कौन यहाँ करता क्रीड़ा?
बस तेरे होता यदि कुछ भी, ना वरण कभी करता पीड़ा।
हरि हरि जप शान्ति मिले उससे, ऋषि मुनि सारे उसको तरसे।
तम दूर करे पथ दर्शाये, नित प्रेम बढ़े जियरा हरषे।
हरि नयन बसे सब मिटे फिकर, कर्ता हर्ता ले जाये किधर।
मन हुआ समर्पित तू बह ले, सागर में बस तू एक लहर।

1511

हरि हर तुम हो सब के स्वामी, दर्द दिखाऊँ तुमको अपना।
मेरे नयन बहाये पानी, कृपा करो मिल जाये चैना।
अगम अगोचर पार न तेरा, जग में भटक रहा मन मेरा।
छलिया बन कर मुझे रूलावे, दूर करो तम होय सुबेरा।
हरि हर तुम हो अन्तर्यामी, बालक तेरे हम अज्ञानी।
बाट निहारें तेरी हरपल, शरण राख लो मुझको अपनी।
खिले नाथ तेरी बगिया में, छोड़ कहाँ पर जाये तुमको।
झर झर मेरे नीर बह रहे, करूँ विनय तुम देखो इनको।
सांस सांस में तुझे जपें हम, सदा रहो नयनों में हरि हर।
सभी दर्द नयनों से बह कर, चरण तुम्हारे धोये हरि हर।

1512

पुकारे हम तुझे मोहन, तुही मेरा सहारा है।
बहाती आंख यह पानी, तुही दुख का विनाशक है।
दया अपनी सदा रखना, नहीं आंखें चुराना तुम।
सांसों में तुम्ही महको, कभी भी प्यार ना हो कम।
गिरूँ थक थाम तुम लेना, सूखे ना मेरे नयना।
जले दिल याद में तेरी, बिन तेरे भी क्या जीना।
छिपे हो तुम कहाँ मोहन, रचाओ रास कुछ पल को।
तुझे मैं देख लूँ जी भर, देखो संध्या ढलती को।
तुम्ही सर्जक तुम पालक, तुम्हारे नाथ हम बालक।
अंखियां रोती है देखो, जिया करता मेरा धक धक।
चरण में हम पड़े तेरे, लगाना पार किस्ती को।
सुरति तुम में रहे हरदम, वर यह देना तुम हमको।

1513

हरि ओम कहे या राम कहें, बोलो हरि हर क्या तुझे कहें।
कैसे रीझो कुछ ना जाने, अज्ञानी है तुझ कृपा चहें।
आ जाओं इतना नहीं रूला, तुम दीन बन्धु दुख के हर्ता।
ढलती जाती जीवन संध्या, अंखियां देखे तेरा रस्ता।
दुख का दरिया जग में बहता, जप तुझे चैन यह दिल लेता।
सुख दुख की आंख मिचौनी यह, मैं चरण तुम्हारे हूँ पड़ता।
हरि प्रीति बढ़े हरपल तेरी, यादों में नयना सदा बहें।
पल भर भी तुझे न विसराऊँ, मर्जी तेरी कुछ नहीं कहें।
हरि बल मुझको इतना देना, ना हटे कभी तुझसे नयना।
स्वप्निल यह सारी दुनिया है, चाहूँ हरपल तुझमें बहना।
जग के वैभव मैं माँगू क्या, पीड़ा मैं किसकी दूर करूँ।
पीड़ित मैं चाहूँ बस इतना, पीड़ा हर सबकी विनय करूँ।

1514

अपनी दया बनाये रखना, तुम बिन कृपा सदा सब हारे।
अबल नाथ मैं सबल तुम्ही हो, बल दो पहुँचूँ तेरे द्वारे।
ठगनी माया नाच नचावे, कभी हंसावे कभी रूलावे।
अंखियां नीर बहाये झर झर, देखे रस्ता तू कब आवे।
पाप पुण्य कर्मो की रेखा, द्वन्द लिये पागल मन रोता।
अज्ञानी हूँ पथ दर्शा दो, नीर नयन से मेरे बहता।
अपने हाथों नहीं यहाँ कुछ, बन सागर में लहर न बहता।
तेरी लीला नाथ निराली, छोड़ तुम्हारी मदिरा रोता।
जीवन नदिया वही जा रही, कठपुतली बन कर हम नाचे।
हरि की मर्जी आना जाना, मैं को हटा सोंच क्या सोंचे?
हरि हरि जप शुभ सोंच जगाये, मारग दुस्तर पथ दर्शाये।
जिसके दिल में वास हरी का, लगे नहीं डर बहता जाये।

1515

पाना और यहां क्या खोना, पल दो पल का यह सब मेला।
हरि से मन तू प्रीति बढ़ा ले, मिट जाये सब दिल का मैला।
सत्य देख ले आज यहाँ जो, कल मिटती सब वही लकीरें।
प्रीति करें क्यों क्षण भंगुर से, प्रीति कर हरि, काहे विसारे।
आदि अन्त वह सदा सत्य है, सब द्वन्दो के पार वही है।
जग को देख देख भरमाता, भूल जगत तो, बह्म यहीं है।
हरि हरि जपो भूल क्षण भंगुर, अंखियां नीर गिराये झर झर।
बहता जा मन इन लहरों में, तुझे मिलेगा साजन का घर।
सुखदाता वह दुखहर्ता वह, क्यों ना उससे प्रीति बढ़ावे?
तृष्णा के जंगल में फंस फंस, काहे अपना जिया दुखावे।
स्वप्निल सारी यह दुनिया है, बहा जा रहा हाथ न आवे।
हरि के गा ले गीत यहाँ पर, दुख के वह ही पार उठावे।
हरि हरि जपो ध्यान हरि का कर, पार करे किस्ती खेवट बन।
डोर उसी के हाथों पगले, कठपुतली तू बन पुकार मन।
सर्जक पालक हर्ता वह ही, मैं को छोड़ नाचता वह ही।
पड़ जा मन हरि के चरणों में, जहाँ ले चले मंजिल वह ही।

1516

तुम बिन मेरा हरि दिल तड़फे, कैसे पाऊँ नयना बरसे।
अगम अगोचर पार न तेरा, प्राण तुझी को फिर भी तरसे।
पी पी प्रियतम तुझे पुकारूँ, विरह बढ़े नित तुमको पाऊँ।
छोड़ गया क्यों इस मेले में, तुम बिन भटकूँ राह न पाऊँ।
इस दुनिया का तू रखबाला, मुझे पिता दे अपनी हाला।
प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, नयन बसो तुम मेरे लाला।
हरि हरि जपें भूल जग के गम, प्यार तुम्हारा कभी न हो कम।
बहे नीर तेरी यादों में, बहता जाऊँ नहीं रहें हम।
हरि हरि शरण तुम्हारी आये, नैया तू ही पार लगाये।
अज्ञानी बालक पर तेरे, इन नयनों में आंसू आये।
खड़ा द्वार पर लाज राखना, नयना बरसे रिमझिम मेरे।
कुछ ना जानूँ ले चल मुझको, दिये भुलावा कोई प्यारे।

1533

दर्द कितना आंसुओं से, बहता रहा ना कम हुआ।
तुम कहाँ पर छिप गये हो, तू क्यों नहीं मेरा हुआ।
क्या तड़फते हम रहेंगे, तुम नहीं हमको मिलोगे।
क्या जगत की रीति ऐसी, दन्श यह लगते रहेंगे।
निज चरण में दो जगह प्रभु, अश्रु से पूजा करूँ मैं।
और कुछ ना पास मेरे, देखता तुझ ओर हूँ मैं।
कर्म क्या बन्धन यहाँ क्या, खेल कुछ ना जान पाया।
अज्ञान में हूँ भटकता, लाज रखना शरण आया।
कौन पीड़ा को सुनेगा, जो उफनती रात दिन है।
प्यार पाने को तरसता, प्यार का सागर तुही है।
जप हरि तुझमें ही लय हों, न हमें भटकाओं प्यारे।
प्रीति तुमसे ही बढ़े नित, अबल हूँ तुमको पुकारे।

1534

हरि बिन चैन न आये मन में, ओम जपो मन ओम जपो मन।
स्वप्निल दुनिया सच क्या जग में, छोड़ो ना हरि ओम जपो मन।
ढलते आंसू किसे पुकारे, किसके चलता जगत सहारे।
कितनी योनी यहाँ घूमती, हरि पुकार ले सब ही हारे।
आना जाना मर्जी उसकी, क्यों भूला हरि ओम जपो मन।
पाप पुण्य सुख दुख की छाया, बस तेरे क्या ओम जपो मन।
ओम ओम जपते जपते मन, मिल जायेगी उसकी छाया।
प्राण तड़फते है जो तेरे, रोती है जो तेरी काया।
दास उसी का बन पागल मन, हरि बिन पकड़े किसका दामन।
पल में साथ छोड़ सब जाते, हरि में बह ले प्राणों का धन।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान का बह ही राजा।
यहाँ शिकायत किससे करनी, मन हरि के चरणों में पड़ जा।
हरि हरि सुमरो जीवन जी लो, दो दिल का यह रैन बसेरा।
कहाँ लहर ले जाये हमको, न जाने कहाँ होय सुबेरा।
हरि बिन पार न हो यह नदिया, कहाँ छिपा ना जाने छलिया।
नयना उसकी करें प्रतीक्षा, आती भर भर है यह अंखियाँ।
मुँह न फेरो दास तुम्हारे, अज्ञानी कुछ ज्ञान नहीं है।
चरण तुम्हारे पड़ते है हम, ज्ञान हमें दे सबल तुही है।
तू ही तो है मेरा खेवट, जीवन दाता जीवन पालक।
पार लगा दो मेरी नौका, अंखियाँ थकी राह को तक तक।

1535

जो नियति हरि ने लिखी है, जान मन सच हो वही।
नयन से जो नीर गिरते, तू चढ़ा वह जग मही।
आज तू है कल कहाँ है, हाथ तेरे क्या यहाँ?
वासनाएँ घूमते ले, कौन किसका है यहाँ?
खेल कुछ पल का यहाँ पर, मन निभा दे तू यहाँ।
आती सांसे यह जब तक, जप हरी उसका जहाँ।
कमलवत रहना जगत में, चैन आये जप हरी।
दन्श कितने ही लगे पर, कवच है जानो हरी।
प्रीति मन हरि से बढ़ा ले, टूटेगा यह सुपना।
ध्यान जब होगा हरी में, मिटते भय हरि जपना।
धैर्य को दे हरि जपो मन, हरि सुरति हो ना डरे।
जपो हरि अन्तस छिपा जो, पार वह नौका करे।

1536

हरि जप हरि जप बरसे नयना, नहीं शिकायत जग से करना।
हरि के रूप अनेकों नाचे, आंखे झरें झुक हरि को जपना।
दास हरी के याद करो मन, मांगो बस उसकी ही छाया।
हरि मर्जी से जग में बहता, चाहो सदा उसी का साया।
नयन बरसते उसे पुकारें, प्यार हरी का हरदम चाहें।
अंधियारे में दीप जलाये, नहीं भूल दुस्तर यह राहे।
हरि जप हरि जप चैन मिलेगा, भय मन का सब दूर हटेगा।
चोंच दई चुग्गा वह देगा, कष्ट यहाँ के वही हरेगा।
नयना रोते किसे दिखाये, प्यार करो हरि के घर जाये।
कूल छूटते जाते सारे, संध्या देखो ढलती जाये।
हरि हरि जप मन कवच बनेगा, नैया तेरी पार करेगा।
कितने ही तूफां फिर आये, हरि पर छोड़ो लिये चलेगा।

1537

ले चलो हरि पास मुझको, चाहता ना दूर होना।
दास हूँ मैं तो हरी का, बहते हैं मेरे नयना।
नयन से आंसू बरसते, हरि तुझे ही याद करते।
क्या हुई गलती हमारी, छोड़ हमें काहे छिपते?
नयन रोवें जप हरी मन, ना जगत से दिल लगाना।
हरि कृपा बिन ना कभी भी, सफर होता है सुहाना।
जप हरी मन जप हरी को, कवच बन रक्षा करेगा।
छूट जाते साथ सारे, अन्त तक वह ही चलेगा।
ना यहाँ रूकता कभी कुछ, बह रहा निज मौज ले कर।
बह हरी का नाम लेकर, धारा हरी की क्या फिकर।
हरि जपो हरि ही जपो मन, चरण उसके पकड़ ले मन।
पार नैया को करेगा, साथ तेरे ना अबल बन।

1538

हरि हरि कहते बहे नयन जल, वहीं ले चलो जहाँ तू अटल।
गिर जाये सब झूठी आशा, बढ़ता जाये सदा भक्ति जल।
मेरी आशा टूट न जाये, मांग रहा तुमसे ही मैं बल।
अपना लो इस अज्ञानी को, नयनों से मेरे गिरता जल।
हरि सुन लो ना जिया जलाओ, खोजा रस पर मिला न जग में।
अंधियारे में किरण तुही है, तुम बिन कहो कहूँ किससे मैं।
अगम अगोचर पार न तेरा, करो कृपा तो छटें अंधेरा।
सारे जग के मालिक हो तुम, बसो हृदय में होय सुबेरा।
मृगतृष्णा में फंसे नहीं हम, मदिरा तेरी सदा पिये हम।
जग की तज झूठी आशा को, पहुँचे तेरे चरणों तक हम।
कैसे यहाँ लगाये मन हम, जग में बिखरे है इतने गम।
कृपा बनाये रखना हरि तुम, दर तेरे तक पहुँचे हरि हम।

1539

किसने कहूँ मैं, रोते हैं नयना।
हरि को पुकारूँ, हरि से ही कहना।
ऋषि मुनि जपें है, दुनिया के मालिक।
तुम लाज रखाना, अज्ञानी बालक।
बोलो कहाँ तुम, छिपते कन्हैया।
रूा रहा ठोकर, रोती है अंखियां।
कण कण बसे हो, काहे ना दीखो?
मिटती चुभन ना, लगे जरूम देखो।
जग में थका मैं, चल चल के हारा।
कर पार नौका, तुम्हारा सहारा।
दिल में बसो तुम, न कब सांस जाये।
तुमको मनाये, चरण नयन धोये।

1540

पार करेगा वह ही नौका, हरि हरि बोलो हरि ही बोलो।
हरि की दुनिया नाच रहे हम, बहते आंसू हरि को जी लो।
बैचेनी जब डसती मन को, कर विश्वास उसी को जप लो।
आये कहाँ से जाये कहाँ, मिले हुए पल हरि को जी लो।
सागर लहर उठे गिर जाती, सागर भूल लहर भरमाती।
सागर सुमरे लहर यहाँ क्या, चैन मिले फिर बहती जाती।
हरि सागर ना और यहाँ कुछ, सुमर इसे मिट जाते सब दुख।
पागल मनुआ पर न समझे, अन्तस ध्यान करे आवे सुख।

नयनों में जब आंसू आये, सोंच तेरी तुझे रूलाये।
बाती कैसे जले ज्ञान की, हरि जप ले पथ वही दिखाये।
काली रैना वही सहारा, लिये जा रहा तू क्यों हारा।
करो समर्पित हरि हाथों में, मैं हटती पिव पावे प्यारा।

1541

मेरी नैया के खेवट, बरसती आंख यह रिमझिम।
धड़कता दिल न जानूं पथ, कहाँ पर छिप गये हो तुम।
जग स्वामी तुम्ही सर्जक, तुम्हारे नाथ हम बालक।
तड़फता प्यार को यह दिल, कृपा करो तेरा सेवक।
तुझे हम खोजते जायें, चले यह सांस प्रभु जब तक।
बहाये नयन यह गंगा, न पाये हरि तुझे जब तक।
नहीं जाने यहां कुछ भी, सहारा एक बस तेरा।
जला दो ज्ञान का दीपक, प्रभु मिल जाये पथ तेरा।
चलूँ चल चल गिरूँ थक कर, संभालो थक गया हरिहर।
प्रतीक्षा कर रही आंखें, गिराती अश्रु यह झर झर।
नयन में तुम बसों मेरे, कभी होना जुदा ना तुम।
कृपा अपनी सदा रखना, बजे नित प्यार की सरगम।

1542

हरि बिन जियरा यह घबराये, इन नयनों में आंसू आये।
अपना प्यार मुझे तुम देना, पथ तेरे पर चल कर आये।
नयन बहाये गंगा हरदम, हरि हरि जपूँ तुझे ही पूजूँ।
बहूँ इसी में कभी न भूलूँ, चाह यही बस तुमको खोजूँ।
अबल नाथ बल मुझको देना, मेरी यादों में तुम बसना।
निरखूँ हरपल छवि तुम्हारी, मिट ना जाये जब तक सुपना।
पाप पुण्य कर्मो की रेखा, पार करूँ कैसे जिय रोये?
चरण पडू. मैं नाथ तुम्हारे, पार करे तू ही तो होये।
आंसू बहते तुझे पुकारे, देखों हमें तेरे हवाले।
इस जंगल में खो जाऊँगा, भूल नहीं मुझको मतबाले।
हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, चाहत सारी और मिटाऊँ।
आदि सत्य तू अन्त सत्य है, ज्ञान हमें दे ना भरमाऊँ।

1543

गलत सही कुछ जान न पाये, जो होता मर्जी तेरी।
मनुआ पागल समझ न पाता, तुम करो कृपा कर ना देरी।
शीश धरूँ ना ठुकराओ प्रभु, ज्ञानदीप प्रज्वलित कर दो।
दो नयनों को प्रभु भीगे जो, तुम बढ़ा प्यार हर्षित कर दो।
अज्ञानी हम ढूंढ रहे पथ, ठोकर खा कर गिर जाते हैं।
खोई खोई अंखियों को ले, नाथ संभल ना हम पाते हैं।
कंठ है सूखा कैसे बोलूं, हाय विधाता तू क्यों रूठा।
मेरे सर्जक मेरे खेवट, पार लगा दे मेरी नौका।
अंसुवन की बहती धारा से, अपने पग को धो लेने दे।
सुफल होय मेरा यह जीवन, मैं रोता कुछ कह लेने दे।
तुमको पाऊँ सब विसरा कर, लीन होय तन मन यह सारा।
सृष्टि नियन्ता देखो मुझको, थका हुआ टूटा मैं हारा।

1544

थक गये हम चलते चलते, ना पता कहाँ जायेंगे?
आंसू से पूरित नयन है, तुझ कृपा को चाहेंगे।
बीतती जाती है बेला, तुम बिना न चैन आये।
नयन में बस जाओ मोहन, जिय तुम बिन डगमगाये।
करो दया होवे सुबेरा, जग में प्रभु राज्य तेरा।
कंठ तेरे ही गीत गायें, सुन विनय चल मैं हारा।
तुमको भूला रो रहा हूँ, जग के पालक रचैया।
दम निकल जाये न मेरा, उलझ जग में कन्हैया।
चाह नहीं मिटती यहाँ है, शाम ढलती जा रही है।
सांस में रम जाओ मोहन, ज्ञान जीवन का तुही है।
आंसू को स्वीकार कर लो, नहीं छिपो तुम नियन्ता।
अज्ञान में फिरते है हम, कृपा हो दीप जलता।

1545

हरि हरि जपो न भूलो मनुआ, मेला यह सब दो दिन का।
पार लगे ना उस बिन नौका, चल हारा हूँ मैं अटका।
मिले कृपा पथ तब मिल जाये, अज्ञानी मैं जन्मों का।
गाते गाते गुण तेरे प्रभु, तन छूटे फिर ना खटका।
कैसे पाऊँ रोऊँ पल पल, बाट निहारूँ तू अब आ।
बीत रही जीवन की संध्या, हरि हिय बस जा अब तो आ।
तन मन निर्मल हो सब पावन, दीप जले प्रभु जी तेरा।
अनजाना पथ मुझे डराये, तुम बिन ना कोई मेरा।
जग के रखवाले तुम मोहन, जानूँ ना कुछ अज्ञानी।
मुझको जीवन देने वाले, प्यास बुझा तू दे पानी।
जग में डोले मन तू पागल, कांपे हरपल तू रोता।
बीतेगी यह काली रैना, लागे ना डर जो जपता।

1546

तुमको हरि मैं कैसे पाऊँ, चलन करत हरि चल ना पाऊँ।
अन्तर्यामी भाग्य विधाता, करो कृपा तुझ चरणा पाऊँ।
अंखियां बरसे छतियां धड़के, जल में रह क्यों जल को तरसे?
अपरम्पार तुम्हारी लीला, चाहूँ प्यार तुम्हारा बरसे।
मेरे खेवट मुझे संभालो, डगमग करती मेरी नैया।
पार लगा दो भवसागर से, चरण पड़ा तेरे कन्हैया।
जीवनदाता पालक मेरे, छिपे कहाँ ना मिटते फेरे।
गूंज रहा स्वर जग में तेरा, कान हुए क्यों फिर भी बहरे।
प्यार बढ़ा दो खोऊँ तुझमें, नैन बसो ना आंखें खोलूँ।
मिटे सकल अभिलाषा मेरी, सांस सांस में तुमको जप लूँ।
सागर में उठती लहरें हैं, दीख रहा न कोई किनारा।
नहीं लहर का अपना कुछ भी, फिर भी नीर बहाये खारा।

1547

करूँ मैं अर्चना तेरी, बहे नयनों से है पानी।
प्यासा हूँ पिला पानी, नहीं तुमसे बड़ा दानी।
अज्ञानी मेरे मालिक, लगा दो पार यह नैया।
तुही खेवट हमारा है, चाहें हम तेरी छैया।
नहीं कुछ दीखता है प्रभु, अंधेरा सब तरफ छाया।
खिलाता भाग्य खेला है, जाने ना तेरी माया।
गीतों को तेरे गाऊँ, जला दो ज्ञान का दीपक।
निहारे पथ नयन तेरा, करो भव पार तुम मालिक।
तुही रक्षक हमारा है, तुही निर्बल सहारा है।
तुमको पाऊँ मैं कैसे, बहती अश्रु धारा है।
विरह की आग में जलकर, मिट जाऊँ मेरे स्वामी।
बढ़ा दो आग यह मालिक, लगे प्यारी हमें स्वामी।

1548

कौन है पागल कौन स्याना, हरि नाहीं जिसने पहचाना।
पागल प्रीति लगाये जग से, छूट रहा सब यहाँ फसाना।
धूप छाँव का खेल यहाँ है, मत भूलो रब शान्ति वहाँ है।
उस बिन चैन न आवे मन को, प्राणों की तो प्यास वही है।
जिसने जपा स्वयं को छोड़ा, बहता नाचे हरि उस घर में।
कौन करे अब उसके दर्शन, सुध बुध भूला खोया उसमें।
हरि ही नाचे वही नचाये, भेद नहीं कोई भी जाने।
मैं को भेद प्रीति में डूबे, बहे नीर बस उसे बखाने।
जप लो उसे और क्या जग में, बन बन टूट रहे है सुपने।
इस जीवन का स्वामी वह ही, कितने चाहो देखो सुपने।
जप हरि शान्ति सुधा बरसाये, इस मन का वह मैल मिटाये।
थके प्राण को चैन मिले तब, हरि लीला में लय हो जाये।

1564

तेरी चौखठ पर पड़े हैं, हमको ठुकरा न देना।
अंखियों से जो नीर बहते, इनको स्वीकार करना।
ध्यान तुही है ज्ञान तू प्रभु, जिन्दगी का लक्ष्य हो तुम।
तुझमें है हमको समाना, भटके अरमान हो तुम।
नयनों के मोती चढ़ाये, चाह न तू रूठ जाये।
जगत में ना इनकी गिनती, न किसी के काम आये।
झोली खाली हम भिखारी, दर तेरे पर खड़े हैं।
दया को माँगे तुम्हारी, प्रभु हम रीते घड़े है।
बाजती बन्शी तुम्हारी, चल रही दुनिया सारी।
देखते तुझ ओर प्रभु हम, भूल न हमको मुरारी।
जाते पल बैचेन यह दिल, कैसे हो पार नैया।
मुझ पर करो कृपा मुरारी, तुम हो मेरे खिवैया।

1565

सुन लो प्रभु जी विनती मेरी, आई हूँ मैं शरण तुम्हारी।
अंखियां रोवे तू नहि आवे, नाथ जगत से मैं हूँ हारी।
अगम अगोचर पार न तेरा, मन भटके माया ने घेरा।
पार लगा दो मेरी नौका, तम हर लो मैं पाऊँ डेरा।
नयन बहें खोजूँ मैं तुमको, इससे बढ़कर सुख ना कोई।
प्रीति बढ़ा ले निर्मोही तू, पांव पडू. अब दुख ना देई।
सकल सृष्टि के तुम हो कर्ता, बालक तेरा मैं क्यों रोता?
तेरी लीला तू ही जाने, माफ करो तुम मेरे भर्ता।
ऋषि मुनि ज्ञानी पूजा करते, तुझे मनाते कभी न थकते।
सम्बल देना हार गया मैं, देख हमें लो पैंया पड़ते।
झर झर नयन बहाये पानी, मुँह न फेरना तुम हो दानी।
पुष्प अर्चना के है सूखे, फिर भी माँगू तुम से पानी।

1566

हरि हरि जपें मुझे बल देना, गिरा रहे आँसू यह नयना।
तुझे रिझाऊँ कैसे मोहन, अपना प्यार मुझे तुम देना।
हरि तुमसे मिल पाऊँ कैसे, घूम रहा अनजाना जंगल।
कौन चाह ले कर मैं आया, करो नाथ अब मेरा मंगल।
दीन दयालू अन्तर्यामी, तुझे पुकारूँ सबका स्वामी।
रोम रोम में तुम बस जाओ, बीती बहुत भरो अब हामी।
पाने को हरि प्यार तुम्हारा, कितने जन्मों से भटक रहा।
पर न पता तुम्हारा पाया, जख्मी दिल ले कर घूम रहा।
बहते आंसू की गंगा में, पीड़ा दिल की मैं कहूँ किसे?
बह सके नहीं क्यों यहाँ रूकें, ना सुने बता फिर कहूँ जिसे?
तुम ही हो पोषक जग के, सकल विश्व के तुम हो प्यारे।
करूँ अर्चना निशदिन तेरी, पूर्ण मनोरथ करो हमारे।

1567

वासनाओं में भरा हरि, नियति क्या देखो हमारी?
डूबती जाती यह नौका, पार कर दो चक्रधारी।
एक तुम ही हो सहारे, पर हुए ओझल मुझी से।
तुझे पाऊँ नाथ कैसे, पूछता प्रभु मैं तुझी से।
ध्यान तेरा ही बढ़े प्रभु, याद में अपनी रूलाना।
बीत जायेगा सफर यह, तुम नहीं मुझको भुलाना।
पूजा करता तुम्हारी, नयन जल यह चरण धोये।
पाप क्या है पुण्य क्या है, कुछ ना जानूं दिल रोये।
देख लो आंखें उठाकर, अबल हम हैं तू कृपा कर।
गीत मेरे रो रहे हैं, चलकर पहुँचूँ तेरे दर।
प्रभु तुझे जपते रहे हम, तुमसे नाहि सुरति छूटे।
ले चलो मुझको कहीं भी, पर न तेरा साथ छूटे।
नयन में तुम बसो मेरे, सांस तेरे गीत गायें।
जग यह सारा ही सुपना, पर सुपन से तू न जाये।
तुम रहो पर हम नहीं हो, लौ लगे ऐसी हमारी।
विनय को स्वीकार कर लो, खेल सब तेरा मुरारी।

1568

चले चल कर थक गये हम, ना मिली मन्जिल भटकते।
अश्रु को स्वीकार कर लो, मग हमें दो हम बिलखते।
तुम छिपे ढूंढू, कहाँ पर, रोता मैं सिसकी भरकर।
प्यार की भूख मुझको, फेर मुँह छलिया न बनकर।
सृष्टि के मालिक रचियता, तेरे इंगित जगत चलता।
तपती धरती तू बरसे, करो कृपा दिल यह जलता।
बहें अश्रु इनको लख लो, प्रेम का तुम दान दे दो।
द्वार तेरे हम भिखारी, तम हटा कर ज्ञान दे दो।
डराती हैं रैन काली, जप रहा तुझे मैं माली।
फूल तेरे बाग के हम, तुम बिना लगती न लाली।
बैचेन मनुआ तुम बिना, आओ प्रभु दिल में रहना।
टूटी वीणा स्वर उठे न, अपना तो इतना ही कहना।

1569

गमों के बादल हटाना, नयन मेरे बरसते।
प्यार से प्रभु देख लो तुम, तेरे बिना विलखते।
दुनिया अनोखी तेरी है, अजनबी बन नाचते।
प्यार की हम बूंद पाने, हर घड़ी हम मचलते।
माता पिता सब कुछ तुही, इस जगत की शान हो।
बह रहे यह नीर देखो, क्यों बने अनजान हो।
विवश हम कर्मों के बन्धन, जानते प्रभु कुछ नहीं।
कर कृपा मैं नाथ हारा, तू दिखा रस्ता सही।
शीश चरणों में धरूँ मैं, नीर से धोऊँ उसे।
कर्म हों शुभ मार्ग दे दो, कण्टकों में न फंसे।
जग का पालक हम बालक, ज्ञान का भण्डार तू।
आओ इस दिल में रहना, जिन्दगी की आस तू।

1570

जानूँ कुछ ना करूँ अर्चना, मेरे जीवन का तू गहना।
दया बनाये रखना प्रियतम, थिर हो जाये तुझमें नयना।
इस जीवन की परम दृष्टि तुम, जिसे मिले सुख पाये नयना।
शीश झुकाऊँ चरण पडू. मैं, दूर मुझे तुम कभी न करना।
चाह प्यार की जियरा तरसे, दर दर भटकूँ खोजूँ सैंया।
तेरी यादों में कट जाये, तेरा ही जीवन यह सैंया।
नयना बरसे रिमझिम रिमझिम, याद लिये तेरी यह तरसे।
कृपा करो करूणा के सागर, तपती धरती तू ही बरसे।
अज्ञानी हम जाने कुछ ना, जीवन थोड़ा सारा सुपना।
पार लगा दो मेरी नैया, बिना तेरे कोई न अपना।
सकल सृष्टि के स्वामी हो तुम, घट घट बसते अन्तर्यामी।
नयनों में छवि तेरी नाचे, सुधि बुधि- भूँलूं भर लो हामी।

1571

सांसे है जीना ही होगा, सुख दे दुख दे मर्जी तेरी।
टूटी वीणा पंचम गाये, मिल जाये यदि छाया तेरी।
बालक तेरे भूल न हमको, अंखियां रोती यादें कर कर।
जाऊँ कहाँ कुछ भी न दीखे, ठोकर खाता मैं पग पग पर।
बहते आंसू तुमको खोजें, कभी नहीं भूले तुमको हम।
बस जाओ प्रभु मेरे दिल में, मगन रहे तुझ में ही हरदम।
डोल रही यह मेरी नौका, सब ओर अंधेरा छाया है।
सांस पुकारे तुमको ही बस, जियरा मेरा घबराया है।
नाम सुधा तेरी मैं पी कर, चलूँ कर्म भी शुभ मुझसे हों।
विवश यहाँ अज्ञानी हम हैं, तुम ही जीवन की डोरी हो।
करूँ अर्चना सूखी बगिया, चाह प्यार की दे तू माली।
जीवन सारा बीता जाता, बहते आंसू झोली खाली।

1572

हरि तुम बिन यह नयना रोये, नाथ शरण तुम अपनी ले लो।
दास तुम्हारा जनम जनम का, प्रभुजी मुझको अब अपना लो।
इन सांसो में बसे तुम्ही हो, मात पिता सब कुछ तुम ही हो।
तुम ही सर्जक तुम ही पालक, प्रभु जी मुझसे खफा नहीं हो।
सदियां बीती तुझे न पाया, जीवन सारा व्यर्थ बिताया।
नयन बसो दुख भूलूँ सारा, मेरी रोवे हरपल काया।
जग में भटक भटक हम जावें, तृष्णा बढ़ती कौन बुझावे।
बिना ज्ञान यह डूबे नैया, करूँ विनय तू पार लगावे।
कृपा सिन्धु तुम जीवन दाता, अन्तर्यामी भाग्य विधाता।
चरण पडू. ना रूठो मुझसे, तुम बिन कुछ ना मुझे सुहाता।
बढ़ा विरह मिट जाये पतंगा, धन्य होय यह जीवन गंगा।
तेरी प्रीति बिना सब झूठा, प्रभु जी वर दो मन हो चंगा।

1573

क्या सोंचे मन तू है पागल, घूम रहा तू यह है जंगल।
इधर उधर भटके कितना ही, हरि सुमरे बिन होय न मंगल।
आशा की ले गठरी चलते, बहके कदमों को ले गिरते।
जायें कहाँ दीखे नहीं कुछ, अपनी किस्मत को ले रोते।
हरि जप ले पागल तू मनुआ, जब आये तब हम थे रीते।
साथ नहीं होगा जायेंगे, कुछ ना होगा तेरे चीते।
हरि जपता जा तू बहता जा, न कोई किनारा तेरा है।
विधि के यहाँ खिलौने हम है, जोगी बाला यह फेरा है।
यहाँ शिकायत को कर मत तू, अपनी धुन में सब रहते है।
हरि से प्रीति यहाँ हो जाती, काल यहाँ तो फिर भागे है।
पागल मन को समझा मत रो, आनी जानी यह दुनिया है।
विधि ने खेल रचा वह देखो, कर्ता ना बन नादानी है।

1574

दुख यहाँ करना नहीं मन, खेल प्रभु का चल रहा है।
स्वप्न सा सारा जगत यह, देख सच क्या कुछ रहा है।
पल मिले वह देख ले तू, बस नहीं यह जान ले तू।
बह रही नदिया निरन्तर, हरि हिय बसा खेल ले तू।
कुछ समय का खेल सारा, बीतें पल क्यों तू हारा।
बन कर लहर बहे जा तू, जान निज को सृष्टि प्यारा।
जो मिले बाजा बजा ले, डूब उसमें स्वर उठा ले।
जान ले अपनी विवशता, गा नियति संग मुस्करा ले।
मत शिकायत कर किसी से, वासना का खेल सारा।
कौन किसका है यहाँ पर, नाचो बन हरि का प्यारा।
चैन भी तुझको मिलेगा, दूर डर सारा भगेगा।
क्यो होता इतना कातर, जप उसे संग वह चलेगा।

1575

तुम बिन हमको कुछ ना दीखे, राखो लाज हमारी प्रभु जी।
बेबस हुआ जगत में भटकूँ, कैसे बनूँ तुम्हारा प्रभु जी।
नयना यह आंसू ढरकाये, प्राण पुकारें तुझे बुलायें।
विधी न जानू रोना जानू, कृपा करो जो तुझको पायें।
दीनबन्धु तुम जग के स्वामी, सर्जक मेरे औघड़दानी।
झोली लिये खड़ा मैं दर पर, तुमसे प्रीति बढ़े जग फानी।
अज्ञानी मैं कुछ ना दीखे, आँसू मेरे झर झर बरसे।
पाप पुण्य सुख दुख का मेला, मुझे बचा लो जियरा तरसे।
पांव पकड़ता सुन लो मेरी, आशाओं की होली जलती।
छाये रहो नयन में मेरे, करूँ यहीं मैं तुमसे विनती।
जीवन तेरा कौन यहाँ मैं, कौन ज्योति जो घट में जलती।
बना बाबरा दर दर डोलूँ, प्यार हमें दे आँखें तकती।

1576

कितने फूल खिले मुर्झाये, क्या हिसाब इसका जग में है?
सृष्टि रचियता प्यार चाहते, इसके बिन जीवन फीका है।
जग के पालक अन्तर्यामी, तुम हो नाथ सभी के स्वामी।
याद तुझे कर अंखिया रोती, फेरो ना मुँह मेरे स्वामी।
निशिदिन तेरे ही गुण गाये, तुझे न भूलें प्रीति बढ़ायें।
आनी जानी इस दुनिया में, बसो नयन में जिय हर्षाये।
मेरे खेवट पार लगा दे, डगमग डोले मेरी नैया।
जी मेरा बैचेन हो रहा, कहाँ छिपे तुम कृष्ण कन्हैया।
करूँ अर्चना तुझे रिझाऊँ, विधि न जानूँ तुझे मनाऊँ।
अज्ञानी मैं ज्ञान तुम्हारा, सांस सांस में तुझे बुलाऊँ।
झर झर नीर बहें यह हरपल, तुझ चरणों में इसे चढ़ाऊँ।
प्रभु मेरे नयनों को लख लो, तुझे न भूलूँ प्रीति बढ़ाऊँ।

1577

हरि तुम बिन यह जियरा भटके, कैसे पाँऊ संशय खटके?
अगम अगोचर पार न तेरा, दया करो यह भीगे पलके।
मुझे उबारो डगमग नैया, चल चल हारा तुझे न पाया।
करूणा सागर पालन कर्ता, जीवन सारा व्यर्थ बिताया।
मान न चाहूँ कुछ ना चाहूँ, प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ।
मत रूठो तुम मेरे देवता, नयनों के यह अश्रु चढ़ाऊँ।
दो पल का जीवन जाता है, तुम बिन यह जिय घबराता है।
बाट निहारूँ कैसे पाऊँ, मनुआ भटक भटक जाता है।
मेरे प्राण पुकारें तुमको, इन नयनों में तुम बस जाओ।
सुधि बुधि भूल निहारूँ तुमको, नीर बहे कितना तड़फाओ।
जीवन दाता भाग्य विधाता, शीश चरण रख विनय करूँ मैं।
जब तक जीवन तुझे रटूं मैं, कुछ ना जानूँ कहाँ गिरूँ मैं?
मेरी सांसे सब हो अर्पित, पल भर भी मैं ना विसराऊँ।
बल ना साहस अज्ञानी हूँ, कुछ ना जानूँ तुझे मनाऊँ।

1578

जी नहीं लगता हमारा, निज चरण में जगह दे दे।
अबल हम अज्ञानी प्रभु जी, कृपा अपनी हमें दे दे।
प्यार को भटके बहुत हैं, रूष्ट मुझसे तुम न होना।
अश्रु यह अंखिया बहाये, इस विनय को ईश सुनना।
फूल तेरे बाग के हम, जा रही यह जिन्दगानी।
देख ले तू रूक हमें, कुछ ना थिर दुनिया फानी।
गीत गा गा हम थके है, जाने न तेरा ठिकाना।
बन पंतगा मिट सकूँ मैं, वर मिले बीते फसाना।
प्यार का तू जाम दे दे, यह कण्ठ प्यासा तृप्त हो।
तेरे बालक हम प्रभु हैं, इस जिन्दगी का गीत हो।
चल गिरूँ तुमको न पाऊँ, जिन्दगी कैसे मनाऊँ?
सांझ ढलती जा रही है, करो कृपा तुमको पाऊँ।

1579

मन बैरागी हुआ बाबरा, ईश कृपा कर तुझे बुलाता।
कंट लगे मग में गिर जाता, देखूँ कहाँ न कोई आता।
पल दो पल का जीवन लड़ते, इन नयनों से आँसू बहते।
मिट जाना सब इस दुनिया में, धन्य प्रेम गंगा में बहते।
जीवन के कुछ पल है बाकी, तुझे पुकारूँ मैं दिन राती।
दया करो कट जाये रस्ता, मन ना माने आँखे रोती।
पाप पुण्य सुख दुख का मेला, करूँ अर्चना हाथ जोड़कर।
पार लगा दो नैया खेवट, सब कुछ तुम मेरे बन्शीधर।
बस जाओ तुम इन नयनों में, नीर बहें तेरी यादों में।
सब कुछ तुम बिन नीरस लगता, इस जंगल में भटक रहा मैं।
प्यासा झोली खाली मेरी, कहाँ लगाऊँ फेरी तेरी।
सब जगह पर राज तुम्हारा, चरण पडू. ना कर अब देरी।

1595

जगत पालक हो रचियता, तुमको हम प्रणाम करते।
मिले हरपल प्यार तेरा, नाथ तुमको हम सुमरते।
नीर यह अंखियाँ बहाये, तुम बिना किस ठौर जायें।
पीड़ जो दिल में सुलगती, बरस कर तू ही बुझाये।
चाह बस इतनी हमारी, उठे तेरे गीत हरदम।
११यह लगे तुम साथ मेरे, कृपा तेरी मिटते सब
गम। घूमता अज्ञान में मैं, ले चलो नौका हमारी।
नाथ मैं पूरा अनाड़ी, पथ हमें दे दो मुरारी।
खेल दो पल का यहाँ पर, फिर न जाने हो कहाँ पर।
तुम दया रखना सदा ही, गिर रहे यह नीर झर झर।
अपने मन्दिर में जगह दो, जाये यह कट उम्र सारी।
नयना बस जाओ मेरे, इस जगत से मैं हूँ हारी।

1596

चलते यहाँ सब जा रहे, ना जानते मन्जिल कहाँ?
देखो बुलाये दूर से, हरि भूल कर खोये कहाँ?
नाचे कठपुतली बन कर, पल दो के मेहमां यहाँ।
मैं का नहीं नामों निशा, पी ले अमी जिसका जहाँ।
गाओ हरी के गीत को, यह कटेगा लम्बा सफर।
थकहार कर तू देख ले, बिन उस नही मिटती फिकर।
विष पी लुटा मुस्कान को, धीरज धर समझा ले मन।
सच देख सुपना है जगत, जाती सुबह ढले है दिन।
छवि नयन जो उसकी बसे, ना कर फिकर वह ही करे।
जैसा नचाये नाच ले, उसको रटो नयना झरें।
आटे में काँटा है यहाँ, क्या आस ले जग से चिपा।
सबको नमन कर प्यार दे, सब ओर वह अन्तस छिपा।

1597

जग में भटक रहा जग मालिक, नहीं ठिकाना मेरे साहिल।
जीवन तेरा तुझे समर्पित, कुछ ना जानूं होता गाफिल।
प्यार हमें दे राह निहारें, खिले फूल हम तुझे पुकारे।
जीवनदाता तुम हो पालक, पथ दर्शा दो जीवन निखरे।
झरती इन आंखों को देखो, अंधकार में तुम्ही किरन हो।
कहाँ जायें कुछ भी न सूझे, पतझड़ का तुम ही बसन्त हो।
अबल नाथ मैं सबल नाथ तुम, द्वार पड़ा मैं मुझे थाम
लो। डूबे नैया पार लगा दो, ठुकराओ ना प्रभु अपना लो।
मधुर सुनूँ बन्शी को तेरी, मिट जाये सब जग की केरी।
इस धुन को सुन खोई मीरा, सब गोपियाँ हो गई चेरी।
प्यासे कण्ठ माँगते पानी, जग में तू ही औघड़ दानी।
वरषा मेघ खिले यह धरती, तुझ सा नहीं जगत में सानी।

1598

चरण पड़े हम नाथ थाम लो, इस जीवन को देने वाले।
आंसूँ की गंगा बहती है, जियरा धड़के ओ मतवाले।
करे अर्चना तुझे रिझाये, विधि ना जाने कैसे पायें।
घूम रहे अज्ञान तिमिर में, मिले कृपा तो पथ को पायें।
चल चल हारा तुझे न पाया, मुझे डरावे तेरी माया।
पाप पुण्य सुख दुख का मेला, लाज रखो प्रभु दे दो छाया।
अगम अगोचर पार न तेरा, बिन कृपा नहीं टूटे घेरा।
तेरी राह निहारे नयना, तिमिर छटे तब होय सबेरा।
घट घट वासी जानो सबकी, अंखियाँ मेरी भई उदासी।
कुछ भी तुम बिन नहीं सुहावे, जिय न लागे होवे हांसी।
अन्तर्यामी जग के पालक, देख हमें लो तेरे बालक।
अंखियाँ अश्रु बहावें हरपल, ना रूठो तुम मेरे मालिक।

1599

जो भी पल है देख सामने, क्यों अतीत में जावे मन।
सुपना सा सब बीता जाये, नहीं बचेगी कोई धुन।
दुनिया रंग बदलती जाये, प्यार करे फिर ठुकराये।
किसके रोके कौन रूका है, लहरों सा खोता जाये।
तृप्त धरा क्या कभी कहाये, नयना आंसू बरसाये।
अनजानी राहें इस जग की, पता नहीं कब खो जाये।
उठे तरंग फिर गिर जाती है, दुनिया आनी जानी है।
व्याकुल मनुआ सोचे पागल, नीर बहावे हरपल है।
गीत सुना दे ऐसा कोई, टूटा दिल जोड़े कोई।
विछुड़ गया जो प्रियतम प्यारा, बिन उसके अंखिया रोई।
प्यार बढ़े तो मेघा बरसे, सुन्दर सुन्दर फूल खिलें।
लुटा यहाँ सौरभ इस जग को, धन्य धार में बहे चले।

1600

हरि ओम जपो सुमरो हरपल, ना जाने फिर क्या होगा कल?
संध्या देखो ढलती जाती, प्यासे प्राणों को दे दे जल।
आशा के दीप जला पागल, इस दुनिया में तू डोल रहा।
खाता रहता तू ठोकर है, फिर भी हरि को भूल रहा।
ना यहाँ किसी का है कोई, पल दो पल का यह मेला है।
तू प्यार बढ़ा मिल ले सबसे, यह जान सुपन सा खेला है।
हरि से अपना तू प्रेम बढ़ा, बदला जाता हरपल मौसम।
आदि अन्त का वह ही सच, कर नहीं शिकायत पी ले गम।
डोले कितनी ही नाव यहाँ, हरि नयनों में यदि बस जाये।
सांसे उसका ही गुन गायें, तूफानों से ना घबराये।
तपती धरती का जल अमृत, जल प्यार, प्यार को सब तरसे।
पल दो पल के इस जीवन में, ना वैर बढ़ा जीवन हरषे।
मन प्रीति बढ़ा ना वैर बढ़ा, हरि तुझे मिलेंगे दीप जला।
इस रंग बदलती दुनिया में, हरि को भज ले मन छोड़ गिला।

1601

हे ईश कृपा करना हम पर, अज्ञानी बालक तेरे हैं।
जगती का तू ही है प्रकाश, तम दूर करो भटकाता है।
चरण पड़े भक्ति वर दो, यादों में आंसू बहने दो।
तुम बिन सब कुछ फीका लागे, मैं विनय करूँ निज साया दो।
तड़फे तुम बिन मेरा यह दिल, चल चल हारे न प्यास बुझी।
यह प्राण पुकारे तू मेरा, जल रही शमा अब बुझी बुझी।
ले ले आशा टूटा यह दिल, संध्या ढलती जाती हरपल।
न प्रेम प्रीति में डूब सका, निर्मोही अब तू कर न कल।
देखें किस ओर प्रभु तुमको, तेरी ही तो सब माया है।
पथ दर्शा दो मैं अबल नाथ, चहुँ ओर अंधेरा छाया है।
झोली खाली ना पुष्प खिले, मै पडू चरण क्यों नहीं मिले।
दे दो मन्दिर का इक कोना, कट जाये जीवन शाम ढले।

1602

ईश तेरे दास हम है, जानते अपनी डगर ना।
दया तेरी चाहते हैं, भीगे मेरे यह नयना।
चल यहाँ हारे जगत में, प्यास न बुझ पाई मन की।
नयन तुमको खोजते है, प्रभु मिटा दो चुभन दिल की।
चाह तुझे लिखता पाती, बीतता दिन शाम आती।
ना ठिकाना जानता मैं, आँख यह आँसू बहाती।
चरण तेरे आ पड़ा हूँ, ना नज़र को फेरना तुम।
जिय भर भर मेरा आता, प्रभु हरो अज्ञान को तुम।
मैं भिखारी तुझ दया का, ले फिरूँ झोली है खाली।
कैसे समझाऊँ मन को, तुम संभालो अब माली।
नीर बहते हैं नयन से, प्यार से बंशी को सुनते।
क्या गुनाह न जानते हम, छिप गये हम तो भटकते।

1603

इतनी बात बनाते हम हैं, नहीं मौन को अपनाते है।
जानो इच्छा सबकी अपनी, व्यर्थ उलझते ही जाते हैं।
करो भरोसा उस ईश्वर पर, चोंच दई वह चुग्गा देगा।
ले आये जो भाग्य धरा पर, कर सन्तोष सुखद फिर होगा।
खेल यहाँ कुछ पल का राही, धूप छाँव सुख दुख का मेला।
बीता जाता सारा सुपना, समझा ले मन कर ना मैला।
कठपुतली हम वही नचाये, देख मौन खेल खिलाये।
मर्जी हरि की कित ले जाये, माने मन तब ही सुख पाये।
लहर बना सागर में बह ले, जान नहीं कुछ भी बस अपने।
प्रीति लगा ले हरि से मन तू, सबके अपने अपने सुपने।
नीर वहें हरि को ही दे दे, सब उसका चाहे जब ले ले।
सुरति हरपल यदि उसकी, दन्श लगे जग के हंस पी ले।

1604

तेरी राह निहारूँ भगवन, प्यार तुझे देना ही होगा।
सूखी धरती तड़फ रही है, बन कर मेघ बरसना होगा।
अनजाना पथ का मैं राही, इस जीवन का तू ही माही।
तुम बिन नैया पार लगे ना, दीप जला दो दीखे राही।
बस जाओ मेरे नयनों में, सब सुधि भूल तुझे ही सुमरूँ।
मुरझाई मेरी जो बगिया, खिला उसे ना तुमसे बिछडू।
उलझ रहे कांटो में फंसकर, अज्ञानी पर तेरा बालक।
बरस रहे नयनों से आंसू, दीन बन्धु तुम मेरे सर्जक।
प्राणों के प्रिय भूल हमें ना, पार लगा दे किस्ती मेरी।
तुम बिन रोयें अंखिया हरदम, बीते संध्या कर ना देरी।
दास तुम्हारे हार गये हम, नहीं परीक्षा मेरी अब लो।
स्वीकार करो बहते आंसू, अब चरणों में प्रभु तुम रख लो।

1605

आयेगा कोई जायेगा, जीवन का चक्र चलेगा यह।
आँसू ढरकाले या हँस ले, ना चक्र रूकेगा मनुआ यह।
पल दो पल का जीवन पागल, तू व्यग्र हुआ करता क्रन्दन।
मन में हरि को यदि बसा सके, महके उजड़ा फिर यह उपवन।
कितनी सुन्दर दुनिया पागल, तू सोंच सोंच होता बोझिल।
सागर में तू है लहर यहाँ, तू जान तेरा सागर सम्बल।
कुछ पल का खेल यहाँ नाटक, आते जाते चलती उसकी।
मैं हटा समझ तू कठपुतली, नाचे जा मर्जी है उसकी।
ढरके आंसू तू चढ़ा उसे, जपले उसको मन वसा उसे।
जग का पालक सर्जक वह ही, धर धैर्य भुला ना यहाँ उसे।
सुमरो उसको तम कट जाये, सूखी बगिया फिर लहराये।
बन जाती तब मंजिल राहें, मन ना भटके हरि मिल जाये।

1606

किसको कहनी अपनी पीड़ा, कौन सुनेगा रोवे जिवड़ा।
दो दिन की यह खेल कहानी, लीन कहाँ होवेगा जिवड़ा।
हरि हरि सुमर हरी की माया, नजर उठा सब वह ही छाया।
दीप जला ले दिल में उसका, जायेगी हट काली छाया।
आना जाना खेल उसी का, वही नाचता लहरें उसकी।
सच हम तो बस है कठपुतली, ना कर शिकवा मर्जी उसकी।
धूप छाँव का खेल खिलाये, कभी रूलाये कभी हँसाये।
पिय पिय रट पिय तेरा प्रियतम, बिन उसके ना चैना आये।
नीर बहें कर उसे समर्पित, और न इनकी कोई कीमत।
जीवन का वह ही बसन्त है, जान सको जानो यह फितरत।
जले ताप से दिल यह तेरा, दीखे ना कुछ तम हो गहरा।
याद उसे कर रखवाला वह, कृपा मिले तो होय सबेरा।

1607

कहाँ छिपे सांवरिया तू मिल, दिन आता है फिर जाता है।
तुम बिन मेरा जी ना लगता, तारे गिन रैना कटती है।
सूनीं अंखियाँ खोजें तुमको, चाह प्रेम की अंखियाँ रोवें।
प्यासी धरती मेघ न आवें, बतला कैसे दिल समझावे।
अगम अगोचर पार न तेरा, जगत जाल ने मुझको घेरा।
निकल सकूँ ना अबल नाथ मैं, नैया पार करो मै टेरा।
थके पाई न कोई मंजिल, ढलता जाता हरपल यह दिन।
कृपा होय लहराये खेती, मिट जावें दुख के यह सब दिन।
जीवन की अब तू ही आशा, तोड़ो भ्रम मैं हुआ तमाशा।
तम को दूर करो प्रभु मेरे, दीप जला दो करो प्रकाशा।
नीर बहें बह जाऊँ इसमें, छोड़ न जाना रहना दिल में।
जीवन सर्जक किसे कहें हम, नहीं भूलना प्यारी रस्में।

1608

खेल यहाँ दो दिन का सारा, खो जायेगा फिर बन्जारा।
मन बैचेन हो रहा पागल, बहा रहा आँसू की धारा।
इस क्षण जी ले पी सुगन्ध को, चार दिशा करती है स्वागत।
गम करना क्या खो जाना सब, आती संध्या मत हो आहत।
सुख दुख धूप छाँव का खेला, विछुड़ा जाता सारा मेला।
किसको पकड़े हाथ न आवें, जान यहाँ तू फिरे अकेला।
पोंछ यहाँ हँसकर तू आंसू, दर्द छिपा बढ़ता जा हरपल।
कब खो जाये इस मेले में, सत्य जान जीवन का तू चल।
हरि से प्रीति बढ़ा तू पगले, आदि सत्य वह अन्त सत्य है।
वर्तमान में सत्य वही है, जान यहाँ तू नहीं, वही हैं।
कर ले निज को यहाँ समर्पित, जैसा राखे जी ले हरपल।
मर्जी उसकी चले यहाँ पर, देख यहाँ कुछ पल की झिल मिल।

1609

जी नहीं लगता जले दिल, रो रहे ले कर गमे दिल।
खोजती आंखे किसे है, ले गया निर्मोही यह दिल।
नयन में सुपने संजोये, लौट कर वह फिर न आये।
बेरहम इस जिन्दगी ने, सितम कितने ही ढहाये।
सबकी अपनी है दुनिया, बनता पागल यह मनुआ।
जा रही गंगाा यह बहती, ना पकड़ तू कूल मनुआ।
छोड़ सब तू बह लहर बन, खेल विधि तुमको खिलाये।
कितनी कर ले प्रतीक्षा, लौट कर ना पास आये।
कोई अपना ना पराया, खेले हरि उसकी माया।
नाचें कठपुतली बनकर, जप उसे सब ओर छाया।
बह रहे सब निज तरंग में, बह ले हरी की तरंग में।
साथ मिलता कुछ पलों का, छूटता जाता सफर में।

1610

दिन आता है ढल जाता है, कुछ पता न तेरा पाता है।
आँखे यह ढूंढ़ रही तुमको, जिय मेरा भर भर आता है।
अंधियारी रातें डर लागे, कैसे इस मन को समझावे?
तू ही सर्जक पालन हारा, तुझ कृपा हमें प्रभु मिल जावे।
प्रभु लख लो मेरे नयनों को, ना शब्द मिलें कुछ कहने को।
निर्बल हम तुम जग के स्वामी, तुम पार लगा दो नैया को।
सुमरण करते हम मिटे यहाँ, मैं भूलाँ बस इतना कर दो।
झिलमिल करती इस दुनिया में, बन सकूँ पुजारी यह वर दो।
जग दन्श पियूँ सारे हँसकर, न भूलूँ कभी तू है मेरा।
मेरी श्वासों में बसे रहो, ना ध्यान हटे तुझ से मेरा।
मन माने ना रोवे हरदम, ना चैन मिले जलता हरपल।
अब तू ही मेरी आशा है, प्यासे है कण्ठ पिला दे जल।

1627

साँस साँस में जप मन पागल, टूटेंगे पीड़ा के बन्धन।
प्यार बहेगा इन नयनों से, नहीं करेगा दिल यह क्रन्दन।
जग में चैन मिले न उस बिन, गाती सृष्टि सदा उसकी धुन।
जीवन उसका मर्जी उसकी, नाचो कठपुतली उसकी बन।
नैया तेरी हरि ही खेवे, अर्पित कर उसको यह साँसे।
नयन बसा हरि की मूरति को, प्यार बढ़ा हरि ही दुख नासे।
ध्यान धरो मन हरपल उसका, तम में एक सहारा उसका।
ज्ञान ज्योति को वही जलावे, उसके बिन हिलता ना तिनका।
जप मन उसको चैन मिलेगा, हरि के बिन ना फूल खिलेगा।
जप हरि को फिर तोल स्वयं को, अंधियारा सब दूर भगेगा।

1628

मन उड़ उड़ तू कहाँ जा रहा, हरि सुमरे बिन चैन न पावे।
ठोकर खावें नीर बहावे, याद करो पिव जिय हर्षावे।
क्षण भंगुर भोगों में रमता, अमृत छोड़ गरल क्यों पीता।
किसे सुनाये अपनी पीड़ा, देखो हरि हिय तेरे बसता।
जगत भूल कर निज में डूबो, ध्यान लगा हरि हिय में देखो।
आनी जानी इस दुनिया में, नाच रहा वह उसको देखो।
जपते जपते नयना बरसे, लागे रिमझिम सावन बरसे।
तृप्त धरा हो प्यास मिटे तब, कोयल कूके जियरा हरषे।
बगिया सूखी वह खिल जाये, हरि को सुमर बह रही गंगा।
मिट जाते सारे दुख पागल, जो नहाये मन हो चंगा।
प्रीति लगाता फिरे जगत में, सभी छोड़ते तुझे अधर में।
देखे क्यों ना हुआ बावला, हरि का दास बना जी जग में।

1629

हरि तुम बिन मन चैन न पावे, दर दर भटकूँ तू ना आवे।
विरह सतावे जियरा तड़फे, बरसे नयना प्रीति बढ़ावे।
गीत तुम्हारे गाऊँ हरपल, मिटूँ इसी में देना तू बल।
बनूँ पतंगा नहीं लजाऊँ, तुझसे नज़रे हटे न इक पल।
हरि हरि कहते सफर कटे यह, नही शिकायत हो इस जग से।
इस जग का तू ही तो मालिक, तू ही समझे कहना किससे।
जीवन के तुम ही हो स्वामी, अज्ञानी हूँ बालक तेरा।
पथ दर्शा दो चैना आवे, दूर हटे तम होय सबेरा।
झरते इन नयनों को देखो, चरण पड़ू. मुझको अपना लो।
फूल बाग के तेरे माली, प्यार चाहते हमको लख लो।
पार लगा दो खेवट बन कर, नैया डोले छिपो न मोहन।
मुरली अपनी हमें सुना दो, मिट जाये दुख के सब बन्धन।

1630

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, दुख मिट जाते जिय को सुख दो।
प्यासे जो प्राण बिलखते हैं, उनको अमृत की बूंदे दो।
पग पग पर कांटे विछे हुए, अनजानी गलियां भटक रहे।
जीवन में सुख मिलता जब ही, जो हरि गंगा में सदा बहे।
स्वप्निल सी यह सारी दुनिया, पल पल में रंग बदलती है।
किसको पकड़े सब भाग रहे, आँखो में आता पानी है।
जीवन हरि का उसमें जी ले, वह आदि सत्य है अन्त सत्य।
कुछ पल हम जग में खेल रहे, कठपुतली उसकी वही सत्य।
सुख दुख आते सब बह जाते, मन धूप छांव का खेल यहाँ।
हरि को रट ले वह ही खेवट, मन चैन मिले हरि जपो यहाँ।
हरि मगन हुआ मन नाचे तन, सब मिट जाता जिय का क्रन्दन।
मर्जी उसकी खेले वह ही, मैं छोड़ वही है सुखनन्दन।

1631

बालक तुम्हारे हम, अपनी किरपा रखना।
यह श्वास जपे तुमको, मुझसे न खफा होना।
जानू ना अज्ञानी, तुम सा ना है दानी।
नयन यह पुकारे रो, लखा लो मेहरबानी।
जीवन के सर्जक तुम, अनजानी यह गलियाँ।
न और कोई आशा, तुम थामों यह बहियां।
चल चल कर गिरते हम, तू बता कहाँ खोजे?
ब्रह्माण्ड तुम्हारा है, सब ही तुमको पूजें।
नयन में बहें आंसू, पथ देखे यह जीया।
चरण रज मिल जाये,यह पार लगे नैया।
जिय तड़फ तड़फ जाये, चाहूँ हिय बस जाये।
इस जग मं कित जायें, चाहूँ हिय बस जाये।
सूखी बगिया मेरी, ना रूठ मेरे प्यारे।
बस एक सहारा तू, ना मुझमें बल हारे।
सांसे गाती रहती, निशादिन तेरी सरगम।
बस जाओ नयनो में, सब भूलूँ जग के गम।

1632

सावन बरसे रिमझिम रिमझिम, याद लिये मैं तड़फूं तुम बिन।
धुन तेरी सुन मीरा नाची, बजा बांसुरी नाचे तन मन।
चातक जैसे नभ को देखूँ, तड़फू जल बिन मछली जैसे।
तुम बिन जीना क्या जीना है, बल ना मुझमें पाऊँ कैसे।
अबल नाथ हम शक्तिमान तुम, प्रीति बढ़ाओ पायें तुमको।
जग मेले में ना भटकाओ, बसो नयन में वर दो हमको।
मेरे देवता तुम ना रूठो, तेरा जीवन तू मालिक है।
नयनों से आंसू झरते हैं, जपें नाम तेरा हरपल हैं।
नमन करो स्वीकार हमारा, सर्जक मेरा तुही सहारा।
गायें तेरे गीत सदा ही, बहें नयन से आंसू धारा।
तुम ही थामना गिरे कहीं पर, इस जीवन के तुम ही धागे।
विरह तुम्हारा प्यारा लागे, सब कुछ फीका तुम बिन लागे।

1633

हरि हरि कहो कटेंगे सब पल, मेला सारा दो दिन का है।
धूप छांव का खेल यहाँ पर, जाना समी को अकेला है।
जीवन में कर प्यार सभी से, कुदरत के यहाँ खिलौने सब।
कर न शिकायत यहाँ निभा दे, निज लिये वासना घूमें सब।
किसको अपनी व्यथा सुनाये, बढ़े प्रीति हरि मन सुख पाये।
सकल भोग जग फीके लागे, मगन होय हरि के गुण गायें।
अपना क्या है और पराया, खेले हरि सब उसकी माया।
सोते उठते याद करो हरि, नही यहाँ तुम नाचे यह हरि।
हरि तुझमें यह देख रहा सब, ध्यान लगाकर देखो वह हरि।
झर झर नयना नीर बहाये, धन्य मगन हो जो हरि गावे।
कठपुतली बन हरि की नाचे, सुरति उसी में सदा लगावे।

1634

हरि ओम कहो हरि ओम कहो, दुख भंजक उसका नाम कहो।
जीवन सर्जक पालक वह ही, वह सदा साथ है वही कहो।
पग कांटों से जब हो छलनी, अंधियारा तुझे डराये जब।
तब नाम हरी का ले लेना, दुख बादल फट जायेंगे तब।
वह पार लगाये खेवट बन, कर उसकी पूजा सेवक बन।
सब ताप मिटे हरषे जियरा, मैं छोड़ हरी कठपुतली बन।

सब ओर इशारा है उसका, मन जान यहाँ है क्या अपना।
मर्जी से उसकी है आना, जायेंगे कहाँ चले सुपना।
हरि भज हरि भज यह कटे सफर, मेला दो दिन का है सारा।
क्यों हुआ बावला फिरता है, जानो जीवन का आधारा।
अन्तस में उसका दीप जला, मिट जायेगा सारा क्रन्दन।
चरणों में शीश झुका तू मन, मिट जाते दुख वह सुखनन्दन।

1635

हरि पीड़ हम किसको कहें, इन नयन से आंसू बहें।
सांझ होती जा रही है, तू ही बता कैसे गहे।
थके हारे हम पुकारें, नाथ तुम मेरे सहारे।
ना हमें मझधार छोड़ो, नयनों में आओ प्यारे।
स्वप्न सा सब जा रहा है, तू नहीं क्यों आ रहा है।
सुखद होवे स्वप्न मेरा, याद में जिय जी रहा है।
प्रीति बस इतनी बढ़ा दे, जो जगह दे दे वही घर।
पतंगा बन मिट सकूँ मैं, चमन तेरा हम मुसाफिर।
आ मिलो तुमको पुकारे, कंठ से हरि हरि उचारें।
तेरे बिन रोये अंखियाँ, दूर हो तम राह सुधरे।
याद में तेरी मिटूँ मैं, सब जगत के गम भूलकर।
अश्रु की गंगा में बहकर, पहुँचू तेरे मार्ग पर।

1636

नीर बहें हरि मुझको लखलो, जनम जनम का दास तुम्हारा।
इस जीवन को देने वाले, सकल सृष्टि का तू आधारा।
ऋषि मुनि हारे तुझे खोजते, कैसे पाऊँ प्राण पुकारें।
अज्ञानी हूँ ज्ञान नहीं है, कृपा होय तो तू ही तारे।
द्वार खड़ा मैं बना भिखारी, बिन तेरे यह सूखे क्यारी।
तपे धरा तब तू ही बरसे, अंखियां रोवें सुनो मुरारी।
जल बिन मछली जैसे तड़फे, ऐसे तड़फे मेरा जियरा।
नहीं छिपों तुम मोहन मुझसे, करो दूर तम होय सवेरा।
नाचे एक इशारे पर सब, अन्तर्यामी तुमसे कहना।
मुझसे रूठ नहीं जाना तुम, बाट देखते मेरे नयना।
चरणों में यह शीश झुका है, हाथ जोड़ता द्वार तुम्हारे।
जगत चक्र में ना उलझाना, मिले भक्ति वर हम तो हारे।

1637

ज्ञानी मुनि जन करें अर्चना, तेरी हरपल ज्योति जलायें।
विनय करूँ दिल में बस जाओ, मेरे नयना नीर बहाये।
अज्ञानी हूँ बल ना मुझमें, कृपा होय तो ही हम पाये।
मेरे भाग्य विधाता सर्जक, खड़ा हुआ मैं शीश झुकाये।
अगम अगोचर पार न तेरा, जीवन जोगी बाला फेरा।
आज यहाँ कल कहाँ सांझ हो, संग तेरा हो सदा सुबेरा।
पागल मन क्या सोंचे जग में, बदले रंग यहाँ पल पल में।
हरि का दामन पकड़ यहाँ पर, उसी रंग से देखो जग में।
हरि गंगा में बहता जा मन, मैं को छोड़ उसी की झिलमिल।
हरि जब रोम रोम बस जाये, दूर हटे काया के सब मल।
हरि का सुमिरण ही सुखदाई, पीड़ा मिटती हो शरणाई।
श्वास श्वास मन उसे पुकारों, आदि अन्त वह सत्य कहाई।
जग की चुभन सभी मिट जाती, हरि से जिसने नेह बढ़ाया।

1638

हरि ओम जपो हरि ओम जपो, मन के भय सारे दूर करो।
हरि बिन जिय की जलन मिटे ना, समझो मन हरि को याद करो।
बहती जाये जीवन नदिया, कितने मिल कर फिर छूटे सब।
कितने दन्श लगे इस मग में, तपस मिटी ना सुख का घर रब।
अंखियाँ रोवें हरि को ढूढ़े, हे हरि तुम मुझ पर कृपा करो।
छिपे कहाँ तुम नभ से पूछूँ, नैया को मेरी पार करो।
एक सहारा तेरा ही है, नज़र नहीं हमको आता है।
घट घट बसता अन्तर्यामी, जिय मेरा यह घबराता है।
कितना ही बरसे यह सावन, लागे तुम बिन सूना जीवन।
मीरा नाची जैसे छम छम, बन्शी बाजे फिर नाचे मन।
ज्योति जला मन हरि की पगले, बगिया सूखी जाती उस बिन।
लहरायेगी दिल की बगिया, बाजे अनहद उसको तू सुन।

1639

शरण तुम्हारी लाज राखो, बहें नीर मेरे नयनों में।
सब कुछ देते मालिक मेरे, भटकें हम मन के जंगल में।
करें अर्चना तेरी प्रभु जी, बसे रहो मेरे नयनों में।
नीर नयन तेरा पथ खोजें, जीवें हरपल नाथ तुझी में।
गाते गाते गीत तुम्हारे, कर दूँ जीवन तुमको अर्पण।
मेरा क्या है सब कुछ तेरा, कृपा होय तो देखूँ दर्पण।
मात पिता गुरू सखा तुम्ही हो, जीवन दाता अन्तर्यामी।
दास तुम्हारा हूँ अज्ञानी, पालक तुम ही मेरे स्वामी।
प्रीति बढ़े हरि हरपल तुझमें, जाऊँ भटक न मैं तृष्णा में।
खेवट नौका पार लगा दो, डोल रहा मैं इस आंधी में।
अबल नाथ हम सबल तुही है, तेरी चाहे हरपल छाया।
इस मेले में भटक न जावें, विछुड़े तुम यह रोवे काया।

1640

ले चल पार लगा दे नैया, मूँद न आखें मेरे खिवैया।
एक बची बस तू ही आशा, पांव पड़ू. मैं तेरे सैंया।
किसे सुनाये अपनी पीड़ा, देख रहे क्या करते क्रीड़ा।
जाम पिये कितने ही विष के, चैन मिला ना जीवन थोड़ा।
तेरे गीतों को गा गा कर, सफर कटे यह मारग दुस्तर।
नयनों से बरसात हो रही, कहाँ छिपे प्यारे बंशीधर।
मुरझाया तुम बिन यह जीवन, तुमको खोजें अंखियां प्रियतम।
बजा बांसुरी मन हर्षाये, मिट जायें सारे दिल के गम।
ठोकर खाता चल कर गिरता, बन अनजाना मुझे बचाता।
जानूँ ना मैं तेरी माया, अज्ञानी हूँ भाग्य विधाता।
देख रहा मैं तेरे सुपने, ज्ञानी ना मैं बल ना मुझमें।
नमन करो स्वीकार हमारा, बस जाओ तुम मेरे दिल में।

1641

हरि ओम कहो हरि ओम कहो, मन शरणा उसकी सदा रहो।
दुख भंजक वह सुख का दाता, उसके द्वारे मन खड़े रहो।
कर कृपा वही बरसेगा मन, तपती धरती बरसे बन घन।
तू कभी उसे बिसरा नहीं मन, वह ही है इस जीवन का धन।
अन्धी गलियां देता प्रकाश, हरि ओम जपो कहना ना कुछ।
अन्तर्यामी जग का स्वामी, सब जाने कहना है क्या कुछ।
जो नीर बहें इन नयनों से, अर्पण कर पास न राखे कुछ।
वह पार लगावेगा नैया, मर्जी उसकी वह ही सब कुछ।
मन उसको हरपल सदा जपो, शिशुवत रोवो तुम उसे चुनो।
बन जा कठपुतली मन उसकी, मर्जी उसकी है यही गुनो।
जपते जपते लय हो जाये, सब ओर नजर वह ही आये।
हरि की लीला नाचे वह ही, यह समझ कृपा हो तब आये।

1642

जीवन बहता अपनी धुन में, कल क्या हो जाने हरि केवल।
ताने बाने बुन बुन थकते, ना जान सके इसका क्या फल।
ना चैन मिले जिय अकुलाये, हरि याद करो आंसू आयें।
वह ही सर्जक पालनकर्ता, विश्वास करो पिव तू पाये।

हरि प्रीति में जो भी खो गया, संकट कटते पार लगाये।
मन हरि जप ना उसे भुलाओ, नाचो वैसे यहाँ नचाये।
कठपुतली उसकी हम तो हैं, मानो हिय तब ही सुख पाये।
मेरा तेरा क्या इस जग में, जाते प्राण यहाँ क्षण भर में।
सुमरे हरि को सदा यहाँ जो, दुख मिटते ना रोये नगमे।
हरि नहिं दीखे जियरा तड़फे, दूर दूर तक अंखियां भटके।
बन्शी धुन सुनने को आतुर, चलते रहें न पथ में अटके।
करो उजाला अंधियारे में, दास तुम्हारे रख चरणों में।
याद लिये पागल बन घूंमू, चाह प्यार की बसो नयन में।

1657

थके यहाँ हम सुर ना बजते, देखो हमको नीर निकलते।
अनजानी गलियों में भटकें, पथ को देख प्रतीक्षा करते।
दास तुम्हारे कृपा करो हरि, इस जीवन को देने बाले।
अबल यहाँ हम पथ दर्शाना, जीवन छोटा ओ मतबाले।
अपरंपार तेरी माया है, कण कण में तू ही छाया है।
फिर भी होती अंखियां गीली, ऋषि मुनि हारे जग सुपना है।
हरि हरि कहते चलते जायें, बल दो तुमको नहीं भुलायें।
अबल नाथ मैं कहा न जाता, एक भरोसा पार लगाये।
मेरे माली अब तो आ जा, मुस्काया गुलशन यह राजा।
आँख मूंद कर तू अब ना सो, बरस यहाँ बगिया पर छा जा।
तपती धरती तू ही बरसे, प्राण तुम्हारे बिन हरि तरसे।
बस जाओ तुम इन नयनों में, जग की पीड़ मिटे दिल हरषे।

1658

प्यार मिले महके यह बगिया, रास रचाओ प्यारे रसिया।
पथराई मेरी यह आंखे, कुछ ना भावे तुम बिन छलिया।
आओ बन्शी हमें सुनाओ, तन मन भीगे ताप मिटाओ।
जनम जनम से भटक रहा हूँ, अंखियाँ देखो नहीं रूलाओ।
विरह तुम्हारा प्यारा लागे, ना आओ तो इसे बढ़ाओ।
जलकर भस्म होऊँ मैं इसमें, विनय करूँ मैं प्रीति बढ़ाओ।
अबल यहाँ मैं चला न जाता, काली रैना जी घबराता।
मेरे प्राण पुकारे तुमको, सुन लो मेरे भाग्य विधाता।
अंखिया नीर गिरायें हरपल, छिपे छोड़ क्यों हमको मोहन।
तुम बिन सूना सूना लागे, आओ प्रभु हरषाये जीवन।
हरि हरि तुमको सुमरे हरपल, संध्या जाती देखो अब ढल।
पड़े द्वार पर हरि तुम लख लो, जाता जीवन होय यह सफल।

1659

हरि तुम राखो लाज हमारी, जोगन बन मैं भई पुजारी।
निशदिन गाऊँ गीत तुम्हारे, नीर बह रहे तुझ पर बारी।
सुन बन्शी धुन तन मन नाचे, अनहद चहुँ दिशा में गूजे।
तुझे पुकारूँ प्यारे छलिया, आंख मिचौनी कर तू भागे।
चलते रहे तुम्हारे पीछे, कुछ न अब मोहि और सुहावे।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, मिलता रहे प्यार पिव पावें।
सुखनन्दन तुम जग के पालक, देखो आँख उठा हम बालक।
करें अर्चना विधि ना जाने, दिल मेरा यह करता धक धक।
नहीं भूल तुम हमको जाना, जीवनदाता भाग्य विधाता।
तू ही एक सहारा मेरा, दीखो ना यह जी घबराता।
प्यार मिले छक नाचूँ रसिया, गिरे नीर मैं धोऊँ पैंया।
मिटूँ शमा पर परवाना बन, नहीं लजाऊँ विनती छलिया।

1660

हरि हरि कहते बीते जीवन, तेरा नाम खिले हिय उपवन।
अगम अगोचर पार न तेरा, विनती करता हूँ हरि ले सुन।
सुखदाता तुम दुख भंजक हो, नाथ हरो तुम पीड़ हमारी।
दुर्गम पथ अनजानी राहें, नयन बहाये आंसू खारी।
जन्मो से मैं भटक रहा हूँ, प्यार हमें दो जिय खिल जाये।
नयनों के आंसू मुस्काये, प्रीति निरन्तर बढ़ती जाये।
सुपनों में बस तुम ही दीखो, सुपना सा जग मुझे डराये।
तुझ दर्शन को अंखियाँ तरसे, सुरति न विसरे नयन समाये।
जग में उलझा तुझे न पाया, झोली लेकर फिरता खाली।
करूणा सागर मेरे माली, दया मिले तो लगती लाली।
तुझे न भूलूँ वर दो ऐसा, डगमग करती मेरी नैया।
खेवट बन कर पार लगा दो, नाथ पडू मैं तेरे पैंया।

1661

चाहा अच्छा बनना न बने, कितने पापों से हाथ सने।
कैसे तुमको प्रभु मैं पाऊँ, हम हार गये यह शाम ढले।
इस पाप पुण्य की रेखा को, मैं पार करूँ कैसे जानूँ।
पग पग पर हिंसा होती है, खाई यह पार करो मानूं।
सच्चा लगता यह जग सुपना, तुम बिन रोती मेरी अंखियाँ।
कैसे पहुंचूंगा मैं तुम तक, मैं अबल थाम मेरी बैयां।
झर झर झरते मेरे आँसू, न दोष मेरा इसको निरखो।
कठपुतली बन हम नाच रहे, मैं पांव पडू अंखिया देखो।
सारा तेरा कुछ ना मेरा, गिरते आँसू लो नमन मेरा।
इस नाट्य मंच पर नाच रहे, माया ने मुझको है घेरा।
जीवनदाता तुम ही पालक, जिय मेरा यह करता धक धक।
अंधियारी गलियों से बचा, मैं विनती करूँ तेरा बालक।

1662

छिपा कहाँ हरि खोज जतन से, चल उड़ चल मन पार गगन के।
उस बिन रस ना आवे जग में, इन नयनों से आंसू टपके।
हरि बिन जीवन भी क्या जीवन, नयना बरसे जैसे सावन।
याद हरी की लागे प्यारी, जलूँ विरह में रहूँ न उस बिन।
ठोकर खाऊँ गिरूँ यहाँ पर, प्राण पुकारें आओ गिरधर।
तुम बिन मुझसे रहा न जाता, नीर गिराये अंखिया झरझर।
हरि हरि जपूँ नहीं कुछ सूझे, दिल की बात न कोई बूझे।
मेरे भाग्य विधाता हरि तुम, ज्योति जला कुछ मारग सूझे।
जीवन नदिया बहती जाये, नहीं कूल हाथों में आये।
सुपना सा सब बीता जाता, नयन बसो तू ही मन भाये।
जिसके दिल में तू रहता है, दूर भागती दुख की छाया।
नाचे हरि में सोवे हरि में, हरि सम्भाले फिर यह काया।

1663

ओम कहो हरि ओम कहो मन, मुख से हरि हरि बोलो।
बिगडे तेरे काम बनेंगे, जीवन में रस घोलो।
हरि की महिमा गायें सारे, ऋषि मुनि और ज्ञानी।
सारा यह ब्रह्माण्ड नाचता, नयन बहाये पानी।
नफरत का संसार मिटेगा, हरि भज प्यार बढ़ेगा।
अंखियों से करूणा झांकेगी, हरि से चैन मिलेगा।
मन उसको तू भूल कभी ना, पार लगे ना नैया।
जीवनदाता भाग्य विधाता, तेरा वही खिवैया।
आशा के सुपनों में ना जी, दो पल का जीना है।

कहाँ हवा झोंका ले जाये, इसका पता नहीं है।
बन जा उसकी तू कठपुतली, गा ले गीत उसी के।
नहीं डराये रैना काली, सब है दास उसी के।
उसकी मर्जी आना जाना, ढलता देख सबेरा।
नाच यहाँ तू नाट्य मंच पर, क्या तेरा क्या मेरा।
मैं को छोड़ समर्पित हो जा, सब उसकी है लीला।
याद उसे कर दन्श मिटेंगे, कर मत मन तू मैला।

1664

मोहि अपनी शरण में ले लो, जीवन का रस दे दो।
अज्ञानी हूँ तेरा बालक, तम को दूर भगा दो।
सारा है ब्रह्माण्ड तुम्हारा, पथ तू ही दर्शाये।
तेरी दुनिया रूप अनोखा, अंखियाँ भर भर आये।
आँखे देखें करूँ अचम्भा, सुख दुख खेल खिलाये।
कभी हँसाये कभी रूलाये, जिय मेरा तड़फाये।
देखूँ जग को आँख खोलकर, तुम बिन लगे न लाली।
नहीं भूल तू इस बगिया को, तू ही इसका माली।
तुम बिन मेरा जियरा तड़फे, कहाँ जाऊँ न दीखे।
करूँ अर्चना हाथ जोड़कर, पथ तेरा हम देखे।
शीश झुकाये खड़े द्वार पर, नयना मेरे बरसे।
इस जीवन की तू ही आशा, प्राण तुझी को तरसे।

1665

तुम कहाँ छिपे मेरे छलिया, ढूंढे तुमको मेरे नयना।
खो कर तुमको हुआ बाबला, सुन लो विनती मानो कहना।
जीवन की तू ही आशा है, एक चाह बस मेरी तू है।
कृपा दृष्टि जब तेरी होवे, संकट मिटते फिर पल में हैं।
हरि प्रीति बढ़े हरपल मेरी, नजरों को नहीं चुराना तुम।
अंधियारा है नाथ अबल मैं, इस को दूर भगाना हरि तुम।
नयन बहे तेरी यादों में, जलन मिटाते जो दिल की है।
जाम यहाँ पीऊँ विरहा के, प्राण तरसते मिटने को है।
नयना खोलो देखो हमको, बालक तेरे हम रोते है।
धुन बन्शी सुन मीरा नाची, नाचे हम भी दिल चाहे है।
नमन करूँ तेरे चरणों को, जपूँ सदा मैं इस जीवन में।
जग की प्रीति लगे सब झूठी, बस जाओ प्रभु इन नयनन में।

1666

क्यों भागे मन पीछे पीछे, वह छोड़ गये ना सुधि को ले।
अंखियां तेरी हरपल भीगें, ना रूक देखें हरि में जी ले।
जग निर्मोही ना प्रीति लगा, वह धन्य हुआ हरि में खोया।
जीवन उसका ही हुआ सुफल, जो यादें ले उसकी रोया।
सुपने सारे ही टूट रहे, यह देख देख कर बिलख रहे।
मन भटक भटक जाता हरपल, समझे ना दिल में टीस बहे।
हरि ध्यान लगा अन्तस में वह, निज को तू देख छिपा है वह।
मन प्रीति बढ़ा ले उससे ही, कट जाये मग सुखदायक वह।
हरि जप लो जानो वही जपे, तू नहीं यहाँ यह शाम ढले।
हरि में डूबो हरि को गाओ, बह जा ना तेरी एक चले।
तू एक लहर बहती गंगा, गा ले हँस ले बस यही सफर।
तू ध्यान लगा हरि में पागल, ले जाती यह ना करो फिकर।

1667

चल चल गिरा मैं थक चुका, बरसे नयन यह राम।
कर्मों का खेल जानूँ न, तुमको पुकारूँ राम।
सब कुछ यहाँ तू ही प्रभु, तुम बिन तड़फता राम।
अज्ञान का पर्दा पड़ा, इसको उठा ले राम।
चरणों में दे मुझे जगह, सुख से कटे पथ राम।
नैया हमारी डोलती, खेवट बनो हे राम।
उल्लास जीवन का तुही, दुख में न डालो राम।
दुख दूर कर करूणा दिखा, सागर दया का राम।
तपती धरा जब ताप से, तू ही बरसता राम।
माता पिता सब कुछ तुही, मुझे सम्भालो राम।
हे राम इस दिल में बसो, ना बीत जाये शाम।
आये हम शरण तेरी, वर भक्ति का दो राम।

1668

उड़ता जावे मन ना ठहरे, जतन करो प्रभु तुमको पावें।
दीनबन्धु तुम जग के पालक, चाह प्यार तेरा हम पावें।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, गया हार ना पहुँचा तुम तक।
शक्तिप्रदाता अबल नाथ मैं, बल दो पहुँचू तुम चरणो तक।

नयना तेरी राह निहारें करो नहीं प्रभु अब तुम देरी।
जीवन का आनन्द तुही है, टूटी जाती जीवन डोरी।
इन नयनों में तुम बस जाओ, नहीं नाथ मुझकों तड़फाओ।
बालक तेरे तुम ही सर्जक, प्रीति बढ़े वह पाठ सिखाओ।

नाच नचावें लहरें हरपल, जियरा मेरा करता धक धक।
पार लगे ना तुम बिन नैया, क्यों ना पहुँचे आँसू तुम तक।
करूँ अर्चना प्रभु जी तेरी, मात पिता गुरू सखा तुम्ही हो।
खोई वह मुस्कान तुम्ही हो, इस जीवन के प्राण तुम्ही हो।

1669

जीवन तेरा ना यह मेरा, सुख से नौका पार लगा दे।
प्यार बिना ना खिलता जीवन, सबके डर में प्यार जगा दे।
दुख से पीड़ित सारी धरती, पग पग कांटे राह दिखा दे।
फूल खिलाये जग में तूने, प्रभु शान्ति का पाठ सिखा दे।

करें अर्चना प्रभु जी तेरी, नीर नयन से मेरे आता।
शक्तिपुंज तुम अबल नाथ मैं, बल को देना भाग्य विधाता।
सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी, फूल तेरी बगिया के मालिक।
तेरे बिन ना लगती लाली, तुझे न भूलें मेरे मालिक।

नाच नचावे हम कठपुतली, तपती धरती तू ही बरसे।
जीवन डोरी हाथ तुम्हारे, याद तुझे कर जियरा हरषे।

1670

हरि तुम मोहि नाहीं विसारो, लाज मेरी प्रभु तुम ही राखो।
इस जीवन को देने वाले, बहते नीर नयन को देखो।
नाथ अबल हम बालक तेरे, घबराता दिल करता धक धक।
देखो अब तो भाग्य विधाता, अंखियां हारी तुमको तक तक।
गाऊँ तेरे गीत सदा ही, गूंजे बंशी की धुन मन में।
नयन बसे बस मूरति तेरी, जाप करूँ हर पल इस मन में।
दास तुम्हारा तुम न रूठो, जानूँ ना कर्मो के बन्धन।
दीखे कुछ ना रोये मनुआ, पथ दिखला दो छूटे क्रन्दन।

नयन बरसते तुझे पुकारे, जीवन तुम बिन कौन संवारे?
बस जाओ तुम दिल में मेरे, सांस सांस हरि तुझे उचारे।
सुख दुख को तुम देने बाले, समझ न पाये कुछ मतवाले।
मेरी नैया खे दे नाविक, डगमग डोले तुही बचाले।

1687

प्रभु जग में अब ना उलझाओ, हम चरण पड़े स्वीकार करो।
तुम हमें भक्ति का वर दे दो, सब संतापों से मुक्त करो।
आंखो में बढ़ती है लाली, हे शक्तिमान तुम हो दानी।
तुमने क्यों मुंह को फेर लिया, बिन कृपा नहीं मिलता है पानी।
झोली लेकर हम यहाँ खड़े, नयन रोयें और नीर झड़े।
अबल दास हम प्रभु जी तेरे, मत रूठो तेरे द्वार पड़े।
मंजिल पाई ना हम भटके, सब ही होता जाता धूमिल।
कैसे धीर धरे मन मेरा, रूठ गया जब मेरा साहिल।
निर्मोही हम तुझे मनावें, हार थके हम वीणा सोई।
जीवन के कुछ पल हैं बाकी, तू निहार ले अब हरजाई।
पीड़ नहीं कोई भी सुनता, मन यह ताने बाने बुनता।
बीच भंवर में मुझे थाम ले, टूट रहा अब जी ना लगता।

1688

करो कृपा ईश्वर तुम मुझ पर, मेरे नयना बरसे झर झर।
जीवन का उल्लास न जाना, ठोकर खा गिरता हूँ दर दर।
अज्ञानी हूँ पथ दर्शा दो, गहन अंधेरा दीप जला दो।
कहाँ छिपे तुम मेरे स्वामी, कैसे रीझो विधि बतला दो।
अबल नाथ हम चला न जाता, माता पिता संकट के हर्ता।
डूब रही है नैया मेरी, न भूलो तुम शक्ति प्रदाता।
नीरस घड़ियां बीत रही है, जीवन में संगीत नहीं है।
पूछ रही तुमसे दो आंखें, क्या कसूर जो प्रीति नहीं है।
शीश चरण धर रोना चाहूँ, चाह नहीं मैं कुछ भी पाऊँ।
तेरी दुनिया तू रखवाला, कैसे अपनी प्यास बुझाऊँ ?
बसो नयन में प्रीति बढ़ा दो, झूठी आशाये विसरा दो।
चरण पड़े हम प्रभु तुम्हारे, डगमग नैया पार लगा दो।

1689

तुम ही रहो प्रभु मैं ना रहूँ, ध्यान तेरे चरणों का धरूँ।
मैं हूँ अबल नीर यह गिरते, कुछ नहीं दीखता हाय डरूँ।
पार लगा दो मेरी नैया, अनजाना पथ सुनो खिवैया।
जग के सर्जक पालक तुम ही, चल चल हारा रोवे जियरा।
ऊसर जमीं न कुछ भी उपजे, ध्यान धरूँ पर यह तो भटके।
कृपा मिले तो जीवन संवरे, फूल खिले रस्ता फिर महके।
प्यार जगा सुपनों में आओ, जिय ना मुझसे नाथ चुराओ।
लिये भुलावा जग में खोया, अब तो अपना हाथ बढ़ाओ।
तेरी धुन सुनने को मोहन, भये बाबरे प्रीति दिवाने।
कौन संजोई आशा को ले, रूका हुआ ना सुनूँ तराने।
ऋषि न ज्ञानी अन्तर्यामी, प्यासा फिरता मांगू पानी।
नीर गिर रहे झोली खाली, प्रीति बढ़े वर दे दे दानी।

1690

प्रभु तुम्हारे बालक हैं हम, कृपा बनाये रखना तुम।
गलियाँ अनजानी भटक रहे, दूर भगाना मग का तम।
मात पिता गुरु सखा तुम्ही, सारे जग के हो कर्ता।
नीर निकलते नयनों से है, मूंद न आँखे जग भर्ता।
शीश झुकाये नाथ खड़े हैं, पार लगा दो यह नौका।
डूब न जाये बीच भवर में, लो संभाल दे दो मौका।
तुझे नहीं खोना चाहूँ मैं, जीवन के मेरे संगीत।
टूटी वीणा तार संभालो, गूंजे फिर तेरे गीत।
जाऊँ किधर पथ नहीं दीखे, गिरे नीर मेरे झर झर।
नाथ लाज तुम मेरी रखना, जग रखवाले बंशीधर।
गहरा सागर जीवन दूभर, दुखड़े रोते ज्ञान नहीं।
माफ हमें तुम कर देना प्रभु, नमन करें कुछ पास नहीं।

1691

डर लगता यहाँ अकेले में, जप राम नाम इस मेले में।
अन्धकार है कुछ ना दीखे, मन नहीं मानता ठेले में।
अपनी मर्जी से न आये यहाँ, जायें ना मर्जी चले यहाँ।
यह खेल यहाँ दो दिन का है, लख नैन गिराते नीर यहाँ।
मन कौन सहारा देख यहाँ, जग से टूटा दिल रखें कहाँ?
अज्ञात डगर पर आये हम, जायेंगे मिटना हमें यहाँ।
जप राम नाम चलता ही जा, धुंधला सब पी को खोज यहाँ।
बैचेन हो रहा पागल मन, बिन उसके सूना देख जहाँ।
बुझते दीपक का वह प्रकाश, टूटे दिल की है वही आस।
कांपे जब लहरों में जियरा, ना भूल उसे जप सांस सांस।
मन आँख उठा कर देख जरा, सबकी अपनी यहाँ योनी है।
कुछ देर यहाँ का नाटक है, जलनी फिर सब होली है।
जप राम नाम कुछ चैन मिले, टूटे दिल का फिर कमल खिले।
मग जाये कट कुछ पल बाकी, सच देख नाम ले शान्ति मिले।

1692

जायेंगे कट दिन यह सारे, उसकी मर्जी चले यहाँ।
बन कर विवश रो रहे हम तो, सुख हरि विरह में जान यहाँ।
हरि को नहीं भूलो खेल मन, खत्म होगी रैन काली।
दौड़ ले कितना ही जगत में, उस बिना न आये लाली।
उसको जपो जब भी थके हो, अपनी विवशता समझ ले।
तेरी लगेगी पार नौका, तू उसी का स्वाद चख ले।
कैसे तुम्हें समझाऊँ मन, सब देख ले नश्वर यहाँ।
दामन बचाले मत उलझ तू, वह कर जरूरी जो यहाँ।
तुम आज हो फिर कल नहीं हो, जान यह क्या सच नहीं है।
किससे करें फिर हम शिकायत, नाचता सागर वही है।
जो नीर बहते हैं चढा दे, जो छिप रहा अज्ञात में।
आये यहाँ मर्जी उसी की, कुछ भी न अपने हाथ में।

1693

यह खेल सबको खेल कर, जाना वहाँ मन्जिल वहाँ।
कर रहे हैं हम शिकायत, किसको फिकर किसकी यहाँ।
मेल दो दिन का यहाँ सब, फिर नहीं मिलते कभी भी।
अबल हम तो ना रूला अब, क्या पसीजे ना कभी भी।
प्रतीक्षा करते रहेंगे, जब तक चले यह सांस है।
चाहते हम तुम न रूठो, कुछ नहीं अपने हाथ है।
फिर रहा वीणा उठाये, बाजते नहीं इसके स्वर।
मेरे जीवन की आशा, तुम्हारे बिन जायें किधर।
चाह हँसू तुझ चमन में, मेरी हंसी ओझल हुई।
नयन से हैं नीर गिरते, तू क्या बता गलती हुई?
प्रेम में डूबा रहूँ मैं, गाऊँ तुम्हारे गीत को।
कटेगा सारा सफर यह, इतनी जगा दे प्यास को।
खोजता चहुँ ओर हूँ, सृष्टि के मालिक छिपे हो।
वेद दर्शन कह रहे हैं, दया के सागर तुम्ही हो।

1694

शक्ति दो जग के रचैया, तुझे भज जीवन संवारें।
डूबे मेरी यह नौका, कर कृपा तू पार तारे।
बन्शी सुनने को तेरी, ब्रज गोपियाँ पागल हुई।
धड़का दिल बाजी पायल, तब नयन से वारिस हुई।
बैचेन मन हो समर्पित, सब उसी का है जहाँ।
दिल में बसा ले राम को, उसके बिना सुख है कहाँ?
कुछ पल मिले संग साथ है, जाते बिछुड ना हाथ है।
कितना यहाँ रोते रहे, रोके न रूकता काल है।
मन समझ पागल नहीं बन, तू तो नियति का खिलौना।
कब खिलेंगे फूल मग में, कब गिरे न जाने सुपना।
चले चल हरि ओम जप मन, उसके बिन रोवेगा दिल।
यह डगर है बहुत लम्बी, यादों में कट जाये पल।

1695

तेरे चरण पड़े हम, मुझे सम्भाल लेना।
नयन से नीर गिरते, यही चाहते कहना।
बन्शी बाजे तेरी, यह प्राण नाचते हैं।
तुम छिप गये कहाँ हो, तुमको पुकारते है।
चलते सदा रहे हम, तुमको कभी न भूले।
साँसो में तुम्ही हो, नगमें तेरे गा लें।
फूल तेरे चमन के, न भूल हमको माली।
तेरी कृपा के बिना, आती कभी न लाली।
देखूँ यहाँ सभी को, अपनी लिये है पीड़ा।
किसे सुनाऊँ मोहन, करता क्या है क्रीड़ा।
न पास कुछ भी मेरे, झोली मेरी खाली।
सिर रख रोना चाहूँ, माफी दे दे माली।

1696

मन जब भी हो जाये उदास, तुम याद हरी को कर लेना।
कठपुतली हैं उसकी जानो, स्वीकार सत्य को कर लेना।
अणु अणु के बीच रम रहा वह, चहुँ ओर नाचता सब उसके।
पागल मनुआ ना धरे धीर, कुछ हाथ नहीं है इस मन के।
बस नाच नाचना ही होगा, जीवन बस नाम इसी का है।
चाहे रो ले हँस कर गुजार, आती सुख दुख की छाया है।
देख स्वयं को जप हरपल तू, कितना विवश यहाँ हर प्राणी।
इच्छाओं के घेरे में फंस, हरि को भूल उलझता प्राणी।
कैसे इस मन को समझाऊँ, बीत रही कुछ बीत जायेगी।
चोंच मिली चुग्गा भी देगा, यह घड़ियाँ भी मिट जायेगी।
बहता जा हरि हृदय बसाये, जान यहाँ न कोई ठिकाना।
कहाँ उठेंगे कहाँ गिरेंगे, पागल मन यह किसने जाना।
जो हरि चाहे दुख क्यों माने, शीश झुका आज्ञा को माने।
दो दिन का यह रैन बसेरा, कल क्या होगा वह ही जाने।

1697

बालक हम है तेरे ईश्वर, नजरों को ना हमसे फेरो।
बहते आँसू को तुम लख लो, भटक रहा मैं तुम न विसारो।
कहें नाथ क्या अन्तर्यामी, कह कह थके सुनो तुम स्वामी।
चरणों की रज अपनी दे दो, मिटे ताप अब कर दे हामी।
जायें कहाँ दीखे नहीं कुछ, संग्राम मचा इस जीवन में।
नयनों में मेरे बस जाओ, अब छोड़ न मुझको उलझन में।
देव सृष्टि के मालिक हो तुम, तेरी तो हम हैं कठपुतली।
जिय मेरा भर भर आता है, थक हार गये खोई लाली।
बहती जाती गंगा हरदम, पाप पुण्य का भेद मिटा सब।
सिर चरणों में रख रोने दो, सारे तम को दूर हटा अब।
तुम अविनाशी नाशवान मैं, यहाँ बसेरा कुछ पल का है।
तेरी मदिरा पियूँ रात दिन, होश रहे ना सब तेरा है।

1698

कितने आँसू बहे धरा पर, खोज रहा मन शान्ति कहीं पर।
डूबूँ हरि में निज को भूलूँ, समझ नहीं जिय आवे भर भर।
जान सके न गुनाह हमारा, क्यों हमको किस्मत ने मारा।
झर झर नीर नयन से बहते, मुझे संभालो हरि मैं हारा।
क्या है खोज भटकते फिरते, सुबह शाम नित ताने बुनते।
पाया अब तक छोर न कोई, लिये विवशता हर दम रोते।
दास तुम्हारा माफ कर दो, अबल नाथ मैं तुमको टेरा।
खो जाऊँ तुझमें ही मोहन, कर दो कृपा मिटे सब फेरा।
पाप पुण्य सुख दुख की रेखा, लांघ न पाऊँ जीवन कैसा?
सुर तेरे सुनने को भागूँ, उलझ गिरूँ बतला क्यों ऐसा?
मेरे मन मन्दिर में आओ, चाहे जैसे मुझे नचाओ।
तुझमें हरदम रहूँ समर्पित, चाहूँ इतना बल दे जाओ।

1699

चरणों मे हरि पड़ते तेरे, नज़र चाह मुझसे ना फेरे।
सम्बल मेरा हरि तू ही है, नयना मेरे आसूँ गेरे।
कैसे इस दिल को समझाऊँ, बुद्धिहीन मैं कैसे पाऊँ?
कैसे रीझो नहीं जानता, कृपा करो तो तुझको पाऊँ।
लहरें उठती गिरती हरदम, चक्र सदा यह चलता रहता।
प्यासा मन यह ढूँढे पानी, कष्ट हरो तुम दुख के हर्ता।
विवश खड़े हम झोली खाली, मिले कृपा हर कोई बढ़े।
गाये गीत गुजारें रैना, ना रोक मुझे तुझ ओर बढ़े।
कर्मों की रेखा ना जानूँ, खोजूँ तुमको पर ना पाऊँ।
चाहूँ विरह बढ़ा दे इतना, जलकर उसमें मैं मिट जाऊँ।

1700

शरण अपनी राम रख लो, मुझे मन्दिर में जगह दो।
प्यास से यह कंठ सूखा, बूंद जल की तुम पिला दो।
नयन से यह नीर गिरते, तुम कहाँ न हमकों दिखते।
मेरे मोहन न रूलाओ, प्यार के न तोड़ो रिश्ते।
ना सही जाती जुदाई, नीर बहें जैसे सावन।
ना हमें इतना रूलाओ, प्यार पायें खिले जीवन।
तुम बिना जाये कहाँ हम, खोते स्वरों को उठाओ।
थका हारा अबल हूँ मैं, प्रभु पुकारे नाथ आओ।
फूल तेरे बाग के हम, झूमता क्यों फिर नहीं मन।
बसों मेरे नयन में प्रभु, फिर मिट सके सारी चुभन।
देख लो नजरे उठाकर, चरण में अपनी जगह दो।
बालक तेरे न ज्ञान कुछ, तुमको पुकारे प्यार हो।

1701

नीर अंखियों से निकलते, ना समझ मन रो रहा।
जाल अपना ही बिछा कर, फंस उसी में रो रहा।
जिन्दगी का क्या प्रयोजन, खेल यह क्या चल रहा?
क्यों प्रयोजन खोजते हैं, ना समझ में आ रहा।
गमें प्याला पी निभा दे, शाम ढलती जा रही।
कौन होगा किस जगह पर, पता हमको है नहीं।
सत्य वह जाने वही बस, मन हृदय उसको बसा।
जा रहे पल देख ले तू, जग में न जी को फंसा।
नाचें कठपुतली उसकी, ज्ञान सब रहता धरा।
जग कहे तू बाबला पर, जी नहीं उससे चुरा।
तू चढ़ा दे आँसुओं को, गा उसी के गीत को।
बीती जाती यह संध्या, तज न उसकी प्रीति को।

1702

तू हमें दे या न कुछ दे, हम भिखारी द्वार के।
नीर बहते हैं नयन से, कर कृपा तू देख ले।
गीतों को गाऊँ तेरे, होश को अपने भुला।
बेचैन दिल यह रो रहा, तू नहीं मुझको भुला।
दास तेरे ना विमुख हो, जी रहे अज्ञान में।
डगमगा रही यह नौका, थाम ले मझधार में।
सब तरफ तू बह रहा है, कर रहे सब अर्चना।
प्यास को लेकर भटकता, कर रहा मैं वन्दना।
गिर रही नदियां जलध में, सब उसी का शोर है।
फिर भी समझता मन नहीं, चलता नही जोर है।
ले चलो दे कर भुलावा, गीत में अपने भुला।
बीत जायेगा सफर यह, कुछ रहेगी ना गिला।

बजी बांसुरी नाची मीरा, प्रेम प्याला पीवे जियरा।
कृपा मिले तो ही मैं नाचूँ, चल न पाऊँ सागर गहरा।
जाता जीवन यह उदास है, तुम बिन न उठती सुवास है।
कहाँ छिपे तुम जगत रचैया, अँखियाँ खोजे तुही आस।
नयनन में मेरे बस जाओ, साँसो में तुम ही लहराओ।
बजे बांसुरी हरपल तेरी, ओ रसिया ना हमें भुलाओ।

1718

नहीं दीखता कोई हमको किनारा।
प्रभु लाज रखना हो मेरे आधारा।
चल चल गिरा थामते प्रभु तुम्ही हो।
अबल मैं खिलौना तुम्ही जिन्दगी हो।
माता पिता बन्धु सभी कुछ तुम्ही हो।
प्यासी यह अंखियां है प्यास तुम्ही हो।
सुनो जग के मालिक खफा तुम न होना।
मन्दिर में दे दे मुझे एक कोना।
तेरा प्यार चाहूँ स्वयं को डुबाऊँ।
नहीं जग में तुमको प्रभु भूल पाऊँ।
तेरा ध्यान हो बजे तेरी सरगम।
सब कुछ है तेरा न हो कोई भी गम।

1719

नयना यह नीर गिराये, कुछ कह सकूँ न मैं तुमको।
तुमको हर सांस पुकारे, नमन करूँ प्रभु मै तुमको।
मेरे खेवट तुम सुन लो, खेई जाती ना नौका।
चरणों मे पड़े अबल हम, दे दे हमको भी मौका।
जग के पालक कर्ता हो, दुखियों के दुख हर्ता हो।
खोजूँ मैं तुझे कहाँ पर, जीवन की तुम आशा हो।
कैसी कर्मों की डोरी, ना सुलझ सकी मैं उलझी।
अब काटो मेरे बन्धन, तड़फे हम यह क्या सूझी।
आनी जानी यह दुनिया, प्यार हमें दे दे छलिया।
कट जाये मग यह सारा, रंग में रंग ले सांवरिया।
तुम बिन रोता यह जीवन, सूना ना कर यह उपवन।
फूल तेरी बगिया के, सुना हमें तू प्यारी धुन।

1720

कितना रोता मैं चिल्लाता, प्रभु जी सुन लो तेरा बालक।
ढलती जाती संध्या देखो, दास तेरे हम करना न शक।
क्या पकड़ें सब बहा जा रहा, बैचेन हुआ रोता यह दिल।
झर झर झरते आंसू मेरे, प्यार मिले खिल जाये यह दिल।
प्राण पुकारें रूठो ना प्रभु, चहूँ ओर अंधेरा है छाया।
बिन कृपा मिले न उजियारा, सारे जग में तेरी माया।
कितने बुनते ताने बाने, धोखा खाते हम अनजाने।
तुझ प्रेम प्याला मिल जाये, सब भूल तुझे बस हम जाने।
चरणों में सिर रख लेने दो, जी भर हमको रो लेने दो।
यह तड़फ रहें हैं प्राण मेरे, तुम शान्ति सुधा की वर्षा दो।
अबल नाथ हम शक्तिपुंज तुम, न कभी छोड़ना मेरा साथ।
अनजानी सारी यह गलियां, करो प्रकाशित मेरा पाथ।

1721

हरि मन नहीं लागता मेरा, दूर करो तम करो सबेरा।
दीनबन्धु करूणा के सागर, ताप हरो प्रभु दुख ने घेरा।
क्यों रूठे कह कैसे मनाऊँ, आँसू झरते तुझे चढ़ाऊँ।
पीड़ा के सागर में डूबा, कृपा करो तो मैं तर जाऊँ।
जग रखवाले पालन कर्ता, मग न मिलता हर पल गिरता।
पागल मन चहुँ ओर डोलता, प्यार हमें दे मेरे भर्ता।
दुखयारी आँखें यह रोये, धीरज इनको कौन बंधाये।
माता पिता गुरू तुम्ही हो, जाता जीवन तुझे बुलाये।
मेरे खेवट पार लगा दे, फसल सूखती तू वर्षा दे।
मेला यह दो दिन का माना, गिरूँ टूट कुछ पल हर्षा दे।
हरि हरि जपें हरी में डूबें, कहीं और प्रभु जी ना भटकें।
नाथ अबल है हम तो हारे, नहीं परीक्षा लो जो अटकें।

1722

ज्ञान ध्यान मैं कुछ ना जानूं, गया हार बस तुझे मनाऊँ।
बहती रहे नयन से धारा, तुझ चरणों में शीश नवाऊँ।
जगत रचैया तुम ना रूठो, अज्ञानी हम साहस दे दो।
डगमग करती मेरी नौका, केवट बन तुम पार लगा दो।
द्वार खड़ा हूँ झोली खाली, तू तो है सब जग का दानी।
बहते अश्रु न कोई पूछे, कंठ सूखता दे दे पानी।
स्वामी जगत के दास तेरे, गा धुन कोई शाम ढले है।
नयन बसा लू सब सुध खोऊँ, हम तो हरपल यहाँ जले हैं।
तुझ मन्दिर का द्वार मिले तो, सब विषाद् का यहाँ दहन हो।
सभी चाह तुझमे लय होवे, गिरते नीर वही मोती हों।
तुम्हें पुकारूँ प्राण प्यारे, इस जीवन को देने वाले।
नहीं शब्द कुछ कहा न जाये, चाह यही चरणों को पा लें।

1723

अपने अपने ढंग यहाँ हैं, सभी लगाते दिल फिरते है।
पागल हो कर डोल रहा मन, नयनों से आँसू गिरते हैं।
चले लड़खड़ाते हरपल हम, खोज सके ना होगा क्या कल।
बहना ही सीख सके मालिक, तू मिटा चुभन जी रहा मचल।
इन नयनों में तुम बस जाओ, जियरा चाहे तुम ना जाओ।
तू प्रीति निभा दे ओ छलिया, अंधियारे में पथ दे जाओ।
नयनों से है वर्षा होती, ले याद तुम्हारी मैं रोती।
मैं मिटूँ विरह तू ऐसा दे, मैं अबल चरण कैसे छूती।
तुम पार ब्रह्म परमेश्वर हो, सारे इस जग के कर्ता हो।
बैचेन हुआ मन डोल रहा, तुम हरपल सुधि को रखते हो।
तुम माफ हमें ईश्वर करना, ना जान सके तुझ करूणा को।
तेरी यादों में खो जायें, अच्छा यह लगता है हमको।

1724

सुख दुख का यह सारा खेला, तू ही खेल खिलाये छैला।
जाने हम कुछ भरम लिये है, मिटे भरम मिट जाये मैला।
देख यहाँ सबका अपना ढंग, करो अर्चना बन कर सेवक।
कितनी योनी यहाँ विचरती, सबकी बुद्धि का वह मालिक।
चलती चक्की बस ना अपना, आना जाना है सब सुपना।
दो दिन जीना जाल बुन रहे, छूट रहा सब कहते अपना।
बन कर लहर बहे सागर में, कभी उठाये कभी गिराये।
तन मन सबका वह ही मालिक, समझ न आये नीर बहाये।
प्रीति जोड़ सागर से पगले, वही हँसाये वही रूलाये।
मर्जी उसकी से है आना, मौज उसी की वह ले जाये।
लाज राख प्रभु शीश झुका है, कष्ट हरो जीवन तेरा है।
कहने को क्या कहें प्रभु जी, अन्तर्यामी दिल प्यासा है।

1725

मन ढूंढ रहा किसको पगले, फुरसत किसको देखे तुमको।
घिर आये बदरी नयनन में, बहने दे रोक नहीं उसको।
तू लहर बना बह नदिया में, ना समझ नही अपने बस में।
मन को समझाना ही होगा, पूरी कर ले सब ही रस्में।
दो दिन का खेल नही भाया, पगले इस मुँह को लटकाया।
तू जला सदा इस जीवन में, ना समझ सका झूठी माया।
उलझाती मृगमरीचिका है, प्रतिपल हम भागे मिले चैन।
ना रूके कदम ठोकर खाये, बोझिल होता जाता जीवन।
आशाओं के सुपने बुनते, चढ़ ना पाते पहले गिरते।

कमजोर लिये हम पंख यहाँ, विस्तृत नभ में कैसे उड़ते?
प्रभु तुम्हें मनावें रूठो ना, नयनों के मोती देखो ना।
सब कुछ लुट जाता इन पर है, बेदर्द बनो ना आओ ना।

1726

ज्ञान ध्यान सब बहता जाये, बोलो कैसे तुझे मनाये?
दुनिया के मालिक हम बालक, बहते आंसू किसे दिखाये?
निर्बल प्रभु हम शक्तिमान तुम, चला न जाता जियरा कांपे।
फूल तेरी बगिया के माली, खिले सुगन्ध तुझे सौंपे।
बिन जल जैसे मछली तड़फे, कुछ ना दीखे नयना बरसे।
प्यासे प्राण पुकारें तुमको, कृपा होय तो नभ यह बरसे।
कितनी सदियाँ बीत गई हैं, नहीं चुभन पर हाय मिटी है।
सबकी जानो अन्तर्यामी, कहाँ पुकारूँ प्यार तुही है।
जीवन स्वामी मुझे संभालो, थक कर हार गया मैं टूटा।
तेरे सुपनों में खो जाऊँ, मृगमरीचिका घट यह फूटा।
निज प्यार में रंग ले मोहन, नाचूँ जैसे मीरा नाची।
लोक लाज मर्यादा खोकर, चरण पड़ू. बस तू ही सांची।

1727

मर्जी तेरी बालक तेरे, जैसी भी चाह नचाये तू।
बस हम तो प्रभु रोना जाने, चाहें सुख को वर्षाये तू।
जीवन की इस पगडण्डी पर, तू साथ लगे सब हो प्यारा।
तुम रोम रोम में बस जाओ, लगता तेरे बिन मैं हारा।
नयना बरसें तू हमे देख, व्याकुल मनुआ तू राख टेक।
मैं द्वार खड़ा रोता माली, तू बून्द प्रेम की पिला एक।
नयनों से नीर गिरे झरझर, बिन तेरे जिय करता धक धक।
अनजान पथ मैं जाऊँ कहाँ, अंखियाँ हारी ना आया रथ।
चरणों मं शीश धरूँ तेरे, सारे जग का रखबाला तू।
सूखी धरती ना फूल खिला, आती संध्या कर वर्षा तू।
नयनों में मेरे बस जाओ, वरदान प्यार का दे जाओ।
तेरी करूणा के भूखें हम, प्रभु विरह् बढ़े तुम तड़फओ।।

1728

पूछ रहे प्रभु तुमसे बोलो, अंखियां रोवे मुख तो खोलो।
कहाँ छिप गये हमें छोड़कर, भटक रहे हम अंखियाँ खोलो।
प्यास हमें पानी दे माली, मेरा जीवन जाता खाली।
करूणा के सागर कहलाते, करूँ प्रतीक्षा सुधि लो माली।
जीवन टेढ़ी राहों पर, पूछ रहा पर पता न पाता।
कैसे समझाऊँ इस मन को, अंधियारे में ठोकर खाता।
दीप जला दे राह दिखा दे, ताप मिटा दे शान्ति सुधा दे।
सारी दुनिया के रखवाले, तेरे बालक क्षमा हमें दे।
जलता हरपल मेरा जियरा, प्यार निभा भूलो नहीं पिया।
मेरे दाता हुए भिखारी, खाते ठोकर रोती अंखियां।
नमन हमारा ले लो प्रभु जी, कहाँ गिरेंगे खबर नहीं जी।
मेरे सुपनों मे तो रहना, इतना तो कर देना प्रभु जी।

1729

नयना बरसें मेरे मोहन, प्रीति न तोड़ो मन में क्रन्दन।
जग के स्वामी इतना दुख क्यों, नाम तुम्हारा प्रभु सुख नन्दन।
अंखियाँ भर भर नीर गिरावें, चल चल हारे ठोकर खावे।
पार लगा दे मेरी नौका, करूँ प्रतीक्षा खेवट आवे।
टप टप मेरे आंसू गिरते, निर्मोही तुम क्यों ना लखतें।
चरण पड़ू. मै दास तुम्हारा, ठुकराओं मत दे दो रस्ते।
सकल सृष्टि के मालिक हो तुम, जियरा मेरा करता धक धक।
तुम बिन पथ को कौन दिखाये, अंखियां हारी तुझ रस्ता तक।
बता कहाँ मैं तुमको ढूंढूं, प्यार प्यास ले जग में घूंमू।
जिय तुम बिन बेहाल हुआ है, चरण मिले मैं उनको चूंमू।
हरि हरि करते बीते जीवन, टूटे सारे जग के बन्धन।
तेरी दुनिया तू ही मालिक, प्रीति बढ़े तुझमें सुखनन्दन।

1730

जीवन थोड़ा बीतेगा यह, अंखियां मेरी झरती झर झर।
मुझसे रूठ नहीं जाना तुम, माथ रखूँ तेरे चरणों पर।
पूजा की थाली पुष्प नहीं, कैसे रीझोगे ज्ञान नहीं।
अबल प्रभु कुछ जाने नहीं हम, कल क्या होगा यह पता नहीं।
सुन्दर तेरी प्यारी दुनिया, फिर भी भर भर आता जियरा।
तुझ प्रीति बढ़े मन बहलाऊँ, तुझ बिन कुछ भाता नहीं पिया।
बस विरह बढ़े इतना कर दे, कुछ ना मागूँ यह तो कर दे।
सूखे ना नयनों का पानी, बरसे यादों में यह वर दे।
बहते ना पता कहाँ जायें, तुम बिन प्रभु जी हम तो हारे।
इस मेले में कब खो जाये, नयनन में सदा बसो प्यारे।

1731

मनुआ चैन न पाये राम, मुझसे रूठो नहीं घनश्याम।
लगन लगे तुझमें सब छूटे, जग के वैभव फीके राम।
यहाँ लगा कांटे में आटा, दिल छलनी पर मोह न जाता।
सुख की सुरा पिला दे अपनी, तन मन फिर सब ही बह जाता।
जय श्री राम जय जय श्री राम, दुख भंजक दुख हर लो राम।
दास तुम्हारे निर्बल है हम, पार लगा दे नौका राम।
जाये सुधर सब मेरे काम, देख भिखारी वन कर डोले।
प्यार तुम्हारा मिल जाये तो, जाये सफर कट तुझमें जी ले।
प्रीति बढ़े बस नाचे तू ही, मिटे भान मैं का सब तूही।
प्रीतम प्यारा तू सम्भाले, नहीं भूल बस संकट यह ही।
पड़ा द्वार तुम्ही सम्भालो, ज्ञान ध्यान प्रभु तुम ही जानो।
बहते इन आंसू को देखो, कहें और क्या दंश मिटा दो।

1732

अनहद हरदम बजता रहता, मन न निरन्तर उसको सुनता।
उसको सुने सतत् जो कोई, ईश प्यार से वह भर जाता।
मैं को मिटा वही मालिक है, क्यों रोता बन कर पागल है।
नाच उसी का वह नाचे है, तू क्या वही यहाँ नर्तक है।
जो भी है स्वीकार उसे कर, बन कर लहर जलध मे बह ले।
कुदरत गाती हरदम नगमें, कुछ बस नहीं जान मन मैं ले।
बोझिल जीवन चल चल हारा, उस बिन सब कुछ लगता खारा।
सांस सांस में हरि रम जाये, सभी मिटे भय फिर संसारा।
ज्ञान ध्यान वह सबका मालिक, बनना हमको उसका सेवक।
टूटी वीणा के स्वर जागें, प्यार मिले पहुंचे फिर उस तक।

1733

एक गम हो तो कहें, गम अनेको हैं यहाँ।
जी रहे क्या आस ले, चल रहा यह क्यों जहाँ?
चल रहे ना जानते, आ गये जायें कहाँ?
कौन मंजिल बुलाती, गम खतम होगा कहाँ?
जन्म में जब जन्म है, बीज में जब पेड़ है।
बढ़ रहा क्या वह स्वयं, पथ मिला तो सत्य है।
नाचें कठपुतली बन, नाचते खिलता जहाँ।
खोजता पागल बना, वह छिपा बैठा कहाँ?
नयन भीगे अश्रु से, चाहते चरण सींचे।
उबलती है वेदना, जाने न आंख मीचे।
अंधेरा छाया घना, अज्ञान से मैं घिरा।
अबल हैं द्वारे खड़े, कर कृपा होवे सवेरा।

आग में मिट जाऊँ तेरी, वह विरह की आग दे दे।
बन सकूँ बस मैं पतंगा, तू शलभ निज गोद दे दे।

1750

जानता मैं कुछ नहीं हूँ, मुझमें ना कुछ भी दम।
मुझे तू ही सम्भालना, यह लडखडाते हैं कदम।
तू खिवैया तार मुझको, मैं रो रहा नाथ हारा।
डूबता जाता यहाँ मैं, जगत में तू ही सहारा।
दुनिया में हैं रंग कितने, जिय लगे ना कहाँ अटके?
नीर यह नयना गिराये, कर कृपा अब नही भटके।
स्वामी ब्रह्माण्ड के तुम, क्यों उबले इतनी पीड़ा?
प्यार तेरा नाथ चाहें, हर्षित होवे यह जिवड़ा।
अश्रु गिरते नाथ लख लो, दास प्रभु जी मैं तुम्हारा।
काली रैना अन्धेरा, तू हमें दे दे सहारा।
फूल बने बगिया आये, गीत तेरा गुनगुनायें।
बहती सांसों में तुम ही, पल नहीं तुमको भुलाये।
जिय नहिं लगता तेरे बिन, किस जगह तुमको पुकारे।
ज्ञान का तू पाठ दे दे, अबल हम तो यहाँ हारे।
नीर यह नयना बहाये, दर्द हम किसको सुनायें।
न बनो निर्मोही इतने, कंठ यह भर भर के आये।
न हमें ठुकराना प्रियतम, गुण नहिं हममें है कोई।
देखते तुझ ओर हम तो, चाहते तू प्यार देई।
कर सको तो माफ कर दो, मैं भिखारी हूँ सदा का।
अर्चना अश्रु से करता, तू पिता है इस जगत का।

1751

तेरी रजा में रहें खुश, अपनी यही चाहना।
नीर यह अंखियां बहायें, मुँह नहीं तुम फेरना।
यादों में रम जाये हम, बहके नहीं जगत में।
नयन जो मोती गिरायें, प्रभु पायें सुख उसमें।
नाथ तू ही है खिवैया, तुम्हारे पांव पड़ता।
प्रीति में अपनी रिझाले, धुन बन्शी की सुनता।
चल रहे ना जानते हैं, कहाँ ले जाये हवा।
दर्द दिल के तुम्ही हो, तुम दोगे प्रभु दवा।
अश्रु यह स्वीकार कर लो, देखते तुझ ओर हैं।
अर्चना के फूल सूखे, पर तुही चित चोर है।
तू नचाये नाच लें हम, न कोई शिकवा करें।
सांस तेरे गीत गाये, छवि नयन में ले मरें।
जीवन की तूही मन्जिल, सभी का आधार है।
व्याकुल होता यह मनुआ, तू रखैया साथ है।
प्यार की बस भीख चाहूँ, मिट जाऊँ मैं इसमे।
शीश चरणों में धरूँ प्रभु, राख लो निज शरण में।

1752

मर्जी अपनी चलती ना प्रभु, नयना रोवे नीर गिर रहे।
आशाओं के उड़े चीथड़े, करो कृपा हिय बसा तू रहे।
अंधियारे में एक किरन तू, चरण पड़े तुम ना ठुकराओ।
अज्ञानी हैं पथ में कांटे, अबल नाथ हम ना भरमाओ।
जीवन का तू ही आधारा, सारा तूने खेल रचाया।
कठपुतली बन नाच रहे हम, रोवे समझ न पावें माया।
आन बसो हिय बन्धन टूटे, दास तुम्हारे पथ दर्शा दो।
गये हार तुम्ही सम्भालो, सूखी धरती जल वर्षा दो।
पी पी रटें न पिय को पावें, अंखियाँ रोवें जल वर्षावें।
अगम अगोचर पार न तेरा, करो कृपा तुझ चरणा पावे।
ना मुझमें गुन रोने की धुन, बाट निहारूँ तू सुन लेना।
सुनो ना सुनो मर्जी तेरी, फूल तुम्हारा, चाहूँ ले चुन।

1753

सुख दे दुख दे मर्जी तेरी, चले यहाँ कुछ भी ना मेरी।
शीश झुकायें खड़े द्वार पर, चरण पड़ू. मैं तेरी चेरी।
तूने रंग भरे जीवन में, खिले अनखिले वह मुरझाये।
एक नाम तेरा है सांचा, जपें चैन हिय को दे जाये।
चरण पड़े तुम नहीं बिसारो, नयनों में मेरे बस जाओ।
निशदिन निरखूँ छवि तुम्हारी, सुपनों में हरि तुम ही आओ।
सांस जपे हरपल ही तुमको, जैसा राखे इस जीवन को।
नहीं शिकायत दिल में उपजे, बहते नीर पुकारें तुमको।
दुनिया दो पलका है मेला, बिछुड़ा जाता सारा रेला।
बेचैन हुआ मन ना समझे, यह सब तो है तेरा खेला।
तेरे प्यार के हम भिखारी, अंखिया रोवे झोली खाली।
संकट हर्ता कृपा हाथ रख, फूल बाग के तेरे माली।

1754

कण कण बसा जब राम है, तू कौन है वह कौन है।
मैं भी अलग जब हूँ नहीं, यह शान्ति का बस राज है।
बैचेन मन पी की डगर, खोजे उसे जाने न घर।
सब कुछ वही क्या खोजता, मैं छोड़ जाये उसके घर।
सुख दुख यहाँ सब झेल ले, मर्जी उसी की मान ले।
नाचे जलध बस लहर तू, सच जान ले मैं छोड़ ले।
खेला समझ मैं का यहाँ, उठती लहर पूछे नहीं।
बस जान ले मैं छोड़ दे, मिटती लहर पूछे नहीं।
सिसकी लिये आंखे भरे, मेहमा दो पल का यहाँ।
कितने ही नाते जोड़ ले, सब कुछ बिखरता है यहाँ।
सुख से बिता सुपना यहाँ, हरिनाम अन्तस में बसा।
जप प्रीति जो उससे लगे, तब टूटता दुख का समा।

1755

मर्जी तुम्हारी मालिक, कुछ बस नहीं हमारा।
प्यार तेरा चाहते है, संकट हरो हमारा।
तू ही सृष्टि का विधाता, नीर नयन से बहता।
तुम दिल में मेरे रहना, जीवन तुझसे खिलता।
आये हैं तेरे द्वारे, चल चल हम तो हारे।
तुम्हीं नाथ हो सहारे, रो कर तुझे पुकारें।
दुख में सुमन खिले प्रभु, प्यारी छवि जो पाऊँ।
बिन तेरे प्रभु मैं रोता, तड़फू जिया जलाऊँ।
आता सूरज हर दिन ही, पथ दीखता नहीं कुछ।
यहाँ दन्श हमको लगते, बिन प्यार ना यहाँ कुछ।
जीवन की तू ही आशा, श्याम पुकारे आजा।
काली डराये रैना, दीप मेरा जला जा।

1756

निकले आँसू को ना देखा, जीवन रोया प्यार न देखा।
छिपे कहाँ सुर गंगा लेकर, तेरी कृपा बिन सब धोखा।
तुझे पुकारें नाथ संभालो, नयना खोये बाट निहारे।
सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, इस जीवन के तुम्ही सहारे।
झरते मेरे आंसू देखो, चाहूँ प्यार न अब तड़फाओ।
नमन करूँ शत बार तुम्हारा, वीणा रोये तुम्ही बजाओ।
पथ दुर्गम अनजानी राहें, डरता जियरा तुझे बुलाये।
अगम अगोचर पार न तेरा, नयना मेरे भर भर आये।
नैया मेरी डगमग डोले, चल ना पाऊँ मारग दुस्तर।
पार लगा दे तू केवट बन, दीनबन्धु करूणा के सागर।
द्वार खड़े इतना बल देना, करें प्रतीक्षा हटें न नयना।
सांस जपे बस हरदम तुमको, मेरे जीवन का तू गहना।

1757

हरि तुम बिन जग काहे सुमरूँ, दुख पाऊँ मैं तुमको भूलूँ।
बचा मुझको मेरे देवता, विनय करूँ तुझ चरणा पा लूँ।
अंधियारी रातें डर लागे, प्राण पुकारें तुझे न पावें।
विरह बढ़ा दे जलूँ इसी में, उड़े खाक तुमको ही गावे।
जीवन तेरा बालक हूँ मैं, दुर्गम पथ अनजाना हूँ मैं।
मेरे नाविक भूल मुझे ना, बाट निहारूँ तेरा हूँ मैं।
सुख दुख की छाया भरमाया, किसने जानी तेरी माया।
इन नयनों से झरते आंसू, चाह प्यार की तड़फे काया।
इस जीवन का तू ही है धन, हरि हरि प्राण रटें यह हरपल।
मृगमरीचिका में ना उलझूँ, अज्ञानी ना भूलूँ इक पल।

1758

सब गीत ईश्वर के यहाँ, जाना कहाँ मरना यहाँ।
दिल में बसे उसकी छबि, मगन रहता फिर यहाँ।
हरिनाम में बस डूब जा, पार नौका वह करे।
मोती गिरे जो नयन से, उसका पता वह करे।
प्यार की गंगा में बह ले, प्यार बिन सूख जाती।
बीत जायेगा सफर यह, जिन्दगी यह रिझाती।
प्यार की है खोज सबको, जला मन प्यार बाती।
बिलखते प्राणों में पागल, प्यार मल्हम लगाती।
गीत गा ले मन लगा कुछ, सुन यहाँ कुछ सुना ले।
थिर नहीं कुछ भी यहाँ पर, प्यार गंगा में बह ले।
स्वार्थ की बाते निराली, रो रहे रात काली।
हरि भजन कर प्यार पा ले, आ रहा देख माली।

1759

खोजता पागल किसे तू, स्वप्न सा सब चल रहा।
बीती जाती हैं घड़ियां, थिर नहीं कोई रहा।
श्वांस में हरिनाम जप ले, मन लगा उस ईश में।
ना पता कल हों किधर, बहे जा हरि गंग में।
कौन से सुपनों में खोया, देख निःसार दुनिया।
टूटते जाते भरम सब, नचावे नाच छलिया।
गिरा आंसू याद कर ले, बस न सब कुछ उसी का।
जप उसी का नाम सांचा, टूटे घमड सबका।
प्यार से आंसू बहाकर, उसको ही पुकार ले।
गिर पड़े इस मार्ग पर यदि, दर्द जी का जान ले।
नयन से जो नीर गिरते, खोजते जायें कहाँ?
जी नहीं लगता बहकता, बन रहा पागल यहाँ।
प्रेम यदि हरि का मिले तो, डूब जाते गम यहाँ।
नाचें कठपुतली बनकर, जानते डोरी वहाँ।
नीर हरि स्वीकार कर लो, भीख मांगे प्रेम की।
टूटे दिल को सम्भालो, अर्चना यह दास की।

1760

कैसे इस दिल को समझाऊँ, तेरे चरणों की रज चाहूँ।
मेरे पालक मेरे सर्जक, प्यार तुम्हारा ही मैं चाहूँ।
अनजानी गलियाँ भटक रहा, दिल मेरा डरता धड़क रहा।
मेरे मांझी तुम ना रूठो, यह जियरा तुम बिन तड़फ रहा।
अज्ञानी मैं तम ने घेरा, उलझ गिरूँ मैं तुमको टेरा।
दीनबन्धु करूणा के सागर, करो कृपा मिट जाये घेरा।
गिरे नीर देखे ना हरपल, बनो नहीं तुम निष्ठुर छलिया।
यह नौका डूबी जाती है, करो पार पड़ता मैं पैंया।
अबल नाथ मैं सदा सबल तुम, नाथ सहारा तेरा ही है।
इस जीवन को देने वाले, प्यार तुम्हारा बस पाना है।
झर झर झरती मेरी आंखे, ज्ञान हमें दो तुमको पावें।
भुल भुलैया की दुनिया में, तेरे ही हरि हम गुण गावें।

1761

बैचेन दिल खोजे कहाँ, चलता नहीं तेरा पता।
नीर यह अंखिया निकाले, मुझको बता दे क्या खता?
नाचता ब्रह्माण्ड सारा, तू जगत का सृजन हारा।
प्यार की ले प्यास घूमें, बरसो तुम मैं हूँ हारा।
नयन सुपने संजोये, भूले हमें कहाँ खोये?
दास मन्दिर का बना लो, थक रहे यह नयन रोये।
ज्ञान का भण्डार तू है, घूमते अज्ञान में हम।
कर उजाला तुझे पायें, तुमको हमारी है कसम।
नीर बहे उनको लख लो, प्रेम की तुम भीख दे दो।
अर्चना मेरी अधूरी, नाथ इसको पूर्ण कर दो।
ले चल माझी यह नौका, कांपता दिल धड़कता है।
तुझ कृपा से रहे सिंचित, धरा सूखी बरसता है।
सिसकी ले ले के रोऊँ, कैसे अपने को खोऊँ?
न बनो निष्ठुर ओ छलिया, तेरे बिन काहे जीऊँ।
जग भुलावे में न डालो, टूटे दिल को सम्भालो।
तेरी मर्जी से आये, प्यार से हे नाथ लख लो।
सिर झुकाये हम खड़े हैं, राह तेरी देखते हैं।
जी रहे मर मर यहाँ पर, अनजान पथ हेरते है।

1762

इतना रूखा क्यों दिल मेरा, सब हंसी होठ से लुप्त हुई।
नाथ दयालू अज्ञानी हम, तू फूंक प्राण में जान नई।
नाचे गायें तेरे आगे, बहे अश्रु वह चरणा धोयें।
ताप मिटे सब इस जीवन के, प्यार तुम्हारा प्रभु जी पायें।
जग की बगिया के ओ माली, फूल तुम्हारी हम बगिया के।
महकायें तेरी बगिया को, जुड़े छन्द सब इस जीवन के।
नाच रही यह सारी दुनिया, बन कठपुतली नाच रहे हैं।
तेरी खुशियाँ समझ सकूँ मैं, बल दे नयना यह रोयें है।
प्रभु लख ले तू भूल हमे ना, मात पिता तू जग का मालिक।
सारा जग तुझसे संचालित, नयना रोयें हम तो बालक।
पांव पड़े तेरे हम प्रभु जी, तुम रूठो ना अब प्यार बढ़ा।
तेरे बिन सूना सब लागे, कर देर नहीं अब हाथ बढ़ा।

1763

तुझ चरणों में अश्रु चढ़ाऊँ, मेरे मोहन गिरधारी।
दास तुम्हारे हमें न भूलो, हाथ तुम्हारे है डोरी।
बीता जाता तुम बिन जीवन, कैसे महके यह बगिया।
नयन थके हैं यह रो रो कर, तडफाओं ना अब रसिया।
अगम अगोचर पार न तेरा, डोले जिय करो सबेरा।
जग में दन्श लगे पग पग पर, काटो तुम ही प्रभु घेरा।
पी पी प्राण पुकारें हर दम, कहाँ खो गये तुम हमदम।
तुम बिन जीवन भी क्या जीवन, बजे नहीं दिल की सरगम।
देख हमें लो नाथ प्यार से, इस जी का तू ही प्रियतम।
अबल नाथ हम सबल तुम्हीं हो, गिर गिर जाऊँ ना है दम।
करूँ प्रतीक्षा तुम ना आये, अन्धियारा कौन भगाये।
आंसू की बरसात हो रही, चाहूँ जियरा बह जाये।
दो दिन के जीवन को लेकर, इठलाऊँ कैसे मोहन।
सूना लागे सब कुछ तुम बिन, सब जानों तुम मधुसूदन।
महक उठे जीवन की बगिया, बालक हूँ नीर झरें है।
करो अर्चना मेरी पूरी, द्वार तेरे प्रभु खड़े है।

1764

बालक तेरे प्रभु जी हम हैं, जैसा राखे मर्जी तेरी।
इन नयनों में तुम बस जाओ, करो नाथ ना अब तुम देरी।
मुझे सम्भालो अबल प्रभु मैं, डोले नैया रात अन्धेरी।
जीता मैं क्यों सांसे लेता, तुम बिन हर क्षण होती केरी।
जीवनदाता हमें खिलावे, कभी हंसावे कभी रूलावे।
तुम बिन जीवन है यह रीता, अंखिंया पल पल नीर गिरावे।
थक थक गिरते चैन न आवे चाहूँ बन्शी हमें सुनावे।

1781

गिरते आँसू बूझे न बात, न कोई साथ मन है उदास।
बहती लहरों को देख रहा, पिय से मिलने की मुझे आस।
यह सजा जहाँ रस रंगो से, मन लगता फिर भी नहीं यहाँ।
कैसे पागल मन समझाऊँ, तू सृष्टि रचयिता छिपा कहाँ?
कह कह ऋषि मुनि सारे हारे, मेरे प्राणों के प्रिय प्यारे।
तू ही कह भाग्य विधाता अब, खुश हो कर जो हमको तारे।
प्रभु लख लो तुम बहते आँसू, दिन रात रो रही यह अंखियाँ।
नैनन में प्रभु तुम बस जाओ, ना हमको भावे जग वतियां।
ले कर चाहत सब जग घूमे, टूटे कितनी अंखियाँ रोवें।
जीवन मेला बिछुड़ा जाता, बिन साजन चैन नहीं आवे।
ले चलो मुझे सद्पथ पर तुम, अज्ञान तिमिर में घूम रहा।
मिल जाये कृपा तेरी मुझको, चाहत यह लेकर घूम रहा।

1782

पुष्प सूखे नीर नयना, दीखता कुछ भी नहीं।
अब संभालो हरी हमको, तुम बिना कुछ भी नहीं।
ना परीक्षा ईश तुम लो, डोर तेरे हाथ में।
सांस हरपल जप रही है, आँख मेरी शून्य में।
अबली हम तुम सबल हो प्रभु, जानते कुछ भी नहीं।
नाचती यह सृष्टि सारी, ईश सबका तू मही।
जायेंगे कहाँ ना पता, नमन स्वीकार कर लो।
प्यार को हे नाथ देना, नीर को ईश लख लो।
तुम न हमसे जुदा होना, न कभी होना खपा।
तेरे बालक हम प्रभु जी, चाहते तेरी कृपा।
यह भटक जाये नहीं रथ, बसो प्रभु तुम नयन में।
अनजान रास्ता है सकल, थाम तू बाह मग में।

1783

किसका सहारा ले यहाँ, मन जप उसे रस्ता कटे।
छुटते यह साथ सब ही, उसकी शरण जा दुख मिटे।
तपती राहें अंधेरा, कर दया होवे सबेरा।
दास तेरे ईश हम है, ना कभी करना किनारा।
जा रहे दिन फिर न गम हो, मन अमी का पान कर ले।
नाम जप ले ईश का तू, छवि हृदय उसकी बसा ले।
प्रीति मनुआ कर हरी से, सभी को जाना वहाँ है।
छोड़कर उसको जगह ना, गर्व क्या करना यहाँ है।
आये कुछ भी जानते न, जायेंगे न रूक सकेंगे।
सुमर उसको खेल ले तू, कर्ता बन निज को छलेंगे।
उसे भूले रो रहे हैं, सूखते आँसू नहीं है।
हरि कृपा बिन दुख मिटे ना, सत्य जीवन का यही है।

1784

बिन हरिकृपा नहीं कुछ होई, किन सुपनों में तू है खोई।
टप टप गिरते आंसू तेरे, इस जग का रखवाला बोई।
सुख दुख की दुनिया में घूमे, बिन हरि भजन चैन नहिं पावे।
जप उस अमृत को पी ले मन, धन्य याद कर नीर गिरावे।
इनका कोई मोल नहीं है, खूब लुटा ले मनुआ मोती।
नीर गिरे हिय कमल खिले है, याद करे जब अंखियां रोती।
लहर बह रही नहीं ठिकाना, जप उसको साजन घर जाना।
कितने दन्श लगे इस जग में, याद करे बिन धैर्य मिले ना।
अपने बल ना चल पायेगे, विनय हमारी प्रभु जी सुन लो।
ज्ञान दीप तुम ही दर्शा दो, दास तुम्हारे शरण राख लो।
हरि हरि कहते मगन रहे हम, सुख दुख का है खेल तुम्हारा।
मेरे जीवन सर्जक सुन लो, कृपा होय तो मिले किनारा।

1785

जी नहीं लगता यहाँ पर, नाव अपनी ले चलो।
अश्रु से यह नयन भीगे, ना किनारा कर चलो।
अबल हम तुम नृप मही के, नमन हम करते तुझे।
प्यार हमको मिले तेरा, कर नही वंचित मुझे।
तेरी दया का पुजारी, नाथ मैं मति मन्द हूँ।
चाहूँ मैं तुझमें खोना, क्यों विरह से दूर हूँ।
तेरे विरह में ही जलूं, भस्म सारी चाह हो।
नाव में मैं बैठ तेरी, छोड़ूं सब तुम ही हो।
देख लो हे नाथ हमको, थके यहाँ चलते चलते।
प्यार तेरा नित बरसता, ना समझे क्या करते।
अश्रु यह स्वीकार कर लो, प्यार का प्रभु दान दे दो।
गीतों को गा तुम्हारे, कटे पथ वरदान दो।

1786

जानते कुछ भी नहीं है, मन लुभाते फिर रहे।
ज्ञान करे धैर्य धारण, दर्द जग के सब सहे।
अज्ञान में हम घूमते, खोज पर है ज्ञान की।
पुष्प उस पर ही बरसते, डगर जिसकी प्यार की।
बिछुड़ते मिल मिल यहाँ पर, पीड़ दिल में बह रही।
जान ले सब कुछ हरी का, खेल उसका हम नही।
कैसे पाये हम हरी को, ना ठिकाना जानते।
मौन है नभ रो रहे हम, प्यार को हम चाहते।
ईश तेरे दास हम है, विमुख पल भर ना रहें।
जपते रहे नाम तेरा, सद्करम करते रहे।
बहते लहरो में तेरी, अबल हूँ तुम समझना।
चैन आये बिन कृपा ना, ईश तू सम्भालना।

1787

पंख भीगे उड़ ना पाये, इन नयन में नीर आये।
सम्भालो हमको हरि तुम, शरणा हम तेरी आये।
सभी आंखे झांकती है, प्यार को यह तरसती है।
चाहत सबकी है अपनी, ना समझ मन उलझती है।
यह कटे पथ जप हरी को, वह सहारा है हमारा।
हृदय में उसको बसा ले, जा रही ले तुझे धारा।
प्राण का साजन वही है, जप उसे ना ठौर कोई।
बिन हरि नहीं चैन आये, डूबे गगरी तू रोई।
प्रीति प्यारे से करो मन, जान सर्जक वह हमारे।
सब रजा उसकी यहाँ है, मत बहा यह नीर खारे।
ज्ञान का दीपक वही है, उस बिना कुछ भी नहीं है।
सुमरता जा चल जगत में, पा विछौना सच यही है।

1788

राम जपे बिन चैन न आवे, मनुआ पल पल में अकुलावे।
दुखभंजक क्यों याद करे ना, पल पल अंखियाँ नीर बहावे।
टूटे जग से वही ठिकाना, नहीं भूल उसके घर जाना।
अश्रु चढ़ाता जा चरणों में, दे सुगन्ध गा वही तराना।
चले न अपनी मर्जी उसकी, उसकी तो हम सब कठपुतली।
सुख दुख का वह खेल खिलाये, धन्य सुरति उसके संग हो ली।
मिट जाना है राम राम कह, प्रीति लगा खोना उसमें है।
किससे तू आसक्ति करेगा, रंग बदलती यह दुनिया है।
जपले हरि को कष्ट मिटे सब, नाच रहा है यहाँ वही रब।
संशय छोड़ सुरति कर उसकी, देखे मुक्ति नहीं हो फिर कब।
ध्यान धरें हरि का सुख पावे, नित उसके गुण गाता जावे।
बहता सब बस उसे पुकारो, मैं खोवे अमृत रह जावे।

1789

ईश चरणों में विठा लो, रो रहे मेरे नयन।
यहाँ पर है घुटन कितनी, सही जाती ना चुभन।
लहर के खा खा थपेड़े, हम यहाँ जख्मी हुए।
छिप गये तुम किस जगह पर, क्यों खफा मुझसे हुए।
अर्चना कैसे करूँ मैं, फूल सब सूखे हए।
ढूढ़ता फिर भी तुझे मैं, तुम बिना पागल हुए।
दीवानी मीरा राधा, बन पागल जग घूमी।
तू पढ़ा दे पाठ अपना, भूलूँ मैं जग शूली।
इन नयन में प्रभु बसो तुम, न कभी खोलूँ इन्हें।
बीती जायें यह घड़ियाँ, हो ना शिकवा तुम्हें।
दास को स्वीकार कर लो, ज्योति हिय में जला दो।
शुभ करम करते हुए, पाये हम यह वर दो।

1790

राम रामा राम रामा, बस हृदय में मेरे रामा।
मैं पुकारूँ नीर बहते, सुधि हमारी ले लो रामा।
जियरा डरे अनजान पथ, कहाँ पर सोया हुआ है?
मत भूलो तेरे बालक, तम घना छाया हुआ है।
ज्ञान का दीपक जला दो, पा सकूँ रज पथ बता दो।
दास तेरे ईश हम हैं, वंशी की धुन सुना दो।
खेल सुख दुख का खिलाते, लिये झोली हम खड़े है।
बिना तेरे रो रहे हैं, प्यार तेरा चाहते हैं।
आ जाओ मेरे सैया, बीती जाती हैं घड़ियाँ।
कंठ प्यासा राह तपती, अब बरसो दे दे छैयां।
बीत जाये यह सफर सब, अश्रु को स्वीकार कर लो।
नयन में मेरे बसो तुम, द्वार अपने तुम बिठा लो।

1791

सुख को खोजे उसे न पावें, नाचे मनुआ बन दीवाना।
क्षण-भंगुर जीवन में जीना, जाने ना उसके घर जाना।
कितनी लहरे उठे जगत में, बहती जावें हाथ न आवे।
चले साथ ना प्रेम बढ़ावे, पागल घुट घुट कर मर जावे।
प्रेम बाट तू निज सुगन्ध दे, अपना ना कुछ है यह जाने।
दो दिन के मेले में आये, कब खो जायें यह ना जाने।
हरि जप हरि जप सुख दुख में जप, इस अनन्त में साथ निभाती।
जग के शूल सहे ना जाये, यादें उसकी फिर फिर आती।
पागल भूल न जप ले उसको, मनुआ किससे नेह बढ़ाये?
अपना अपना खेल खेल कर, सब ही पर्दे में छिप जाये।
सत्य वही जप उसे निरन्तर, वह ही सर्जक वह ही राजा।
मर्जी उसकी जहाँ ले चले, बजे न बिन मर्जी के बाजा।

1792

ईश कृपा करना तुम हम पर, बालक हम हैं संतान तेरी।
दुख के जंगल में नहीं भटका, तुम वसो नयन सुधि लो मेरी।
अज्ञान तिमिर में घूम रहे, हे ज्ञान पुन्ज तू ज्योति जला।
निशिदिन तेरे मैं गुण गाऊँ, न करूँ किसी से कोई गिला।
दीवानी थी राधा मीरा, सब छूट गया पी विरह सुधा।
सब भूल जगत के नाथ दन्श, खोऊँ तुझमें दे यही विधा।
डगमग मेरी नौका हरपल, इसको प्रभु पार लगा देना।
नयना बरसे रिमझिम मेरे, ना दूर कभी मुझसे होना।
करूँ अर्चना पास नहीं कुछ, झोली खाली रोता हूँ बस।
मेरे प्राण पुकारें तुमको, राख शरण दिल में आओ बस।
पाप पुण्य सुख दुख का जंगल, लांघ संकू ना करता क्रन्दन।
पड़ा चरण में थक कर तेरे, नाथ संभालो काटों बंधन।

1793

नीर मेरे गिर रहे हैं, लाज मेरी राखना।
डगर है अनजान मेरी, नाथ तू सम्भालना।
रो रहे कितने यहाँ पर, नहीं हृदय पसीजता।
शून्य में तुमको पुकारे, तू हमारा नियन्ता।
अबल हम तुम सबल हो प्रभु, बस नहीं हम रो रहे।
करते विनती तुमसे यह, ईश तू दिल में रहे।
बैठ तेरे द्वार पर हम, अर्चना तेरी करें।
तुझ विरह में ही जले हम, प्यार तेरा ही वरें।
हाथ जोड़े हम खड़े हैं, नीर अंखियों में भरें।
नैन में मेरे वसो प्रभु, सृष्टि परिकर्मा करे।
दास तुम अपना बना लो, प्रभु अधूरी अर्चना।
प्राण तुमको ही पुकारें, करूँ विनय न भूलना।

1794

जो जला विरह में उसके, राम ही बस रह गया।
मैं मिटी भूले जगत को, नीर से सब बह गया।
ना जानते गुमनाम है, राम ही बस राम है।
दीप आशा का वही, उस बिना ना ठांव है।
मीठी है उसकी तपन, अश्रु में मोती छिपे।
पूछता न जिनको कोई, राह से हिय में चिपे।
हरपल बदलते रंग हैं, प्रीति किससे हम करें।
रंगता प्रभु के रंग जो, धन्य समर्पित निज करे।
याद लेकर गिरे पथ में, फिर शिकायत क्या करे।
जिसकी मर्जी से आये, जप उसे फिर हम मरें।
दर्द ले उसी का पगले, नहीं बढ़कर और है।
जाती यह बीती घड़ियाँ, कुछ पलों का खेल है।
मुक्ति हो जाती दुखों से, हृदय में जब हरि बसे।
अदृश्य धागे से बंधकर, वह पुकारे बस उसे।
राम को जपते रहो मन, बह रहा देख दरिया।
अश्रु आँखों से गिरे मन, जान ले तेरा पिया।

1795

न मिलो मर्जी तेरी है, भक्ति का दान देना।
अश्रु से यह नयन भीगे, पथ कटे प्यार देना।
देखते तुझ ओर हैं हम, तम यहाँ घनघोर है।
मूर्ख मैं मतिमन्द हूँ, प्रभु, ज्ञान का भण्डार है।
लाज मेरी राखना प्रभु, शरण में तेरी पड़े।
भस्म तन हो विरह में ही, गीत तेरे ले उड़े।
तुम मेरे दिल में आओ, मूर्ति तेरी ही दिखे।
कह सकूँ कुछ न मैं हारा, अश्रु से पाती लिखूँ।
खोजते तुमको रहेगे, घूमते बन्धन लिये।
यादें तेरी ही प्यारी, जियें हम हिय में लिये।
सद्पथ पर ले चलो हमें, पा सकें तेरी कृपा।
तुम हमें विसरा न देना, ना कभी होना खपा।

1796

मुझको हरि तुम नाहिं विसारो, चरण पड़ा मैं दास तिहारो।
करूँ अर्चना पथ ना जानूँ, ले चल मांझी पार उतारो।
तेरी करूँ अर्चना हरपल, जी भर आये रोयें नयना।
सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी, यादों में कट जाये रैना।
प्रीति बढ़े जियरा सुख पाये, जग के सारे दन्श भुलाये।
नैनन में बस जाओ मोहन, सब भूलूँ ना और रूलाये।
डगमग डगमग मेरी नौका, कहाँ उड़ा ले जाये झौकां?
सम्बल तेरा ही बस मोहन, चरण मिले रज दे दे मौका।

दया दृष्टि प्रभु सब पर रखना, प्यासी धरती को जल दे दो।
तेरे बालक कुछ ना जाने, रो रो कर बस तुझे पुकारें।
टूटी वीणा बजे न सरगम, बिगड़ी को प्रभु तुही संवारे।
लौटा ना अब कंठ भरा है, मेरे स्वामी छिपा कहाँ है?
सूज गई यह मेरी अंखियाँ, तड़फूँ मैं दिल टूट गया है।
ईश बसा ले निज चरणों में, कट जाये यह काली रैना।
आगे पीछे सब तू ही है, कान सुने तेरे ही बयना।

1812

नहीं सुनोगे तेरी मर्जी, रोते हम मर जायेंगे।
अश्रुओं से हैं गीत भीगे, विरहा गीत कहायेगे।
कुछ भी समझ हम ना सके प्रभु, रोते गुजारी जिन्दगी।
तुमको नहीं खुश कर सके हम, मेरी अनाड़ी वन्दगी।
यह दिल धड़कता चल रहे हैं, धूमिल हंसी मेरी हुई।
मिलता नहीं तेरा ठिकाना, यह जिन्दगी बोझिल हुई।
इतना बिखेरा दर्द क्यों प्रभु, नयनों से नीर बह रहा।
नहीं बनो निर्मोही इतने, प्यार ईश मैं चाह रहा।
अबल हम तो है तुम सबल हो, नयन क्यों मूंदे हुए हो?
शुभ कर्म पर तुम ही चलाना, ज्ञानदीप प्रभु तुम्ही हो।
यह गिर रहे है नीर मेरे, मैं नहीं दोषी जगत में।
मैं भूल सकूँ तन की पीड़ा, लीन हो जाऊँ तुझी में।
यह अश्रु बहते नाथ देखो, विनय को स्वीकार कर लो।
नाचें हम कठपुतली तेरी, प्यार से हमको नचा लो।
गीत गाये हर सांस तेरा, रैन काली कर सवेरा।
मेरे दिल से तुम ना जाना, वह सकूँ मिट जाये फेरा।
तुम ही हमारी आस हो प्रभु, पार यह नौका लगाना।
यह बीत जायेगी कहानी, बन्सरी अपनी बजाना।
कुछ समय का है खेल बाकी, नाथ ना मुझको भुलाना।
इस कण्ठ में वह स्वर नहीं है, चाहता फिर भी सुनाना।

1813

बहें नीर जब उसे पुकारो, जलता मनुआ शीतल कर लो।
देख शून्य आवे इस पथ से, ताप हरे दुख भंजक जप लो।
अगम अगोचर दूर नगर है, खोजे मनुआ नहीं खबर है।
उसे बसा दिल में घूमें जब, जाने तब तू लहर नदी है।
बीती जाती जीवन संध्या, जप ले उसको प्रीति बढ़ा ले।
नीर बहें जब उसे चढ़ा दे, रोते दिल को तू हर्षा ले।
क्या अपना बीते सब सपना, उसकी बन्शी स्वर में खो ले।
जाता सुपना तू भी सुपना, इस सुपने को सुख से भर ले।
करो समर्पण बह नदिया में, हरि हरि करते बीते जीवन।
जान लहर तू नदी नहीं है, धन्य सुफल हो जाये जीवन।

1814

छोड़ सब जाते यहाँ पर, यह नियति का खेल है।
ना शिकायत कर किसी से, चाहते ले विवश हैं।
नदिया यह बहती जाती, देख सागर निकट है।
दुख नहीं कर हम खिलौने, कुछ पलों का खेल है।
सुख को अपने रोते सब, कोई किसी का नहीं।
यह बहायें नीर अंखियॉ, बिछुड़ कर मिलते नहीं।
कर्ता जग का वह पालक, निर्बलों का बल वही।
तम में कुछ न दीखता जब, पुकारो पथ दे वही।
यह लगेगी पार नौका, हरि जपो ज्ञानी वही।
सांझ ढलती जा रही है, शान्ति की मूरति वही।
कूल सभी छूटे जाते, सृष्टि का यह खेल है।
इस नदी में बहे जा तू, छूटता मैं शेष है।

1815

मिले छांव पावन हो यह मन, तू ही मेरे मन का साजन।
सदा कृपा तेरी मैं चाहूँ, दिल की तू मेरे मोहन सुन।
तेरे इंगित पर जग चलता, सूनी अंखियाँ देखे रस्ता।
जब होती बरसात नयन में, तुम बिन कुछ ना मुझको भाता।
तेरी यादें लागे प्यारी, इन अंखियों में पानी आता।
तोड दिये सब नाते रिस्ते, हरि बिना न कुछ भी भाता।
निर्बल हम सबल ईश्वर तुम, कर्ता इस जग के पालक हो।
अंखियों से नीर बहें मेरे, क्यों भूले मुझे दयालु हो।
तुझे पुकारे तेरे बालक, प्रीति निभाओ प्यारे प्रियतम।
अनजानी जग की पगडण्डी, दूर हटाओ प्रभु जग का तम।
पार लगा दे मेरे नाविक, डरपे जियरा करता धक धक।
मेरे नैनन में बस जाओ, लगे न डर मैं पहुँचू तुझ तक।

1816

नहीं मिले हमें किनारा, पर शिकायत हो नहीं।
सहन हो जो हमें दे दे, पास रह भटकूँ नहीं।
दास तेरे घूमते है, नयन से लगती झडी।
चाहते हरपल कृपा हम, जीव की तू ही कड़ी।
दुनिया के तुम ही मालिक, नाचता ब्रह्माण्ड है।
तेरी कठपुतली प्रभु हम, सब नवावें माथ हैं।
नाम तेरा ही लिये हम, पार इस भव को करे।
ना कभी विश्वास टूटे, जप सदा तेरा करें।
बहे जायें हो समर्पित, ना किनारा जानते।
बस हृदय में हम अबल प्रभु, प्यार तेरा चाहते।
अर्चना आंसू से मेरी, पास में कुछ भी नहीं।
रूठ ना जाना कभी तुम, प्राण की धड़कन तुही।

1817

समझ सके नहीं तेरे इंगित, कितने दुख पाये जीवन में।
संग मेंरे हरपल तुम रहना, बरसात बरसती नयनों में।
कदम लड़खड़ाते मेरे यह, जग के पालक ना भुला हमें।
बहते मेरे नयना देखो, वर दे दे पाये नाथ तुमें।
तुम भूल न जाना बालक हम, तुम्हारा सहारा प्रभु हमें।
मन मन्दिर में तुम बस जाओ, मेरी साँसों में सदा रमें।
तुम साथ हमारे हो अनुभव, हम खोज रहे तुम मिलो नहीं।
बूंद मिटे सागर सारा है, यह दृष्टि हमें दे सदा तुही।
सुख दुख की धूप छाँव में प्रभु, तू खेल खिलाता है हमको।
तेरा बस नाम सहारा है, तुम प्यार सदा देना हमको।
स्वीकार करो मेरी पूजा, जल गिरता पग धो लेने दो।
तन मन की सुध भूलूँ सारी, बन लहर मुझे बस बहने दो।

1818

चरण पड़ा मैं चरण न दीखे, लाज राखना नहीं ठिकाना।
बहती नदिया बहता हूँ मैं, नीर गिरे तू ले नजराना।
अबल नाथ पथ नहीं जानता, सुन ले विनती मेरे माही।
सिसकी लेता तुझे पुकारूँ, विलग नहीं कर दे दे राही।
पाप पुण्य कर्मों की रेखा, कैसे दे पाऊँगा लेखा?
सुख की चाहत में भटक रहे, उलझ उलझ गिर खाते धोखा।
अबल हम प्रभु नाथ संभालो, नयना बरसे मेरे रिमझिम।
सद्पथ पर प्रभु सदा चलाना, आन मिले तुमसे हम प्रियतम।
लहर बने नदिया में बहकर, दिल में तुमको नाथ वसा कर।
बीत जाये सारा अफसाना, सुनो विनय मेरी तुम गिरधर।
सुख दुख धूप छांव का मेला, दर्द दिये अब सहे न जाते।
पार लगा दे अब तो छैला, करें विनय हम तुमको पाते।
सारी सुध मैं भूल जगत की, डूबूं मैं तेरे दरिया में।
अगम अगोचर पार न तेरा, नहीं भुलाओ मुझको मग में।

1819

तेरे द्वारे नाथ पड़ा हूँ, राख मोहि शरणाई।
जनम जनम की प्यास मिटे सब, अंखियां भर भर आई।
सकल जगत के तुम हो पालक, प्यार मिले खिल जाई।
उड़े सुगन्ध चहुँ ओर जग में, डर फिर पास न आई।
अगम अगोचर पार न तेरा, खोजे मनुआ डेरा।
प्यार हमें दे अबल नाथ हम, कटा जाये दुख घेरा।
अंखियाँ बरसे तुमको तरसे, पी पी प्राण पुकारे।
दया मिले तेरी बसन्त हो, जिय के मल सब जारे।
तू ज्ञानी मैं हूँ अज्ञानी, जाने अन्तर्यामी।
अपनी कृपा बनाये रखना, सकल सृष्टि के स्वामी।
चढ़े नयन का जल चरणों में, सांसों में बस जाये।
मूरति तेरी नयनों में हो, लहर कहीं ले जाये।

1820

तू मन शिकायत नहीं करे, अंखियाँ कितनी ही झरे।
अपनी अपनी चाह सबकी, नाम ले हरी का तरे।
मेला सब जाता बिछुड़ता, जाने न खो जायें कब?
दर्द का दरिया है बहता, ना भुलाना मनुआ रब।
तम में दीपक तो वही है, छोडों मैं सब वही है।
प्यार से अपना ले उसको, बरसे सावन झड़ी है।
चले जा जब तक है ताकत, गिर पड़े देखेगा रब।
अपनी मर्जी से न आना, ना पता जायेंगे कब?
ईश के चरणों मे पड़ जा, पथ वह तुमको दिखाये।
गीतों को गाकर उसी के, चले जा उसको पाये।
उसको भज ले प्यार से मन, कटेंगे सारे बन्धन।
छोड़ो जग की प्रीति पागल, बसा ले दिल में मोहन।

1821

प्रभु तुम ही नाथ हमारे हो, चलें हम तेरे सहारे है।
तेरी यादों में सफर कटे, जग वैभव लगते खारे हैं।
झर झर अंखियों से नीर गिरें, बीता जाता सारा जीवन।
सुन कर वन्शी को चैन मिले, तू बजा बजा मेरे मोहन।
कोयल गाती आता बसन्त, तुम बिन जीवन लगता पतझड़।
निष्ठुर मत हो मेरे मोहन, रस्ता मेरा ऊबड़ खावड़।
दर्द तुम्ही हो दवा तुम्ही, कैसा यह खेल खिलाये है।
व्याकुल मनुआ यह सोंच रहा, सुपना सा सब खो जाये है।
तुम कृपा सदा हम पर रखना, हम तो अबोध और अज्ञानी।
जड़ चेतन राज्य तुम्हारा है, प्यासे हैं तुम देना पानी।
तेरी बगिया में नाथ खिले, तू ही है प्रभु मेरा माली।
विधि से वन्चित करता पूजा, स्वीकार करो मेरी थाली।

1822

बनता तू है क्यों खामोश, जग का तू रचैया है।
नहीं पैरों में है ताकत, सहारा दे चाहा है।
कांटो से भरी धरती है, खिलते फूल इसमें भी।
यह अंखियां रो रही कितना, संभाल नाथ हमें भी।
यह तड़फे प्राण मेरे हैं, क्यों बरसे झमेले हैं।
यह ऑख देखना चाहे, लगता हम अकेले हैं।
ओ भगवान प्यार तू दे दे, संग हमें तू अपने ले।
थकी रो रोकर यह अंखियां, परीक्षा न ले हम पगले।
जीवन का दाता तुही है, थक तुमसे करें विनती।
पिता तू मेरी माता है, तरंगे अनगिनत उठती।
नाचूँ मैं देखकर तुमको, हाथ की मैं कठपुतली।
लगे आंखे मेरी तुम पर, भुलाऊँ बसन्त होली।

1823

प्रभु मेरे दिल में आओ, डगमगाती नाव है।
मार्ग में अंधियारा है, तुझ कृपा की चाह है।
नाथ मुझसे रूठ ना तू, मैं भिखारी द्वार का।
खड़ा झोली मैं लिये हूँ, जल न सूखे ऑख का।
प्राण प्यासे है तड़फते, जल पिला जिय हो हरा।
ज्ञान दे दे भटकतें हैं, तेरा हमें आसरा।
ऑखों में मेरे लाली, नयन रो यह सूजते।
आ जाओ मेरे माली, तुमसे मिलें तड़फते।
सदा करता रहूँ सुमरण, ज्ञान का दीपक जले।
नयन में बस जा मुरारी, फूल मुरझाया खिले।
विछुड़ कर तुमसे प्रभु जी, नहीं जग में ठांव है।
झर रहे यह नीर मेरे, तू हमारा ठांव है।

1824

कैसे समझाऊँ यह मनुआ, समी सयाने जग की यह गति।
अपनी अपनी चाह लिये सब, सोच समझ वरना है दुर्गति।
दुख ना दे करूणा को अपना, प्यार बाट ले जग है सुपना।
बिछुड़ रही सब लहर यहाँ मिल, पल दो पल का है बस मिलना।
कर न शिकायत शुभ करता जा, नियति खेलती अपना खेला।
मर्जी अपनी से ना आना, लिये जा रहा तुमको रेला।
ऋषि योगी सब ध्यान लगायें, देखत फिरें कहाँ से आये?
आंसू जो बहते नयनों से, करो समर्पित हरि को पाये।
हरि को सुमरो हरि को जी लो, जख्म लगे हरि से ही सी लो।
दो दिन की जिन्दगानी सारी, जाम उसी का हरपल पी लो।
प्यास भूख और चाह सताये, पल पल अंखियाँ नीर बहाये।
करो जतन पर हरि ना भूलो, मिटे सभी पर हरि ना जाये।
बस जाये यदि हिय में मोहन, नदी लहर को खुद ले जाती।
सुध बुध सारी छोड़ जगत की, मीरा बन आंसू छलकाती।
धन्य हुए हैं वही जगत में, किया समर्पण छोड़ स्वयं को।
लहरायेगा यह तो सागर, रहो देखते इसकी गति को।
अपना कुछ ना सब कुछ हरि का, गीत हरी के गा चलता जा।
बन्जारा बन जग में घूमो, मिले जहाँ डेरा तू छिप जा।

1825

नयनन हरि छवि बसा बाबरे, उसका ही तू ध्यान लगा ले।
यहाँ दर्द का दरिया बहता, सदा वही जो तुझे संभाले।
जग से प्रीति यहाँ कर हारे, नयन बहाये आंसू खारे।
संध्या यह अब ढलती जाती, बिन हरि तुझे न कोई तारे।
जप हरिनाम सहारा वह ही, मर्जी उसकी आना जाना।
पागल मनुआ चैन वही है, मन मन्दिर में उसे सजाना।
गिरते आंसू देखे पथ को, गये हार हमको तुम बल दो।
चल कर तुझ मन्दिर तक आयें, मिले प्यार तुम्हारा वर दो।
हरि हरि कहते बीते जीवन, तन मन मेरा हो यह पावन।
बीते यह पतझड़ का मौसम, लहराये गाये फिर सावन।
तुम हरि सारे जग के स्वामी, पिला हमें दे अपनी प्याली।
अज्ञानी हम पथ दर्शा दे, पड़ू. पांव आंखों में लाली।

1826

कितने छूटे कूल यहाँ पर, नहीं यहाँ इसकी गिनती।
कूल हमें मिल जाये तेरा, नहीं चाह कोई रहती।
नाच रहा ब्रह्माण्ड यह सारा, तुझमें सांसो को लेता।
क्यों भटकन में भटक रहा मैं, नैया सबकी तू खेता।
कैसे पाऊँ मैं अज्ञानी, तिमिर हटा कर दीप जला।
नयनों में मेरे बस जाओ, दन्श मिटे ना रहे गिला।
मात पिता तुम ही पालक, जिय मेरा करता धक धक।

1842

कुछ समय की रात बाकी, बीत जायेगी घड़ी।
नयन हरि से मन लगा ले, धन्य हिय मूरति जड़ी।
आ गये जाना वहाँ है, खेल थोड़ा सा यहाँ।
मन उलझ न भूल उसको, मिट रहा सब कुछ यहाँ।
दर्द ले कर चल रहे हैं, नीर अंखियों से बहें।
तू नहीं हमको सुने यदि, तो बता किससे कहें?
कौन सा बन्धन लिये हैं, तोड़ जो पाते नहीं।
इस अंधेरी रात में प्रभु, कर उजाला ओ मही।
देव तुम रूठो नहीं अब, कर रहे हम अर्चना।
सृष्टि के हो नाथ स्वामी, अब मिटा दो सुलगना।
झूमती चलती हवा है, कूकती कोयल यहाँ।
तुम बिना अच्छा न लगता, डगमगाते पग यहाँ।
चलते है गिर जायेंगे, भूलना हमको नहीं।
प्यार तेरा चाहते है, छोड़ कर छिपना नहीं।
प्यार की तू भीख दे दे, चाह नयनों में रमें।
मेरे सर्जक दास तेरे, कर दया पथ दे हमें।

1843

पगले निज मन ना समझाये, रोये धीरज कौन बंधाये?
खोजें किसको इस जंगल में, मनुआ यह उड़ता ही जायें।
करी शिकायत तू ना छाया, जग के मेले में भरमाया।
नहीं रूकेगी बहती लहरें, खिलकर फूल यहाँ कुम्हलाया।
ना अपना कुछ खेल चल रहा, नाच लहर पर सभी बह रहा।
दो दिन का यह मेला जग में, छूट रहे सब काहे रो रहा।
प्रीति चाह तू प्रीति संजोले, हरि सुमरण कर जग में बह ले।
मर्जी उसकी आना जाना, समझ बाबले उसको जप ले।
हरि हरि कहते बीते जीवन, तन मन सब कुछ हो फिर पावन।
गुजरेगी थोड़ी सी बाकी, समझो खिल जायेगा उपवन।
अन्तस हरि का दीप जला ले, नैनन में मन उसे बसा ले।
चलता जा जग के मेले में, भय सब छोड़ उसे अपना ले।

1844

तुमसे विनती नाथ करूँ मैं, कभी नहीं तू मुझसे रूठे।
प्राण विसर्जित हो हरि कहते, बने रहो प्रभु जी तुम मीठे।
दास तुम्हारा सुधि को ले लो, दन्श लगे जो उनको हर लो।
नीर बहाये अंखिया मेरी , क्षमा मुझे कर उनको लख लो।
तुझे पुकारूँ भटक रहा मैं, अपनी मंजिल मैं ना जानूं।
दीप जला अज्ञान हरो प्रभु, सदा साथ मेरे यह जानूं।
कितने रंग बिखेरे जग में, प्यास मिटे ना हम सब जल में।
तेरा विरह सदा सुख देता, बढ़ा विरह को मेरे तन में।
जीवन दाता मेरे पालक, नाथ हुआ हूँ मैं भिखमंगा।
तुझे भूलकर ठोकर खाऊँ, कृपा करो यह मन हो चंगा।
नयनों में हो तेरी मूरति, सांस सांस हो तुझे समर्पित।
सहज बहा अपनी लहरों में, प्रीति रंग में होऊ विसर्जित।

1845

जगपालक प्रभु दुख के नाशक, याद तुझे कर मन सुख पाये।
सुमरण कर कट जाये संकट, करो भजन मन जीवन जाये।
पथ न और तू क्यों दुख पाये, जियरा उस बिन ना हर्षाये।
कन्ट लगे पथ में इस जग में, नाम उसी का शान्ति दिलाये।
डूब उसी में पी अमृत को, याद उसे कर मन सुख पाये।
राम पकड़ बीते अफसाना, जीवन नदिया बहती जाये।
प्रीति बढे भय सारे छूटें, नीर गिरें हिय को सुख देवें।
मिले भक्ति वर हरिकृपा से, विनय करो हरि प्रीति बढ़ावें।
नयना हरि मूरति बस जाये, साँस सदा ही उसे बुलाये।
सागर में नाचें सब लहरें, सब भूले हम वह ही गाये।
मनुआ प्रेम करो बस हरि से, उसका जीवन वह ही जाने।
जग में उलझा बना विवश तू, बढ़ा प्रीति ना रो दीवाने।

1846

पिय बिन बता हँसे कैसे हम, जीवन के गीत रचूँ कैसे?
तड़फ रहा हिय तुम बिन ऐसे, जल बिन तड़फे मछली जैसे।
झरते आंसू को तुम देखो, नाथ शरण में अब तुम रख लो।
ठोकर पर ठोकर खा गिरता, प्रीति बढ़ा कर तुम अपना लो।
कुछ भी ज्ञान नहीं है हमको, भटक रहे हम इस जंगल में।
मेरे देवता तुम न रूठो, दीप जला दो इन नयनों में।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, कैसे इसको झुठलाओगे?
खुश हो लें दो चार घड़ी हम, मेघ नहीं क्या बरसाओगे?
बिना प्रीति के चैन नहीं है, इसको मेरे दिल में भर दो।
टूटें सब कर्मों की बेड़ी, अपने अंचल में छिपने दो।
शान्ति सुधा को तुम वर्षा दो, मेरे उपवन में फूल खिलें।
दो दिन के इस जीवन को जी, प्रभु प्रेम भरा हो तुझे मिले।

1847

सुपने बसन्त के नयनों में, पतझड़ मुझ पर हँसता आया।
जी सके नहीं मर सके नहीं, पीड़ा का सागर लहराया।
लहरे उठती फिर गिर जाती, कैसी विचित्र है यह दुनिया।
जा रहे ठगे मेले में हम, ना जान सके मंजिल है क्या?
दो बून्द गिराती यह अंखिया, अम्बर भी यह चुप रह जाता।
सब टूट रहे जग के रिस्ते, ना जोड़ सके हरि से नाता।
कैसे इस दिल को समझाये, सुनसान अंधेरी रातों में।
बिन कृपा मिले ना पथ हमको, हरि दीप जला मेरे घट में।
तेरी रहमत का प्यासा जग, दो बूंद पिला कुछ कमी नहीं।
तन मन यह सारा पावन हो, तुम बिन हमको ना ठौर कहीं।
तेरे गुण गायें कटे सफर, अन्तिम बस नाम तुम्हारा हो।
लेना संभाल हरि तुम हमको, इस सकल सृष्टि के स्वामी हो।

1848

जगपालक वह दुख का नाशक, मनुआ हरि का भजन करो।
पीड़ा दिल की वही मिटावे, उससे ही बस प्रेम करो।
नयन बसा ले उसकी मूरति, सुगम होय राहें टेढ़ी।
राम बसे नाचे यह मनुआ, टूटे कर्मों की बेढ़ी।
सभी अंधेरा छट जायेगा, जुड़ जाये हरि से नाता।
हृदय कमल भी खिल जायेगा, दूध पिलाती यह माता।
बिन हरि चैन नहीं है मनुआ, कितना चाहे जतन करो।
अलग यहाँ पर इच्छाये, सभी भूल कर भजन करो।
बहती जाती है यह नदिया, जलध बीच मिल जायेगी।
साँसों में यदि हरि बस जाये, पीड़ सभी मिट जायेगी।
दो दिन का मेला है जग में, छोड़ सभी कुछ जाना है।
जप ले हरि को छोड़ शिकायत, पगले वही ठिकाना है।

1849

जाये प्रतिपल रूदन बिखरता, नीर ढुलकते नयनो से।
क्या अपराध हुआ है मुझसे, पूछ रहा हूँ प्रभु तुमसे।
तुम हो सर्जक ज्ञात दिशा ना, भटक रहे इस जंगल में।
अनजान यहाँ प्रभु कृपा करो, दीप जला दो इस घट में।
शक्तिमान तुम अबल नाथ हम, सकल सृष्टि के स्वामी हो।
दुख के इस बहते सागर में, नाथ तुम्ही तो तारक हो।
शीश झुकाये करें अर्चना, नाथ हमारी सुधि को लो।
जियरा मेरा कांप रहा है, प्रीति बढ़ा कर अपना लो।
अंधियारी रातों में प्रभु जी, तू ही एक सहारा है।
लगे सुरतिया तुम में प्रभु जी, मन शीतल हो जाता है।
विरह बढ़ाओं प्रभु जी अपना, तुम बिन हम ना रह पाये।
मृगमरीचिका से प्रभु बचकर, चरणों की रज को पाये।

1850

जीवन सारा बीता जाता, चैन मिला ना जी भर रोया।
दुनिया हरपल रंग बदलती, नये नये सुपनों में खोया।
जहाँ ठहर जायें यह आँखे, मोहनी मुरति हमें दिखा दे।
मिटे दन्श सारे इस जग के, मुझे प्रीति में नाथ डुबो दे।
मेरे देवता छिपे हो क्यों, देखो इन झरती आँखो को।
जनम जनम से भटक रहे है, दया करो दे दो आंचल को।
प्यार मिले मन नाचे गाये, नीर गिरें वह फूल उगाये।
पल दो पल के इस जीवन में, संग तुम्ही यह भान न जाये।
अज्ञानी हूं भटक रहा हूँ, तुम सा ना कोई भी ज्ञानी।
फिर भी मेरी झोली खाली, प्यासा हूँ तू दे दे पानी।
तुझे पुकारूँ मैं रो रो कर, करूँ अर्चना विधी न जानूँ।
खाती हिचकोले यह नौका, सुने ले बस इतना ही जानूं।

1851

वसो हृदय मेरे तुम स्वामी, मेरी बात को सुन लो नाथ।
ज्ञानी अज्ञानी रंक राजा, सब ही नवावें तुमको माथ।
अबल यहाँ सब सूना लागे, नीर बहाऊँ तू ना आवे।
विनय करूँ प्रभु नहीं विसारो, विरह बढ़े बढ़ता ही जावे।
सांस सांस में जपें तुझे हम, मेरी नौका पार लगा दे।
जग के आंगन में भटक रहे, उलझ गिरूँ पथ को दर्शा दे।
कर्मों की जंजीर में उलझा, चाहत लेकर मैं भटका।
कैसे मिले प्यार तुम्हारा, संकट कट जाये जीवन का।
करें वन्दना हाथ जोड़ कर, पाप पुण्य सब तेरी रचना।
दुष्कर्मों से हमें बचाओ, मिले प्यार तुम्हारा सजना।
सूख गई सरिता जीवन की, मिले दया तू नाथ बहावें।
निशदिन तेरा ध्यान धरें हम, करूँ विनय ना हमें भुलावे।

1852

तुम करो वह ठीक होगा, मैं करूँ वह गलत है।
राजी तुझी से हो सकूँ, तम मिटा हम अबल हैं।
ढूंढ़ते फिरते हैं मन्जिल, हाथ यह आती नहीं।
नीर दिखलायें किसे हम, छिप गये तुम भी कहीं।
प्यार तेरा चाहते है, भूल ना नाविक मुझे।
डगमगाती नाथ नौका, दीखता ना मग मुझे।
पार करो मेरी नौका, गुनगुनायें गीत को।
यह कटे सारा सफर फिर, पा सकें तुझ प्रीति को।
तू अनन्त, अनन्त पथ है, सहारे को चाहते।
एक पल को भी न भूले, वर हमें दे मांगते।
नमन को स्वीकार कर लो, बस हमारा कुछ नहीं।
देख लो नैना उठाकर, जी भरे फिर गम नहीं।

1853

दिल तो नहीं लगता यहाँ, सुन लो मेरी विनती।
कितने गिरे आँसू यहाँ, ना इनकी है गिनती।
देव तुम सर्वज्ञ मेरे, तुम ही मेरे भर्ता।
बसन्त रूठा क्यों बता, चरणों में हूँ पड़ता।
डोलता मझधार में मैं, किनारा ना दीखता।
मुझको नहीं इतना रूला, तू क्यों ना पसीजता।
चाहता हूँ प्यार बस मैं, दुःख सारे फिर कटे।
अनजान यह डगर मेरी, तम यहाँ सारा मिटे।
यह नीर मेरे बह रहे, तू दयालू देख ले।
सिर झुकाये हम खड़े हैं, मुख नहीं तू फेर ले।
अबल हम तुम शक्तिशाली, तुम्हे पाये पथ दे।
याद में खोयें तुम्हारी, चाहते यही वर दे।

1854

तुझ कृपा से चल रहे हम, प्रभु लाज मेरी राखना।
दास हम है तुम हो स्वामी, नाथ तुम ही सम्भालना।
यह दुनिया भागी जाती, ना पता कहाँ जायेगी?
आ रही है याद तेरी, चाहूँ बढ़ती जायेगी।
पार करो मेरी नौका, तुम खिवैया हम पुकारे।
कांपती मझधार में है, करो दया तू ही तारे।
स्वप्न बनते टूटते हैं, रंग कितने ही बिखेरे।
रंग अपने रंग में तू, मिट जाये जी के घेरे।
दर्द कितना है छलकता, कौन जो नयना निहारे।
जी नहीं लगता यहाँ पर, आ मिलो तुम प्राण प्यारे।
कौन सा यह खेल चलता, हम तो भटकते फिर रहे।
देख लो नयना उठा कर, यह प्राण तो प्यासे रहे।
नाचती यह सृष्टि सारी, तू खिलाता खेल छलिया।
विमुख हो दुख पा रहे हैं, दे हमे पथ मिले सैया।
जिय के जीवन तुम्ही हो, दूर क्यों मुझसे हुए हो।
जाये रम दिल तुम्हीं में, तम मिटे सभी तुम्ही हो।
डगर है अनजान मेरी, ना पता कहाँ जायेगी?
कंठ प्यासे हैं तड़फते, प्यास तू ही मिटायेगी।
नयनन बस जाओ मेरे, तुम करो उपकार इतना।
सृष्टि के तुम हो रचैया, हिय बसो फिर डर लगे ना।

1855

मन जिसको सुनकर तू रीझे, कौन गीत मैं गाऊँ?
अनजानी जग की पगडण्डी, चाहूँ फूल खिलाऊँ।
सागर की लहरें हैं हम तो, तज अभिमान न पाऊँ।
छोड़ बहे सागर संग मन तू, पुलकित हो हर्षाऊँ।
कहाँ जायें न कोई मंजिल, सागर संग लहराऊँ।
उठे लहर खो जाये इसमें, समझ नहीं क्यों पाऊँ?
मृगमरीचिका छोड़ बावरे, सागर ही तब पाऊँ।
उठती गिरती लहर खेलती, खेले तरता जाऊँ।
पीड़ित मन की पीड़ा लेकर, लिये जख्म दुख पाऊँ।
सब घट रहता वह ही भीतर, जान मुक्ति को पाऊँ।
बहता सागर सब कुछ सागर, समझू ना दुख पाऊँ।
लहर जुड़े सागर के संग जब, मिटे दंश सुख पाऊँ।

1856

चुप तुम रहो ना, कहो हमसे।
कटता सफर ना, रूठ हमसे।
आँसू रहे गिर, खोये यहाँ।
निष्ठुर बनो ना, सूना जहाँ।
कटती ना रैना, ना सहारा।
क्यो छिप गये हो, दे सहारा।
पूजूँ तुझे मैं, हिय बसाऊँ।
मेरी विनय है, तुझे पाऊँ।

1870

आया नहीं सुनाने नगमा, जीया रोय जगत में भटका।
हारी थकी निहारें अंखियां, दीप बुझा है मेरे दिल का।
हरपल मेरा ध्यान लगाऊँ, कैसे तुम बिन मौज मनाऊँ ?
कितने सावन बीत गये हैं, तरसा तुम बिन गिर-गिर जाऊँ।
हे आराध्य करुणा सागर, नीर गिर रहे मेरे झर-झर।
खोजूँ कहाँ पता ना तेरा, जग में तू ही सबसे सुन्दर।
कसक कलेजे से निकले ना, छिपे कहाँ ओ मेरे छलिया।
मात-पिता सर्जक तुम मेरे, पार करुँगा कैसे डगरिया।
मुझे सहारा दे दो ईश्वर, अन्धकार है कुछ दीखे ना।
बहते नीर प्रभु तुम लख लो, दया बिना तुम पग पाऊँ ना।
हाथ जोड़ कर द्वार खड़ा हूँ, अज्ञानी हूँ बस रोता हूँ।
तेरे इंगित पर सब कुछ है, रुठो ना मैं विवश हुआ हूँ।

1871

राम नाम तू जप ले मनुआ, दो दिन का मेला जग सपना।
ईश्वर से तू प्रीति लगा ले, किसको सदा यहाँ है रहना।
दो दिन के जीवन को लेकर, फिरें यहाँ हम इतराते से।
तनिक वेदना से पीड़ित हो, नीर गिराते हैं अंखियों से।
तुझसे ही प्रभु वर को पाते, हाय तुझे ही हम विसराते।
हम ठगनी माया में पड़ते, ईश्वर हमको खूब नचाते।
कह-कह हार गया जागा ना, सुख भी जीवन में पाया ना।
रहा भटकता जीवन भर ही, अपने प्रियतम को पाया ना।
प्यासी रही मीन जल भीतर, तुझ भीतर मैं भी प्यासा हूँ।
कैसा तेरा चक्र चल रहा, नहीं समझ तुझको पाता हूँ।
जलती शमा पतंगा आता, प्रीति लगा कर वह मिट जाता।
इतना सा ही खेल जगत में, नहीं समझ मेरे क्यों आता।

1872

गिरते यहाँ हम जा रहे हैं, दीखता कुछ भी नहीं हैं।
तुम ना रुठो मेरे प्रभु जी, तुम बिना हम कुछ नहीं हैं।
तुमको बसाये इस नयन में, पार इस भव को करेंगे।
चाहे आये फिर ना आये, चाह नहीं विसरायेंगे।
अज्ञानी हम सर्जक तुम हो, यह गीत मेरे रो रहे।
अपना यह दिल किसे दिखाये, हे ईश तुम भी सो रहे।
नयन में है मूरत तुम्हारी, जग की लूँ सारी गारी।
तुम नाता न मुझसे तोड़ना, मैं ईश जगत से हारी।
तेरी ही यादों में खोकर, हम भूलते जग के जहर।
करना ही नहीं शिकवा हमें, यहाँ बही जा रही लहर।
विनती स्वीकार करो प्रभु जी, तुम ईश न मुझसे विसरो।
यह भान रहे हैं संग मेरे, चाह मेरी पूर्ण करो।

1873

जीवन के कुछ पल गुजार कर, ना जाने कित खो जायेंगे।
तुझे रिझा ना पाये निष्ठुर, हम रोते-रोते जायेंगे।
गया बसन्त कोयल न कूकी, जियरा रोया नींद न टूटी।
फंसा रहा मैं जगत चक्र में, गई बहारे किस्मत खोटी।
कित जायेंगे पता नहीं हैं, खो सुख पाया नहीं एक पल।
जलता रहा सदा जीवन में, नहीं मिटी यह दुख की हलचल।
दुख के नगमें क्या कहतें हैं, किस सुख का सृजन करते हैं।
बन वैरागी जी ले जग में, ज्योति जला भूले जिसको है।
नश्वर प्रीति यहाँ क्षण भंगुर, वह ले जाता है हमें किधर।
खोजे आंखे उसी एक को, नयन बहायें आंसू झर-झर।
चलते-चलते खो जाये हम, तुझे नहीं प्रभु विसराये हम।
एक सहारा तू ही मेरा, भुला सकें जिससे अपने गम।

1874

पा सके नहीं प्रभु तुमको हम, यह दर्द लिये ही जायेंगे।
थक गये यहाँ हम चलते-२, ना पता कहाँ गिर जायेंगे ?
कर-कर यादें अंखियां रोई, तू नहीं पसीजा निर्मोही।
रहे ढुलकते आंसू हमरे, सुधि क्यों हमरी प्रभु ली नाही।
प्रीति तुझी से प्रभु करते हैं, याद तुझे कर मर जायेंगे।
जा रहा डूबता यह तारा, फिर कभी नहीं तड़फायेंगे।
ना मना सके प्रभु हम तुमको, हम हाय जिन्दगी से हारे।
रुठी हमसे सारी खुशियाँ, क्या भाग्य ले आये प्यारे ?
गीतों को लिख रोया जग में, यह हाय शुन्य में सब खोये।
ऐसी भी हमरी करनी क्या, हम विलख-विलख कर प्रभु रोये।
अंसुओं में प्रीति छिपी प्रभु लो, तुम एक बार हमको लख लो।
जीवन का होवे यज्ञ पूरा, मेरे जीवन अब तो सुन लो।

1875

तेरे बिना भटके सदा ही, सुपने सजाते ही रहे।
नहीं पा सके वह मुकाम हम, पाते तुझे रोते रहे।
जो आग थी इस दिल में लगी, जलती रही ना बुझ सकी।
बरसात आंसू की हुई है, बिन चैन तुझ ना पा सकी।
रुठो नहीं हे ईश तुम भी, नहीं तुम बिन कुछ दीखता।
चलने को मैं चला जा रहा, मग में अंधेरा दीखता।
हिय में जला दो दीप मेरे, कटे तम जो मुझे घेरे।
नहिं देर करना ईश मेरे, प्राण यह दिन-रात टेरे।
हम खोज क्या ले चल रहे हैं, तुम बिना हम रो रहे हैं।
हम अजनबी से इस जगत में, आस तुमसे रख रहे हैं।
प्रभु प्यास है जल तू पिला दे, नीर को स्वीकार कर ले।
इस बहते तिनके को प्रभु जी, दे सहारा मुक्त कर ले।

1876

मैं घूमता वीयावान में, कुछ दीखता हमको नहीं।
तेरा सहारा खोजता हूँ, पर तू नजर आता नहीं।
मैं देखता आकाश चुप है, सब ही कहाँ पर जा रहे।
है कौन सी वह प्यास लेकर, इस सृष्टि में है चल रहे।
भाग्य लेकर कैसा चलते, चाहा मिलें पर न मिलते।
जैसे नदी के छोर दो हैं, पर ना मिलें रहे लखते।
नभ तप्त धरती देखता जब, उसका हृदय जाता पिघल।
ईश्वर ना पत्थर तुम बनो, मेरे बहाते नयन जल।
हम तो विरह के गीत गाते, इस जग में खो जायेंगे।
यह प्यास भी हमें है प्यारी, चाह है ना भुलायेंगे।
चलते रहे खोजे तुझे हम, भूले तुझे न एक पल।
अब शाम ढलती जा रही है, मेरे तुम्ही हो एक बल।

1877

सुख तुझमें है छिपा, तुम्ही हुये मुझसे खफा।
दुख हरन मंगल करन, नहीं बनो तुम बेबफा।
लखो हमें ईश तुम, दर्द लेकर जायेंगे।
थके चलते-चलते, कित पता गिर जायेंगे।
ढूंढता अन्धेरा, मारग भी दीखे नहीं।
तुझ किरन मिल जाये, डगर कठिन है फिर नहीं।
तुझ करुणा का भिखारी, जागूं मैं रात सारी।
बन नहीं निर्मोही, इस जगत से प्रभु हारी।
सृष्टि स्वामी तुम्हीं, क्यों छोड़ छिप गये कही ?
अज्ञान से है हम घिरे, गिरे गर्त में हम नहीं।
नयन से अश्रु गिरते, बस तुमको याद करते।
चरणों में बसा लो, कुछ ना हम और कहते।

1878

हरि तुम मुझको नाहिं विसारो, चरण पड़ूं मैं तेरो।
मोहि तुम बिन कुछ ना सुहावे, ना मुझसे मुख फेरो।
अंखियां झर-झर नीर बहावें, मिलन घड़ी कब आवे ?
आग लगी हिय में हे प्रभु जी, तुम बिन हम क्यों जीवें ?
नैना हरदम बाट निहारें, तुम छवि ही मन भावे।
अन्धकार से ढकी चदरिया, तू ही ज्योति जगावे।
तुमको जपता फिरुँ जगत में, जग में ना भरमावे।
रोते नयना तुझे पुकारें, कूल न कोई पावें।
जीवन के दिन कट जायेंगे, रहूँ तुझी में डूबा।
करुँ अर्चना नहीं भुलाऊँ, सबसे मन है ऊबा।
नीर गिरे हिय में बस जाओ, पल भर ना विसराओ।
खेवट मेरी नैया के तुम, मुझको पार लगाओ।

1879

हम ढूंढते तुमको, छिपते क्यों फिर रहे हो ?
ना अश्रु यह रुकते, सब मेरे तुम हुए हो।
अंसुओं की दे कसम, बिन मोल पर यह बहते।
कैसे रिझायें हम, ना पास कुछ भी रखते।
सीने में दर्द है, बस तुम नजर हो आते।
दीखो किसे पीड़ा, जब तुम ही रुठ जाते।
बीतती हैं घड़ियां, पागल यह दिल हुआ है।
क्षमा करना मुझको, नहीं गुनाह किया है।
दीपक सा मैं जलूं, तुमको भुलाऊँ ना पल।
मतिमन्द हूँ बालक, अंखियां चढ़ायें है जल।
अर्चना हम करते, होवे विदा संसार से।
कहते वह सुर नहीं, कर ना वंचित प्यार से।

1880

हरि तुम बिछुड़े चैन न पायो, इस जग में प्रभु मैं भरमायो।
किसकी आंखों में मैं झांकू, दर्द तड़फता मैंने पायो।
निशदिन तेरी करुँ आरती, नित मेरा श्रृंगार सजाऊँ।
रहुँ तेरे दर हर पल प्रभु जी, विलग नहीं तुझसे हो पाऊँ।
जग में घूंमू खोज लिये क्या, रोये नयना तुम बिछड़ो ना।
अपना मुझको दास बना लो, कर अनाथ प्रभु तू मुझको ना।
चलू डगर पग मोरा कांपे, जीया तुमको मिलने तरसे।
पतझड़ देखे आये बहार, क्यों न रिमझिम-रिमझिम बरसे।
बस जाओ तो कटे सफर यह, अन्धकार में दीप जले यह।
तुम बिन और यहाँ क्या रक्खा, अज्ञानी को वर दे दे यह।
पांव पड़ूं हरि नहीं विसारो, झरते नयना इनको लख लो।
रो-रो अपनी व्यथा सुनाते, आया शरण तुम्हारी रख लो।

1881

राम नाम मेरे धुन भाई, हरि तुम मेरो बनो सहाई।
मैं हूँ प्रभु जी दास तुम्हारा, राखो तुम मोही शरणाई।
चक्र यहाँ तेरा चलता है, वश न किसी का भी चलता है।
नामी राजा बन जाते हैं, खाक वही तन फिर बनता है।
ज्ञानी भी तुमको जपते हैं, जपते-जपते खो जाते है।
नहीं जगत में शान्ति तुम बिना, बिन तेरे रोते रहते हैं।
अंखियां हर पल तुम्हें निहारें, ना निर्मोही बनना प्यारे।
विरह अग्नि जो लगी हिया में, भस्म होऊँ न बिछुड़ो प्यारे।
कर्मो के बंधन में बंधकर, बने भ्रमित हम घूम रहे हैं।
अवश यहाँ देखो प्रभु हम है, चाह मुक्ति की तड़फ रहे हैं।
चरणों में सिर रख लेने दो, रो-रो अपनी व्यथा सुनावे।
जी भर मुझको रो लेने दो, और नहीं कुछ करना आवे।

1882

लाज रखो हरि मैं शरणाई, जीवन दाता तुम सुखदाई।
भूले तुम्हे यहाँ दुख पावें, सबकी सुनता तू ही सांई।
प्यार तुम्हारा हम जो पावे, सारे संकट फिर कट जावें।
तू ही सबका पालक प्रभु जी, सारे जग को नाच नचावे।
आ मिलो मोहि प्राण पुकारें, कट जाये भव बन्धन सारे।
जग का कण-कण तुममें घूमे, सुधि ले लो तुम मेरे प्यारे।
एक छत्र है राज तुम्हारा, रो कर कहते दुखड़ा सारा।
कैसे रीझो ना हम जाने, गिरते नीर काहे विसारा।
ठोकर खाऊँ गिर गिर जाऊँ, सदा सहारा तेरा चाहूँ।
टप टप गिरते आंसू कहते, जीवन तुझ बिन मै ना चाहूँ।
द्वार तुम्हारे ईश खड़ा हूँ, कहूँ तुझे क्या घट रीता है।
बन कर मेघ बरस जाओ तुम, बस तू ही मेरा सुपना है।

1883

लिखूँ तुझे पाती ना जाने, रोये अंखियां ना माने।
भटका पर ना मिला किनारा, माफ करो तुम दीवाने।
तेरी मूरत है अति सुन्दर, बसे हुए घट के अन्दर।
फिर भी हमको नजर न आये, खेल खिलाये गिन-गिन कर।
नील कण्ठ शिव नाम तुम्हारा, पिया हलाहल तू सारा।
भूत प्रेत नाचे तुझ सम्मुख, विषधर घूमे ना हारा।
शेष नाग शैया पर सोकर, दुख से तुम हुए बेखबर।
ऐसा ज्ञान कहाँ से लायें, रोते दुख को पग-पग पर।
मुझको कहना है हे ईश्वर, तेरी सन्तान सभी हैं।
दुख दरिया से हमें निकालो, नहीं ज्ञान से पूरित हैं।
नयना रिमझिम-रिमझिम बरसे, चाह प्यार पाने तरसे।
छिपे कहाँ वन्शी के स्वामी, बजा इसे जो हिय हरषे।

1884

तेरा हम श्रृंगार करे हैं, छोटे-छोटे हाथों से।
तू ही जग का प्रभु स्वामी, मन बहलाये इन सबसे।
भोग लगावे हम सुख पावे, दाता तुम सारे जग के।
मग में नयना राह निहारे, प्राण हुए तुम हर घटके।
ढूंढू जग में तुझे न पाऊँ, नीर बहाऊँ अंखियों के।
बेदर्दी हम तुझे पुकारे, दर्द हरो तुम ही सबके।
अज्ञानी बन भटक रहे हैं, ज्ञान बिना दुख है बरसे।
दीप जला हिय में मेरे प्रभु, जीया मेरा है हरषे।
संग मेरे तू तुझे न जाने, बने फिरे हम दीवाने।
रोये अंखियां तुम बिन सजना, भीख हमें दे मस्ताने।
अन्तहीन न कोई किनारा, ले जाये कित यह धारा।
चरण पड़ा हे ईश संभालो, इस जग में मैं हू हारा।

1885

चाहें हम वह ना होता है, जो प्रभु चाहे वह होता है।
यदि जान सके हम जीवन में, क्या रोना फिर जीवन में हैं ?
जड़ चेतन सब समझ रहे यह, चल मंजिल को पार कर रहे।
कौन दया पर निर्भर हम है, आंख न खोलें खूब रो रहे।
बुद्धिमान कोई मूरख है, भिन्न-भिन्न जग में सूरत है।
दुख-सुख की छाया में पलकर, जीव यहाँ जग में भटके है।
अपना-अपना दर्द लिये सब, बने बाबले घूमे जग में।
भूख-प्यास की ज्वाला में जल, पाप-पुण्य को भूले मग में।
हे ईश्वर पथ हमें दिखा दो, प्रेम डगर पर हमें चला दो।
अज्ञानी हैं भटक रहे हैं, ज्योति-पुंज तुम ज्योति जला दो।
योग्य नहीं हम बालक तेरे, लगा रहे हैं दुख के फेरे।
चरणों में सिर रख रोने दो, मिट जाये जीवन के घेरे।

1902

गीत गूंजते फिर खो जाते, पता नहीं तेरा यह पाते।
देख रही है रोती अंखियां, बीत गये युग तुम ना आते।
सुन्दर सुपने सजा-सजा कर, पास तुम्हारे से हम आते।
चूर-चूर जब होते जग में, उठता धूंआ फिर हम रोते।
खिलता फूल करे प्रार्थना, कर स्वीकार मेरी अर्चना।
कांटों से तुम मुझे बचाना, मारग मेरा यह अनजाना।
तुम्हें जपते ईश्वर हम तो, कभी हमें मिल जाओगे।
जिया जले जो विरह अग्नि में, मैं चाहूँ भस्म लगाओगे।
जग के सब सुख है क्षणभंगुर, साथ तुम्हारा हो क्या फिर दुख।
तुम अविनाशी शक्तिमान हो, बिना कृपा न मिलता यह सुख।
दो दिन का मेला है छलिया, भूल हमें ना जाना रसिया।
थक हारे हम पड़े द्वार पर, पार लगा दे मेरी नैया।

1903

हे हरि कृपा करना हम पर, तुम्हारी शरण आते है।
याद करें हम हरदम तुमको, नयनों में आंसू आते है।
पाने को प्यार भटकते हैं, तुम साथ रहो यह कहते हैं।
जग के अनजाने रस्ते पर, सम्बल तुमसे ही पाते हैं।
सकल सृष्टि के तुम स्वामी हो, अविनाशी दुख के भंजक हो।
जपे तुझे जो सुख देते हो, पीड़ा को उसकी हरते हो।
कितने स्वप्न संजोये मैंने, चैन मिला ना तुमको भूले।
तुम बस जाओ मेरे हिय में, पड़ जायें सावन के झूले।
ऋषि-मुनि करते है ध्यान तेरा, दिन रात पीते जाम तेरा।
वह जाम पियूं सुधि बुधि खोऊँ, इतना करो अहसान मेरा।
जग के मालिक जग की जानो, तुझे हिय बसाये कर्म करें।
रो-रो कर तुझसे यह मांगे, अन्तिम क्षण तेरे चरण गिरे।

1904

हरि जप मनुआ एक सहारा, इस जीवन को देने वाला।
जो कुछ चाहे मांग उसी से, सब कुछ वह ही करने वाला।
जग के झंझावत में वह ही, हरपल वह ही हमें बचाये।
देख न पाऊँ कहीं छिपा है, आंखों में बस आंसू आये।
तेरी यादें लागें मीठी, क्यों मन भटक-भटक यह जाये ?
आंख मिचौनी खेल न प्रभु जी, चाह यही बस तुमको पायें।
मेरे खेवट मुझे संभालो, इस नौका को तुम्ही उबारो।
डूब रही है मेरी नैया, रोती अंखियां मुझे निहारो।
तेरे साये में ही जी कर, बीते पल बस चाह यही है।
जग में ठोकर पर ठोकर खा, हार गया ना राह कहीं है।
बहता इन अंखियों से पानी, तुझ कृपा मिल जाये स्वामी।
नहीं विसारो मुझे अबल मैं, दास तुम्हारा मैं हूँ स्वामी।

1905

लागे ना जियरा यह डोले, चाह यही बस तुमको पाये।
मेरे देवता तुम ना रुठो, नहीं ठिकाना तुम बिन पाये।
गीतों को हम तुझे सुनायें, इस जग में मन को बहलायें।
साथ संग सब छूटा जाये, अंखियां पल-पल नीर बहाये।
दास बना लो मुझको अपना, सकल सृष्टि का तू है स्वामी।
आता आंखों में है पानी, माफ मुझे कर अन्तर्यामी।
यहाँ छूटता सब कुछ जाये, पकड़ न आये शोर मचाये।
नाशवान सब कुछ दुनिया में, अच्छा हरि से प्यार बढ़ाये।
यहाँ विवशता में हम फंसकर, बस कोल्हू के बैल हुए है।
फिर भी जप ले हिय में उसको, जाते पल कुछ शेष रहें है।
रोये उस बिन हाय भटकते, चलती है उसकी ही मर्जी।
बहते नीर करें हम विनती, आना जाना उसकी मर्जी।

1906

अश्रु ढुलकते रहे नयन से, इस जीवन में कोई आये।
पोंछे बहते आंसू मेरे, सदियां बीत गई ना आये।
मीठी बातें किसे सुनाये, तुम बिन किससे प्यार जतायें।
हरपल तेरी करें प्रतीक्षा, जीया मेरा भर भर आये।
इन नयनों की ज्योति तुम्हीं हो, इस जीवन के प्राण तुम्ही हो।
जैसे जल बिन मछली तड़फे, हम भी तड़फे छिपे कहाँ हो ?
जोर नहीं यह माना हम में, काहे हमें विसारा तुमने।
तेरी आहट को सुनने को, निशदिन अखियां देखे सुपने।
मेरे खेवट पार लगाओ, डूब रहे ना नजर चुराओ।
अज्ञान तिमिर में फंसा हुआ, अपनी करूणा को दर्शाओ।
सुमरण तेरा सदा करें हम, हरपल तेरा ध्यान धरें हम।
बहती जाती जीवन नौका, तुमसे दूर कभी ना हो हम।

1907

चाहा बहुत तुमको यहाँ, होनी उड़ा ले चली।
ना मानता कोई यहाँ, हाय दुनिया से छली।
दर्द को कैसे उठाऊँ, जी रहे हम क्यों यहाँ?
तेरी मुस्काहट पाने, जन्म सौ लेंगे यहाँ।
देखते ही देखते सब, हो रहे ओझल यहाँ।
कौन किसका है जगत में, तन भी अपना ना यहाँ।
पार वह ही लगायेगा, मन सुमर हरि को सदा।
कब कौन कहाँ जायेगा, हो रहे पत्ते जुदा।
नयन में आंसू हमारे, कर नहीं कुछ पा रहे।
देखते ही देखते सब, दूर हमसे हो रहे।
पीड़ हिय में है सुलगती, मीन जल बिन तड़फती।
ईश की बिन किरपा हाय, आंख हरदम बरसती।

1908

प्रीति लगा ना जग मेले से, सफल कर जीवन सुमरण से।
नदी नाव संजोग यहाँ पर, बिछुड-बिछुड़ जाते अपनों से।
रोवें अंखियां वह नहिं आये, मन को धीरज कौन बंधाये।
इन्तजार की जाती घड़ियाँ, चलो यहाँ फिर सब मिट जाये।
कितने स्वप्न संजोये हमने, साथ चलेंगे हरदम तेरे।
मुझे छोड़ तू बीच भंवर में ,चला गया अरमान बिखेरे।
थका यहाँ मैं खोज सहारा, मिला हमें न कोई किनारा।
ईश कृपा अपनी दिखला दो, टूट गया दिल मैं हूँ हारा।
दिल भी मेरा यहाँ गया बुझ, करे नहीं कुछ रोवे अंखिया।
ले लो ईश्वर तुम मेरी सुध, पार करो हे जगत खिवैया।
करूँ प्रतीक्षा बैठ द्वार पर, अंखिया नीर गिराये झरझर।
तेरी यादों में ही खोकर, तुझे पुकारूँ मेरे हरि हर।

1909

प्रीति न तोड़ो पांव पड़ू मैं, मुझको हे हरि ना विसराओ।
नैनन में मेरे बस जाओ, सांसों में मेरे रम जाओ।
यह दिल तुझी में हरि लगावे, सारे दुख मेरे कट जावे।
तुझे पुकारूँ जग आंगन से, अंखियाँ मेरी नीर बहावे।
भजते रहते तुमको निशदिन, ना अनाथ कर ईश्वर हमको।
तुम बिन मेरी दुनिया सूनी, नीर गिरे बस चाहें तुमको।
तेरी करूणा को प्रभु पाया, फिर भी जग में मैं भरमाया।
रोऊँ हरपल मेरे मोहन, छिपो न तुम मैं चाहूँ साया।
भटक रहा मैं जियरा रोये, तेरा जीवन मेरा कुछ ना।
विखराये तू रंग अनेंको, कसक कलेजे की जाये ना।
तू सुन पुकार सुन ले पुकार, नयनों में है आंसू का हार।
इस जीवन का तू ही श्रृंगार, झोली को लेकर खड़ा द्वार।

1910

हरि बिना हम कहाँ को जावें, ठौर नहीं कोई भी पावें।
मेरे भगवन हमें देख लो, अंखियां झर झर नीर गिरावें।
बस जाओं तुम खो जायें हम, मिट जाये सारे फिर यह गम।
आंसू मेरे कहते तुमको, हम हैं अबल ईश तुम सक्षम।
उर संशित पग डगमग होते, कैसे पार करेंगे रस्ते।
तुम्हीं बतादो मेरे मोहन, विरह अग्नि में हरपल जलते।
पड़ जायें सावन के झूलें, तेरा प्यार मिले मन झूमें।
लहर लहर लहराये भू पै, आनंद बरसे मेरे हिय में।
सुपनों में मैं तुझे सजाऊँ, नये नये नित गीत बनाऊँ।
तुझसे ही मैं संबल लेकर, इस जग में मैं चलता जाऊँ।
रात अंधेरी आस सुबह की, बीत रहे पल चाह मिलन की।
आसूं बहते कहते तुमसे, रूठ न जाना बात हिय की।

1911

हरि नहिं छोड़ो चरण पडू मैं, दास तुम्हारा जन्मों का मैं।
तुम बिन नयना भये बावरे, हरपल नीर बहाऊँ हरि मैं।
पलपल बीत रही हैं घड़ियां, कैसे पाऊँ तोहिं सांवरिया।
क्यों मुझसे तुम रूठ गये हो, भटक रहा ना चैन सांवरिया।
नयनों के मोती लुटते है, भूल गया पथ मुझे दिखा दे।
खूब लुटे पर अब तो लख ले, वन्शी की धुन मुझे सुना दे।
विरहअग्नि जल जाये जीया, रूठ न जाना मेरे पीया।
तेरी यादों में बस जीते, नहीं और कुछ मेरे हीया।
तेरी यादों को ही लेकर, बीते मेरे दिन जीवन के।
भूलूं कभी न जलूं भस्म हो, घर पाऊँ अपने साजन के।
प्यास जगा दे मुझे मिटा दे, खाली झोली तू यह वर दे।
बस जाओ तुम इन नयनों में, तेरी मही कृपा सबको दे।

1912

ईश तुमसे प्रीति तोड़, मैं कहाँ पर जाऊँ?
खिला तेरी बगिया में, पथ मिले हर्षाऊँ।
सूना सूना लगे सब, कित छिपे मेरे रब ?
आसूं यह मेरे बहे, तुमको पुकारें रब।
आंखों में नींद नाहिं, दिल में चैन नाहिं।
बीतें न ऐसे यह दिन, सुन तू जगत माही।
चलूं मैं संभल संभल कर, संभल पर ना पाऊँ।
बहते रहें यह आंसू, तुझे अर्ध चढ़ाऊँ।
नयन में सपने मेरे, मिलने की आस है।
तड़फे यह जीय मेरा, मिलने की प्यास है।
मुरझा यहाँ हम जायें, फिर भी न होगा गम।
झलक यहाँ देख लेते, मिट जाते रहो तुम।

1913

शरण मुझे हे हरि तुम रख लो, चहुँ दिश कोई नाहिं बूझे।
मुझ अनाथ को संरक्षण दो, रस्ता मोहि कोई न सूझे।
सुधि मेरी ले लो करुणाकर, तुझ किरपा बिन खाऊँ ठोकर।
डर लागे जिय कांपे थर-थर, अंखियां नीर गिरायें झर-झर।
रोती अंखियां तुझे पुकारे, मत हमको तू प्रभु बिसरावे।
चरण पडू मैं दास तुम्हारा, अज्ञानी को तुही बचावे।
जग में आया चाहत लाया, टूटी देख-देख कर रोया।
अन्धकार से घिरा हुआ मैं, ढूंढ रहा प्रभु तेरा साया।
मुझे संभालो सर्जक मेरे, गिरे जा रहे तुमको टेरे।
कैसे तुझे रिझाऊँ रसिया, कट जायें यह दुख के घेरे।
घना अंधेरा ज्योति जला दो, जीवन में उल्लास जगा दो।
कट जायें यह जीवन के पल, शान्त चित्त सद्बुद्धि जगा दो।

1914

खोजा तुमको हरि पा न सके, हम मिटा सके न कर्म कलुष।
नहीं जख्म अपने दिखा सके, जीवन के तुम थे इन्द्रधनुष।
हे ज्योतिपुंज करुणा सागर, हम ईश्वर द्वार पड़े तेरे।
देखो नयना बहते झर-झर, प्रभु अन्धकार, तुमको टेरे।
दो बूंद अमी की हमें पिला, मिट जायें जग के समी गिला।
मेरे हिय में तुम बस जाओ, प्यासा हूँ जल को तुही पिला।
सारे जग के तुम स्वामी हो, मैं भटक रहा तुम छिपे कहाँ।
सारा लगता सुनसान जहाँ, ईश्वर बता दो जाये कहाँ ?
जन्म-मृत्यु सुख दुख इस जग में, ना रुला हमें तू पल-पल में।
मेरे सर्जक मेरे हमदम, हमको संभाल लो इस पथ में।
नहीं बनो निर्मोही प्रभु तुम, यह नैया देखो डूब रही।
प्रभु नयन निहारें तुमको ही, झड़ियाँ आंसू की बुला रही।

1915

हरि तुम बिन न कोई सहारा, फिरता जग में मारा-मारा।
कृपा तेरी होवे स्वामी, दुःख मिटे जीवन का सारा।
अन्तर्यामी सृष्टि रचैया, पार लगा दो मेरी नैया।
बीच भंवर में डूब रही है, लो सुधि को मेरे कन्हैया।
सुमरण तेरा सदा करे हम, फिर भी टूट रहे है ना भ्रम।
कर्मपाश में बंधे हुए हम, तेरी ओर निहार रहे हम।
अगम अगोचर मुक्तिदाता, कैसे पाऊँ भाग्य विधाता।
खाली झोली ले फिरता हूँ, नयना मेरे आंसू आता।
तू ही मेरा पालनहारा, तुम बिन मुझसे रहा न जाये।
नहीं करो प्रभु मुझसे किनारा, याद तुझे कर नयना रोये।
हे जगदीश कृपा दर्शा दो, विलग न तुझसे हम हो पाये।
सूखी झील लबालब भर दो, झूंमे नाचें तुझ गुन गाये।

1916

हरि तेरी ही महिमा गाऊँ, मैं प्रीति लगाऊँ बस तुझमें।
कटे सफर इस जीवन का यह, बस जाओ हरि मेरे घट में।
हम कस-कर याद तुझे रोये, हम भटक रहे तुम कित खोये ?
बैचेन हुए जग में घूमें, हरि बता तुझे कैसे पाये ?
मतिमन्द यहाँ अज्ञानी हम, प्यासा दिल यह अंखियां है नम।
हम द्वार पड़े हे हरि तेरे, रुठो ना मुझसे ना है दम।
तू सकल सृष्टि का मालिक हे, सन्तान तुम्हारी पालक है।
यह नयना तुमको ढूंढ रहे, तुम बिन यह जीवन खाली है।
हम हार गये तुम ना आये, जीवन सारा बीता जाये।
हम मृगमरीचिका में भटके, हरि कृपा करो तुमको पायें।
पूजा की थाली दीप नहीं, रोये अंखियां है ज्ञान नहीं।
हे हरि संभाल लेना तुम ही, कुछ पल बाकी हैं विनय यही।

1917

हे हरि तुम हो नाथ हमारे, हम सेवक हैं दास तुम्हारे।
ढूंढ रही हैं तुमको अंखियां, तुम हो जीवन प्राण हमारे।
सकल मही पर राज तुम्हारा, तू ही सबका पालन हारा।
तुमको सुमरण कर सुख पाऊँ, चाहूँ ईश्वर प्यार तुम्हारा।
रो कर तुमको नाथ पुकारे, इस जीवन को देने वाले।
ताप हरो प्रभु प्यार बढ़ा दो, मिट जायें सब हिय के छाले।
अज्ञानी हूँ भटक रहा हूँ, रोये नयना तरस रहा हूँ।
अन्धकार में दीखे ना पथ, भीख दया की मांग रहा हूँ।
तुझ बन्शी की धुन सुनने को, जियरा मेरा कान लगाये।
कितनी सदियां बीत गई हैं, हुआ विवश मैं आंसू आये।
ईश मुझसे प्रीति को जोड़ें, कुछ न सुहाये मुख ना मोड़ो।
डूबेंगे हम भवसागर में, मुझे अकेला तुम ना छोड़ों।

1934

उस पार क्षितिज के पता न क्या, सूनी अंखियां देख रही है।
अनन्त कथायें यहाँ जन्मी, अपनी-अपनी सुना रही हैं।
सुख खो जाता दुख खो जाता, होता है वह कैसा प्रकाश ?
निर्धूम ज्योति जलती रहती, मिटती जाती फिर सभी आस।
लहरों का अपना क्या जग में, सागर ही खेल रहा सब में।
व्याकुल हो लहरें डोल रही, ना जान रही क्या है घट में।
सुपनों के जाल बुने हमने, आंसू से भी सींचा हमने।
हम ठगे रह गये उस पल जब, जग छोड़ा क्या पाया हमने।
होनी हरदम यहाँ नाचती, अनहोनी का सांग रचाये।
क्षण भर का जो मेल यहाँ पर, नहिं पता कौन कब खो जाये ?
चलता जा खेता जा नौका, नहिं पता यहाँ क्या हो जाये ?
नयनों में तू बसा जलध को, तू लय इसमें ही हो जायें।

1935

खेल तेरा नाच मेरा है, चले तमाशा देख रहा।
सुख दुख की चक्की में पिसकर, पागल मनुआ सोच रहा।
किस कोने में छिपे हुए हो, आंसू को ना लखते हो।
कैसे इस मन को समझायें, तुम ही मेरे सर्जक हो।
खिलने से पहले मुर्झाया, ऐसा हूँ फूल यहाँ मैं।
तुमको खोजा खोज न पाया, भटक रहा मैं इस जग में।
अश्रु लुटायें इन आंखों ने, नहीं किसी ने भी देखा।
ऐसे भी हम क्या अपराधी, कौन ले रहा यह लेखा।
तेरे खेल निराले भगवन, अज्ञानी हैं बालक हम।
यहाँ जल रही बगिया मेरी, तुझे पुकार लगाते हम।
साथ हमारे तन्हाई है, रोते पर तुम ना आये।
खेल खिलाओ ऐसा भगवन, देख तुझे जिय हर्षाये।

1936

जो भी है वह बस सुन्दर है, आंखों में बसा समुन्दर है।
कहने का कुछ अधिकार नहीं, दुख प्रगट करे वह सब कम है।
दुख-सुख हम सृजन यहाँ करते, अपनी चाहत में हम फंसते।
उदर भूख से भटक रहे है, साधन सुख के थोड़े पड़ते।
राम बिना न कोई सहारा, धन्य वही जो हरपल भजते।
जग की तपती पगडण्डी पर, सब कुछ भूल उसे ही लखते।
टूटा दिल कितने हैं शिकवे, कहें किसे पर रोवे सुपने।
जन्मों-जन्मों से भटक रहे, पा सके तुझे ना तुझे अपने।
खिल-खिल फूल यहाँ गिरते हैं, बिना खिले भी गिर जाते हैं।
तुम्हें बसाये हुये हिय में, धन्य वही बस कहलाते है।
सुख-दुख का दो पल का जीवन, ढलती फिरती सब माया है।
प्रीति लगाले जो बस तुमसे, कटे सफर तू ही छाया है।

1937

सरिता सागर में गिरने को, चहुँ ओर देखती अपनों को।
जिनके साथ गुजारें यह पल, देखे छूटे सब मिटने को।
देख रही यह सूनी अंखियां, नियति यही क्या ढल जाना है।
कांटो की पीड़ा से हमको, कैसे पार यहाँ जाना है।
फर्क नहीं हम कैसे समझे, सोंच-सोंच कर मनुआ पागल।
जो सरिता है वह ही सागर, नहीं निकलता कोई भी हल।
नहीं टूटते सुपने क्षण भर, विचलित होते रहते पल-पल।
कैसे समझाऊँ मैं यह मन, नहीं सूखता अंखियों का जल।
तेरा ही यह नृत्य चल रहा, समझ नहीं मैं पागल होता।
चाहूँ नशा पिला दे अपना, सुधि बुधि विसरा तुझमे खोता।
ईश कृपा तेरी हो जाये, हिय में बस तू ही रम जाये।
टूटें यह फिर सुपने सारे, बहता जाऊँ जित ले जाये।

1938

सांस-सांस में तुझे जपे हम, प्राण पुकारे तुमको हर पल।
इन नयनों से नीर गिरे प्रभु, चरण चढ़ावे सूखे ना जल।
भटक रहा तुमको पाता ना, रो-रो कर बस रह जाता हूँ।
कृपा करो भव पार उतारो, निज को विवश यहाँ पाता हूँ।
तेरी दुनिया रंग-बिरंगी, कहाँ खो गया मेरा सब रस।
तुझ यादों में गुजरें सब दिन, मांगू तुमसे यह दे दे बस।
कैसा यह संसार बनाया, नहीं मुझे कहने का कुछ हक।
जख्मी हो कर घूम रहा हूँ, रोता हूँ गिर मैं फवक-फवक।
अपनी शरण मोहि राख लो, नहीं सहारा कोई भी है।
कैसे तुझे रिझाऊँ निष्ठुर, हम हैं अबल-सबल तू ही है।
दो दिन का जीवन ले आये, कुछ तो इसमें फूल खिला दे।
महकें हम तेरी बगिया में, बसा तुझे हम सभी भुला दे।

1939

खिलने से पहले मुर्झाये, जीवन का संगीत न भाये।
ऐसा निष्ठुर जीवन देकर, पल-पल में हमको तड़फाये।
कहते सब हैं खेल कर्म का, कोई राजा कोई रंक है।
कैसे याद करें अतीत को, हमको कोई बोध नहीं है।
हम कठपुतली बने नाचते, चाहे जैसे हमें नचाये।
एक चाह बस अब है बाकी, दिल में मेरे तू बस जाये।
हार चुका सब तर्क खो गया, पीड़ देख यह हृदय जल रहा।
बरसे नैना तुझे याद कर, इसमें ही बस चैन मिल रहा।
यही चैन मिल जाये प्रभु तो, कट जाये यह जीवन सारा।
बिन कृपा नहिं कटे यह बन्धन, तू है मेरा प्राण अधारा।
मेरी प्यास तुम्ही बन जाओ, जग चालक तुम जगत चलाओ।
अज्ञानी हूँ माफ मुझे कर, भीख भिखारी को दे जाओ।

1940

एक गम हो तो कहे हम, गम तो अनेकों हैं यहाँ।
उस चमन को खोजते हैं, गम का निशा ना हो जहाँ।
हम तुम्हारे द्वार आये, थक गये हैं इस जहाँ में।
थाम लो बहियां हमारी, हम देखते हैं शून्य में।
न कोई अपना ठिकाना, सुनता न मेरी जमाना।
तू बता किसको पुकारें, गमों में डूबा फसाना।
बिन मिलन न बीत जाये, देख लो तुम इक नजर से।
इस जहाँ में हम भटकते, नीर बहते तुझ विरह से।
यहाँ किस्ती डगमगाये, ना किनारा दीखता है।
लाज प्रभु तुम राख लेना, दिल हमारा बैठता है।
जाये यहाँ बढ़ते कदम, सुनता रहूँ वंशी की धुन।
चाह सारी हो विसर्जित, मैं कर तुझे पाऊँ जतन।

1941

गीत बनायें प्रभु हम तेरे, मेरा जियरा रमें तुझी में।
जन्म मरण का चक्र भूलकर, जपे नाम तेरा गीतों में।
लहर बनी तेरे सागर की, देखूँ नाचे तू सब घट में।
अहंकार का होय विसर्जन, सब बन्धन से मुक्त बनूं मैं।
अंधकार से भ्रमित हुआ हूँ, नाचे तू मैं कौन हुआ हूँ।
सुपनों की दुनिया में खोकर, हरपल तुमको भूल रहा हूँ।
छोटी-बड़ी लहर है जग में, अपना-अपना खेल दिखायें।
धूप छांव का खेल-खेल कर, देखत-देखत सब खो जाये।
एक लहर दूजी को देखे, अन्तस में वह नहीं निहारें।
अन्तस देखे दुखड़े खोवें, समझ कहानी जीवन सुधरे।
नहीं जोर कुछ भी इस जग में, सब उसकी मर्जी चलती है।
बिन हरि कृपा न होवे कुछ भी, बस अंखियां हरदम रोती है।

1942

हारता हूँ जब जहाँ में, देखता सब लुट रहा है।
तन साया बैरी होता, दूर सब कुछ हो रहा है।
याद आती है तुम्हारी, लिख न पाते तुझे पाती।
इस कलेजे की चुभन बस, हमें है पल में रुलाती।
तुझ दया की हमें चाहत, पा सके तुम्हें ईश हम।
मेरे खिले दिल के सुमन, नहीं फिर कभी होवे गम।
तुम्ही हो मेरा सहारा, कर नहीं मुझसे किनारा।
चाह तेरी का खिलौना, बहती आंसू की धारा।
जन्म बीते हाय बिछुड़े, किसलिये इस राह गुजरे।
क्यों बनाते हो तमाशा, पथ दिखा दो जन्म सुधरे।
हारे थके बैचेन हम, तुमको निहारें नयन यह।
बांसुरी की धुन सुना दो, लय प्राण होवें तभी यह।

1943

भगवन तुम्हारी लीला का, ना पार किसी ने भी पाया।
हारे ऋषि मुनि ज्ञानी सारे, सब ही चाहें तेरा साया।
कृपा करो तुम हम बालक हैं, सारे जग का संचालक है।
तैर रहे आंखों में आंसू, पार लगा दे तू खेवट है।
आये बसन्त यदि तू रीझे, पतझड़ मिट जाये जीवन का।
प्यासे दिल की प्यास मिटे तब, हो जायें दर्शन साजन का।
बिन तेरे अंधियारी रातें, सूझे पथ ना पल-पल गिरता।
दया करो करुणा के सागर, नीर नयन से प्रभु जी गिरता।
कितने रंग खिले इस जग में, तेरे बिन यह जियरा तरसे।
मन यह भटक-भटक दुख पावे, प्रियतम मिल जाये तो हरषे।
नाच रहा कण-कण में तू ही, रोता दिल यह क्यों निर्मोही ?
तेरी छवि बस जाये दिल में, कठिन डगर हो मिलती राही।

1944

सुख से जीने की आशा में, हम घूम रहे हैं सब जग में।
कल क्या होगा ना हम जाने, जीते रहते बस सुपनों में।
विषय भोग से तृप्ति न होती, नहीं नाम ईश्वर का लेते।
खुद से नहीं संभलती नैया, बने बावले से हम फिरते।
सोंचा नहीं कभी क्यों आये, लक्ष्य जिन्दगी का ना जाने।
नहीं वासना पूरी होती, पूर्ण वह घट में जो जाने।
सुख-दुख का हम खेल-खेलते, ना जीवन का राज खोजते।
सोंच समझ तू हुआ बावरा, अनजानी सांसों को लेते।
सर्जक कौन यहाँ जो खेला, जीवन यह दो दिन का मेला।
कांटों में भी फूल खिलाकर, दे सुगन्ध वह कैसा छैला।
नमन करें ईश्वर के आगे, बस प्रकाश उससे ही पाये।
नहीं सहारा और जगत में, जान सकें जीवन सुख पाये।

1945

स्वास्थ की मिट्टी में मिलकर, नफरत के बीज यहाँ फलते।
जिनको हम थे देव समझते, वह भी हमको खारे लगते।
जिनकी अंगुली पकड़ चले हम, झटके से उनको छोड़ चले।
सोंचे सुख दे सकते कितना, विगती बातें सब भुला चले।
जिस डाली पर फूल खिला, वह मुरझा उस पर ही जाता है।
सच समझ सके यदि जीवन में, वह अनासक्त फिर बहता है।
जग का नियम जान यह सच है, उठ-२ कर फिर गिर जाना है।
जो पवन खिलाती इस तन को, बस उससे ही उड़ जाना है।
हरि भज हरि भज सब माया है, अन्तिम इसका ही साया है।
मत झांक और की नजरों में, तू सोंच कहाँ से आया है ?
अज्ञात जहाँ से तू आया, अज्ञात जगह पर जाना है।
अज्ञात हरी से प्रीति लगा, जो छिपा शून्य में जाना है।

1946

हरि भज हरि भज वह दे सुवास, जीवन का वह ही है प्रकाश।
विसर नहीं पगले उसको तू, वह ही जीवन का है अकाश।
अन्तस में जब ज्योति जगावे, जब हमको वह राह दिखाये।
वह प्रकाश ही बाहर आये, जियरा उस बिन भटके जाये।
नहीं ठिकाना उस बिन कोई, धूप छांव का खेल खिलाये।
मैं को छोड़ लहर बन जा तू, सागर ही सब नाच नचाये।
जग के आंगन में हम भटके, अन्तस में उससे ही पूछो।
वह दिखायेगा पथ तुमको, बहते आंसू अपने पोंछो।
हरि की हरियाली मिल जाये, हरि को अपने हिया बसायें।
जन्म मरण के सब बन्धन से, हरि ही हमको मुक्त करायें।
चलते जाओ हरि ना भूलो, बेड़ा पार करेगा वह ही।
जीवन दिया वही बस जाने, जीवन का धन है बस वह ही।

1947

उठती गिरती लहरें देखो, आता जीव और जाता है।
देख-देख कर मनुआ पागल, नीर बहाता हरदम यह है।
वह देखो उस पार क्षितिज के, बन्शी कोई बजा रहा है।
हरदम नीर यहाँ झरते हैं, प्राण हमारे तड़फ रहे है।
सुनूँ नहीं बातें कर पाऊँ, कैसे उसको हाय रिझाऊँ ?
प्रेम पींग बिन मैं प्रियतम के, नहीं गगन में मैं उड़ पाऊँ।
तुम सुन लो न कोई हमारा, रस सूखा जीवन का सारा।
कृपा सिन्धु तुम कृपा करो अब, हार चुका मैं जीवन सारा।
तेरी दया हमें मिल जाये, इस भव से फिर हम तर जायें।
अंखियों के तुम नीर देख लो, नहीं और कुछ भी दे पायें।
हम है अबल-सबल तुम ईश्वर, सारे जग के तुम पालक हो।
नमन करो स्वीकार हमारा, तुम ही तो मेरे सर्जक हो।

1948

जीवन में कितने जाल बुने, अन्तिम क्षण देखा ठगे गये।
न वसा सके मोहनी मूरत, संसार छोड़ कर चले गये।
बस जाये हिय तेरी मूरत, दुख पार चली जाये नौका।
संकट फिर सारे कट जायें, तू देख हमें डगमग नौका।
हम शरण तुम्हारी दुख भंजक, तुम दे दो प्रभु अपना अंचल।
अज्ञान तिमिर में घूम रहे, चाहे प्रभु हम तेरा संबल।
इस जग के कर्णधार तुम्ही, सारी दुनिया के पालक हो।
रोती अंखियां मेरी देखो, मेरे जीवन के सर्जक हो।
जायें कहाँ हम आस तू ही, जीवन के मेरे तुम माली।
सूखी बगिया में फूल खिलें, राजी हो लग जाये लाली।
मंजिल मेरी हो भटक रहा, निज चरणों को धोने देना।
यह नीर बरसते है मेरे, तुम क्षमा मुझे बस कर देना।

1949

इस सारे जग के रखवाले, हम तेरी प्रभु स्तुति करते है।
सुख शान्ति ईश करो वर्षा, तेरे बालक हम सब तो है।
अज्ञान तिमिर में भटक रहे, तुम ही तो हमरी आशा हो।
तुम ज्ञान दीप प्रभु दर्शा दो, करुणा के तुम तो सागर हो।
कांटों से भरी डगरिया है, महके फूलों से उपवन है।
जिस पर हो जाती ईश कृपा, चहुँ ओर बरसता सावन है।
प्यार तुम्हारा प्रभु हम चाहे, सद्कर्मो में बढ़ते जायें।
बन कर महकें पुष्प यहाँ हम, देकर सुवास लय हो जाये।
दूर घृणा के भाव यहाँ कर, तेरी दुनिया में रंग भरे।
नित प्रेम बढ़ाते यहाँ चलें, दुखियों के दुख को दूर करें।
प्रभु मेरे हिय में बसे रहो, अपने चरणों में सदा रखो।
तुम पार करो मेरी नौका, बहते आंसू हैं ईश लखो।

1966

हरि की लीला हरि ही जाने, मैं को छोड़ यहां दीवाने।
बहता जा तू जलध बीच में, प्रीति इसी से कर दीवाने।
पकड़ सके ना इन लहरों को, बही जा रही निज सुपनों में।
सुपने टूटे मैं जब छूटे, बहो नहीं कुछ अपने वश में।
पल दो पल का मेल यहां है, जाते पल बिछुड़े न पता है।
प्यार करो बस इसी जलध से, सबके अन्तस यही वसा है।
सुमर इसी को हरपल मनुआ, शिशु रोये वह मां को मिलिया।
हरि-हरि करते मैं खो जाये, लहराता है बस वह छलिया।
भूख हमारी मिट ना पाती, अंखियां रोती है दिन राती।
करे अर्चना हरि सम्भालो, लिख लिख तुमको भेजे पाती।
लहरें तेरी क्या है अपना, बीता जाता है यह सुपना।
रोते प्राण पुकारे तुमको, हमें लगे बस तू है अपना।

1967

रामा तेरी धुन प्यारी, क्यों न जाती डूब सारी।
इस जगत का क्या प्रयोजन, तू जाने तुझ पै बारी।
प्यार अपना तू हमें दे, दिल नहीं लगता यहां है।
नयन से यह नीर गिरते, छिप गया तू किस जगह है।
अर्चना स्वीकार कर लो, जिन्दगी का गान दे दो।
तेरे गुण को गाये हम, ईश नैया पार कर दो।
विवश हम कितने यहां है, अतृप्त बने हम भटकते।
लाज मेरी राख लो तुम, विनती यही हम तरसते।
तू है दाता मैं भिखारी, सुनों मेरी ज्ञान दाता।
दीप दिल में तू जला दे, रूठ मत मेरे विधाता।
तम की चादर बिछी है, कर्म की बेड़ी पड़ी है।
ले चलो सजना मुझे तुम, सांस थोड़ी सी बची है।

1968

जो इतने क्रूर हुए मुझ पर, राखे उनसे क्या आशा है?
अन्तस में डूबो याद करो, अज्ञात छिपा निर्माता है।
जपता जा तू हरपल उसको, पथ तुझको वह दर्शायेगा।
आशा की ज्योति वही मनुआ, बिन सुमरे तू दुःख पायेगा।
लहर बड़ी कोई छोटी है, हर तरफ होड़ का खेल यहां।
ना चैन मिले भटके मनुआ, झर-झर झरते हैं नीर यहां।
पाप-पुण्य, दुःख-सुख का मेला, धीर धरे ना मन हो मैला।
भूख कभी न हमारी मिटती, वहीं मिटाये तम है फैला।
बूंद मिटे कैसे सागर में, विलग हुई वह डोल रही है।
प्रियतम के बिन चैन मिले ना, विरह अग्नि में सुलग रही है।
सभी क्रूरता भूल जगत की, मैं प्रभु जाऊं तुझ पर बारी।
सुपने आंखों में तेरे हो, ना हो जीवन से अब यारी।

1969

जलता रहा सदा जीवन भर,थक कर तेरे दर पर आया।
हे हरि तुम अब आखें खोलो, मिटती जाती मेरी काया।
अगम अगोचर पार न तेरा, प्रभु जी हमें सहारा तेरा।
नैया मेरी पार लगा दो, मुझको बीच भँवर ने घेरा।
तू ही आशा इस जीवन की, बन कर मेघ बरस जायेगा।
करूणा के सागर कहलाते, सुख के तू दीप जलायेगा।
हरि हरि करते सब पल गुजरे, कभी नहीं तू मुझसे विसरे।
खो जाऊँ सब भूल जगत को, करुँ विनय यह तुमसे प्यारे।
तू ही आशा ना निराश कर, तम है फैला तू प्रकाश कर।
मेरे सर्जक मेरे पालक, शररा तेरी हूँ प्रभु दया कर।
नयन तुम्हारे चरण धोयें, पल जितने जीवन के गुजरे।
सांस सांस में बस जाओ तुम, हर पल प्राण तुझे ही टेरें।

1970

गीत कितने ही लिखे, दर्द तुमने ही दिये।
ईश तेरी शरण आया, जा रहे बुझते दिये।
रात दर पर बैठ गुजरे, भीख तुझसे मांगते।
अबल हम मग में अन्धेरा, दीप तेरा चाहते।
प्यार दो मांझी मुझे तुम, दिल हमारा रो रहा।
लुटते आँखो के मोती, तुम बिना क्यों जी रहा।
डगर है अनजान मेरी, जानते ना चल रहे।
आंख तुझ पर ही लगी है, तन यह चाहे न रहे।
तड़फते है हम यहाँ पर, तू पिला जाम अपना।
देख ले बैचेन दिल को, प्यार से वंशी सुना।
नमन को स्वीकार कर लो, कब मिटें हम ना पता।
छू सके न तेरी चौखट, माफ करना यह खता।

1971

मेरे राम सुन कृपा निधान, बीती जा रही मेरी शाम।
नयना तेरी बाट निहारें, ईश तुम्हीं हो सुख के धाम।
तेरी बगिया खिले यहाँ हम, भटके हमने सहे बहुत गम।
तम की चादर काट न पाऊँ, दीप जला दे मेरे प्रियतम।
जीवन की तू ही बहार है, प्राणों की बस प्यास तुही है।
जगत रचैया हमें देख लो, अन्तिम आशा तू मेरी है।
ऋषि मुनि ज्ञानी तुझे खोजते, कुछ न जाने बस हम रोते।
जगत पीड़ से हमें उबारो, रो रो विनय यही हम करते।
सब खुशियों के तुम ही मालिक, तुम ही सर्जक हो संहारक।
जाने न कुछ भी अबल हम है, कृपा तुम्हारी चाहे पालक।
अश्रु गिरें जो बने फूल प्रभु, तेरी बगिया को महकाये।
दिल में मेरे तुम बस जाओ, पाप पुण्य ना फिर डस पायें।

1972

भूल जा मन भूल जा सब, ना शिकायत अब करे।
दिल लगा ले हरि चरण में, क्यों किसी से तू डरे।
छूटते सब जा रहे है, जा रहा तन टूटता।
क्यो करे आसक्ति जग में, जायेगें कित न पता।
प्यार की है भूख इतनी, जीव जग में चाहता।
बिन हरि कहीं वह न पावे, जगत में है तड़फता।
अपने पल में संग छोड़े, रंग अनेकों वासना।
धन्य हरि से साथ जोड़े, कुछ नहीं बिन साजना।
वह रही नदियां यहाँ पर, बहता जा पी रट ले।
जाते साजन से मिलने, उसका श्रृंगार कर ले।
सुख दुखों की ले कहानी, इस जगत में भटकते।
धन्य हरि के प्यार डूबे, ऋषि मुनी सब तरसते।

1973

ईश हमारी तुम सुन लो, हम शरण तेरी आ गये।
चहुँ ओर तुमको खोजते, नयनों में अश्रु आ गये।
नाव मेरी भटकती है, ईश तुम्हारे हाथ में।
डूब जाये ना भंवर में, हम हारे इस संसार में।
पीड़ के बादल हटा दो, प्यार का अमृत पिला दो।
तुम बसो मेरे हृदय में, यह मुझे वरदान दे दो।
इस सकल जग के रचैया, तुम सुनो बंशी बजैया।
ज्ञान के भण्डार हो तुम, कर कृपा हो पार नैया।
खेल सुख-दुख का जगत में, ईश तुमने ही रचाया।
खोजते तुम हो अगोचर, रास तुम बिन कुछ न आया।
तेरे पथ चलते जायें, अश्रु की बरसात ले कर।
ना हटाना इस डगर से, सब मिटें शिकवे दया कर।

1974

सागर की लहरों में बहते, पत्ते इधर-उधर सब खोते।
मिटे जलध में निज बल जाने, ज्ञानी हम उसको ही कहते।
प्यार यहाँ बन-बन कर खोता, सुपने ले ले जियरा रोता।
सुख दुख की चक्की में पिसकर, सारा ज्ञान यहाँ पर खोता।
हरि भजन बिन ठौर यहाँ ना, तप्त हृदय में जल वर्षाये।
वही सहारा बनता जग में, कोई काम न जग में आये।
हरि ना भूलो बहते बहते, उसका मन में दीप जला लो।
इस आनी जानी दुनिया में, उसका ही तुम ध्यान लगालो।
सकल सिद्धि चेरी है उसकी, माँग लिया हरि क्या माँगोगे ?
बसे नयन में जिसके भी हरि, नीर नयन के तम काटेंगे।
हरि हरि करते लय हो जायें, सब उसकी माया का खेला।
अबल ईश हम प्रीति बढ़ालो, सफल होय दो दिन का मैला।

1975

बसे रहो मेरे नयनों में, अंखियां तुझसे ही हरि लागी।
बीत जाए रैन यह मेरी, कृपा तुम्हारी सुरति जागी।
हरपल तेरी करें अर्चना, कभी न भूले तुझको सजना।
नमन तुझे है दीनबन्धु हो, बीते गुन गाते यह सुपना।
जल ही जल चहुँ ओर दीखता, कूल मुझे बस तुही दीखता।
लाज राख लेना बालक हम, अश्रु नयन से ईश निकलता।
अगम अगोचर पार न तेरा, नैया छोटी सागर गहरा।
हिचकोले यह हरपल खाये, देखूँ होवे कभी सवेरा।
जग के पालक शरण राख ले, मन्दिर अपने ईश बसा ले।
सोऊँ जागूँ बस तुझमें ही, विनय हमारी प्रभु तू सुन ले।
सांस सांस में जपूं तुझे प्रभु, नीर चरण तेरा ही धोवे।
वर देना ऐसा प्रभु मुझको, शीश झुके ना कभी उठावे।

1976

बिन हरि चैन नहीं पाये मन, हरि को याद करे जग सपना।
किससे दिल को और लगायें, तुझे कहें ना प्रभु हम अपना।
बने विवश चलते जाते हैं, डोर हमारे ना हाथों में।
खोज रहे हैं अपनी मन्जिल, सौंप सकें हम तुझ हाथों में।
जग के सुख दुख से पीड़ित हो, भाग रहा जिय इधर उधर है।
अहम हमारा हारा जब से, तुझ बिन ना कटे सफर है।
देखे हारा थका मुसाफिर, चैन मिले उस मठ को खोजे।
पीड़ा जब आंसू से बहती, भला इसी में हरि को खोजे।
तप्त हृदय पर बूंद गिरे जब, तन मन यह शीतल हो जाये।
बढ़ती जाये प्रीति डोर जब, बार बार सुपनों में आये।
प्यास बुझे ना राम पुकारे, कण-कण से सुगन्ध फिर आये।
यादें उसकी लागे प्यारी, नहीं और कुछ मन को भाये।

1977

प्राण पुकारते तुमको राम, ढलती जा रही मेरी शाम।
इस मेले में कहाँ खो गये, कैसे पाऊँ तुझे मैं राम।
बहें नीर करे अर्चना, आन मिलो तुम मेरे सजना।
कुछ भी मुझको नहीं सुहावे, व्याकुल मैं हूँ जग के अंगना।
ले चल पार करा दे नदिया, डूबूं मैं न छिपो कन्हैया।
आंखो में बरसात हुई है, मुझे बहा ले चल ओ छलिया।
तेरे है उपकार अनेकों, मैं तो ठूंठ जगत में आया।
दिल अब चाहे लगे तुझी में, कृपा करो अब तू ही भाया।
सिर रख चौखट पर हम रोवें, देख हमें प्रभु जी तुम लेना।
लिये पेट पर हाथ फिरे हम, भटके जग में ले ले सपना।
सांस-सांस में तू ही रम प्रभु, थका मुझे ना कही लुभाओ।
दे अपने मन्दिर का कोना, मेरे नैनन में बस जाओ।

1978

हरि राखो तुम लाज हमारी, आंसू से भीगी मैं सारी।
कहाँ जायेंगे हमें न पता, प्रभु पकड़ो बहियाँ मेरी।
ज्ञान के दाता कर सबेरा, बीत रही सब रतियां काली।
सुखदायक तुम मंगलकर्ता, नैनन से मिटती ना लाली।
मेरे जीवन प्राण पुकारें, नीर बहें पथ को न जाने।
सृष्टि रचैया तेरी लीला, ऋषि मुनि हारे तुझे बखाने।
कहाँ जाये हम है अज्ञानी, आशा एक तुही है मेरी।
अनजानी गलियों में घूमें, करो कृपा मिट जाये फेरी।
सुख दुख की इस धूप छांव में, खोज रहा तुझको मनुआ।
पाप पुण्य कर्मो के बन्धन, उलझ उलझ पड़ता है मनुआ।
तुम्ही उबारो तो तर जाऊँ, डूबी जाती है यह लुटिया।
आंसू को स्वीकार करो प्रभु, दे दे मुझको अपनी छैंया।

1979

क्या ठीक कहें क्या गलत कहें, जब कठपुतली हम तेरी हैं।
नयनों से नीर गिरे झर झर, हम दया चाहते तेरी हैं।
तू ज्ञान दीप को ईश जला, ठोकर खा खा कर हम गिरते।
अपनी पीड़ा को तुझे कहें, प्रभु विनय हमारी तुम सुनते।
डोरी हाथों में तेरे है, भूलें न जब तक सांसें है।
अबल हम जाने नहीं कुछ भी, सांस जपे तुझको चाहे है।
नाम तेरा ले अश्रु गिरें, बन फूल जगत को महकायें।
ना ऐसा कोई कर्म करें, जो ईश स्वयं से शर्मायें।
नदिया पार करा तू ले चल, आंखे तुझ पर लगी हुई हैं।
अनजानी गलियों में भटकूं, माफ हमें कर खता हुई है।
जमकर हमें नचा नाचेगें, चाहे तेरा ध्यान न टूटे।
डोरी तेरी से बंधे हुए, ना प्यार कभी मुझसे टूटे।

1980

तुम न कहते हम भजे हैं, नीर अखियों से बहे हैं।
तुम बनो निष्ठुर नहीं प्रभु, चरण तेरे आ पड़े है।
बने पागल भागते हम, धूल जग की चाटते हम।
सब रस पड़ जाते फीके, बिन तेरे अकुलाते हम।
तोड़ तुमसे प्रीति प्रभु जी, ना हमें जग में ठिकाना।
मैं रोता पकड़ो दामन, लाज मेरी नाथ रखना।
छलिया बन जी न चुराओ, चल रहा अनजान राहें।
खिलते बगिया में तेरी, प्यार तेरा ईश चाहे।
शून्य तेरा रूप है प्रभु, सभी समाया इसमें है।
कण-कण में व्याप्त तू है, भागते जाना कहाँ है ?
ईश ले हम वासनायें, परिकर्मा तेरी कर रहे।
ज्ञान यह मुझमें जगा दे, प्रभु मैं नहीं बस तू रहे।

1981

भज ले राम भजे ले राम, ढलती जा रही यह शाम।
प्रीति जोड़ू तुमसे राम, संकट दूर करो हे राम।
प्राण पुकारें तुझे राम, नयन गिरायें अश्रु राम।
जीवन नौका पार करो, बनो मेरे खेवट राम।
तेरे गुन हरपल गायें, दया सागर सुन ले राम।
मन चहूँ दिशा में भटके, चैन मिले न मुझको राम।
कृपा तेरी हमें मिले, पायें तुझे मेरे राम।
अपना मुझे बना सेवक, पीड़ा मिटे सारी राम।
दे दे मन्दिर का कोना, आंसू बहें देखो राम।
सकल मही का तू स्वामी, सर्जक तुम्ही पालक राम।
करें अर्चना तुम्हारी, बसो दिल में मेरे राम।
राम राम जपते जपते, राम रहे तू ढले शाम।

1995

कहने को कुछ भी नहीं यहाँ, कहकर फिर भी मन बहलाते।
आंसू गिरने का मोल नहीं, फिर भी आंसू बहते जाते।
दुख दर्दों से पीड़ित है तन, यह चाह लिये चलता प्रतिपल।
सुख की चाहत में घूम रहा, यह विस्मृत कर होगा क्या कल।
आंसू यह झर-झर गिरते हैं, फिर इस अनन्त में खोते हैं।
कित जायेंगे ना जान सके, पथ में हम तुमको तकते हैं।
कैसा यह ब्रह्माण्ड रचाया, दुःख दर्द का जाल बिछाया।
अमी खोजता रहा जगत में, नहीं संभल फिर भी तन पाया।
कर क्षमा परमेश्वर मेरे, अज्ञानी हैं बालक तेरे।
रोते इन नयनों को देखो, टूटेंगे यह कैसे घेरे।
गीत उठाऊँ तेरा प्रतिपल, तुझमें ही बस डूबा जाऊँ।
तेरा ही संगीत सुनाऊँ, अपनी सुधि को मैं बिसराऊँ।
जग के वैभव फीके लगते, तुझसे नाता जोड़ सका ना।
लक्ष्यहीन मैं हुआ जगत में, अब तो नाथ कृपा कर दो ना।
प्यार चाहते प्यार न मिलता, यहाँ स्वार्थ का धन्धा पलता।
व्याकुल मनुआ सोच रहा है, हरदम काहे यह दिल जलता।
बुझे हाय नयनों के दीपक, उनमें ज्योति न मैं दे पाऊँ।
अपनी उलझन में ही फंसकर, आँखों से बस नीर बहाऊँ।
खाली हाथ जगत में आये, खाली हाथ यहाँ जाना है।
समझ नहिं क्यों मन को आती, पल-पल तू काहे रोता है।
टूटी-फूटी नौका है यह, डोल रही इस भवसागर में।
ना किनारा कोई दिखता, डूबेंगे हम किन घड़ियों में।
दया करो हे दयानिधी तुम, इस जग को उजियारा दे दो।
तेरे ही गुण गाये सारे, खुशियों की तुम वर्षा कर दो।

1996

किसको समझाना है हमको, निज को संभाल लें काफी है।
जो दर्द उबलता सीने में, ना मिटा सके ना ज्ञानी है।
झर झर आंसू बहते मेरे, इनको तू पोंछ न पाता है।
देखे उत्तंग शिखरों को तू, यह मन का मैल न जाता है।
चाहत को ले ले जीते हैं, उसमें बन मिटते रहते है।
परिवर्तित जग की छाया में, बस सुपनों में हम जीते है।
क्यों विलग हुए तुमसे ईश्वर, क्यो हम तुमको है भूल गये। बन
अज्ञानी ठोकर खाते, दिन सारे रोते बीत गये।
जल-जल कर यह बुझ रही शमा, जीवन का खेल हुआ कैसा?
चल-चल के हारा इस जग में, ना जाना तू भी है कैसा ?
आवाज थरथराती मेरी, चहुँ ओर अन्धेरा छाया हैं।
छिप गये कहाँ मेरे प्रियतम, रुठा मेरा भी साया हैं।
ना आंसू यहाँ पोंछ पाये, बहते हैं दर्द की गंगा में।
ऐसे निष्ठुर क्यों बने हुए, जीवन खोता अंधियारे में।
क्यों है अनाथ हे ईश बता, जब नाथ हमारे तुम ही हो।
गर्दिश में रखते आस यही, बस साथ हमारे तुम ही हो।
बह जा मन तू चुपचाप यहाँ, कर स्वयं समर्पित उस प्रभु को।
कट जायेगा दो दिन का पथ, जाता जीवन मिट जाने को।
कैसे हम दिल को समझायें, तुझ बिन हर पल दहशत खाये।
सूनी आँखे सब ओर लखें, क्यों नजर नहीं तुम हो आते ?
तुम रुठे हम कैसे रुठे, सामर्थ नहीं कुछ अपनी हैं।
जीवन की ज्योति बुझी जाती, नयनों में बस अब पानी हैं।
करुणा के प्रभु तुम सागर हो, तुम दया दृष्टि कर लख लेना।
हो जाये सफल मेरा जीवन, तुम अपना दास बना लेना।

1997

हे ईश तुम वन्शी बजा दो, हम सुन सके ना सजा दो।
हम तो घिरे अज्ञान से हैं, जान तुम यह क्षमा कर दो।
प्रभु बन लहर मैं हूँ अधूरा, क्यों सागर को हाय भूला।
मैं भूलकर तुझको घुटन ले, ढूंढता फिरता अकेला।
कैसे तुम्हीं हो हम मनायें, विधि नहीं हम जानते है।
आस लिये मिल जाओगे तुम, प्राण बस यह तड़फते है।
कर्म के बन्धन में बंधकर, घिरे निशदिन हम हुये है।
हम तो अवश देखो प्रभु जी, फेर मुँह को क्यों लिये है ?
निहारती अंखिया यह तुमको, बने तुम्ही निर्मोही क्यों ?
जो अग्नि हीया में लगी है, तुम बिना हम बचे ही क्यों ?
ज्ञानी भी जपते हैं तुझे, खो जाते तुझे ढूंढते।
प्रभु तुम दया का हाथ रख दो, तेरे बिना हम तड़फते।
यह चक्र चलता है यहाँ पर, है वश यहाँ चलता नहीं।
नामी बन जाते है राजा, तन खाक हो जाता यहीं।
है क्या प्रयोजन इस जगत का, सोंचकर यह मन थका है।
यह भूख मिटती ही नहीं है, जगत सारा ही फंसा है।
यहाँ अपने-अपने दर्द ले, जाने कित गिर जायेंगे।
कितने आंसू यहाँ गिरेंगे, क्या पग नहिं हम पायेंगे ?
बुझे ही हम तो जा रहे है, हार है यह जिन्दगी की।
पथ नहीं कोई दीखता है, खा रहे ठोकर समय की।
सारी दुनिया हँस रही है, रुठ क्यों हमसे गये हो।
तुम देख लो नजरें उठा कर, ईश सर्जक तुम बने हो।
प्रभु वन्दना स्वीकार कर लो, कुछ हमें भी गान दे दो।
इस नयन की जो झील सूखी, मेघ बन कर तुम वरस दो।

1998

तुझे मिला न मेरे ईश्वर, यह जीवन मुझसे रुठ गया।
ठीक गलत के चक्कर में पड़, यह सारा जीवन बीत गया।
थर-थर कांप रहे पग मेरे, धक-धक दिल मेरा करता है।
कहाँ छिपे हो भगवन मेरे, रोते नयना यह पूछे है।
आओ बोलो मुझसे बोलो, मेरी भी पीड़ा तुम सुन लो।
हुआ विलग मैं दर-दर भटका, मेरी भी तुम सुध को ले लो।
बन्शी की धुन मुझे सुना दो, जग का यह तुम मोह भुला दो।
टूटी नैया पार लगा दो, अवगुण अब तो हाय भुला दो।
चलता हूँ पर दिशा न पाता, ठोकर खा प्रतिपल गिर जाता।
कौन प्रयोजन लिये घूमता, तुम्हीं बता दो मेरे दाता।
कैसे समझाऊँ इस मन को, मैं देख व्यथित हूँ इस जग को।
तुम रुठोगे तो जायें कहाँ, कौन सुनेगा घट पीड़ा को ?
प्रभु क्या अपनी है नियति यही, ठोकर खा-खा कर चलता हूँ।
यह नयन हुये नीरस मेरे, रो भी ना अब मैं पाता हूँ।
देखूँ मैं किस-किस को देखूँ, किस सुख की चाहत को माँगू।
पल-पल परिवर्तित इस जग में, प्रभु तुझसे विलग न वर माँगू।
रो-रो कर रैन बिताऊँ मैं, तुम कहाँ छिपे मेरे भगवन ?
सिंचित धरती यह कर डाली, आयेंगे पल्लव कब भगवन ?
पी-पी रटे पीव नहीं आवे, नित अँखियन से नीर बहावे।
कित खोजूँ कुछ नहीं सुहावे, जियरा मोरा क्यों नहीं जावे ?
बरसे अँखियां बूंद-बूंद कर, अविरल बह क्यों नहीं डुबावें ?
पी बिन किससे नेह लड़ावे, जन्म वृथा बीता ही जावे।

1999

दो बूंद प्रेम की पा न सके, अपनी तो दुनिया जलती है।
इस अथाह सागर में देखो, यह दुनिया कैसे पलती है ?

हर दर्शन कदम-कदम पर है, मोहित होकर सब सुनते है।
व्याकुल मन सोच रहा मेरा, निज पीड़ा में क्यों पलते है ?
आनी-जानी इस दुनिया में, सब चंचल और मन चंचल है।
किसको आज सुनाए पीड़ा, पीड़ित तो सारा जग ही है।
जी आज चाहता है रोना, रोऊँ क्यों समझ नहीं आता।
पीड़ा के अन्तस्थल में ही, जब टूट चुका इससे नाता।
चिन्ता न करो निष्ठुर मेरे, मैं प्रेम गीत न गाऊँगा।
जलते अरमानों के शोलों में, तुम्हें नहीं दहकाऊँगा।
खुश रहो तुम अपनी दुनिया में, अपनी दुनिया तो लूटने दो।
हम प्रेम पथिक की डगर अलग, हमको तो तिल-तिल जलने दो।
अपनी पीड़ा को सब बोले, अपने दुखड़े सब ही खोले।
पागल मनुआ तू क्यों बोले, जीवन में क्यों विष को घोले ?
अपनी-अपनी नियति सभी की, बुरा भला किसको कहते हैं ?
पागल मनुआ क्या रो-रोकर, जीवन में लाया पतझड़ है।
इस अनन्त पथ का राही, वह हमें छोड़ कर भागा है।
हम रोते हैं उसको लेकिन, उसने तो नाता तोड़ा है।
हूँ प्रेम पियासा पंछी मैं, बन शलम शमा पर आऊँगा।
व्याकुल मन सोच रहा मेरा, क्या उनको मैं पा पाऊँगा ?
आँखों का पानी ही अब तो, सभी कलुषता को धोएगा।
नतमस्तक हो उस अदृश्य के, चरणों में पड़ कर रोयेगा

2000

जय हो रामा जय हो रामा, हूँ शरण मैं तेरी राम।
मन्त्र है यह मेरा पूरा, नहिं भुलाना मुझको राम।
इसको जपे फिर हम सुखी हो, ना भूले नहीं दुखी हों।
बहती हैं सागर की लहरें, ना पता फिर हम कहाँ हों।
हम राम में डूबें सदा ही, उस सगर की लहर हैं हम।
बस जान जायेंगे उसे हम, जायेंगे दुःख पार हम।
हम राम को पूजें सदा ही, पग अश्रु से धोते रहे।
कभी रीझ जायेगा हृदय, निज को समर्पित कर बहें।
यहाँ कंटकों से पथ भरा है, राम को दिल में बसाना।
चलते जाना हो के निर्भय, बीत जायेगा जमाना।
तू जप यहाँ पर राम रामा, दुख नहिं सतायेंगे तुझे।
यहाँ इस अंधेरी रात में, बन दीप मग देंगे तुझे।
तुम भूल कर विसरा न देना, जीवन दो दिन का मेला।
सुन खाक इस तन की बनेगी, जान मन कर तू न मैला।
यहाँ लहर सागर में बहती, पर लहर सागर न लखती।
देखे न सागर राम को यह, हाय यह निशदिन बरसती।
हम राम सुमरे राम सुमरे, राम ही अन्तस बसा है।
दीदार जब होवे उसी का, ना कोई संकट रहा है।
सब ओर देखो राम को ही, सुन ले उसी का शोर है।
उसको समझ नहीं पाये हम, बस जिन्दगी बेमेल है।
बह रही यहाँ हमरी नौका, हम ले सहारा पार हो।
रैना आती जा रही यहाँ, फिर नहीं कोई दर्द हो।

2001

अंधियारे में ज्योति जला दो, हो जाये फिर ईश सबेरा।
नहीं लगे भागे मन मेरा, दीखे और न कोई डेरा।
तुझको छोड़ कहाँ जाऊँ मैं, और न पथ दीखे मोहि ना।
नयना रोवे तू नहिं आवे, कसक कलेजे से जाये ना।
भटक-भटक मन हुआ बाबला, हो कैसे दीदार सांवला।
इन रोती अंखियों को प्रभु जी, रुठे तुम क्यों नहीं संभाला।
पल-पल देखूँ बाट तुम्हारी, डाली भी अब भई पुरानी।
शरण तुम्हारी पड़ा सुधी लो, तड़फे मेरी हाय कहानी।
नयन-नयन में दीप जले हैं, फिर ईश्वर काहे बुझे हैं।
अज्ञानी बन घूम रहे हैं, पापों से किस लिये सने है।
अमी प्यार का ईश पिला दो, मिटे तुम्हीं पर राह दिखा दो।
बीता जाता जीवन सपना, इस सपने में फूल खिला दो।
धूप दीप नैवेद्य नहीं हैं, तुझे चढाऊँ फूल नहीं है।
खाली झोली लेकर फिरता, पाऊँ मैं सामर्थ नहीं है।
हूँ दरिद्र पापों से बोझिल, छवि तेरी होती है ओझल।
कदम-कदम पर चलूँ संभलकर, फिर भी हिंसा होती प्रतिपल।
ऐसा कोई गीत सुना दो, जिसे सुनूँ खो जाऊँ मोहन।
कर्मजाल में फंसा जा रहा, मुझे उबारो हे मन मोहन।
करुँ अर्चना मुझे ज्ञान दो, झोली भर दो मुझे प्यार दो।
सद्कर्मो में बढ़ता जाऊँ, हे ईश्वर तुम मुझको वर दो।
हममें कुछ सामर्थ नहीं है, जो हम तुझ तक चल कर आये।
सूनी आँखें देखे तुमको, पल-पल में आंसू ढलकाये।

2002

जय हो जय हो प्रभु जी तेरी, सभी प्रार्थना करते तेरी।
सब जग के आधार तुम्ही हो, कृपा चाहते सब नर नारी।
अपना दास बना प्रभु तुम लो, भटक रहे हम पार लगा दो।
मिले चरण चाहे हम पाना, रोवे नयन सुना वन्शी दो।
प्यार हमें दो तुझे पा सके, कठिन डगर दीखे ना रस्ता।
मन्जिल आंसा बना सके हम, याद करुँ जिय मेरा रोता।
बिन तेरे कुछ नहीं जगत में, मेरे खेवट जगत रचैया।
तुमको पाकर मिल जाये सब, पार लगा दो मेरी नैया।
आंसू गिरे हमें न भुलाना, मेरे हृदय प्रभु तुम बसना।
हर अज्ञान ज्ञान को देना, तम को हटा उजाला करना।
खुद को खोकर तुझे पा सकूँ, ऐसी ज्योति जलाये रखना।
नैनन में प्रभु बस जाओ तुम, फिर इस जग में क्या है डरना।
कौन संभालेगा इस जग में, ठोकर खाकर गिर जाते सब।
जिसके हिय में प्रभु बसते हो, कन्ट फूल बन जाते है तब।
तेरी माया अद्भुत प्रभु जी, जाने न ज्ञानी ऋषि मुनि भी।
लिये हुए पूजा की थाली, प्रभु सम्भालो तुम हमको भी।
दे भुलावा छलो ना छलिया, जीवन के मेरे तुम रसिया।
तुझे पुकारें जिय सुख पाये, हिया वसो रोवे यह अंखियां।
ना गुन मुझमें तुझे बुलाऊँ, रोना जानू किसे सुनाऊँ।
मुझे माफ कर दो हम बेबस, ठुकरा मत मैं शरणा आऊँ।
तुझे खोजते खो जाये हम, माता-पिता तुम्ही हो सर्जक।
कमी बुझे ना प्यास हमारी, बढ़ता जाऊँ बन मैं साधक।

2003

तुझ चरणों को छू लेने दे, सगरे पापों को कटने दे।
दिशाहीन यह नौका बहती, तुझ पथ पर इसको बहने दे।
है तुझको सौगन्ध हमारी, गगरी फूटी मैं हूँ हारी।
कैसे तुझे मनाऊँ प्रियतम, लाज रखो हे कृष्ण मुरारी।
भीगी अंखियां धड़के छतियाँ, कैसे पार करुँगा नदिया।
मेरे खेवट तुम बन जाओ, सफल हो सके जीवन घड़ियां।
प्यासा कंठ प्यास नहीं जाती, जलू विरह में मैं दिन राती।
शरण मुझे तू दे दे स्वामी, गुण गाऊँ न कभी अघाती।
नयनों से बरसात बरसती, तुझ बिन मेरी छाती फटती।
बनो न ऐसे निर्मोही तुम, तुम बिन बुझे न जीवन ज्योति।
दर-दर घूंमू तुझे न पाऊँ, कैसे मैं दिल को बहलाऊँ ?
स्वर यह नहीं उठाती वीणा, कैसे तुमको राग सुनाऊँ ?

पल-पल बढ़ता जाता विषाद, जो अन्तःस्थल को छूता हैं।
झकझोर हृदय के भावों को, विक्षुब्ध हमें कर देता है।
एक दिशा में बहे जा रहे, पाते हैं सब वह प्रकाश।
लड़ते आपस में तब क्यों हैं, तज जीवन का श्रृंगार आज।
पा सका तुम्हें ना पाऊँगा, यह पता मुझे जीवन में है।
मैं खोज रहा तुझको क्यों हूँ, क्यों पता नहीं मुझको यह है ?
दुख की अग्नि में जल-जल कर, बस याद तुम्हारी आती है।
अंधियारी रातों के अन्दर, एहसास तुम्हारा देती है।
सुख-दुख की आँख मिचौनी कर, तुम खूब खेलते हो भगवन।
क्या मिलता है इस क्रीड़ा में, यह जान नहीं पाया भगवन।

2012

गाऊँ मिलन के गीत मैं कैसे, तुम जो मुझसे रूठ गये हो।
जीवन का श्रृंगार तुम्ही हो, नयन चुराये बैठे क्यों हो?
तुझे बसाकर ही इस दिल ने, जग में चलना सीख लिया है।
तोड़ न देना इस दिल को तुम, तुमने ही आबाद किया है।
कब से मैं हूँ भटक रहा था, मुश्किल से तुझको पाया है।
बीत गई अब दुख की घड़िया, अब वसन्त देखो आया है।
जब तक जीए साथ रहेंगे, जीवन की यह चाह हमारी।
तुझ को देख-देख जीयेगे, तुझमें छिपी खुशी है सारी।

2013

खोज क्या हम बाबलों की, बह रहे बस धार में है।
शब्द में उलझे हुए है, हम निकल पाते नहीं है।
दूर एकाकी खड़ा मैं, ध्यान में डूबा हुआ हूँ।
वासना क्या चाहती है, भागता पीछे रहा हूँ।
क्यों विलग हम धार से हैं, क्यों नहीं हम लीन होते ?
प्यास थोड़ी सी मगर, चाह है सागर को पीते।
सुख यहाँ पर चल रहा है, दुख यहाँ पर चल रहा है।
भूख की ज्वाला से पीड़ित, जग निरन्तर जल रहा है।
कर रहे सब कुछ प्रभु, फिर भी हम करते है शिकवा।
मैं थका हूँ मैं थका हूँ, कर सको तो माफ करना।
जी दिया जीवन दिया, क्यों फिर भी मैं चिन्तित हुआ ?
गीत तेरे स्वर भी तेरे, मैं समर्पित ना हुआ।
इक सहारा बन ही जाये, तुम सुना दो गीत को तो।
टूटे खण्डर में यहाँ फिर, आ ही जाये चमक तो।
मांगता मैं हूँ समर्पण, सब समर्पित स्वयं ही है।
कर सको तो माफ करना, बस नहीं कुछ भी मेरा है।
हम चलेंगे हम चलेंगे, जग यह चलता जा रहा है।
कौन मैं बाधक बनूँ हाँ, काफिला यह जा रहा है।
अश्रु का उपहार दे दूँ, पर नहीं यह पास मेरे।
कर सको तो क्षमा करना, है नहीं कुछ हाथ मेरे।
हैं अंधेरा ढूंढता मैं, गिर रहा पर खोजता हूँ।
और कर सकता नहीं मैं, भटकता मरुभूमि में हूँ।
है मेरी सरगम अधूरी, कर सको तो करना पूरी।
है नहीं अधिकार मुझको, वीणा की है तार टूटी।
क्या करें शिकवा किसी से, जन्म ही शिकवा हुआ जब।
अश्रु भी सूखे नयन से, मन तो बोझिल हो गया अब।
फल पकेगा और गिरेगा, यह समय का सत्य है।
फल स्वयं ना जान पाया, यह भी कैसी नियति है ?
घूमता मैं जगत में, टूटा हुआ सा साज ले।
थी अभीप्सा स्वर उठाऊँ, पर रहा असमर्थ मैं।
नृत्य करती इस प्रकृति में, स्वर मिला दूँ बहुत है।
बन सकूं बस मैं पथिक, इतना ही मुझको बहुत है।
अदृष्य राहों का मुसाफिर, बढ़ता कुछ ना दीखता।
पथभ्रान्त हूँ मैं तो पथिक, यह मार्ग दुस्तर दीखता।
चाहतों के चक्र में हैं, फंस यहाँ कितने विवश हम ?
है हृदय अब मूक मेरा, दे नहीं सकते हैं कुछ हम।
ढूंढना चाहें तुम्हें पर, उलझनों में हम घिरे।
अर्चना के पुष्प थोड़े, कैसे हम पूजा करें ?

2014

पीव पुकार हुआ मन पागल, नयना झर-झर नीर बहाये।
मुझसे रुठ गये वह ऐसे, जीवन जाये वह ना आये।
कैसे निरखूं तेरी छवि को, बल नहीं निरन्तर चलने का।
तेरी रहमत का जग प्यासा, क्यों पा न सके किसने रोका?
हम तड़फ रहे निर्बल प्राणी, तेरी विशाल इस दुनिया में।
आशा के सपने बिखराये, हम खोए हाय उदासी में।
मैं भूल भुलैया में भटका, क्यों निष्ठुर राह दिखाई ना।
पत्थर दिल का क्यों ले बैठा, तू करुणामय क्यों बनता ना।
जनम-जनम का प्यासा हूँ मैं, बना रहूं मैं दास तुम्हारा।
ऐसी प्यास जगा दे निष्ठुर, प्यास रहे ना भान हमारा।

2015

अर्चना भंजित हुई क्यों, तू बता ऐ देव मेरे।
गिर सके चरणों में न हम, रो सके न देव मेरे।
चाहूँ चलना चल न पाऊँ, क्यों रुका हूँ देव मेरे।
दान दे दो तुम दया का, हूँ भिखारी देव मेरे।
जन्म ही तुमने दिया है, तुम बने माता-पिता हो।
तेरी ममता का भूखा, क्यों नचा मुझको रहे हो।
तुम ही जगत के ईश हो, मैं भटकती धूल हूँ।
चरण रज अपनी बना ले, मैं तो समय की भूल हूँ।
तुम ही रक्षक जगत के हो, ना मेरी रक्षा कर रहे।
हम सिसकते है बिलखते, क्यों तुम हमें विसरा रहे ?
सुधि हमारी देव ले लो, न तुम बिना जी पायेंगे।
आंसू का भण्डार दे दो, डूब इसमें जायेंगे।
वासनाओं से घिरा हूं, हे देव तुम रक्षा करों।
गीत बस तेरा ही गाऊँ, यह वन्दना मेरी सुनो।
साथ चाहूँ मैं तुम्हारा, जिन्दगी से मैं हूँ हारा।
तुम बिना जीवन नहीं यह, है जगत नीरस यह सारा।
दीखते मुझको नहीं हो, खोज फिर भी मैं रहा हूँ।
दर्द मुझको दे दिया जो, भटक उसमें मैं रहा हूँ।
हाय तड़फन यह जगत की, देख दिल बैचेन होता।
करुणामय देव तुम हो, क्यों न तेरा दिल पिघलता।
हाथ तुम अपना बढ़ा लो, चरण में हम आ पड़े हैं।
भक्ति का वरदान दे दो, शरण तेरी आ गये हैं।
हैं नहीं कोई किनारा, दीखता इस धार में हैं।
नाम ही तेरा सहारा, बीच बस मझधार में हैं।

2016

तेरा विरह जगत में चाहूँ, वैभव में मैं भूल न पाऊँ।
क्यों वैभव के पीछे भागू, हाय मैं तुझमें रम ना पाऊँ।
इस अंधियारे जीवन में तू, मुझे प्रकाश की ज्योति दिखा दे।
करुँ समर्पित सब तुझ पर ही, हाय पतंगा मुझे बना दे।
मुझको परखो ना तुम निष्ठुर, सफल नहीं मैं हो सकता हूँ।
हूँ मतिमन्द महा अज्ञानी, आंसू भी ना ला पाता हूँ।
बना-बना पथ निर्मोही तू, चलू डगर पर बस तेरी ही।

जगत प्रलोभन नहीं लुभाये, बिसरुं बस तेरी सुध में ही।
इस विशाल दुनिया के अन्दर, भटक रहे सब नर नारी मिल।
अपनी-अपनी चाहत लेकर, माँग रहे वर तुझसे हरपल।
मांगू क्या मैं समझ न पाया, जीवन में रस ले न पाया।
तेरा यह अनमोल खजाना, भ्रम भ्रमित-भ्रमित भरमाया।
करो क्षमा तुम बल दो मुझको, करुँ अर्चना बस तेरी ही।
सोऊँ जागूँ जीवन का पल, बीते हर क्षण बस तुझमें ही।
डुबा चाहे तू मेरी नौका, तुझमें ही बस मैं रम जाऊँ।
पाप-पुण्य कुछ नहीं जानता, अपनी सुधि को मैं बिसराऊँ।
कंठ प्यास से भर जाये, बूंद न मुझको निष्ठुर देना।
प्यास बढ़ा देना बस इतनी, इसको कभी न बुझने देना।
तुम बिन नाथ अनाथ हुआ हूँ, दर-दर पर ठोकर खाता हूँ।
हे जगदीश तुम्हीं संभालों, संभल नहीं अब मैं पाता हूँ।

2017

सुपनों से सजी हुई दुनिया, मैं हारा प्रभु चल-चल हारा।
ना लगा सका मैं दिल इसमें, आँखों का पानी है खारा।
तेरी रहमत का प्यासा मैं, मैं रहा भटकता जीवन में।
मंजिल न मिली रोया हरपल, भटका मैं सदा निराशा में।
झूठ सांच के फंसा चक्र में, मैंने जन्म बिताया सारा।
तुझसे मैं क्यों रहा अछूता, जीवन हर पल तुझसे पाया।
यह होता वह होता ऐसे, हम यह करते भी वह करते।
सब जन्म गंवाया हरि के बिन, मृत्यु पथ से अब हम क्यों डरते?
सम्बल हरि का ना ले हमने, यह भूल करी ना समझ सके।
हम रहे भटकते जीवन में, संताप लिये पर रो न सके।
ऋतुऐं आई और चली गई, ना तेरी पगध्वनि को पाया।
वीराना सा बनकर घूमा, ना तुझको क्यों मैंने पाया ?
जियरा मेरा इत उत भटके, भटक-भटक कहीं ठौर न पावे।
अविरल आंसू की गंगा में, मोंहि ढाढस कौन बधावे ?
मजबूरी का रोना रोकर, जन्म बिताया मैंने सारा।
तुम्हीं बतादो कैसे पूंजू, मन से तो हूँ मैं हारा।
रहने दे चौखठ पर अपने, रोने को रो लूंगा मैं अब।
तूने मुझसे किया किनारा, बता कहाँ ढूढूंगा मैं अब ?

2018

दो नैनन में तुम बस जाओ, देखूँ छवि निज को विसराऊँ।
सुधि-बुधि खो यह जीवन दीपक, तुझी चरणों में प्रभु चढ़ाऊँ।
हे वर- दे वर हाय पुकारुँ, तुझ बिन यह जग मुझे न भाता।
सूख गये आँसू सब मेरे, तुम ना रुठो हाय विधाता।
थर-थर मोरा जियरा कांपे, मिलन घड़ी कब आ पावे ?
नौका मेरी डूब रही है, क्यों न इसको पार लगावे ?
जग में आया मैं भरमाया, पता नहीं मैं मंजिल क्या ?
रो-रो कर मैं क्षमा मांगता, बता कसूर यहाँ मेरा क्या ?
रज चरणों की छू लेने दे, आँखों को तू रो लेने दे।
मिटने का जो स्वाद अनूठा, वह मुझको तू पा लेने दे।

2019

हरिभज-हरिभज-हरिभज तू मन, तू सब की चरण धूल बन मन।
टिका शून्य में शून्य ही बन, सब आशाओं को तज-भज मन।
दिन-रात भजो तज निज को मन, आंसू जो बहे बहने दो मन।
जीवन नदिया में बह भजमन, मिल बिछुड़ेंगे सब तू भजमन।
तू पाप पुण्य सब तज भजमन, सुख दुख में तज ना हरिभजमन।
तू पीड़ उमड़ती हो भजमन, अन्तस की पीड़ मिटे भजमन।
जीवन मिटता हो तू भजमन, जीवन छोटा तू भज ले मन।
जग के आकर्षण छोड़ो मन, दो दिन का मेला सब है मन।
सब स्वारथ प्रेम यहाँ भजमन, अपनी सुधि को विसरा भजमन।
चलता जा भजता जा तू मन, सब ज्ञान छोड़ कर भज तू मन।
तर्कों से टूटा भज तू मन, तू दास हरी का बन भजमन।
कुछ और न जाने तू ऐ मन, अर्पण कर हरि को भज तू मन।
बस एक सहारा है ये मन, कहिं टूट न जाये यह भी मन।
नहीं ठौर तुझे कोई भी मन, बस गाता जा तू हरि गुणमन।
तू सांस-सांस हरि को दे मन, तू बन अनाथ हरि को भजमन।
अन्तिम सांसों तक भज हरिमन, तन मिटने दे तू हरि भजमन।
निशदिन भजता जा तू ऐ मन, मौत पुकारे तब भी भज मन।
तू डूब उसी में भज हरि मन, मिट जाना है मिट जा तू मन।
हरि में जीना हरि में मिट मन, खिलना झड़ना जीवन बस मन।
हरि को अर्पित कर ले निज मन, हरि चरणों में गिर जा तू मन।

2020

कभी हँसाते, कभी रुलाते, यही खेल तुम खिला रहे हो।
शरण तुम्हारी आ गये हैं, हमको तुम क्यों रुला रहे हो ?
भटकते हम हैं इस जहाँ में, नहीं ठिकाना हमको मिलता।
जख्मी हो कर ही फिर रहे हैं, सकून दिल को कहीं न मिलता।
यह नाव मेरी डूबती है, पार कर दो बन कर खिवैया।
तुम्ही हो रक्षक इस जगत के, चुरा न आँखे हे कन्हैया।
भटकूँ जग में कदम-कदम पर, तेरी चौखट आ ना पाता।
कहाँ छिपे हो हे कन्हैया, न मार्ग तेरा देख पाता।
तेरी दुनिया रंग भरी है, पर ना इसमें दिल यह लगता।
खता हुई क्या मुझसे ऐसी, ढूंढू तुझको तू न मिलता।
तेरे बिना ना जिन्दगी यह, जीता क्यों मैं जग के अन्दर ?
हूक दिल में है उठ रही जो, खो कहाँ जाती हो अगोचर ?
मैंने धरा पर जन्म पाया, दीप आशाओं के जले जब।
उदास किस कोने में बैठा, अरमान टूटे देखता सब।
हूँ भी अकेला मैं यहां पर, सब साथ भी छूटे हमारे।
मुझको सम्भालों कन्हैया, किसको बताओ हम पुकारे।
चलता हूँ पर चल न पाता, तेरी डगर पर आ न पाता।
मेरी अधूरी वन्दगी प्रभु, नहीं हाय मैं रो भी पाता।
यह वंशी तेरी बज रही है, और सृष्टि भी चल रही है।
तुम्हारी करुणा की भिखारी, मैं ही क्या, यह सारी मही है।

2021

हूँ भिखमंगा दूँ क्या किसको, दाता तुम मैं रो ना पाऊँ।
जीवन में है दंश अनेकों, मैं रह-रह जी को तड़फाऊँ।
बोलो प्रियतम कुछ तो बोलो, कुछ तुमसे मैं बोल न पाऊँ।
झर झर आँसू की गंगा में, हाय नहि क्यों डूब मैं पाँऊ?
हे जगदीश नमन तुम्हे है, रोता दिल यह किसे दिखाँऊ?
इस विचित्र जग के बन्धन को, तड़फूं पर मैं समझ न पाँऊ।
तेरे तो उपकार बहुत है, दिल जख्मी है किसे दिखाऊँ।
प्रबल बेग से बहे यह आंसू, बस इसमें ही मैं बह जाऊँ।
पत्थर दिल ले जग में फिरता, तुझ प्यार को निरख न पाऊँ।
रहा सुलगता जीवन भर मैं, क्या किस्मत गम गले लगाऊँ।

2022

मन में टीस लिये यह फिरता, प्रीतम से नेहा ना घोले।
फिर भी मैं कुछ कर ना पाऊँ, मनुआ डाल-डाल पर डोले।
तुम बता दो हे जगदीश्वर, आँख खुली जग वैभव देखा।
निज पीड़ा को घोल न पाऊँ, मिलूं समी से सपना देखा।
जीवन की चक्की में पिसकर, जलते अरमानों को जानूँ।

2035

थक गये हम चलते-चलते, कित पता गिर जायेंगे ?
कौन सा पथ कैसे खोंजे, जो तुम्हें हम पायेंगे।
अंसुओं से पूरित नयन हैं, तन यह जर्जर हो रहा।
छिप गये हो तुम कहाँ पर, सूर्य यह अब ढल रहा।
टेढ़ी-मेढ़ी राह में फंस, खोज ना हम पायेंगे।
पथ में दीपक तुम जला दो, ढूंढ तब ही पायेंगे।
है अन्धेरा गिर रहा मैं, राह नजर आती नहीं।
कैसे मैं तुमको रिझाऊँ, सुर मेरे बजते नहीं।
वन्दना स्वीकार कर लो, हम भटके हैं जगत में।
आंसू गिरते देखते हैं, कब मिलना हो जगत में।
इस जहाँ में तुमको खोजा, तुमको पा पाये नहीं।
हम किस जगह खो जायेंगे, न जानते कुछ बस नहीं।
आंसू का उपहार ले लो, डूबूं मैं झलक दे दो।
तुम मुझे मत भूल जाना, बस विनय मेरी सुन लो।

2036

जग यहाँ सब छोड़ जाते, देखते ही देखते।
तू पता ना कित छिपा है, हम यहाँ पर विलखते।
टूटते क्षण-क्षण विखरते, रंग चाहत का भरते।
हाय क्यों तुझको विसरते, स्वप्न में हम विचरते।
हैं विवश निज भूख से हम, दे क्षमा हम पा सकें।
नीर की सौगन्ध तुमको, ना तुझे हम खो सकें।
यह जगत वैभव बुलाता, रास आता नहिं हमें।
खेल यह कैसा रचाया, छोड़ कर फिरता तुमें।
चरण रज की पा सका ना, नजरें उठा देख लो।
अर्चना मेरी अधूरी, मेरी तुम प्रभु सुन लो।

2037

झर-झर नीर गिराती अँखियां, दरशन को तरसावे।
तुझ तोड़े संग बात बने ना, हरदम मोहि रुलावे।
भटक रहे अज्ञानी बन कर, पग-पग ठोकर खावे।
पाप गठरिया शीश धरी है, कैसे नयन मिलावे।
मजबूरी का रोना रोते, बीता जीवन सारा।
भटकता मैं तेरे प्यार को, विसरा ना संसारा।
भटक रहे हम क्षमा मांगते, कुछ भी ना तू बोले।
तुम बिना मेरे परमेश्वर, कैसे निज को तोले।
निशदिन तेरे गुण हम गाये, यह वर हमको देना।
नदिया सागर में लय होवे, तुझे न भूले नैना।

2038

जियरा तुम बिन भटक रहा है, मिलूं श्याम मैं तुमसे कैसे ?
अँखियां नीर बहाये हर पल, धीरज मन को दूं मैं कैसे ?
ढूंढू तुझको ढूंढ न पाऊँ, अंधियारे में मैं खो जाऊँ।
टीस जगाये रखना प्रियतम, पल ना मैं तुझको विसराऊँ।
जियरा मेरा धक-धक धड़के, नैना मिलने को हैं तरसे।
जले यहाँ कोई ना देखे, देखूं सावन भी न बरसे।
विरहाग्नि में भस्म हुई ना, नयना रोये हाय थके ना।
देखें पल-पल बाट तुम्हारी, क्यों तुम बिन जियरा जाये ना।
थका हुआ ना कोई किनारा, बना नहीं क्यों मेल हमारा।
झड़ी लगाई इन नयनों ने, ले शरणागत कर न किनारा।
बुद्धिहीन अज्ञानी हूँ मैं, जग की रीति न जानूं हूँ मैं।
सूजी आँखे रोते-रोते, डुबा भंवर में क्या जीने में।
तेरे बिन जग में डर लागे, नयना रोये जग यह हँसे।
रीति बतादे तुझे मिलूँ मैं, मोहि नहीं तू जग में फाँसे।

2039

चल मन उड़ चल पार गगन के, घबराए मन बिना मिलन के।
रोंए उन बिन आँख न खोलूं, कैसे गाऊँ गीत मिलन के ?
पिव-पिव की यह रटन लगावे, मिलन बिना यह जिय झुलसावे।
अंखिया निशदिन नीर बहावे, मोती ढुलके भेद न पावे।
जिय की जलन न मिटने पावे, बहलाऊँ मन बहल न पावे।
निर्मोही छलिया तू बन कर, छले मुझे हरपल भटकावे।
भीगी आँखों को देखा ना, शून्य-शून्य में हो न सका।
शून्य समाधि लीन रहा, तेरी गरिमा को छू न सका।
जीवन की अन्तिम घड़ियों में, तेरे कूंचे में सोयेंगे।
लो प्यार तुम्हारा मिला हमें, ना जागेंगे ना रोयेंगे।

2040

कितने रस्तों से गुजर-गुजर, आये तेरे दरवाजे पर।
अब भी यदि पट बन्द रहा तो, मर जायेंगे हम रो-रो कर।
आये हम हैं कहाँ जा रहे, निहार रहे नयन शून्य में।
नहीं भेद कुछ भी मिल पाता, खो जाते सब इसी शून्य में।
छिपे कहाँ हो घट-घट वासी, हम तो हैं प्रभु तेरी दासी।
अपनी करुणा को बरसा दो, जन्म-जन्म से मैं हूँ प्यासी।
प्यारे मोहि सम्बल तुम दे दो, चलती हूँ मैं ठोकर खाती।
उठने की सामर्थ नहीं अब, गिरुँ कहाँ मैं नहीं जानती ?
ऋषि-मुनि जप-तप कर हारे, रो भक्तों के नयना हारे।
तू समाधि में मगन हो रहा, फिर भी तेरी प्यास पुकारे।

2041

आँखों के नीर बरसने दो, कहते कुछ इनको कहने दो।
रुठ नहीं जाओ तुम प्रियतम, यादों में तेरी मिटने दो।
यह जीवन सारा बीत गया, मैं कुछ भी ना कर पाता हूँ।
बहते आंसू मेरे झर-झर, इनका ही अर्ध चढ़ाता हूँ।
आशाएँ बन-बन कर बिगड़ी, तड़फा जग का मैं खेल बना।
आंसू यह बहते रहे सदा, दुख की पूछे यह स्वप्न बना।
हरपल मैं तकता रहा सदा, तुम ना आये निष्ठुर मेरे।
बीती जाती यह शाम यहाँ, ऐसे ही तुम बिन कहीं गिरे।
देखो क्या दोष हमारा है, संग तूफानों के बहते है।
देखो मेरी मजबूरी तुम, हम विवश हुए गिर उठते हैं।
गिरते आंसू को तुम देखो, ना मेरा अब उपहास करो।
हम मिट ना जायें तूफां में, कुछ तो तुम मुझसे प्यार करो।
प्यार भूख ले चला निरन्तर, मैं ले पाया ना दे पाया।
मरुस्थल ऐसा बना दिया, करके तूने क्या कुछ पाया।
पाने खोने का खेल यहाँ, पकड़े किसको सब जाता है।
निज को संभाल ना हम पाते, रेला पीछे से आता है।
स्मृतियों के बादल घूमें, उसमें ही हम तुझको ढूंढे।
गहरा अंधियारा न दीखे, पा सके किरण फिर भी ढूंढे।
टूटी-फूटी नौका मेरी, हम नदी को कैसे पार करें।
यह डूब रही है भंवर बीच, बस तू ही अब उद्धार करें।
निशदिन मैं हूँ नीर बहाऊँ, फिर भी तेरा पता न पाऊँ।
वरषे सावन प्यासी आँखे, इस मन को कैसे समझाऊँ ?
जियरा पी-पी की धुन गावे, मिलने की वह आस जगावे।
बेदर्द मोहि नाच नचावे, रोवे अँखियां कुछ न सुहावे।
छोड़ मोहि तू कहाँ छिप गया, जीवन सूरज-हाय ढल गया।
थर-थर कांपे आस लगावे, तेरे बिन सब हाय लुट गया।
मुक्त नहीं क्यों मैं हो पाऊँ, काली रात न सुबह हुई है।
कर्मो के बन्धन है इतने, कैसी यह जंजीर बंधी है।

थका हुआ तुझ ओर निहारुँ, जाता जीवन तुझे पुकारुँ।
आओ-आओ अब सुधि ले लो, चाह यही बस तुझे निहारुँ।
भूला पथ मैं भटक रहा हूँ, तुझ दर्शन को तरस रहा हूँ।
शुभ पथ तुम मुझको दर्शा दो, लिये चाह मैं घूम रहा हूँ।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, तुम बिन न हो कभी सबेरा।
रोऊँ देखूँ तुझको ईश्वर, मिटे सभी जीवन का फेरा।

2042

दुख जग का न कोई सताये, नित अपने में डूबत जाये।
क्षण भंगुर है खेल यहाँ का, काहे इसमें प्रीति लगाये।
फेंक रहे सब अपनी पीड़ा, तू भी उसमें शोक मनाये।
समझ बाबरे दिन दो का तू, ना जाने फिर कित को जाये ?
रो ले रो ले जी भर रो ले, अनमोल मिलेंगे आंसू ना।
उन चरणों में अर्पण कर दें, रहना कुछ इस जीवन में ना।
यही तपस्या सोच समझ मन, भूख प्यास और रोग यहाँ है।
सब सह उससे नेह लगा ले, पीड़ा है अपमान यहाँ है।
मर्म न जाना इस जीवन का, पत्ते सा यह उड़ता जाये।
हूँ अज्ञानी जानूं कुछ ना, बस जियरा यह रोता जाये।
माँगू क्या प्रभु मांगू तुझसे, भीख आँसुओं की तू दे दे।
छिपा रहा तू छिपा रहे तू, डूब आँसुओं में जाने दे।

2043

मन उड़ता कहिं ठौर न पावे, कैसे हम इसको समझावे?
हरी भजन से दूर हुआ यह, जगत कीच में यह उलझावे।
तुझ दर्शन को कैसे आऊँ, कैसे तेरा ध्यान लगाऊँ?
दुख पाऊँ मैं फंसता जाऊँ, विषयों से ना ध्यान हटाऊँ।
करो कृपा हे जग के स्वामी, भवसागर में फंस जायेंगे।
हम तो है पूरे अज्ञानी, बिना कृपा ना चल पायेंगे।
कैसे धीरज दूँ मन बोरा, बना हुआ क्यों इतना रुखा ?
बहा जाता समय है थोड़ा, अश्रु नहीं आँखों का सूखा।
सब ऋषि मुनि हैं ध्यान लगाते, तुझसे ही वह खुशियां पाते।
होठों को मुस्काहट दे दो, तुझको भूले खाक छानते।
तुझ चरणों में डूब सकूं मैं, पूजा करे आँख का मोती।
बिता दिया यह जीवन सारा, खोती जाये हमरी ज्योति।
तेरे ही हम नित गुण गायें, तुझमें ही आनन्द मनायें।
भूल जगत की विषय वासना, तुझमें ही बस लय हो जाये।
जीवन का क्या लक्ष्य न जाना, बना हुआ बस मैं दीवाना।
तेरे इंगित से सब चलता, भूल गया पथ हूँ अनजाना।
किसे सुनायेंगे हम पीड़ा, दुर्गम राह भटक जायेंगे।
मेरे प्रभु ना निष्ठुर होना, रह-रह आंसू ढलकायेंगे।
पूजा को स्वीकार करो तुम, भूलों को सब माफ करो तुम।
नजर उठा कर देखो अपनी, जीवन में संगीत भरो तुम।

2044

चल-चल कर हम तो हार गये, दीदार न तेरा कर पाये।
कैसे खोजूं हे ईश बता, नैना मेरे जी भर रोये।
अज्ञानी मैं तो भटक रहा, तुम ज्ञान पुंज कहलाते हो।
जो अंधियारे को चीर सके, दे किरन मुझे तरसाते हो।
पल-पल अँखियां नीर बहाये, तुमको जान नहीं हम पाये।
तेरी रहमत का जग प्यासा, तू ही मेरी प्यास बुझाये।
अँखियां तेरी बाट निहारे, छिपा कहाँ न समझ यह आये।
पतझड़ में सब बीत गया है, कब वसन्त देखूँ यह आये।
बरसात हुई नयना रोये, पर खेत न सिंचित हो पाया।
ना जान सका लेखा अपना, कर्मो का था कैसा साया।
हम तरस गये तुम ना आये, जीवन में दीप जले कैसे ?
अंधियारे से डर लगता है, पायें प्रकाश को हम कैसे ?
निर्बल हैं समझ बहुत छोटी, तकते तेरे दरवाजे को।
तू आँख उठाकर देख जरा, चल सकें हमें दे साहस को।
यह नौका मेरी डूब रही, तुम इसको पार लगा देना।
बंजर यह मेरा खेत पड़ा, तुम कृपा इसे अपनी देना।

2045

हरि से मिलाओ हमें, हरि मिला दो।
कैसे पाये उनको, तुम बता दो।
ढूंढू दीखे नाही, पथ दिखा दो।
प्यासा भटके जियरा, जल पिला दो।
युग-युग से खोज रहा, नहीं पाया।
हाय भटकता जग में, हूँ भरमाया।
उससे मिला दो हमें, ना मिटा दो।
पतझड़ में कोई तुम, पुष्प खिलादो।
बरसे अँखियां मेरी, दया दे दो।
भूलूं उसको नाहीं, हरि मिला दो।
पांव पड़ूं मैं तेरे, जीय ले ले।
कुछ भी नाहीं उस बिन, जगत मेले।

2046

तुम हमको नहीं मिले प्रियतम, जीवन छूंटा सा जाता है।
होंगे विलीन अन्धकार में, कहा नहीं कुछ भी जाता है।
आयें हैं अजनबी यहां हैं, कहां जायेंगे पता नहीं है।
रो रोकर जीवन पूरा कर, नहीं मिलोगे पर आशा है।
जीवन के हम दिर्द लिये हैं, कहते भी हम शर्माते ।
ऐसे निष्ठुर जीवन को दे, दीनानाथ तुम्हीं कहलाते।
क्षमा करो हे दीनबन्धु तुम, दीन हुए हम बन्धु मिला ना।
तड़फ-तड़फ कर यह दिल हारा, तेरा हमें दिदार हुआ ना।
आओ-आओ-आओ-आओ, इस जग का तुम ताप मिटाओ।
सिलग रहा जग तपस के अन्दर, शीतल जल तुम ही बरसाओ।
मूरख हम अज्ञानी हम हैं, हमें धर्म का पाठ पढ़ाओ।
हमसे चला नहीं जाता है, सम्बल हमको तुम दे जाओ।
नतमस्तक हूँ तेरे आगे, अंधियारे में नहीं दीखता।
तू प्रकाश की ज्योति जला दे, तुझ चरणों के लिये तरसता।
निष्ठुर ना तुम निष्ठुर होना, जीवन का कुछ मतलब देना।
नाच रहा सारा जग यह है, करुणा तुम करुणामय करना।

2047

आ गई मंजिल मेरी अब, आंसू भी सूखे नयन के।
थक चुका हूँ इस सफर में, हाय क्या दूँ दर्द दिल के ?
लड़खड़ाती जिन्दगी यह, मैं गिरा सा जा रहा हूँ।
गीत में बस है रुदन ही, मैं सुना तुमको रहा हूँ।
है चुभन वह कौन सी जो, आंसू से कहती कहानी।
कौन सी आहट को लेने, बन गई वह वियोगनी।
किस दिशा में जा रही है, अज्ञात यह नौका मेरी।
रज चरण ना पा सके क्यों, अर्चना मेरी अधूरी।

2048

ओम निरन्जन ओम निरन्जन, करदे सबके दुख का भन्जन।
तू पालन सब जग का करता, तू सून ले अब हमरा क्रन्दन।

व्याख्या नहीं करेगा। ना ही परमात्मा से शिकायत करेगा काटा क्यों गड़ा। वह स्वीकार कर लेगा। मर्जी अस्तित्व की।

- जगत के सभी पदार्थ तभी तक मनोहर प्रतीत होते है जब तक कि उनके स्वरूप पर सम्यक् विचार नहीं किया जाता। विचार करने पर उनकी सत्ता सिद्ध नहीं होती। अतः वे जार्ण शीर्ण हो कर न जाने कहाँ विलीन हो जाते है।

- इस जड़ दृश्य जगत का चिन्तन ही जन्मरूप अनन्त दुख का हेतु है। दृश्य चिन्तन से रहित हो कर सच्चिदानन्द परमात्मा में स्थित रहना ही पुनर्जन्म रहित अक्षय सुख का हेतु है।

- 'यह मुझे मिल जाये' यह जो संकल्प रूप इच्छा है। बस यही संसार है। तथा इसका शान्त हो जाना ही मोक्ष है।

- संसार के स्मरण के अभाव को ही स्वभाविक 'चित्त–विनाश स्वरूप योग' कहते हैं। और वह अक्षय योग शान्तरूप से नित्य स्थित है।

- जब तक मन आत्मा के द्वारा आत्मा में सन्तुष्ट नहीं हो जाता तब तक आपत्तियाँ उद्भूत होती रहती हैं। जैसे मलिन दर्पण में मुख की छाया नहीं दीखती उसी प्रकार आशा की परवशता से व्याकुल एवं सन्तोषरहित चित्त में ज्ञान का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता।

- दृश्य बन्धन है। यदि दृश्यरूप दुख सत हो तो उसकी शान्ति कभी नहीं हो सकती और दृश्य की शान्ति न होने पर ज्ञाता में कैवल्य (मोक्ष) की सिद्धि नहीं हो सकती।

- द्रष्टा से दृश्य की पृथक सत्ता न होने के कारण दृश्य का अभाव हो जाने पर जो द्रष्टा में बलात् द्रष्टापन का अभाव प्राप्त होता है, उसी को तुम असत् (मिथ्या दृश्य) के बाधित होने से सन्मात्र चिन्मयरूप में अवशिष्ट हुए आत्मा का केवली भाव (या कैवल्य) समझो।

- पुरूष जिस जिस वस्तु की ओर से विरक्त होता है उस उससे मुक्त होता जाता है। जो देह आदि में अहंभाव का अनुभव नहीं करता। ऐसा कौन मनुष्य जन्म मरण रूपी भ्रम को प्राप्त होगा?

- वासना युक्त अज्ञानी चित्त को जहाँ भय नहीं होता वहाँ भी भय दिखाई पड़ता है।

- अप्राप्त भोगों की स्वभावतः कभी इच्छा न होना और दैवात, प्राप्त हुए भोगों को

यथायोग्य व्यवहार में लाना। जिनका मन पूर्ण आत्मा में ही संलग्न है, उन ज्ञानियों की दृष्टि से तो वस्तुतः संसार में मोक्ष नही है।

- जिसके हृदय में अभिमान का अत्यन्त अभाव हो गया है, ऐसा विशुद्ध अन्तःकरण वाला ज्ञानी महात्मा ध्यान, समाधि अथवा कर्म करे या न करे सदा मुक्त ही है। क्योंकि जिसका मन सर्वथा वासना रहित हो गया है, उसे न तो कर्मो के त्याग से कोई प्रयोजन है और न कर्मों के अनुष्ठान से। जप, ध्यान, समाधि से भी उसका कोई प्रयोजन नहीं है। सम्पूर्ण वासनाओं से रहित हुए सच्चिदानन्द परमात्मा के निरन्तर मननरूप मौन से बढ़कर दूसरा कोई उत्तम पद नहीं है। ज्ञानी महात्मा के लिये कोई कर्तव्य नहीं है।

- एक ही विषय को ग्रहण करने वाले चित्त को प्रत्यर्थनियत कहते है। वही आत्मा है।

- वास्तव में न कोई किसी को सुख दे सकता है न दुख। जो मिलना है वह अवश्य मिलेगा। मनुष्य दूसरों को सुख दुख पहुँचाने की नीयत से कर्म करके अपने अन्दर सुख दुख पाने के कर्माशय एकत्र कर लेता है।

- भूतकाल व्यतीत हो गया, इसलिये त्यागने योग्य नहीं। वर्तमान भोगा जा रहा है, दूसरे क्षण स्वयं समाप्त हो जायेगा। इसलिये आने बाला दुख त्यागने योग्य है। विवेकीजन उसी को हटाने की चेष्टा करते है।

- दुख का हेतु तृष्णा है। संकल्प करके मनुष्य दुख में डूब जाता है और कुछ भी संकल्प न करके वह अविनाशी सुख पाता है।

- सत्य का साक्षात्कार वही व्यक्ति कर सकता है जो अक्रिया का मूल्य जानता हो। क्रिया सामाजिक अथवा व्यावहारिक उपयोगता है। वह इन्द्रियातीत चेतना के विकास में एक बाधा है। अकर्म वीर्य की साधना करने बाला ही अतीन्द्रिय ज्ञानी हो सकता है।

- धर्म है जीते जी स्वयं को अस्तित्व में विलीन करने की कला। यदि परमात्मास्वरूप यथार्थ वस्तु न हो तो भले ही अवस्तुरूप संसार का अनुसरण करे, परन्तु जो यथार्थ वस्तु का (परमात्मा का) परित्याग करके अवस्तु रूप संसार का अनुगमन करता है वह नष्ट हो जाता है। परमात्मा की प्राप्तिरूप पुरूषार्थ से वंचित रह जाता है।

- वासना दो प्रकार की होती है। मलिन वासना एवं शुद्ध वासना। जो केवल शरीर धारण के लिये होती है वह शुद्ध वासना है। परमात्मा तत्व को जानने वाले वे जीवन मुक्त कहलाते है।

- ठीक समय पर किया हुआ थोड़ा सा भी कार्य बहुत उपकारी होता है और समय

- चिन्ता ही चित्त कहलाती है। संकल्प तो उस चित्त का दूसरा नाम है। चिन्ता के स्फुरित रहते हुए वस्तुतः चित्त का त्याग कैसे सम्भव है?

- मन को शान्ति इच्छा का त्याग कर देने से प्राप्त होती है। इच्छा की उत्पति से जैसा दुख प्राप्त होता है वैसा दुख तो नरक में भी नहीं मिलता और इच्छा की शान्ति से जैसा सुख मिलता है वैसे सुख का अनुभव तो ब्रह्मलोक में भी नहीं होता।

- सम्पूर्ण संसार ब्रह्म ही है और मैं भी ब्रह्मरूप ही हूँ इस प्रकार एकाकी भाव का आश्रय लेकर सम्पूर्ण भूतों में स्थित परमात्मा को भजता है वह सब प्रकार से व्यवहार करता हुआ भी परम पद को प्राप्त होता है। इस प्रकार अपने आपको ब्रह्म में अर्पण कर देने को ब्रह्मार्पण कहा है।

- सम्पूर्ण कर्म फलों के त्याग को ज्ञानियों ने सन्यास कहा है।

- सारे संकल्पों की भली भांति शान्ति हेा जाने पर सम्पूर्ण वासनाओं और भावनाओं से रहित जो विशुद्ध केवल चेतन तत्व है वही परमब्रह्म परमात्मा कहा गया है।

- उस परमब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के साधन को ही ज्ञान कहा है और उसी को योग कहा है।

- संकल्प समूहों का जो त्याग है वही असंङ (आसक्ति का अभाव) कहा गया है। आसक्ति के अभाव का नाम ही संगत्याग है।

- सम्पूर्ण शरीरों के भीतर जो दृश्य संसार से रहित और सूक्ष्म रूप से व्यापक अनुभव स्वरूप है, वही यह सर्वव्यापी परमात्मा है।

- विवेकी पुरूष को चाहिये कि वह अपने शुभाशुभ कर्म को नष्ट कर दे। आत्मा के साथ कर्म का कोई सम्बन्ध नहीं है। संकल्पशून्यता रूप त्याग से ही वास्तव में कर्म त्याग सिद्ध होता है।

- बीज के भीतर सैकड़ो शाखाओं से युक्त तथा पत्र, पुष्प और फल से सम्पन्न वृक्ष विद्यमान है, क्योंकि बीजारोपण के पश्चात् प्रकट हुए उस वृक्ष को सब लोग अपनी आंखों से देखते है। प्राण के भीतर चित्त है और चित्त के भीतर विविध आकार प्रकार से युक्त जगत वैसे ही विद्यमान है जैसे बीज के भीतर वृक्ष।

- प्रारब्ध के अनुसार जो भी कार्य प्राप्त हो जाये, उसमें जो पुरूष कामना और संकल्प से रहित होकर प्रवृत होता है तथा जिसका हृदय शरत्काल के आकाश

की भांति आवरणशून्य ज्ञान के आलोक से प्रकाशित है, वह पंडित (ज्ञानी) कहलाता है।

- तत्वज्ञानी और अज्ञानी दोनों के सम्पूर्ण उत्पत्ति विनाशशील कर्मो में वासना शून्य के सिवा दूसरा कोई अन्तर नहीं होता अर्थात ज्ञानी वासनारहित होकर कर्म करता है और अज्ञानी वासनायुक्त होकर।

- जड़ देह तो इच्छा रहित है और इस निर्विकार आत्मा में इच्छा रहती नहीं, इसलिये कोई कर्ता है ही नहीं। आत्मा शरीर का द्रष्टामात्र है। अपने शरीर रूपी घर से चित्तरूपी बेताल को हटा देने पर इस संसार रूपी शून्य नगर में पुरूष कभी भी नहीं डरता।

- युक्ति युक्त बात तो बालक की भी मान लेनी चाहिये। लेकिन युक्ति से च्युत बात को तृण के समान त्याग देनी चाहिये, चाहें वह ब्रह्मा ने ही क्यों न कही हो।

- चेतन की जो विषयाकार कल्पना है, वही बन्धन है उससे छूटना ही मोक्ष कहलाता है।

- सुख के प्राप्त होने पर दुख का और दुख के प्राप्त होने पर सुख का नाश हो जाता है। अतः यह दोनों ही नाशवान हैं। और जिसका नाश नहीं होता वह अविनाशी आत्मा है।

- जिसके प्रति बन्धु भावना कर ली गई, वह बन्धु हो गया और जिसके प्रति शत्रु की भावना कर ली वह शत्रु हो गया। परन्तु सभी शरीरों में अभिन्नरूप से विद्यमान जो सर्वव्यापी आत्मा है उस एक में ही 'यह बन्धु है, यह शत्रु है' ऐसी कल्पना कैसे हो सकती है।

- जैसे लकड़ी डालने से आग प्रज्वलित होती है, उसी प्रकार विषय भोगों के चिन्तन से चिन्ता बढ़ती जाती है। और जैसे बिना ईंधन के आग बुझ जाती है, उसी प्रकार विषयों का चिन्तन न करने से चिन्ता मिट जाती है।

- आत्मा ही जगत की स्थिति में निरन्तर अनुभव में आने वाले समस्त पदार्थों का आदि कारण है। परन्तु इस आत्मा का कोई कारण नहीं है।

- देव ! मिट्टी, काठ, पत्थर और जल मात्र यह सारा जगत सर्वव्यापी परमात्मा के सिवा कुछ भी नहीं है। इसकी प्राप्ति हो जाने पर किसी अन्य वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा ही नहीं रह जाती।

- 'जिस पुरूष के अन्तकरण में मैं कर्ता हूँ' ऐसा भाव नहीं है तथा जिसकी बुद्धि सांसारिक पदार्थों में और कर्मों में लिप्त नहीं होती, वह पुरूष इन सब लोकों को मारकर भी वास्तव में न तो मारता है और न पाप से बंधता है। जिसका त्रिकाल में अस्तित्व नहीं है उसकी व्यावहारिक सत्ता का ज्ञान कराने के लिये 'माया' शब्द का प्रयोग किया गया है। वह माया उसका यथार्थ ज्ञान हो जाने से निस्संदेह विनष्ट हो जाती है।
- दुख के स्वरूप को पूर्णतया जानने वाले विज्ञजन संशय को ही महान दुख बताते है।
- मौन होकर बैठे रहना ही समाधि थोड़े है। समाधि तो परमात्मतत्त्व के उस यथार्थ ज्ञान को कहते है, जो सम्पूर्ण आशा रूपी घास फूस को भस्म करने के लिए अग्नि स्वरूप है।
- संसार सागर से पार होने के लिये परमात्मा के यथार्थ ज्ञान के अतिरिक्त और कोई दूसरा सुगम उपाय नहीं है।
- जो मूढ़ बुद्धि मानव युक्तियुक्त वस्तु का अनादर करके कष्ट साध्य (युक्तिशून्य) वस्तु में आग्रह रखता है, उसे विद्वान लोग अज्ञानी ही समझते हैं।
- जैसे वायु का हल्का सा झोंका भी निस्सार तिनके को उड़ा देता है, उसी प्रकार प्रज्ञाहीन मूढ़ पुरूष को थोड़ी सी आपत्ति भी शोकाकुल कर देती है।
- जो इष्ट और अनिष्ट की भावना का त्याग करके प्राप्त हुए कार्य को कर्तव्य समझ कर ही उसमे प्रवृत्त होता है, उसका कहीं भी पतन नहीं होता।
- जहाँ केवल परमात्मा की चेतनता है, वहां उसी तरह मन का क्षय हो जाता है, जैसे प्रकाश में अन्धकार का नाश हो जाता है।
- वासना रहित कर्म किया जाये तो भविष्य में होने वाले सुख दुख का अनुभव नहीं होता।
- संकल्प का त्याग कर देने से वासना नष्ट होती है।
- वास्तव में न तो कोई किसी का स्वाभाविक शत्रु है और न कोई किसी का स्वभाविक मित्र ही है। किन्तु जो सुख पहुँचाने वाला हो वह मित्र कहा गया है और जो दुःखप्रद है वह शत्रु कहलाते हैं।
- चिरकाल तक चित्त के निरोध की रक्षा करने और दीर्घकाल तक परमात्मा का

चिन्तन करने से अभ्यासवश शून्यता को प्राप्त हो कर मन फिर शोक नहीं करता।

- जब मूर्खता आती है, तब पुरूष सभी आपत्तियों का भाजन हो जाता है। इस मूर्ख लोकमयी सृष्टि के रूप में असत रूप मन ही प्रकट हुआ है अर्थात यह मन का ही विकार है। जो पुरूष मन को वश में नहीं कर सकता, वह अध्यात्मशास्त्र के उपदेश का पात्र नहीं है।
- जहाँ केवल परमात्मा की चेतनता है वहाँ उसी तरह मन का क्षय हो जाता है, जैसे प्रकाश में अन्धकार का नाश हो जाता है।
- 'यह मुझे प्राप्त होनी ही चाहिये इस प्रकार की जो हृदय में भावना है उसे तुम तृष्णा और संकल्प नामक शृंख्डला समझो।
- देह में अहं भावना करने से ही आत्मा दैहिक दुःखों के वशीभूत होता है।
- तुमसे संसार का अस्तित्व नहीं है बल्कि तुम्हारा आस्तित्व संसार से है।
- पौरुष प्रयत्न के द्वारा मन को जिस वस्तु में भी लगाया जाता है उसी को प्राप्त हो कर वह अभ्यासवश तद्रुप हो जाता है। भावना की भावना न करना ही वासना का क्षय है।
- सुख दुख आदि के अनुभव केवल शुद्ध चेतन आत्मा और केवल देह को नहीं होते, किन्तु देह और आत्मा के तादात्म्य के कारण होते हैं।
- बुद्ध ने कहा है, दुख को छोड़ने की फिक्र मत कर। उसे तू न छोड़ पायेगा। क्योंकि दुख को तू ही निर्मित करता है। 'तू उसको ही छोड़ दे जो दुख को निर्मित करता है।
- नीति निर्मित होती है अंतःकरण पर और धर्म निर्मित होता है अंतःकरण के विनाश पर।
- वासना रहित कर्म किया जाये भविष्य में हेाने वाले सुख–दुख का अनुभव नहीं होता।
- चित्त से शून्य हुआ चेतन प्रत्यक्–चेतन अर्थात शुद्ध आत्मा कहा जाता है
- भोगों के चिन्तन से अज्ञान जनित बन्धन दृढ़ होता है और भोग वासना के क्षीण होने से संसार बन्धन क्षीण हो जाता है।

‘समर्पण’ [redacted]

‘समर्पण’ [redacted]

‘समर्पण’ [redacted]

‘समर्पण’ [redacted]

‘समर्पण’ [redacted]

‘समर्पण’ [redacted]